बांग-ए दरा

बाँग-ए दरा

लेखक

इक़बाल

सम्पादक

हंसराज रहबर

प्रकाशक

ऊषा प्रकाशन

उर्दू बाज़ार, दिल्ली

प्रकाशक
ऊषा प्रकाशन
उर्दू बाज़ार, दिल्ली

प्रथम संस्करण
जुलाई १९६०

मूल्य रु० ६-७५ नए पैसे

मुद्रक :—
राइजिंग सन प्रेस
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

BANG-e-DARA IQBAL Rs. 6.75

इक़बाल और उसकी शायरी

मीर और गालिब में कौन बड़ा है, यह एक विवाद का विषय है, लेकिन अगर यह कहा जाय कि मीर, गालिब और इकबाल तीन चोटी के शायर हैं तो इस कथन को सभी निस्संकोच स्वीकार करते हैं। इकबाल के दर्शन और चिन्तन के बारे में मतभेद हो सकता है; लेकिन यह कहना कि वह हमारे युग के बहुत बड़े विचारक और बहुत बड़े शायर हैं, इसमें तनिक भी सन्देह और विवाद की गुंजायश नहीं है।

इकबाल के पूर्वज सप्रू गोत्र के कश्मीरी ब्राह्मण थे, जो कारोबार के सिलसिले में जम्मू से पंजाब के प्रसिद्ध नगर स्यालकोट में आकर बस गये थे और उन्होंने आज से ढाई सौ साल पहले इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। ब्राह्मण से मुसलमान बनने के नाते ही वे शेख कहलाते थे। अतएव इकबाल के शेख पिता नूर मुहम्मद धार्मिक प्रवृत्ति के नेक व्यक्ति और एक सफल व्यापारी थे।

शेख नूर मुहम्मद के दो बेटे थे—अता मुहम्मद और मुहम्मद इकबाल। अता मुहम्मद इकबाल से चौदह वर्ष बड़े थे और वह शिक्षा प्राप्त करके इंजीनियर बन गये। इकबाल का जन्म सन् १८७३ में हुआ और उनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्यालकोट ही में हुई। अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्होंने उर्दू, फारसी और अरबी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। जिस मिशन कालेज में इकबाल पढ़ते थे, उसमें अरबी के अध्यापक मौलवी मीर हसन थे, जो शेख नूर मुहम्मद के मित्रों में से थे। इस मित्रता का आधार मौलवी साहब की विद्वत्ता थी। उनके पढ़ाने में एक विशेष बात यह थी कि वह जो कुछ बताते थे, वह मन पर अंकित हो जाता था। इकबाल हमेशा अपने इस अध्यापक के

कृतज्ञ रहे। ख्याति प्राप्त करने के बाद जब अंग्रेजी सरकार ने उन्हें सर की उपाधि दी, तब इकबाल ने अपने इस उस्ताद को भी शम्शुलुल्मा की उपाधि दिलाई।

इकबाल पढ़ने-लिखने में तेज थे। उन्होंने प्राइमरी, मिडिल और एन्ट्रेन्स की परीक्षाओं में छात्रवृत्ति प्राप्त की। स्यालकोट से मैट्रिक पास करके वह लाहौर चले आये और वहाँ गवर्नमेंट कालेज में दाखिल हुए। इस कालेज में आरनल्ड नाम के एक प्रोफेसर थे, जो अरबी-फारसी के विद्वान् थे। इकबाल को इस प्रोफेसर का विशेष स्नेह प्राप्त हुआ और जो सम्बन्ध एक बार स्थापित हो गया वह फिर उम्र भर बना रहा। इकबाल की भावी उन्नति में इस अंग्रेज प्रोफेसर का बड़ा हाथ है। आरनल्ड जब प्रोफेसरी के पद से मुक्त होकर विलायत जाने लगे तो इकबाल ने उनसे अलग होने के दुख और क्षोभ को अपनी "नालए-फिराक" शीर्षक कविता में व्यक्त करते हुए लिखा था :

तेरे दम से था हमारे सर में भी सौदाए-इल्म।

(अर्थात् हमारे मन में भी ज्ञान की जिज्ञासा तेरे ही कारण उत्पन्न हुई।)

लाहौर शिक्षा और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था। अन्य ज्ञान-गोष्ठियों के अतिरिक्त मुशायरों की धूम रहती थी, जिनमें उस समय के मशहूर शायर अपना कलाम सुनाते थे। धीरे-धीरे इकबाल ने भी इन मुशायरों में जाना और अपना कलाम सुनाना शुरू किया। इस सम्बन्ध में शेख अब्दुल कादर ने लिखा है :

"मैंने उन्हें पहली मर्तबा लाहौर के एक मुशायरा में देखा। इस बज्म में उनको उनके चन्द हम-जमाअत खींच लाये थे और उन्होंने कह-सुनकर एक गजल भी इनसे पढ़वाई। उस वक्त तक लाहौर में लोग इकबाल से वाकिफ न थे। छोटी-सी गजल थी। सादा-से अलफाज, जमीन भी मुश्किल न थी। मगर कलाम में शोखी और बेसाख्तापन मौजूद था। बहुत पसन्द की गई। इसके बाद दो-तीन मर्तबा फिर इसी मुशायरा में उन्होंने गजल पढ़ी और लोगों को

मालूम हुआ कि एक होनहार शायर मैदान में आया है। मगर यह शोहरत पहले-पहल कालेजों के तुलबा और बाज ऐसे लोगों तक महदूद रही, जो तालीमी मशागल से ताल्लुक रखते थे। इतने में एक अदबी मजलिस कायम हुई, जिसमें मशाहीर शरीक होने लगे और नज्म व नसर के मजामीन की इसमें माँग हुई। शेख मुहम्मद इकबाल ने उसके एक जलसा में अपनी वह नज्म जिसमें 'कोह हिमाला' से खिताब है, पढ़ कर सुनाई। उसमें अंग्रेजी खयालात थे और फारसी बन्दिशें। इस पर खूबी यह कि वतन-परस्ती की चाशनी उसमें मौजूद थी। मजाके-जमाना और जरूरियाते वक्त के माफिक होने के सबब बहुत मकबूल हुई······।"

इकबाल ने गजल कहना स्कूल के जमाने ही में शुरू कर दिया था और शुरू में अपनी गजलें सुधार के लिए डाक द्वारा उस्ताद दाग के पास भेजना शुरू कीं। हजरत दाग ने शीघ्र ही इकबाल की प्रतिभा का अनुमान लगा लिया और दो चार गजलें देखने के बाद ही लिख दिया कि इनमें सुधार की गुंजायश नहीं है। दाग जैसे उस्ताद का यह कह देना एक नये शायर के लिए बहुत बड़ी बात थी। इससे इकबाल के मन में जो आत्म-विश्वास उत्पन्न हुआ, वह आजीवन उनकी शायरी का आधार बना रहा।

लेकिन समय अब तेजी से बदल रहा था। योरुप की राजनीति और विज्ञान ने हमारे विचार और चिन्तन को प्रभावित किया था और देश में राष्ट्रीय संघर्ष का युग था। इस नई परिस्थिति ने जो नई समस्याएँ और नए विचार प्रस्तुत किये थे, उन्हें गजल के माध्यम से व्यक्त करना सम्भव नहीं था। वक्त के इस तकाजे को महसूस करते हुए गालिब ने "कुछ और चाहिए वुसअत मिरे बयाँ के लिए" की बात कही थी। हाली ने इस संकेत को पा लिया और उसने "मुकद्दमा शेरो शायरी" लिखकर न सिर्फ उर्दू शायरी की पुरानी लीक के विरुद्ध विद्रोह का स्वर बुलन्द किया, बल्कि उसे नज्म का विस्तृत क्षेत्र भी प्रदान किया। हाली की नज्में यद्यपि कुछ हद तक सपाट रहीं और उनमें गजल के संगीत का समावेश उतना नहीं हो सका, जितना

कि होना चाहिये था, तथापि यह उर्दू शायरी में एक ऐतिहासिक मोड़ था और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाँति मौलाना हाली को उर्दू साहित्य में युग-परिवर्तन का श्रेय प्राप्त है।

शेख अब्दुल कादर ने जिस "अदबी मजलिस के कयाम" का उल्लेख किया है, वह भी इसी वक्त के तकाजा से स्थापित हुई थी, क्योंकि साहित्यिक और विचारक अब सिर्फ मुशायरों में गजलें सुनकर ही सन्तुष्ट नहीं होते थे, उन्हें विचार और चिन्तन के विकास के लिए एक विस्तृत क्षेत्र दरकार था। इस मजलिस में गजल के बजाय नज्में और नसर के लेख पढ़े जाते थे। इसी जरूरत को महसूस करते हुए शेख मुहम्मद कादिर ने "मखजन" नाम की मासिक पत्रिका निकाली, जिसमें नज्म, गजल के अलावा साहित्यिक लेख और कहानियाँ प्रकाशित होती थीं। उर्दू में यह इस ढंग की पहली और नई पत्रिका थी और चूँकि यह वक्त के तकाजों को पूरा करती थी, इसलिए शीघ्र ही लोकप्रिय और प्रसिद्ध हो गई और कोई पच्चीस-तीस साल तक बराबर निकलती रही। इकबाल की 'हिमाला' नाम की कविता इस पत्रिका के पहले अंक में प्रकाशित हुई थी।

इकबाल की मौलिक-प्रतिभा और सूझ-बूझ का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि स्यालकोट से लाहौर पहुँचते ही उन्होंने वक्त के तकाजा को समझ लिया और शीघ्र ही अपने चिन्तन को कविता की दिशा में मोड़ दिया। कमाल है कि इस नौजवान शायर के कलम से जो पहली कविता प्रस्फुटित हुई, उसमें अंग्रेजी शिक्षा द्वारा प्राप्त नए विचारों, राष्ट्रीय भावनाओं और प्राकृतिक निरीक्षण का समुचित एवं उत्कृष्ट सामंजस्य हुआ है। कविता में यद्यपि फारसी बन्दिशों का प्रयोग काफी हुआ है, तथापि उसमें पहाड़ी नदी-की-सी रवानी और मधुर संगीत निहित है और 'हिमालय' की महानता और सौन्दर्य के साथ-साथ देश-गौरव आँखों के सामने चित्रित हो जाता है। कविता का आरम्भ अत्यन्त नाटकीय ढंग से-यों होता है :

ऐ हिमाला ! ऐ फसीले किश्वरे हिन्दुस्ताँ—
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आस्माँ ।
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना रोजी के निशां,
तू जवाँ है गर्दिशे शामो सहर के दर्मियाँ ।।

एक जल्वा था कलीमे तूरे सीना के लिए
तू तजल्ली है सरापा चश्मे बीना के लिए ।।

इकबाल ने बचपन हिमालय की गोद में खेलते हुए बिताया था (स्यालकोट हिमालय से बहुत दूर नहीं है) । उसकी महानता, वैचित्र्य और सुन्दर दृश्यों को अपनी आँखों से देखा था । फिर जब स्यालकोट छोड़ा तो उन्हें लाहौर का वातावरण मिला, जो राष्ट्रीयता और देश-भक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत था । इस वातावरण में इकबाल की प्रतिभा का साहित्यिक विकास ही नहीं हुआ बल्कि उसे ऐतिहासिक दिशा भी मिली । उच्चकोटि की कविता क्या है और आज देश में उसका अभाव क्यों है, इस तथ्य को नौजवान शायर ने शुरू ही में समझ लिया था । 'मिर्जा गालिब' कविता इसी प्रारम्भिक काल की लिखी हुई है, जिसमें अपने मनोगत भाव को, उत्कण्ठा और अधीरता को इस प्रकार व्यक्त किया है :

लुत्फे गोयाई में तेरी हमसरी कोई नहीं,
हो तखय्युल का न जब तक फिक्रे कामिल हमनशीं ।
हाय ! अब क्या हो गई हिन्दुस्तां की सरजमीं,
आह ! ऐ नज़्ज़ारा आमोज़े निगाहे नुक्ता चीं ।।

गैसू-ए उर्दू अभी मिन्नत पज़ीरे शाना है ।
शमअ यह सौदाई-ए दिल सोज़ए-परवाना है ।।

कल्पना और सम्पूर्ण चिन्तन के सामंजस्य को समझते हुए इस नौजवान शायर ने वाकई उर्दू के गैसू संवारने का बीड़ा उठाया ।

इकबाल की शायरी का आरम्भ सन् १६०१ से होता है। यह न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि एशिया में राष्ट्रीय चेतना के नए उभार और नए मोड़ का युग था। देश-प्रेम राष्ट्रीयता का आधार है और देश से प्रेम उस वक्त तक सम्भव नहीं जब तक कि देश-सौन्दर्य, महानता और विशालता को समझ न लिया जाय। राष्ट्रीय उभार के प्रारम्भिक काल में इस महानता, विशालता और सौन्दर्य का जितना मधुर चित्रण इकबाल ने किया है, कोई दूसरा नहीं कर पाया। 'हिमाला' के बाद 'हिन्दुस्तानी बच्चों का गीत' उनकी एक प्रसिद्ध कविता है, उसका एक बन्द देखिये :

यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था,
सारे जहाँ को जिसने इल्मो-हुनर दिया था।
मिट्टी को जिसकी हक़ ने ज़र का असर दिया था,
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था।
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है॥

उन दिनों इकबाल ने बच्चों के लिए भी बहुत-सी कविताएँ लिखीं, क्योंकि देश का भविष्य भावी पीढ़ी पर ही निर्भर था। अगर उनके हृदय शुरू ही में स्वाधीनता और देश-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो जाते हैं तो फिर विदेशी शासक का कोई दमन अथवा प्रलोभन उन्हें स्वाधीनता-संग्राम के निडर सिपाही होने से नहीं रोक सकता। इनमें से अधिकांश कविताएँ लौंगफैलो और एमर्सन आदि विदेशी कवियों से प्रभावित होकर लिखी गई हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि हमारी देश-भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को दृढ़ बनाने में अंग्रेजी साहित्य का बड़ा हाथ है। इन भावनाओं को इकबाल ने अपनी सरल और मधुर भाषा में व्यक्त करके बड़ा काम किया। इससे जाने कितने बाल-कण्ठों से देश-भक्ति का स्वर गूँज उठा। "बच्चे की दुआ" कविता का यह शेर सुनिये :

हो मिरे दम से योंही मेरे वतन की ज़ीनत।
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत॥

देश-भक्ति, त्याग, सहानुभूति और क्रियाशीलता इन कविताओं का मुख्य विषय है। इनमें एक कविता परिन्दे की फरियाद बहुत ही प्यारी है। कहने को तो यह परिन्दे अर्थात् एक पक्षी की फरियाद है, जिससे चमन छूट गया है, जो पिंजड़े में बंद है, दरअसल इससे हर मानव हृदय में गुलामी की नफरत और आजादी की मुहब्बत पैदा होती है। यह कविता चौथी-पाँचवीं से दसवीं तक की पाठ्य-पुस्तकों में शामिल होती थी। आज से तीस-बत्तीस साल पहले जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो मुझे याद है कि यह कविता स्कूल के लगभग हर लड़के को याद थी, जो गा सकता था, सस्वर गाता था और जिसे गाना नहीं आता था वह योंही शौक से गुनगुनाता था। शैली इतनी सहज और सरल है कि कविता कण्ठस्थ करने में कुछ भी प्रयास नहीं करना पड़ता। वह आप ही आप जबान पर चढ़ जाती है :

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना।
वे बाग़ की बहारें, वह मेरा आशियाना॥
आज़ादियाँ कहाँ वे अब अपने घोंसले की।
अपनी खुशी से आना अपनी खुशी से जाना॥
लगती है चोट दिल पर आता है याद जिस दम।
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कराना॥
वह प्यारी-प्यारी सूरत वह कामनी-सी मूरत।
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना॥
आती नहीं सदायें उसकी मिरे क़फस में।
होती मिरी रिहाई ए काश! मेरे बस में॥

मानव भावनाओ और प्राकृतिक सौन्दर्य का कितना सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है। यही सुन्दर सम्मिश्रण उनके "तराना-ए-हिन्दी" में है, जो देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँज उठा, जो स्वाधीनता संग्राम के दिनों में हमारा राष्ट्रीय-गान बना रहा, जो कांग्रेस की स्टेजों पर से गाया जाता रहा और जो रेडियो आदि पर आज भी उसी चाव से गाया जाता है :

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसकी वह गुलस्ताँ हमारा।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना,
हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

धार्मिक भेद-भाव और साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता और उन्नति में सदा से बाधक रही है। इकबाल ने इस भेद-भाव को दूर करने का सचेत प्रयास किया। उनकी 'नया शिवाला' कविता इस बात का उज्ज्वल प्रमाण है :—

सच कह दूँ ऐ ब्रह्मण ! गर तू बुरा न माने,
तेरे सनमकदे के बुत हो गये पुराने।
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा,
जंगो जदल सिखाया वायज़ को भी खुदा ने ।।
तंग आके मैंने आखिर दैरो-हरम को छोड़ा,
वायज़ का वअज़ छोड़ा, छोड़े तिरे फिसाने।
पत्थर की मूर्तों में समझा है तू खुदा है,
ख़ाके वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है ।।

यह स्वर इसीलिए इतना सबल और स्वस्थ है कि विशुद्ध मानव हृदय से स्फुटित हुआ है। धर्म के नाम पर मनुष्य से घृणा की जाय, इकबाल इसे धार्मिकता या पवित्रता नहीं मानते, बल्कि घृणा करने वाले को घृणित समझते हैं :

अजब वायज़ की दींदारी है यारब,
अदावत है उसे सारे जहाँ से।

इस धर्मान्ध वायज से अपनी घृणा को यहाँ तक ले गये हैं :

वायज़ सबूत लाये जो मै के जवाज़ में,
इक़बाल को यह ज़िद है कि पीना भी छोड़ दे।

यह शुरू की शायरी है, जब दिल में जवानी का जोश और बलवला था, जब इकबाल अपने आप को, संसार को, समाज को और उसकी समस्याओं को समझ लेना चाहता था। जिज्ञासा से व्यग्र वह खोज के पथ पर आगे बढ़ रहा था, लेकिन न दिशा स्पष्ट थी और न मंजिल सामने थी। इस समय मन की जो अवस्था थी उसका विश्लेषण खुद शायर ने यों किया है :

ढूँढ़ता फिरता हूँ ऐ इक़बाल अपने आपको,
आप ही गोया मुसाफिर आपही मंजिल हूँ मैं।

इसी धुन में वह सन् १९०५ में योरुप रवाना हो गये।

इस समय तक इकबाल एम० ए० पास कर चुके थे और गवर्नमेंट कालेज में दर्शन पढ़ाते थे। लेकिन उन्हें अपना ज्ञान अधूरा दिखाई देता था अतएव उन्होंने अध्यापक बने रहने के बजाय विद्यार्थी बने रहना पसन्द किया। इकबाल लन्दन पहुँच कर कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में दर्शन पढ़ने लगे। मन में बहुत-सी दुविधाएँ थीं, सोचते थे क्या करूँ क्या न करूँ ? योरुप में वह तीन साल तक रहे, इस बीच में सोचा-समझा बहुत कुछ और लिखा बहुत थोड़ा। एक समय तो उनके मन में यह भी विचार आया कि शेर कहना व्यर्थ समय नष्ट करना है ; इसलिए शेर कहना छोड़ दूँ और समस्त शक्ति ऐसे काम में लगाऊँ, जिससे पिछड़े हुए देश और राष्ट्र का भाग्य बदल जाय।

शायद वह शायरी करना सचमुच ही छोड़ देते, लेकिन सर अब्दुल कादर (जो उन दिनों वहीं थे) ने और आरनल्ड ने उन्हें समझाया कि शेर कहना समय नष्ट करना नहीं। यह तो तुम्हारे पास एक ऐसा गुण है, जिससे तुम देश और राष्ट्र की सचमुच सेवा कर सकते हो।

कैम्ब्रिज में दर्शन की परीक्षा पास करके इकबाल जर्मनी चले गये और वहाँ उन्होंने ईरान के दर्शन पर एक पुस्तक लिखी, जिस पर म्यूनिख यूनि-वर्सिटी ने उन्हें डाक्टर की उपाधि दी। जर्मनी से लौटकर लन्दन में बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। इन दिनों आरनल्ड लन्दन यूनिवर्सिटी में अरबी के

प्रोफेसर थे। वह अवकाश प्राप्त करके गये तो इकबाल छः महीने तक उनके स्थान पर अरबी पढ़ाते रहे।

पढ़ने-पढ़ाने के अतिरिक्त महत्वपूर्ण बात यह है कि इकबाल ने योरुप में जो कुछ देखा, उसने उनकी पुरानी मान्यताओं ही को बदल दिया। पूँजीवाद इस समय पतन और ह्रास के युग में दाखिल हो चुका था। इसकी सभ्यता, जिसने कभी रूढ़ धार्मिकता और अन्धविश्वास के स्थान पर विज्ञान और बुद्धिवाद का प्रसार करके मनुष्य को बहुत-से मानसिक बन्धनों से मुक्त किया था, अब भीतर से खोखली हो चुकी थी। योरुप का प्रत्येक देश साम्राज्यवाद के विस्तार में लगा हुआ था और उपनिवेशों के लिए अन्धी होड़ चल रही थी। भीतर ही भीतर राजनैतिक गठजोड़ चल रहे थे, कथनी और करनी में धरती-आकाश का अन्तर था और हर प्रकार की नैतिकता उठाकर ताक पर रख दी गई थी। राष्ट्रवाद और देशभक्ति को लूट-खसोट और पिछड़े हुए देशों को गुलाम बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था। बड़ी शक्तियाँ एक-दूसरे से जूझ रही थीं, साधारण व्यक्ति किंचन मात्र होकर रह गया था। बुद्धिजीवी मध्यम वर्ग विशेष रूप से व्यग्र और विक्षिप्त था। बर्गसाँ और नीत्शे का दर्शन इन्हीं परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ था।

एक ओर यह दर्शन था और दूसरी ओर ईरान का सूफीवाद था। इकबाल ने दोनों का गहरा अध्ययन किया था, पर इन दर्शनों की ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि को और उनके भौतिक आधार को नहीं समझा था। इसलिए विचार और वस्तुस्थिति में सामंजस्य स्थापित नहीं हो सका। इकबाल के मस्तिष्क में जो प्रश्न गूँज रहे थे, वे प्रश्न ही बने रहे, कोई भी दर्शन उनका उत्तर नहीं दे सका। अतएव इकबाल देश से जो व्यग्र मन लेकर आए थे, वह यहाँ और भी व्यग्र हो उठा :

लेके आया है जहाँ में आदते सीमाब तू,
तेरी बेताबी के सदक़े है अजब बेताब तू।

इस समय जो मनोस्थिति थी, वह उनकी "आशके हरजाई" कविता में भली-भाँति व्यक्त हुई है। जिज्ञासा है, खोज है और फिर अतृप्ति है। दो-तीन शेर देखिये :

सच अगर पूछे तो अफलासे तख़य्युल है वफ़ा,
दिल में हरदम इक नया महशर बपा रखता हूँ मैं।
फ़ैज़े साक़ी शबनम-आसा, जर्फ़ दिल दरिया तलब,
तश्ना-ए-दायम हूँ, आतश-ज़ेर-पा रखता हूँ मैं।
मुझको पैदा करके अपना नुक्ताची पैदा किया,
नक़्श हूँ अपने मुसव्विर से गिला रखता हूँ मैं।

जब पूँजीवादी सभ्यता और दर्शन से तृप्ति न हुई तो मन को प्राकृतिक दृश्यों से बहलाना शुरू किया। 'एक शाम', 'तनहाई' और 'फिराक' कविताएँ इसी प्रयत्न में लिखी गई हैं। नेकर नदी के किनारे चाँदनी रात का निस्तब्ध दृश्य देखते हुए यह अन्तिम शेर :—

ऐ दिल तो भी ख़ामोश हो जा,
आग़ोश में ग़म को ले के सो जा।

या फिर 'तनहाई' का यह शेर

किस शै की तुझे हविस है ऐ दिल,
कुदरत तिरी हम-नफ़स है ऐ दिल।

जब पुरानी मान्यताएँ टूट जायें, नई बन न पायें और सामने कोई आदर्श न हो तो एक निष्ठावान कवि और लेखक के लिए लिखना सम्भव नहीं होता। इकबाल ने भी अपने आपको खामोश कर लिया। लेकिन मन में जो व्यग्रता थी, जो ज्वाला धधक रही थी, उसका शान्त हो जाना सम्भव नहीं था। यह खामोशी ऊपरी और अस्थाई थी और अपने भीतर तूफान को छिपाए हुए थी :

ज़माना देखेगा जब मिरे दिल से महश्र उट्ठेगा गुफ्तगू का,
मिरी ख़मोशी नहीं है गोया मज़ार है हर्फ़ आरज़ू का।

इकबाल सन् १९०८ में विलायत से लौटकर हिन्दुस्तान आये और गवर्नमेंट कालेज में पढ़ाने लगे। यहाँ से उन्हें पाँच सौ रुपये मासिक तनख्वाह मिलती थी और वकालत करने की भी इजाजत थी।

इसी बीच में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई और मुसलमानों के लिए अलग प्रतिनिधित्व माँगा जाने लगा। इसके अतिरिक्त मुस्लिम बुद्धिजीबियों में एक खिलाफतवादी ग्रुप पैदा हो गया था, जिसका खिलाफत में विश्वास था और जो परम्परा के लिए इस्लामी देशों की ओर देखता था। वह हिन्दुस्तान को अपना देश और उसकी परम्परा को अपनी परम्परा नहीं समझता था। अंजुमने हिमायते इस्लाम लाहौर ऐसे ही बुद्धिजीवियों का संगठन था। इकबाल की इस संगठन में विशेष दिलचस्पी थी और वह अंजुमने हिमायते इस्लाम के वार्षिक अधिवेशनों में कविता पढ़ा करते थे।

इकबाल ने योरुप में जो कुछ देखा था, उसके कारण देश-भक्ति से उनका विश्वास उट गया था। उनका खयाल था कि योरुप के साम्राज्यवादियों ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए 'राष्ट्रवाद' और 'देश-भक्ति' का चोला ओढ़ रखा है और उन्होंने भोली-भाली जनता को भ्रम में डालने के लिए 'वतन का नया बुत'—नया देवता खड़ा किया है। 'देश' की सीमाएँ निर्धारित करके उन्होंने मानवता को राष्ट्रों में बाँट दिया है और शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर राष्ट्रों को अपना गुलाम बना रहे हैं। इसके विपरीत मजहब और विशेषकर इस्लाम इन सीमाओं को नहीं मानता। वह हर प्रकार के भ्रमों और अन्ध-विश्वासों—अर्थात् बुतों को तोड़कर दुनिया भर के मनुष्यों में एकता और भ्रातृ-भाव स्थापित करता है :

इन ताज़ा खुदाओं में बड़ा सबसे वतन है,
जो पैरहन उसका है वह मज़हब का कफ़न है।

इसलिए इकबाल मुसलमान को कहते हैं कि वह इस देश-भक्ति के धोखे में न आये :

यह बुत के तराशीदए-तहज़ीबे नबी है,
ग़ारतगरे काशानए-दीने नबवी है।
बाज़ू तिरा तहज़ीब की कुव्वत से कवी है,
इस्लाम तिरा देस है तू मुस्तफ़वी है।।
नज्ज़ार-रा देरीना ज़माने को दिखा दे,
ए मुस्तफ़वी खाक में इस बुत को मिला दे।

इकबाल ने जिस जोश मे कभी 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा' कहा था (और मैं समझता हूँ कि भावुकता में बहकर गलत कहा था क्योंकि अपना देश अच्छा सही, पर सारे जहाँ से अच्छा कहने मे एक मिथ्या धारणा उत्पन्न होती है), उसी जोश से अब इस भाव को रद्द करके 'तरानए हिन्दी' के बजाय 'तरानए मिल्ली' लिखा :

चीनो अरब हमारा, हिन्दुस्ताँ हमारा,
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहाँ हमारा।

जब इस्लाम देश ठहरा तो उसे सारी दुनिया में फैलाने और जहाँ भर को एक वतन बना देने ही को इकबाल ने जीवन की विषमताओं का एकमात्र हल समझा।

लेकिन इतिहास की दिशा इसके उलट थी। सबसे बड़ा इस्लामी साम्राज्य तुर्की चुरमुरा कर टूट रहा था। एक अर्सा से रूस, जर्मनी, फ्रांस और इंगलैंड की आँखें उस पर लगी हुई थीं। इकबाल के हिन्दुस्तान लौटने के दो-ढाई साल बाद ही इटली ने तुर्की से अपना द्वीप सिसली छीन लिया। इसके तुरन्त बाद योरुप के बल्कान देशों बल्गारिया, रोमानिया आदि ने जो मुद्दत से तुर्की के आधीन थे, विद्रोह की पताका लहराई और घोर संघर्ष के बाद बरसों की गुलामी से मुक्ति प्राप्त की। दुनिया भर के मुसलमान तुर्की के सुल्तान को

अपना खलीफा मानते थे और इकबाल ने भी अब इस्लाम ही को अपना देश और राष्ट्र समझ लिया था, इसलिए वह बल्कान के लोगों की आजादी पर खुश होने के बजाय विक्षुब्ध हो उठे और खुदा से 'शिकवा' किया कि तेरे मुसलमान जिन्होंने संसार में एकेश्वरवाद के झण्डे गाड़े, आज इस प्रकार परास्त क्यों हो रहे हैं ? वे दरिद्र और पिछड़े हुए क्यों हैं ? अगर वे न रहेंगे तो दुनिया में तुम्हारा नाम लेने वाला कौन रहेगा ?

बनी अग़यार की अब चाहने वाली दुनिया,
रह गई अपने लिए एक ख़याली दुनिया,
हम तो रुख़सत हुए औरों ने सम्भाली दुनिया,
फिर न कहना हुई तौहीद से ख़ाली दुनिया,
हम तो जीते हैं कि दुनिया में तिरा नाम रहे,
कहीं मुमकिन है कि साक़ी न रहे जाम रहे ।।

यह कविता अंजुमने हिमायते इस्लाम के जलसा में पढ़ कर सुनाई गई थी और कहते हैं कि श्रोताओं की आँखों से बे-अख्तियार आँसू बह निकले थे । 'जवाबे-शिकवा' भी इसी सिलसिला की कड़ी है । इकबाल मुसलमानों से कहते हैं कि अपने आपको पहचानो, दुनिया में जो कुछ है वह सब तुम्हारे ही लिए है, दिल से हर प्रकार का भय निकाल दो । दरिया में कूद पड़ो, लहरों से लड़ो और चट्टानों से टकरा जाओ :

दश्त तो दश्त हैं, दरिया भी न छोड़े हमने,
बहरे जुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हमने ।

धीरे-धीरे इकबाल ने उर्दू में लिखना बिल्कुल ही छोड़ दिया और सिर्फ फारसी में लिखने लगे । कारण यह कि वह मुसलमानों में आत्म-विश्वास और स्वाभिमान की भावना जगाकर उनमे एकता और कर्मठता लाना चाहते थे और फारसी ऐसी भाषा थी जो लगभग सभी इस्लामी देशों में समझी जाती थी । दूसरे इकबाल के जो अब दार्शनिक विचार थे उन्हें फारसी में

व्यक्त करना सहज था। फारसी में उन्होंने कविता की चार किताबें 'इसरारे खुदी', 'रमूजे खुदी', 'पयामे मशरिक' और 'जावेद नामा' लिखीं। इनका मुख्य स्वर यह है कि मुसलमान भाग्य के चक्कर में न पड़ें, स्वाभिमान (खुदी) को बुलन्द करके अपनी किस्मत आप बनायें। यही भाव उर्दू के एक शेर में इस प्रकार व्यक्त हुआ है :

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है ?

इकबाल आदर्शवादी थे, विचारों के अलग अस्तित्व और मनुष्य के चरित्र-निर्माण में उनकी असाधारण शक्ति और प्रभाव में उनका विश्वास था, इसलिए वह मुसलमानों को उनके उज्ज्वल अतीत की—खिलाफत के वैभव की-याद दिलाकर उन्हें फिर से शूरवीर और पराक्रमी बना देना चाहते थे। उन्होंने वैज्ञानिक ढंग से कभी यह नहीं सोचा था कि विचार भौतिक परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं। महान् साम्राज्यों और राष्ट्रों के उत्थान और पतन की तरह धर्मों के उत्थान और पतन के भी भौतिक और ऐतिहासिक कारण हैं। मुसलमानों के उत्थान और पतन के भी भौतिक और ऐतिहासिक कारण थे। सिर्फ पुराने वैभव और स्वाभिमान की याद दिलाने ही से पुराना वैभव फिर लौट आना सम्भव है, इस बात में पहले-पहल इकबाल को भी सन्देह था। उनके मन में भी यह प्रश्न उठता था कि बीता हुआ युग फिर लौटकर नहीं आ सकता। अपनी कविता "मुस्लिम" में जो सन् १९१२ में लिखी गई थी, वह महसूस करते हैं :

अहले महफिल तिरा पैग़ामे कुहन सुनते नहीं।

इस सन्देह के मन में उठते ही आधुनिक चेतना बोल उठती है :

जिन्दा फिर वह महफ़िले देरीना हो सकती नहीं।
शमअ से रोशन शबे दोशीना हो सकती नहीं।

लेकिन उनका सूफीवाद अपने ही भीतर की इस आवाज को चुप कराने के लिए उच्च स्वर में बोल उठता है :—

हाँ यह सच है, चश्म बर अहदे कुहन रहता हूँ मैं,
अहले महफ़िल से पुरानी दास्ताँ कहता हूँ मैं।
यादे अहदे रफ्ता मेरी खाक को अक्सीर है,
मेरा माज़ी मेरे इस्तक़बाल की तफ़सीर है।।

सामने रखता हूँ इस दौरे नशात-अफ़ज़ा को मैं,
देखता हूँ दौश के आईने में फ़रदा को मैं।

अतएव इकबाल ने अतीत के गीत गाना जारी रखा और इस्लाम के पुनरुत्थान में पीड़ित मानवता की मुक्ति को अपना विश्वास बना लिया। यह सिर्फ इकबाल ही की बात नहीं थी, कांग्रेसी नेता भी अतीत के वैभव और रामराज्य ही की बात करते थे और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी 'भारत भारती' में अतीत ही का गुण गान किया है। राष्ट्रवाद अपने प्रारम्भिक काल में अपने पुराने गौरव और परम्परा की ओर देखा ही करता है। लेकिन पुनरुत्थान की इस भावना से साम्प्रदायिकता की भावना भी पनपी, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू और मुसलमानों ने अलग-अलग दिशाओं में देखना शुरू किया।

इकबाल ने दो-ढाई साल बाद ही गवर्नमेंट कालेज की मुलाजमत से इस्तीफा दे दिया और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगा। सन् १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ और उसके परिणामस्वरूप रूसमें महान् मजदूर क्रान्ति हुई। जिसमें इकबाल ने मजदूर की बदलती हुई किस्मत को देखा :—

नस्ल, क़ौमीयत, कलीसा, सल्तनत, तहज़ीब, रंग,
"ख्वाजगी" ने खूब चुन-चुनकर बनाये मस्करात।
कट मरा नादाँ ख्याली देवताओं के लिए,
सुक्र की लज़्ज़त में तो लुटवा गया नक्दे हयात।।

मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार,
इन्तहाये सादगी में खा गया मज़दूर मात।
उठ कि अब बज़्मे जहाँ का और ही अन्दाज़ है,
मशरिक़ो मग़रिब में तेरे दौर का आगाज़ है।

यह ठीक है कि शासक और शोषक वर्ग ने श्रमजीवी जनता में जाति, धर्म और रंगभे आदि के नाना भ्रम पैदा कर रखे थे, जो उन्हें संगठित होने से रोक रहे थे। रूस की महान् क्रान्ति इन भ्रमों को सदा के लिए खत्म करने वाली थी, इसीलिए इकबाल ने हृदय से उसका स्वागत किया :

आफ्ताबे ताज़ा पैदा बत्ने गेती से हुआ,
आस्माँ डूबे हुए तारों का मातम कब तलक।

लेकिन इस स्वागत के बावजूद उन्होंने इस 'आफताबे ताजा'— नए सूर्य से मनोगत अन्ध-विश्वास को खत्म करने के लिए काफी प्रकाश ग्रहण नहीं किया और वह खुद इसके बाद भी डूबे हुए तारों का मातम करते रहे।

इकबाल सन् १९२६ में लाहौर के मुस्लिम हल्का से पंजाब कौंसिल के सदस्य निर्वाचित हुए। इस बीच में मुसलमानों की पुरानी संस्था मुस्लिम लीग फिर से संगठित हुई (जो सन् १९१६ के बाद खत्म हो गई थी) और सन् १९३० में इसका वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ, जिसके अध्यक्ष इकबाल चुने गये। चूँकि अब वह इस्लाम को देश और मजहब को कौम की बुनियाद समझते थे, इसलिए अध्यक्ष-पद से अपने भाषण में उन्होंने जो बातें कहीं उससे पाकिस्तान के निर्माण का भाव उत्पन्न होता है।

इकबाल को अब अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। प्रोफेसर निकलसन ने आपके फारसी महाकाव्य "इसरारे खुदी" का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। इस ख्याति को देखते हुए अंग्रेजी सरकार ने उन्हें सर की उपाधि प्रदान की और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ने उन्हें अपने दार्शनिक विचारों पर भाषण करने के लिए निमन्त्रित किया। इंगलैंड के इस दौरा से लौटते हुए

उन्होंने रोम में मुसोलिनी से भी भेंट की और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कविता लिखी। इससे पहले वह लेनिन और मार्क्स पर भी कविताएँ लिख चुके थे। इसका अर्थ यह है कि वह हरएक कर्मशील व्यक्ति का स्वागत करते थे और अपने आदर्शवादी चिन्तन के कारण उन्हें इतिहास के निर्माता समझते थे। मार्क्स, लेनिन और मुसोलिनी के पीछे जो सामाजिक शक्तियाँ थीं, उन्हें वह नहीं समझ पाये थे। यही कारण है कि उनके चिन्तन में असंगतियाँ मिलती हैं। वह इस्लाम का पुनरुत्थान भी चाहते हैं और रूस की मजदूर क्रान्ति का स्वागत भी करते हैं। उनकी कविता में फासिस्तवाद का स्वर भी मिलता है और शोषित जनता के प्रति सहानुभूति भी प्रकट होती है। उन्होंने जन-क्रान्ति-लोक-तन्त्र की चाप सुनी और हर नक्शे-कुहन (प्रत्येक पुराने चिन्ह) को मिटाने की बात कही, लेकिन अपने अपूर्ण चिन्तन के कारण खुद ही पुराने चिन्हों में कल्पना का रंग भर कर उन्हें उभारा और निस्संदेह उनके काव्य से देश को विभाजित करने वाली साम्प्रदायिकता को बल मिला।

इन असंगतियों के बावजूद कहना पड़ेगा कि इकबाल न तो फासिस्टवादी थे और न साम्प्रदायिकतावादी थे। जब वह इस्लाम का पुनरुत्थान चाहते थे और मुसलमानों को सम्बोधित करके लिखते थे, तब भी उन्होंने रामचन्द्र, स्वामी रामतीर्थ और गुरू नानक पर कविताएँ लिखी हैं। मुसलमान से प्रेम करते थे, लेकिन विधर्मी के लिए उनके मन में घृणा नहीं थी। हमें उनके प्रारम्भिक काल की एक कविता "जुहद और रिन्दी" याद आती है। इस कविता में उनका पड़ौसी मौलवी इस बात पर कुढ़ता है कि इकबाल हिन्दू को काफिर नहीं समझता और मुसलमान हो के राग को इबादत में शामिल समझता है :

मजमूआ-ए-इज़दाद है, इक़बाल नहीं है,
दिल दफ्तरे हिकमत है, तबीयत ख़फ़क़ानी।

उन्होंने उम्र भर इस मौलवी को अपना पड़ोसी और भावना को बुद्धि का संरक्षक बनाये रखा, जिसके कारण वह अपने चिन्तन की असंगतियों को हल नहीं कर सके और सदा ही मजमूआ-ए इजदाद (असंगति-संग्रह) बने रहे। अतएव उन्होंने अपने पड़ौसी मौलवी को जो उत्तर दिया था, उसे हम आज भी दोहरा सकते हैं :

इक़बाल भी इक़बाल से आगाह नहीं है,
कुछ इसमें तमस्खर नहीं, वअल्लाह नहीं है।

२१ अप्रेल सन् १६३८ को लाहौर में इकबाल का देहान्त हुआ तो सारे देश में उनका शोक मनाया गया।

सन् १६३० के आस-पास जब हमारे देश में समूचे तौर पर आदर्शवाद की सीमाएँ टूट रही थीं, इकबाल ने फिर उर्दू में लिखना शुरू किया। बाँग-ए-दरा के बहुत अर्सा बाद उर्दू कविता के उनके दो और संग्रह "जर्बे कलीम" अर्थात् आधुनिक व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध की घोषणा और "बाल-ए जब्रील" उनके जीवन ही में प्रकाशित हुए। इन दोनों में बाले जब्रील का महत्त्व अधिक है क्योंकि इसमें उन्होंने मुसलमानों के बजाय दरिद्र और पीड़ित मानवता को सम्बोधित किया है और 'उट्ठो मिरी दुनिया के गरीबों को जगा दो' का स्वर सुनाई देता है।

सैद्धान्तिक भेद चाहे कुछ भी हो, मगर इकबाल को महान् कवि मानने से कोई भी इनकार नहीं कर सकता। भाषा और विचार में जो सामंजस्य इकबाल के यहाँ है वह किसी दूसरे शायर में कम मिलेगा। जो शब्द जहाँ रख दिया है, वह इतना फिट बैठा है कि नगीने के सदृश वहीं जम गया है और उठाये नहीं उठता। यह दूसरी बात है कि जब देश-भक्ति और राष्ट्र के बारे में उनके विचार बदल गये थे तो उनकी उर्दू शायरी में फारसी और अरबी का प्रयोग अधिक होने लगा और उनके प्रतीक और उपमाओं को भी सिर्फ

वही व्यक्ति समझ पाता है जो मुस्लिम धर्म, उसकी परम्परा और उसके इतिहास से परिचित है, लेकिन इससे उनकी कला में कोई अन्तर नहीं आया। उनकी सरल और सुबोध कविता जो देश-भक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत है, बाँग-ए-दरा ही में मिलती है और उर्दू में वही उनकी सर्वोत्तम कविता है। हम बाँग-ए-दरा हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए देवनागरी लिपि में समुचित अर्थों और व्याख्या के साथ प्रस्तुत करते हैं।

नवीन शाहदरा, दिल्ली
१२–१–६०

हंसराज रहबर

बाँगे-दरा

भाग १

(…………१६०५ तक)

हिमाला

ऐ हिमाला, ए फ़सीले-किश्वरे-हिन्दोस्ताँ[१],
चूमता है तेरी पेशानी[२] को झुककर आस्माँ,
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना-रोज़ी[३] के निशाँ
तू जवाँ है गरदिशे-शामो-सहर[४] के दरमियाँ,
एक जलवा था कलीमे-तूरे-सीना[५] के लिए,
तू तजल्ली[६] है सरापा[७], चश्मे-बीना[८] के लिए।

इम्तिहाने-दीदा-ए-ज़ाहिर[९] में कोहिस्ताँ है तू,
पास्बाँ[१०] अपना है तू, दीवारे-हिन्दुस्ताँ है तू,
मतला-ए-अव्वल[११], फ़लक[१२] जिसका हो वह दीवाँ है तू
सूए-खलवत-गाहे-दिल[१३] दामन कश[१४] इन्साँ है तू,
बर्फ ने बाँधी है दस्तारे-फजीलत[१५] तेरे सर,
खंदा-ज़न[१६] है जो कुलाहे-महरे-आलमताब[१७] पर।

तेरी-उम्रे-रफ्ता की इक आन है अहदे-कुहन[१८],
वादियों में हैं तिरी काली घटायें खेमाज़न[१९]—,
चोटियाँ तेरी सुरय्या[२०] से हैं सरगमे सुखन[२१],
तू जमीं पर और पहना-ए-फ़लक[२२] तेरा वतन,
चश्मा-ए-दामन[२३] तिरा आयना-ए-सय्याल[२४] है,
दामने-मौजे-हवा जिसके लिए रूमाल है।

१. हिन्दोस्तान देश २. माथा ३. बुढ़ापा ४. सुबह शाम की गति ५. कलीम, हजरत मूसा का नाम, तूर, वह पहाड़ जिस पर खुदा ने मूसा को जलवा दिखाया था। ६. प्रकाश ७. सिर से पाँव तक ८. देखने वाली आँख ९. प्रत्यक्ष रूप में १०. रखवाला ११. गजल का पहला शैर १२ आकाश १३. मन के एकान्तवास की ओर १४. इंसान का दामन खींचने वाला १५. श्रेष्ठता की पगड़ी १६. व्यंग्य करना १७. दुनिया को प्रकाशित करने वाले सूरज की टोपी पर १८. प्राचीन काल १९. खेमा लगाए हुए २०. सप्त ऋषि २१. बात चीत में मग्न २२. आकाश का विस्तार २३. दामन का स्रोत २४. पिघला हुआ आयना।

अब्र के हाथों में रहवारे-हवा[१] के वास्ते,
ताज़याना[२] दे दिया बर्के-सरे कोहसार[३] ने,
ऐ ! हिमाला कोई बाजी-गाह[४] है तू भी जिसे,
दस्ते-कुदरत ने बनाया है अनासिर[५] के लिए,
हाय ! क्या फ़र्ते-तरब[६] में झूमता जाता है अब्र[७],
फ़ीले-बे-ज़ंजीर[८] की सूरत उड़ा जाता है अब्र।

जुम्बिशे-मोजे-नसीमे-सुबह[९] गहवारा बनी,
झूमती है नश्शा-ए-हस्ती[१०] में हर गुल की कली,
यों जुबाने-बर्ग[११] से गोया है उसकी खामुशी,
दस्ते-गुलचीं की झटक मैंने नहीं देखी कभी,
कह रही है मेरी खामोशी ही अफ़साना मिरा,
कुंजे-खलवत-खाना-ए-कुदरत[१२] है काशाना मिरा।

आती है नद्दी फ़राजे-कोह[१३] से गाती हुई—
कोसरो-तस्नीम[१४] की मौजों को शर्माती हुई,
आयना सा शाहिदे-कुदरत[१५] को दिखलाती हुई,
संगे-रह[१६] से गाह बचती गाह टकराती हुई,
छेड़ती जा इस इराके-दिल-नशीं[१७] के साज़ को,
ऐ, मुसाफ़िर ! दिल समझता है तिरी आवाज़ को।

---

१. हवा का घोड़ा २. कोड़ा ३. पहाड़ की चोटी की बिजली ४. खेल का मैदान ५. तत्त्व ६. उल्लास की अधिकता ७. बादल ८. बिना जंजीर के हाथी ९. प्रातःकाल की हवा की लहर १०. अस्तित्व का नशा ११. पत्ते की जुबान १२. प्रकृति के एकान्तवास का कोना १३. पहाड़ की ऊँचाई १४. स्वर्ग के दो स्रोत १५. प्रकृति की प्रेमिका १६, मार्ग का पत्थर ४०. मन को मोह लेने वाला राग।

लैला-ए-शब[1] खोलती है आके जब-जुल्फे-रसा[2],
दामने-दिल खींचती है आवशारों[3] की सदा[4],
वह खमोशी शाम की जिस पर तकल्लुम[5] हो फ़िदा
वह दरख़तों पर तफ़क्कुर[6] का समाँ छाया हुआ,
काँपता फिरता है क्या रंगे-शफ़क़[7] कोहसार पर,
खुशनुमा लगता है यह ग़ाज़ा तिरे रुख़सार पर।

ऐ हिमाला ! दास्ताँ उस वक्त की कोई सुना,
मसकने-आबा-ए-इंसाँ[8] जब बना दामन तिरा,
कुछ बता उस सीधी-सादी जिंदगी का माजरा,
दाग़ जिस पर ग़ाज़ा-ए-रंगे-तकल्लुफ़ का न था,
हाँ, दिखादे ऐ तसव्वुर फिर वह सुबहो-शाम तू,
लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे-अय्याम[9] तू।

१. रात की लैला २. लम्बे केश ३. जलपात ४. आवाज ५. सम्भाषण ६. चिन्तन ७. उषा की लालिमा ८. मनुष्य के पूर्वजों के रहने का स्थान ९. जमाने की गति।

गुले-रंगीं[1]

तू शनासा-ए-ख़राशे-उक़दा-ए-मुश्किल[2] नहीं,
ऐ ! गुले-रंगीं तिरे पहलू में शायद दिल नहीं,
ज़ेबे-महफ़िल[3] है शरीके-शोरिशे-महफ़िल[4] नही,
यह फ़रागत[5] बज़्मे-हस्ती[6] में मुझे हासिल नहीं,
इस चमन में मैं सरापा सोजो-साजे[7] आर्ज़ू,
और तेरी जिंदगानी बेगुदाज़े[8] आर्ज़ू ।

तोड़ लेना शाख़ से तुझ को मिरा आईं[9] नहीं,
यह नज़र ग़ैर अज़ निगाहे-चश्मे-सूरत-बीं[10] नहीं,
आह ! यह दस्ते जफ़ा जू[11] ऐ गुले-रंगीं नहीं,
किस तरह तुमको यह समझाऊँ कि मैं गुलचीं नहीं,
काम मुझको दीदा-ए- हिक्मत[12] के उलझेड़ों से क्या,
दीदा-ए-बुलबुल से मैं करता हूँ नज़्ज़ारा तिरा ।

१. रंगीन फूल २. कठिन समस्या को हल करने की वेदना से परिचित ३. महफिल की सजावट ४. दुनिया की हलचल में शामिल ५. अवकाश ६. दुनिया ७. अभिलाषा का विकलता ८. कांक्षा के स्वाद से रहित ९. दस्तूर १०. रूप देखने वाली आँख के अतिरिक्त ११. अत्याचारी हाथ १२. दार्शनिक आँख ।

सौ जुबानों पर भी खामोशी तुझे मंजूर है,
राज़ वह क्या है तिरे सीने में जो मस्तूर[1] है,
मेरी सूरत तू भी इक बर्गे-रयाज़ो[2] तूर है,
मैं चमन से दूर हूँ तू भी चमन से दूर है,
मुतमईन है तू, परेशां मिस्लेबू[3] रहता हूँ मैं,
ज़ख्मी-ए-शमशीरे-ज़ौके-जुस्तजू[4] रहता हूँ मैं।

यह परेशानी मिरी सामाने-जमियत[5] न हो,
यह जिगर[6] सोज़ी चिराग़े-खाना-ए-हिकमत[7] न हो,
नातबानी[8] ही मिरी सरमाय-ए-कुव्वत[9] न हो,
रश्के-जामे-जम[10] मिरा आईना-ए-हैरत न हो,
यह तलाशे-मुसलसिल[11], शम्ए-जहां[12] अफ़रोज़ है,
तौसने-इद्राके-इन्सां[13] को खराम-आमोज़[14] है।

१. छिपा हुआ २. नूर के बाग का पत्ता ३. सुगन्ध की भाँति ४. जिज्ञासा की तलवार का घायल ५. संतोष की सामग्री ६. वेदना, जलन ७. बुद्धि के घर का चिराग ८. दुर्बलता ९. शक्ति की पूंजी १०. जमशेद के प्याले को शर्माने वाला ११. लगातार खोज १२. दुनिया को प्रकाशित करने वाली समझ १३. समझ का अश्व १४. चाल सिखाने वाला।

अहदे-तिफ़ली[1]

वे दयारे-नो जमीनो-आस्माँ[2] मेरे लिए,
बुस्अते-आग़ोशे-मादर[3] इक जहाँ मेरे लिए,
थी हरइक जुम्बिश[4] निशाने लुत्फ़े जाँ[5] मेरे लिए,
हर्फ़े-बे-मतलब[6] थी खुद मेरी जुबाँ मेरे लिए,
दौरे-तिफ़ली में अगर कोई रुलाता था मुझे,
शोरिशे-जंजीरे-दर[8] में लुत्फ़ आता था मुझे।

तकते रहना, हाय ! वह पहरों तलक सूए-कमर[9],
वह फ़टे बादल में बे-अवाज़े-पा[10] उसका सफ़र,
पूछना रह-रह के उसके कोहो-सहरा[11] की खबर,
और वह हैरत दरोग़े-मस्लेहत[12] आमेज़ पर,
आँख वक़्फ़े-दीद[13] थी लब मायले-गुफ्तार[14] था,
दिल न था मेरा सरापा ज़ौक़े-इस्तफ़सार[15] था।

---

१. बचपन २. नई दुनिया ३. माँ की गोद का विस्तार ४. हरकत ५. प्राणदायक चिन्ह ६. निरर्थक अक्षर ७. बचपन का जमाना ८. दरवाजे की कुंडी की झंकार ९. चाँद की ओर १०. बिना चाप के ११. पहाड़ और जंगल १२. वह झूठ जिसमें भलाई छिपी हो १३. देखने में व्यस्त १४. बोलने को तैयार १५. पूछने और जानने का शौक।

मिर्ज़ा ग़ालिब

फ़िक्रे-इन्साँ पर तिरी हस्ती से यह रोशन हुआ
है परे-मुर्गे-तख़य्युल[1] की रसाई[2] ता-कुजा[3]
था सरापा रूह तूँ, बज़्मे-सुखन[4] पैकर[5] तिरा,
ज़ेबे-महफ़िल भी रहा, महफ़िल से पिनहा[6] भी रहा।

दीद तेरी आँख को उस हुस्न की मन्ज़ूर है
बन के सोज़े-जिंदगी हर शै में जो मस्तूर है।

महफ़िले-हस्ती तिरी बरबत से हैं सर्मायादार
जिस तरह नद्दी के नग़मों से सकूते-कोहसार[8]
तेरे फिरदौसे-तख़य्युल[9] में है कुदरत की बहार
तेरी किश्ते-फ़िक्र[10] से उगते है आलम सब्ज़ाज़ार

जिंदगी मुज़मर[11] है तेरी शोखी-ए-तहरीर में,
ताबे-गोयाई[12] से जुम्बिश है लबे तस्वीर में।

नुत्क़[13] को सौ नाज़ है तेरे लबे-एजाज़[14] पर
महवे-हैरत[15] है सुरय्या रिफ्अते-परवाज़[16] पर
शाहिदे-मज़मूँ[17] तसद्दुक़[18] है तिरे अन्दाज पर
खंदाज़न है ग़ुन्च-ए-दिल्ली, गुले-शीराज़ पर

---

१. कल्पना के पंछी का पंख २. पहुँच ३. कहाँ तक ४. शायरी की महफिल ५. शरीर ६. छिपा ७. जिंदगी का दर्द ८. पहाड़ की निस्तब्धता ९. कल्पना-स्वर्ग १०. चिंतन की खेती ११. निहित १२. रचना की शोखी १३. बोलने की शक्ति १४. जवान १५. जादू करने वाले होंठ १६. आश्चर्य चकित १७. उड़ान की बुलन्दी १८. सरस्वती १९ न्यौछावर।

आह ! तू उजड़ी हुई दिल्ली में आरामीदा[1] है।
गुलशने वेमर[2] में तेरा हमनवा[3] ख्वाबीदा[4] है।

लुत्फ़े-गोयाई में तेरी हमसरी[5] मुमकिन नहीं
हो तखय्युल का न जब तक फ़िक्रे-कामिल[6] हमनशीं
हाय ! अब क्या हो गई हिन्दोस्ताँ की सरज़मीं,
आह ! ऐ, नज़्ज़ारा-आमोज़े-निगाहे-नुकताचीं[7]

गेसु-ए-उर्दू अभी मन्नत-पज़ीरे-शाना[8] है,
शम्अ यह सौदाई-ए-दिल-सोज़ी-ए-परवाना[9] है।

ऐ जहानाबाद[10], ऐ गहवारा-ए-इल्मो-हुनर[11],
हैं सरापा नाला-ए-ख़ामोश[12] तेरे बामो-दर
ज़र्रे-ज़र्रे में तिरे ख़्वाबीदा हैं शम्सो-क़मर[13],
यों तो पौशीदा हैं तेरी ख़ाक में लाखों गुहर,

दफ्न तुझ में कोई फ़ख्रे-रोज़गार ऐसा भी है ?
तुझ में पिनहा कोई मोती आबदार ऐसा भी है ?

---

१. दफन २. जर्मनी का एक नगर जहाँ गोयटे दफन है ३. समकालीन ४. सोया हुआ ५. शैली ६. बराबरी ७. परिपक्क चिंतन ८. आलोचक आँख को नज्जारा दिखाने वाली ९. कंधे का जरूरतमंद १०. परवाने की लगन पर मस्त ११. दिल्ली का पुराना नाम १२. विद्या और कला का गहवारा १३. मूक रुदन १४. चाँद सूरज ।

अब्रे-कोहसार[1]

है बुलन्दी से फ़लक-बोस[2] नशेमन मेरा,
अब्रे-कोहसार हूँ गुलपोश[3] है दामन मेरा,
कभी सहरा, कभी गुलज़ार है मस्कन मेरा,
शहरो-वीराना मिरा, बहर[4] मिरा बन मेरा।

किसी वादी में जो मंजूर हो सोना मुझको,
सब्ज़ा-ए-कोह[5] है मखमल का बिछौना मुझको।

मुझको कुदरत ने सिखाया है दुराफ़शाँ[6] होना,
नाक़ा-ए-शाहिदे-रहमत[7] का हुदीख़ाँ[8] होना,
ग़म-ज़दा-ए-दिले-अफ़सुर्दा-ए-देहक़ाँ[9] होना,
रौनक़े-बज़्मे-जवानाने-गुलिस्ताँ[10] होना।

बन के गेसू रुख़े-हस्ती पे बिखर जाता हूँ,
शाना-ए-मोजा-ए-सरसर से संवर जाता हूँ।

दूर से दीदए-उम्मीद को तरसाता हूँ,
किसी बस्ती से जो ख़ामोश गुज़र जाता हूँ,
सैर करता हुआ जिस दम लबे-जू आता हूँ,
बालियाँ नहर को गिर्दाब को पहनाता हूँ।

---

१. पर्वत का बादल २. आकाश को चूमने वाला ३. फूलों से ढका हुआ ४. समुद्र ५. पहाड़ का सब्जा ६. मोती बिखेरना ७. प्रकृति की प्रेमिका की ऊँटनी ८. गीत जो काफिले के रवाना होते वक्त गाया जाता है ९. दुखी किसान के प्रति संवेदनाशील १०. जवानों की महफिल की रौनक ११. हवा की कंघी।

सब्ज़ा-ए-मज़रा-ए-नौख़ेज़[1] की उम्मीद हूँ मैं,
ज़ादा-ए-बहर[2] हूँ परवर्दा-ए-खुरशीद[3] हूँ मैं।

चश्मा-ए-कोह को दी शोरिशे-कुलजुम[4] मैंने,
और परिन्दों को किया महवे-तरन्नुम[5] मैंने,
सर पे सब्ज़ो के खड़े होके कहा कुम[6] मैंने,
गुंचा-ए-गुल को दिया ज़ौक़े-तबस्सुम[7] मैंने।

फ़ैज़[8] से मेरे नमूने हैं शबिस्तानों[9] के,
झोंपड़े दामने-कोहसार में दहक़ानों के।

१. नवांकुरित खेती २. समुद्र से पैदा ३. सूरज का पाला हुआ ४. समुद्र की हलचल ५. चहचहाया ६. कुरान के अनुसार हजरत ईसा का शब्द जिससे मुर्दे जी उठते थे ७. मुस्कराने का शोक ८. दया ९. महल, रात का विश्राम-गृह।

एक मकड़ा और मक्खी

(बच्चों के लिये)

इक दिन किसी मक्खी से यह कहने लगा मकड़ा,
इस राह से होता है गुज़र रोज तुम्हारा।
लेकिन मिरी कुटिया की न जागी कभी किस्मत,
भूले से कभी तुम ने यहाँ पाँव न रक्खा।
ग़ैरों से न मिलिये तो कोई बात नहीं है,
अपनों से मगर चाहिये यों खिच के न रहना।
आओ जो मिरे घर में तो इज़्ज़त है यह मेरी,
वह सामने सीढ़ी है जो मंजूर हो आना।
मक्खी ने सुनी बात जो मकड़े की तो बोली,
हज़रत ! किसी नादान को दीजियेगा यह धोखा।
इस जाल में मक्खी कभी आने की नहीं है,
जो आप की सीढ़ी पे चढ़ा फिर नहीं उतरा।
मकड़े ने कहा, वाह ! फ़रेबी मुझे समझे,
तुम सा कोई नादान ज़माने में न होगा।
मंजूर तुम्हारी मुझे ख़ातिर थी वगरना,
ठहरो जो मिरे घर में तो है इसमें बुरा क्या।
इस घर में कई तुम को दिखाने की है चीज़ें,
बाहर से नज़र आता है छोटी-सी यह कुटिया।
लटके हुए दरवाजे पे बारीक है पर्दे,
दीवारों को आईनों से है मैंने सजाया।
मेहमान के आराम को हाज़िर हैं बिछौने,
हर शख़्स को सामाँ यह मयस्सर नहीं होता।
मक्खी ने कहा, ख़ैर ! यह सब ठीक है लेकिन,
मैं आपके घर आऊँ यह उम्मीद न रखना।

इन नर्म बिछौनों से खुदा मुझको बचाए,
सो जाय कोई इन पे तो फिर उठ नहीं सकता।
मकड़े ने कहा दिल में, सुनी बात जो उसकी,
फ़ाँसूँ इसे किस तरह ? यह कमब़ख्त है दाना[1]।
सौ काम खुशामद से निकलते हैं जहाँ में,
देखो जिसे दुनिया में खुशामद का है बन्दा।
यह सोच के मक्खी से कहा उसने बड़ी बी,
अल्लाह ने बख़्शा है बड़ा आप को रुतबा।
होती है उसे आपकी सूरत से मुहब्बत,
हो जिसने कभी एक नज़र आपको देखा।
आँखें है कि हीरे की चमकती हुई कनियाँ,
सर आपका अल्लाह ने कलग़ी से सजाया।
यह हुस्न, ये पोशाक, ये खूबी, ये सफाई,
फ़िर इस पे क़यामत है यह उड़ते हुए गाना।
मक्खी ने सुनी जब यह खुशामद तो पसीजी,
बोली, कि नहीं आपसे मुझको कोई खटका।
इंकार की आदत को समझती हूँ बुरा मैं,
सच यह है कि दिल तोड़ना अच्छा नहीं होता।
यह बात कही और उड़ी अपनी जगह से,
पास आई तो मकड़े ने उछल कर उसे पकड़ा।
भूखा था कई रोज से, अब हाथ जो आई,
आराम से घर बैठ के मक्खी को उड़ाया।

(अंग्रेजी कविता के आधार पर)

१. समझदार।

एक पहाड़ और गिलहरी

(रामर्सन से ली गई)

(बच्चों के लिये)

कोई पहाड़ यह कहता था इक गिलहरी से,
तुझे हो शर्म तो पानी में जाके डूब मरे ।
ज़रा-सी चीज़ है, इस पर ग़रूर क्या कहना,
यह अक़्ल और यह समझ, यह शऊर क्या कहना ।
खुदा की शान है नाचीज़, चीज़ बन बैठे !
जो बे-शऊर हों यों बातमीज़ बन बैठें ।
तिरी बिसात है क्या मेरी शान के आगे ?
ज़मीं है पस्त मिरी आन-बान के आगे ।
जो बात मुझ में है तुझ को वह है नसीब कहाँ
भला पहाड़ कहाँ जानवर ग़रीब कहाँ ?
कहा यह सुन के गिलहरी ने मुँह सम्भाल ज़रा
यह कच्ची बातें है, दिल से इन्हें निकाल ज़रा ।
जो मैं बड़ी नहीं तेरी तरह तो क्या परवाह,
नहीं है तू भी तो आखिर मिरी तरह छोटा ।
हर एक चीज़ से पैदा खुदा की कुदरत है,
कोई बड़ा कोई छोटा यह उसकी हिकमत है ।
बड़ा जहान में तुझको बना दिया उसने
मुझे दरख़्त पे चढ़ना सिखा दिया उसने ।
क़दम उठाने की ताक़त ज़रा नहीं तुझ में ।
निरी बड़ाई है, खूबी है और क्या तुझ में ।
जो तू बड़ा है तो मुझसा हुनर दिखा मुझको,
यह छालिया ही ज़रा तोड़ कर दिखा मुझको ।
नहीं है चीज़ निकम्मी कोई जमाने में
कोई बुरा नहीं कुदरत के कारखाने में ।

एक गाय और बकरी

(बच्चों के लिये)

इक चराहगाह हरी-भरी थी कहीं,
थी सरापा बहार जिसकी जमीं।
क्या समाँ उस बहार का हो बयाँ,
हर तरफ़ साफ़ नद्दियाँ थीं रवाँ।
थे अनारों के बेशुमार दरख़्त,
और पीपल का सायादार दरख़्त।
ठण्डी-ठण्डी हवाएँ आती थीं,
तायरों[1] की सदाएँ आती थीं।
किसी नदी के पास इक बकरी,
चरते-चरते कहीं से आ निकली।
जब ठहर कर इधर-उधर देखा,
पास इक गाय को खड़ा पाया।
पहले झुक कर उसे सलाम किया।
फ़िर सलीके से यों कलाम किया,
क्यों बड़ी बी मिज़ाज कैसे हैं।
गाय बोली कि ख़ैर अच्छे हैं
कट रही है बुरी-भली अपनी,
है मुसीबत में जिन्दगी अपनी।
जान पर आ बनी है क्या कहिये !
अपनी किस्मत बुरी है क्या कहिये !
देखती हूँ खुदा की शान को मैं,
रो रही हूँ बुरों की जान को मैं।

---

१. पक्षियों ।

ज़ोर चलता नहीं ग़रीबों का,
पेश आया लिखा नसीबों का।
आदमी से कोई भला न करे,
इससे पाला पड़े खुदा न करे।
दूध कम दूँ तो बड़बड़ाता है,
हूँ जो दुबली तो बेच खाता है।

हथकड़ों से गुलाम करता है!
किन फरेबों से राम करता है।
उसके बच्चों को पालती हूँ मैं,
दूध से जान डालती हूँ मैं।
बदले नेकी के यह बुराई है,
मेरे अल्लाह! तिरी दुहाई है!!

सुन के बकरी यह माजरा सारा,
बोली, ऐसा गिला नहीं अच्छा।
बात सच्ची है बे-मज़ा लगती
मैं कहूँगी मगर खुदा लगती।
यह चरागाह, ये ठंडी-ठंडी हवा,
यह हरी घास और यह साया।

ऐसी खुशियाँ हमें नसीब कहाँ!
यह कहाँ बे-जुबाँ ग़रीब कहाँ!
यह मजे आदमी के दम से हैं
लुत्फ़ सारे इसी के दम से हैं।
उसके दम से है अपनी आबादी
क़ैद हम को भली कि आज़ादी?
सौ तरह का बनों में है खटका,
वाँ की गुज़रान से बचाए, खुदा।

हम पे एहसान है बड़ा उसका,
हम को जेबा नहीं गिला उसका।
क़द्र आराम की अगर समझो,
आदमी का कभी गिला न करो।
गाय सुन कर यह बात शर्माई,
आदमी के गिले से पछताई।
दिल में परखा बुरा-भला उसने,
और कुछ सोचकर कहा उसने।
यों तो छोटी है ज़ात बकरी की
दिल को लगती है बात बकरी की।

बच्चे की दुआ

(बच्चों के लिए)

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी,
जिंदगी शम्अ की सूरत हो खुदाया मेरी
दूर दुनिया का मिरे दम से अँधेरा हो जाय,
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाय

हो मिरे दम से यों ही मेरे वतन की ज़ीनत,
जिस तरह फूल से होती है चमन की जीनत।

ज़िदगी हो मिरी पर्वाने की सूरत, यारब !
इल्म की शमा से हो मुझको मुहब्बत यारब !
हो मिरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से, जईफ़ों से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह ! बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हा उस राह पे चलाना मुझको।

हमदर्दी

(बच्चों के लिए)

टहनी पे किसी शजर[1] की तन्हा,
बुलबुल था कोई उदास बैठा।
कहता था कि रात सर पे आई,
उड़ने चुगने में दिन गुज़ारा।
पहुँचूँ किस तरह आशियाँ तक,
हर चीज़ पर छा गया अँधेरा।
सुन के बुलबुल की आहो-ज़ारी[2],
जुगनू कोई पास ही से बोला।
हाज़िर हूँ मदद को जानो-दिल से,
कीड़ा हूँ अगरचे मैं ज़रा सा।
क्या ग़म है जो रात है अँधेरी,
मैं राह में रोशनी करूँगा।
अल्लाह ने मुझको दी है मशअल,
चमका के मुझे दिया बनाया।
हैं लोग वही जहाँ में अच्छे,
आते हैं जो काम दूसरों के।

◈ ◈

१. पेड़ २. रोना झीकना।

माँ का ख़्वाब

(बच्चों के लिए)

मैं सोई जो इक शब[1] तो देखा यह ख़्वाब,
बढ़ा और जिससे मिरा इज़्तराब[2]—।
यह देखा कि मैं जा रही हूँ कहीं,
अंधेरा है और राह मिलती नहीं।
लरज़ता था डर से मिरा बाल-बाल,
क़दम का दहशत से उठाना महाल।
जो कुछ हौसला पाके आगे बढ़ी,
तो देखा क़तार एक लड़कों की थी।
वह चुपचाप थे आगे पीछे रवाँ,
खुदा जाने जाना था उनको कहाँ?
इसी सोच में थी कि मेरा पिसर[3],
मुझे इस जमाअत में आया नजर।
वह पीछे था और तेज़ चलता न था,
दिया इसके हाथों में जलता न था।
कहा मैंने पहचान कर मेरी जाँ!
मुझे छोड़कर आ गए तुम कहाँ?
जुदाई में रहती हूँ मैं बेकरार,
पिरोती हूँ हर रोज अश्कों के हार।
न परवा हमारी ज़रा तुमने की,
गए छोड़, अच्छी वफ़ा तुमने की।

१. रात २. व्यग्रता ३. बेटा

जो बच्चे ने देखा मिरा पेचो-ताब,
दिया उसने मुँह फेर कर यों जवाब।
रुलाती है तुझको जुदाई मिरी,
नहीं इसमें कुछ भी भलाई मिरी।
यह कहकर वह कुछ देर तक चुप रहा,
दिया फ़िर दिखाकर यह कहने लगा।
समझती है तू हो गया क्या इसे?
तिरे आँसुओं ने बुझाया इसे!

परिन्दे की फरियाद

(बच्चों के लिए)

आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना,
वह बाग़ की बहारें वह सब का चहचहाना।
आज़ादियाँ कहाँ वे अब अपने घोंसले की,
अपनी खुशी से आना, अपनी खुशी से जाना।
लगती है चोट दिल पर आता है याद जिस दम,
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कराना।
वह प्यारी-प्यारी सूरत, वह कामनी-सी मूरत,
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना।

आती नहीं सदायें उसकी मिरे कफ़स में,
होती मिरी रिहाई ए काश मेरे बस में।

क्या बदनसीब हूँ मैं घर को तरस रहा हूँ,
साथी तो हैं वतन में मैं कैद में पड़ा हूँ।
आई बहार, कलियाँ फूलों की हँस रही हैं,
मैं इस अँधेरे घर में किस्मत को रो रहा हूँ।

इस कैद का इलाही, दुखड़ा किसे सुनाऊँ,
डर है यहीं कफ़स में, मैं ग़म से मर न जाऊँ।

जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है,
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है।
गाना इसे समझ कर खुश हों न सुनेने वाले,
दुक्खे हुए दिलों की फरियाद यह सदा है।

आज़ाद मुझको कर दे ओ कैद करने वाले!
मैं बे-जुबाँ हूँ कैदी तो छोड़कर दुआ ले।

खुफ्तगने-खाक से इस्तफसार[1]

महरे-रोशन[2] छुप गया उट्ठी नक़ाबे-रू-ए-शाम[3]
शाना-ए-हस्ती[4] पे है बिखरा हुआ गेसू-ए-शाम।
यह सियह-पोशी[5] की तैयारी किसी के ग़म में है
महफ़िले-कुदरत मगर खुरशीद[6] के मातम में है।
कर रहा है आस्माँ जादू लबे-गुफ्तार पर
साहिरे-शब[7] की नज़र है दीदा-ए-बेदार[8] पर।
ग़ोता-ज़न[9] दरिया-ए-खामोशी में है मोजे-हवा
हाँ! मगर इक दूर से आती है आवाजे-दरा[10]।
दिल कि है बेताबी-ए-उलफ़त[11] में दुनिया से नफूर
खींच लाया है मुझे हंगामा-ए-आलम से दूर।
मंज़रे-हिर्मां-नसीबी[12] का तमाशाई हूँ मैं
हम-नशीने-खुफ्तगाने-कुंजे-तनहाई[13] हूँ मैं।
थम जरा बेताबी-ए-दिल बैठ जाने दे मुझे
और इस बस्ती पे चार आँसू गिराने दे मुझे।
ऐ! मय-ए-गफ़लत के सरमस्तो कहाँ रहते हो तुम ?
कुछ कहो उस देस की आखिर जहाँ रहते हो तुम।

---

१. कब्र में सोये हुओं से सवाल २. सूरज ३. शाम के चेहरे की नकाब ४. संसार का कंधा ५. काला लिबास ६. सूरज ७. रात का जादूगर ८. जागृत आँख ९. डुबकी लगाये हुए १०. जरस की आवाज ११. घृणा करने वाला १२. दुर्भाग्य का दृश्य १३. कब्र में सोने वालों का साथी।

वह भी हैरत-खाना-ए-इमरोज़ो-फ़र्दा[1] है कोई ?
और पैंकारे-अनासिर[2] का तमाशा है कोई—?
आदमी वाँ भी हिसारे-ग़म[3] में है महसूर[4] क्या ?
उस विलायत में भी है इंसाँ का दिल मजबूर क्या ?
वाँ भी जल मरता है सोज़े-शम्अ पे परवाना क्या ?
उस चमन में भी गुलो-बुलबुल का है अफ़साना क्या ?
याँ तो इक मिस्रे में पहलू से निकल जाता है दिल,
शेर की गर्मी से क्या वाँ भी पिघल जाता है दिल ?
रिश्ता-व-पैवन्द[5] याँ के जान का आज़ार[6] हैं,
उस गुलिस्ताँ में भी क्या ऐसे नुकीले ख़ार है ?
इस जहाँ में इक मईशत[7], और सो उफ्ताद[8] है,
रूह क्या उस देस में इस फ़िक्र से आजाद है ?
क्या वहाँ बिजली भी है, ख़र्मन[9] भी है, दहक़ाँ भी है ?
क़ाफ़िले वाले भी हैं, अंदेशा-ए-रहजन[10] भी है ?
तिनके चुनते हैं वहाँ भी आशियाँ के वास्ते ?
ख़िश्तो-गिल[11] की फ़िक्र होती है मकाँ के वास्ते ?

---

१. आज और कल की दुनिया अर्थात् इस संसार के समान २. तत्वों का संघर्ष ३. विवाद का दुर्ग ४. बंद ५. सम्बन्ध ६. दुख ७. रोजी, जीविका ८. मुसीबतें ९. खलिहान १०. लुटेरे का भय ११. ईंट-गारा ।

वाँ भी इंसाँ अपनी असलियत से बेगाने हैं क्या ?
इम्तियाज़े-मिल्लतो-आईं[1] के दीवाने हैं क्या ?
वाँ भी क्या फरियादे-बुलबुल पर चमन रोता नहीं ?
इस जहाँ की तरह वाँ भी दर्दे दिल होता नहीं ?
बाग़ है फ़िर्दोस[2] या इक मंज़िले-आराम है ?
या रुखे-बेपर्दा-ए-हुस्ने-अज़ल का नाम है ?
क्या जहन्नुम मासियत-सोज़ी[3] की इक तरकीब है ?
आग के शोलों में पिन्हाँ मक़सदे-तादीब[5] है ?
क्या एवज़ रफ्तार के उस देस में परवाज़ है ?
मौत कहते हैं जिसे अहले-जमीं, क्या राज़ है ?
इज़्तराबे-दिल[6] का सामाँ याँ की हस्तो-बूद[7] है ?
इल्मे इंसाँ उस विलायत में भी क्या महदूद[8] है ?
दीद से तिस्कीन पाता है दिले-महजूर[9] भी ।
लनतरानी[10] कह रहे हैं क्या वहाँ के तूर भी ?

---

१. सम्प्रदाय और विधान का अन्तर २. स्वर्ग ३. खुदा के बेपर्दा चेहरे का रूप सौंदर्य ४. पाप भस्म करना ५. दंड देने का उद्देश्य ६. हृदय की व्यग्रता ७. रहन-सहन ८. सीमित ९. वियोगी मन १०. शेखी बघारना, वह आवाज जो तूर पर जलवा देखने से पहले मूसा को सुनाई दी ।

जुस्तजू[1] में है वहाँ भी रूह को आराम क्या ?
वाँ भी इंसाँ है क़तीले-ज़ौके-इस्तफ़हाम[2] क्या ?
आह ! वह किशवर[3] भी तारीकी से क्या मामूर[4] है ?
या मुहब्बत की तजल्ली से सरापा नूर है ?
तुम बता दो राज़ जो इस गुम्बदे-गर्दां[5] में है ?
मौत इक चुभता हुआ काँटा दिले-इंसाँ में है ?

१. खोज २. जिज्ञासा के उल्लास का घायल ३. देश ४. भरपूर ५. घूमने वाला गुंबद, आस्मान ।

शमग्र व परवाना

परवाना तुझ से करता है ऐ शम्अ प्यार क्यों ?
यह जाने बेक़रार है तुझ पर निसार क्यों ?
सीमाब-वार[१] रखती है मेरी अदा इसे।
अदाबे-इश्क़ तूंने सिखाये हैं क्या इसे ?
करता है यह तवाफ़[२] तिरी जलवा-गाह का।
फूँका हुआ है क्या तिरी बर्क़े-निगाहे[३] का ?
आज़ारे-मौत[४] में इसे आरामे-जाँ[५] है क्या ?
शोले में तेरे जिंदगी-ए-जावदाँ[६] है क्या ?
ग़म-खाना-ए-जहाँ[७] में जो तेरी ज़या[८] न हो,
इस तुफ़ता-दिल[९] का नख़्ल-तमन्ना[१०] हरा न हो ?
गिरना तिरे हज़ूर में इसकी नमाज़ है।
नन्हें से दिल में लज्ज़ते-सोज़ो-गुदाज़ है।
कुछ इसमें जोशे-आशिके-हुस्ने-क़दीम[११] है।
छोटा सा तूर तू, यह ज़रा सा कलीम[१२] है।
परवाना और ज़ौक़े[१३]-तमाशा-ए-रोशनी।
कीड़ा ज़रा-सा और तमन्ना-ए-रोशनी।

---

१. बेचैन २. परिक्रमा ३. निगाह की बिजली ४. मौत की पीड़ा ५. आराम ६. अमर जीवन ७. दुनिया ८. प्रकाश ९. जला हुआ दिल १०. अभिलाषा-तरू ११. खुदा के सौंदर्य के प्रेमी का जोश १२. मूसा १३. रोशनी देखने की लगन।

अक्ल-व-दिल

अक़्ल ने एक दिन यह दिल से कहा,
भूले भटके की रहनुमा हूँ मैं।
हूँ, ज़मीं पर, गुज़र फ़लक पे मिरा,
देख तो, किस क़दर ज़ारा हूँ मैं।
काम दुनिया में रहबरी है मिरा
मिस्ले-ख़िज्रे-खजिस्ता-पा[1] हूँ मैं।
हूँ मुफ़स्सिर[2] किताबे-हस्ती की।
मज़ाहरे-शाने-किब्रिया[3] हूँ मैं।
बूँद इक खून की है तू लेकिन
ग़ैरते-लाले-बेवहा[4] हूँ मैं।
दिल ने सुन कर कहा, यह सब सच है
पर मुझे भी तो देख क्या हूँ मैं?
राज़े-हस्ती को तू समझती है
और आँखों से देखता हूँ मैं।

१. खिज्र-एक पैगम्बर जो अदृश्य है और भटके हुओं को रास्ता दिखाता है, द्रुतगामी खिज्र के सदृश २. व्याख्याकर्ता ३. खुदा की शान को प्रकट करने वाला ४. अमूल्य मोती से बढ़कर।

है तुझे वास्ता मज़ाहिर से
और बातिन से आशाना हूँ मैं ?

इल्म तुझ से तो मारफ़त[3] मुझ से
तू खुदा-जू[4], खुदा-नुमा[5] हूँ मैं !

इल्म की इन्तहा है बेताबी
इस मरज़ की मगर दवा हूँ मैं।

शमअ तू महफ़िले-सदाक़त की
हुस्न की बज़्म का दिया हूँ मैं।

किस बुलंदी पे है मुक़ाम मिरा
अर्श, रब्बे-जलील का हूँ मैं।

---

१. प्रत्यक्ष २. अभ्यंतर ३. भक्ति ४. खुदा को ढूढ़ँने वाली ४. खुदा को दिखाने वाला ५. भगवान का सिंहासन ।

सदा-ए-दर्द

जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे,
हाँ डबो दे ऐ मुहीते-आबे-गंगा[१] तू मुझे।
सरज़मीं अपनी, कमायत की फ़साद-अंगेज़[२] है,
वस्ल[३] कैसा याँ तो इक कुर्बे-फ़िराक-आमेज[४] है।
बदले यकरंगी[५] के यह ना-आशनाई[६] है ग़ज़ाब,
एक ही खिर्मन के दानों में जुदाई है ग़ज़ाब।
जिसके फूलों में अख़ुव्वत की हवा आती नहीं,
उस चमन में कोई लुत्फ़े-नग़मा-पैराई[८] नहीं।
लज़्ज़ते-कुर्बे-हक़ीक़ी[९] पर मरा जाता हूँ मैं,
इख़्तलाते-मोजा-व-साहिल[१०] से घबराता हूँ मैं।
दाना-ए-ख़र्मन-नुमा[११] है शायरे-मोजिज़-बयाँ[१२],
हो न ख़िर्मन ही तो इस दाने की हस्ती फिर कहाँ ?

१. गंगा के जल का विवर्त २. फसाद करने वाली ३. मिलन ४. वियोग मिश्रित सामीप्य ५. मित्रता ६. अजनबीयत ७. भाई चारा ८. गीत गाने का आनन्द ९. वास्तविक सामीप्य का आनन्द १०. तरंग तट का जैसा मिलन ११. खलिहान को परखने वाला दाना १२. मधुर स्वर वाला कवि।

हुस्न हो क्या ख़ुद-नुमा[१] जब कोई मायिल ही न हो,
शमअ को जलने से क्या मतलब जो महफ़िल ही न हो।
ज़ौक़े-गोयाई, ख़मोशी से बदलता क्यों नहीं ?
मेरे आयने से यह गोहर निकलता क्यों नहीं ?
कब जुबाँ खोली हमारी लज़्ज़ते-गुफ़्तार ने,
फूँक डाला जब चमन को आतशे-पैकार[२] ने।

✧ ✧

१. आत्म प्रदर्शक २. संघर्ष की आग।

आफताब

ऐ आफ़ताब! रूहे-रवाने-जहाँ[2] है तू,
शीराज़ा-बन्दे-दफ्तरे-कोनो-मकाँ[3] है तू।
बाइस है तू वजूदो-अदम[4] की नमूद[5] का,
है सब्ज़ तेरे दम से चमन हस्तो-बूद[6] का।
क़ायम यह अंसरों[7] का तमाशा तुझी से है,
हर शय में जिंदगी का तक़ाज़ा तुझी से है।
हरशय को तेरी जलवागरी से सबात[8] है,
तेरा यह सोज़ो-साज़[9] सरापा हयात है।
वह आफ़ताब, जिससे ज़माने में नूर है,
दिल है ख़िरद[10] है, रूहे-रवाँ है शऊर है।
ऐ! आफ़ताब! हम को ज़याये-शऊर[11] दे,
चश्मे-ख़िरद[12] को अपनी तजल्ली से नूर दे।
है महफ़िले वजूद[13] का सामाँ-तराज़[14] तू,
यज़दाने-साकिनाने-नशेबो-फ़राज़[15] तू।

१. सूरज २. जीवनदाता ३. विश्व की पुस्तक को जोड़ने वाला ४. अस्तित्व और आलोप ५. प्रकट होना ६. जिन्दगी ७. तत्वों ८. स्थिरता ९. बनना और चमकना १०. अक्ल ११. चेतना का प्रकाश १२. अक्ल की आँख १३. दुनिया १४. सामान करने वाला १५. धरती पर रहने वालों का रखवाला।

तेरा कमाल हस्ती-ए-हर जानदार में
तेरी नमूद सिलसिला-ए-कोहसार में
हर चीज की हयात का परवरदिगार तू
ज़ाईदगाने-नूर[1] का है ताजदार तू
ने इब्तदा कोई न कोई इन्तहा तिरी
आज़ादे-क़ैदे-अव्वलो-आख़िर[2] ज़ाया तिरी ।

१. प्रकाशजात २. अव्वल आखिर के बन्धन से मुक्त ।

शमग्र

बज़्मे-जहाँ में मैं भी हूँ ऐ शमग्र ! दर्दमन्द,
फ़रियाद[1] दर गिरह सिफ़ते-दाना-ए-सपन्द[2] ।
दी इश्क़ ने हरारते-सोज़ो-दरूं[3] तुझे,
और गुल-फ़रोशे-अश्के-शफक़गूं[4] किया मुझे ।
हो शमए-बज़्मे-ऐश कि शमए-मज़ार तू,
हर हाल अश्के-ग़म से रही हमकिनार तू ।
यकबीं[5] तिरी नज़र, सिफते-आशिक़ाने-ज़ार[6],
मेरी निगाह माया-ए-आशोबे-इम्तियाज़[7] ।
काबे में, बुतकदे में, है यक्साँ तिरी ज़िया,
मैं इम्तियाज़े-दैरो-हरम में फ़ँसा हुआ ।
है शान आह की तिरे दूदे-सियाह[9] में,
पोशीदा कोई दिल तिरी जलवा-गाह में ।
जलती है तू कि बर्क़े-तजल्ली[10] से दूर है,
बेदर्द तेरे सोज़ को समझे कि नूर है ।
तू जल रही है और तुझे कुछ ख़बर नहीं,
बीना है और सोजे-दरूँ पर नज़र नहीं ।
मैं जोशे-इज़्तराब से सीमाबवार भी,
आगाहे-इज्तराबे-दिले-बेक़रार भी ।

१. गाँठ में फरियाद २. सपन्द एक पौधा है जिसके फल से एक छोटा सा काला दाना निकलता है और आग में डालने से आवाज पैदा करता है ३. भीतरी जलन की गर्मी ४. उषा जैसे लाल आँसुओं के फूल बेचने वाला ५. एक समान देखने वाली ६. पीड़ित प्रेमियों की भाँति ७. भेदभाव में ग्रस्त ८. मस्जिद मंदिर के अन्तर में फँसा हुआ ९. काला धुआँ १०. प्रकाश की विजली अर्थात् खुदा का नूर ।

था यह भी कोई नाज़ किसी बे-नयाज़ का,
अहसास दे दिया मुझे अपने गुदाज़[१] का।
यह आगही[२] मिरी मुझे रखती है बेक़रार,
ख्वाबीदा इस शरर में है आतशकदे हज़ार।
यह इम्तियाज़े-रिफ़अतो-पस्ती[३] इसी से है,
गुल में महक शराब में मस्ती इसी से है।
बुस्तानो-बुलबुलो-गुलो-बू[४] है यह आगही,
अस्ले-कशाकशे-मनो-तू[५] है यह आगही।
सुबहे-अज़ल[६] जो हुस्न हुआ दिलसिताने-इश्क़[७],
आवाज़े-कुन[८] हुई तपिश-आमोज़े-जाने[९] इश्क।
यह हुक्म था कि गुलशने-कुनकी[१०] बहार देख,
इक आँख लेके ख्वाबे-परेशाँ हज़ार देख।
मुझ से खबर न पूछ हिजाबे-वजूद[११] की,
शाम-ए-फ़िराक़ सुबह थी मेरे नमूद की।
वह दिन गये कि कैद से मैं आशना न था,
ज़ेबे-दरख्ते तूर मिरा आशियाना था।
कैदी हूँ और कफ़स को चमन जानता हूँ मैं,
ग़ुर्बत[१२] के ग़मकदे को वतन जानता हूँ मैं।
यादे-वतन फ़सुर्दगी-ए-बेसबब बनी।
शौके नज़र कभी-कभी जौके-तलब बनी।

१. अभ्यन्तर की पीडा २. ज्ञान ३. ऊँच नीच का अन्तर ४. बाग ५. आपस की खींचतान का कारण ६. सृष्टि के आरम्भ की सुबह ७. इश्क का मन मोहने वाला ८. कुन का अर्थ है हो जा, कुरान के अनुसार खुदा के 'कुन' कहने पर क्षण भर में संसार उत्पन्न हो गया ९. इश्क को जलना सिखाने वाली १०. संसार ११. संसार का रहस्य १२. परदेश।

ऐ शमग्र इन्तहाये-फ़रेबे-ख़याल[१] देख,
मस्जूदे-साकिनाने-फ़लक[२] का मग्राल[३] देख।
मज्मूँ फ़िराक़ का हूँ सुरय्या-निशाँ[४] हूँ मैं,
ग्राहंगे-तब-ए-नाज़िमे-कौनो-मकाँ[५] हूँ मैं।
बाँधा मुझे जो उसने तो चाही मिरी नमूद,
तहरीर कर दिया सरे-दीवाने-हस्तो-बूद।
गोहर को मुश्ते-खाक[६] में रहना पसंद है,
बन्दिश ग्रगरचे सुस्त है मज्मूँ बुलंद है।
चश्मे-ग़लत-निगर[७] का यह सारा कसूर है,
ग्रालम, ज़हूरे-जलवा-ए-ज़ौक़े-शऊर[८] है।
यह सिलसिला, जमानो-मकाँ का कमंद है,
तौक़े-गुलू-ए-हुस्ने-तमाशा[९]-पसंद है।
मंजिल का इश्तियाक है, गुमकरदा-राह[१०] हूँ,
ऐ शमग्र! मैं ग्रसीरे-फ़रेबे-निगाह[११] हूँ।
सय्याद ग्राप, हलक़ा-ए-दामे-सितम[१२] भी ग्राप,
बामे-हरम भी, तायरे-बामे हरम[१३] भी ग्राप।
मैं हुस्न हूँ कि इश्क़, सरापा गुदाज़ हूँ,
खुलता नहीं कि नाज़ हूँ या मैं नयाज़ हूँ।
हाँ! ग्राशना-ए-लब हो न राज़े-कोहन कहीं,
फ़िर छिड़ न जाय क़िस्सा-ए-दारो-रसन कहीं।

---

१. विचार के धोखे की पराकाष्ठा २. इसान-कुरान के ग्रनुसार फरिश्तों ने इंसान को धरती पर ग्राने से पहले सिजदा किया था ३. परिणाम ४. सप्त ऋषि का विजेता ५. संसार-प्रबन्धक (भगवान) के स्वभाव का स्वर ६. मुट्ठी भर खाक ७. गलत देखने वाली ग्राँख ८. संसार मानव चिंतन का प्रतिबिम्ब मात्र है ९. सुन्दरता के गले का फंदा १०. भटका हुग्रा ११. बाहरी दृश्यों के धोखा का कैदी १२. सितम का जाल १३. हरम की छत (ग्रटारी) का पंछी।

एक आरज़ू

दुनिया की महफ़िलों से उक्ता गया हूँ यारब !
क्या लुत्फ़ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो।
शोरिश से भागता हूँ दिल ढूँढ़ता है मेरा,
ऐसा सकूत जिस पर तक़रीर भी फ़िदा हो।
मरता हूँ, खामुशी पर ! यह आरज़ू है मेरी,
दामन में कोह के इक छोटा-सा झोंपड़ा हो।
आज़ाद फ़िक्र से हूँ गुरबत में दिन गुज़ारूँ,
दुनिया के ग़म का दिल से काँटा निकल गया हो।
लज़्ज़ात सरोद[1] की हो चिड़ियों के चहचहों में,
चश्मे की शोरिशों में बाजा सा बज रहा हो।
गुल की कली चटक कर पैग़ाम दे किसी का,
साग़र ज़रा सा गोया मुझको जहाँ-नुमा[2] हो।
हो हाथ का सरहाना, सब्ज़े का हो बिछौना,
शर्माय जिससे ख़लवत[3], जलवत[4] में वह मजा हो।
सफ़ बाँधे दोनों जानिब बूटे हरे-हरे हों,
नद्दी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो।
हो दिलफ़रेब ऐसा कोहसार का नज़ारा,
पानी भी मौज बन कर उठ-उठ के देखता हो।
आग़ोश में जमीं के सोया हुआ हा सब्ज़ा,
फिर-फिर के झाड़ियाँ में पानी चमक रहा हो।
पानी को छू रहा हो झुक-झुक के गुल की टहनी,
सुर्खी लिये सुनहरी हर फूल की क़बा हो।

---

१. संगीत २. दुनिया दिखाने वाला ३. एकान्त ४. सभा।

रातों को चलने वाले रह जायें थक के जिस दम,
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो।
बिजली चमक के उनको कुटिया मिरी दिखा दे,
जब आस्मां पे हरसू बादल घिरा हुआ हो।
पिछले पहर की कोयल, वह सुबह की मुअज़्ज़न[1],
मैं उसका हमनवा हूँ, वह मेरी हमनवा हो।
कांनों पे हो न मेरे दैरो-हरम का एहसां,
रोज़न ही झोंपड़ी का मुझको सहर-नुमा[2] हो।
फूलों को आ जिस दम शबनम वज़ू कराने,
रोना मिरा वज़ू हो, नाला मिरी दुआ हो।
इस खामुशी में जायें इतने बुलंद नाले,
तारों के क़ाफ़िले को मेरी सदा, दरा हो।

हर दर्दमंद दिल को रोना मिरा रुला दे।
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे।

१. अजान देने वाला २. सुबह का उजाला दिखाने वाला।

आफताबे सुबह

शोरिशे-मयखाना-ए-इंसाँ[१] से बालातर[२] है तू
ज़ीनते-बज़्मे-फ़लक[३] हो जिससे वह साग़र है तू
हो दुरे-गोशे-अरूसे-सुबह[४], वह गोहर है तू
जिस पे सीमाये-उफ़क़[५] नाज़ा[६] हो वह जेवर है तू

सफ़ह-ए-अय्याम[७] से दाग़े-मदादे-शब[८] मिटा !
आस्माँ से नक्शे-बातिल[९] की तरह कौकब मिटा !

हुस्न तेरा जब हुआ बामे-फलक पर जलवागर
आँख से उड़ता है यकदम ख्वाब की मय का असर
नूर से मामूर हो जाता है दामाने-नज़र
खोलती है चश्मे-जाहिर को ज़िया तेरी मगर

ढूँढ़ती हैं जिसको आँखें वह तमाशा चाहिये,
चश्मे-बातिन जिससे खुल जाय वह जलवा चाहिये।

शौक़े-आज़ादी के दुनिया में न निकले हौसले
जिंदगी भर क़ैद ज़ंजीरे-ताल्लुक़[११] में रहे
जेरो-बाला[१२] एक है तेरी निगाहों के लिए
आरज़ू है कुछ इसी चश्मे-तमाशा की मुझे

१. दुनिया की हलचल २. ऊँचा, अलग ३. आकाश की मधुशाला की रौनक ४. सुबह की दुलहन के कान का मोती ५. क्षितिज का माथा ६. गर्व करना ७. दुनिया ८. रात की कालिमा का धब्बा ९. गलत अक्षर १०. नक्षत्र ११. सम्बन्ध १२. उथल-पुथल।

आँख मेरी और के ग़म में सरिश्काबाद[१] हो,
इम्तियाजे-मिल्लतो-आईं से दिल आज़ाद हो।

बस्ता-ए-रंगे-ख़सूसियत[२] न हो मेरी जुबाँ
नोए-इन्साँ[३] क़ौम हो मेरी वतन मेरा जहाँ
दीदा-ए-बातिन पे राज़े-नज़्मे-कुदरत[४] हो अयाँ
हो शनासा-ए-फ़लक, शम-ए-तख़य्युल का धुआँ

उक्दा-ए-अज़दाद की काविश न तड़पाय मुझे,
हुस्ने-इश्क़-अंगेज़ हर शय में नज़र आय मुझे।

सदमा आ जाय हवा से गुल की पत्ती को अगर
अश्क बनकर मेरी आँखों से टपक जाय असर
दिल में हो सोज़े-मुहब्बत का वह छोटा-सा शरर
नूर से जिसके मिले राज़े-हकीक़त की ख़बर

शाहिदे-कुदरत का आईना हो दिल मेरा न हो,
सर में जुज़ हमदर्दी-ए-इन्साँ कोई सौदा न हो।

तू अगर ज़हमत-कशे-हंगामा-ए-आलम[७] नहीं
वह फज़ीलत का निशाँ ऐ नय्यरे-आज़म[८] नहीं

१. आँसू की बस्ती, २. विशेषरंग से बंधी हुई ३. मानव जाति ४. प्रकृति की व्यवस्था का रहस्य ५. असंगतियों की समस्या ६. कुरेद ७. संसार के कष्ट झेलने वाला ८. सूरज

अपने हुस्ने आलम-आरा[१] से जो तू महरम[२] नहीं
हमसरे-यक-ज़र्रा-ए-ख़ाके-दुरे-आलम[३] नहीं।

नूरे-मस्जूदे-मलक[४] गर्मे-तमाशा ही रहा
और तू मन्नत-पज़ीरे-सुबह-ए-[५] फ़र्दा ही रहा।

आरज़ू नूरे-हक़ीक़त की हमारे दिल में है
लैला-ए-ज़ौक़े-तलब का घर इसी महमिल में है
किस क़दर लज्ज़त, कशूदे-उक़्दा-ए-मुश्किल[६] में है
लुत्फ़े-सद-हासिल, हमारी सईये-बेहासिल में है

दर्दे-इस्तफ़हाम[७] से वाकिफ तिरा पहलू नहीं
जुस्तजू-ए-राजे-कुदरत का शनासा तू नहीं।

---

१. संसार को सजाने वाला हुस्न २. परिचित ३. मनुष्य के एक कष्ट के बराबर ४. सिजदा करने वाले फरिश्तों का नूर ५. आने वाली सुबह का दास ६. कठिन समस्याओं को हल करना ७. खोज की पीड़ा।

दर्द इश्क

ऐ ! दर्दे-इश्क़, है गुहरे-आबदार तू,
नामहरमों में देख न हो आशकार[1] तू।
पिनहाँ तहे-नकाब तिरी जलवा-गाह है
ज़ाहिर-परस्त महफ़िले-नौ की निगाह है।
आई नई हवा चमने हस्तो-बूद में
ऐ दर्दे-इश्क़ अब नहीं लज्ज़त नमूद में।
हाँ ! खुद-नुमाइयों[2] की तुझे जुस्तजू न हो
मन्नत-पज़ीर नाला-ए-बुलबुल का तू न हो।
ख़ाली शराबे-इश्क़ से लाले का जाम हो
पानी की बूंद गिरया-ए-शबनम का नाम हो।
पिनहाँ दरूने-सीना[4] कहीं राज़ हो तिरा
अश्के-जिगर-गुदाज़ न ग़म्माज़[5] हो तिरा।
गोया[6] ज़ुबाने-शायरे-रंगीं-बयाँ न हो
आवाज़े-मय में शिकवां-ए-फ़ुर्कत निहाँ न हो।

यह दौरे-नुकता-चीं है कहीं छिप के बैठ रह
जिस दिल में तू मकीं है वहीं छिप के बैठ रह।

१. प्रकट २. आत्म-प्रदर्शन ३. ओस के आँसू ४. छाती के भीतर ५. चुगली खाने वाला, भेद खोलने वाला ६. बोलना ७. बंसरी की आवाज

ग़ाफिल है तुझसे हैरते-इलम-आफरीदा[७] देख ।
जोया[८] नहीं तिरी नगहे-नारसीदा[९] देख !
जिसकी बहार तू हो यह ऐसा चमन नहीं
क़ाबिल तिरी नमूद के यह अंजुमन नहीं ।
यह अंजुमन है कुश्त-ए-नज्ज़ारा-ए-मजाज़[१]
मक़्सद तिरी निगाह का ख़लवत-सराये-राज़[२] ।
हर दिल मये-ख़याल की मस्ती से चूर है
कुछ और आज कल के कलीमों का तूर है ।

१. ज्ञान जात आश्चर्य २. खोजी ३. न पहुँचने वाली नगह ।

गुले-पजमुर्दा[1]

किस जबाँ से ऐ गुले-पज़मुर्दा तुझ को गुल कहूँ
किस तरह तुझको तमन्ना-ए-दिले बुलबुल कहूँ
थी कभी मोजे-सबा गेहवारा-ए-जुम्बाँ[2] तिरा
नाम था सेहने-गुलिस्ताँ में गुले-खंदाँ तिरा
तेरे एहसाँ का नसीमे सुबह को इक़रार।
बाग़ तेरे दम से गोया तबला-ए-अत्तार[3] था।

तुझ पे बरसाता है शबनम दीदा-ए-गिरयाँ मिरा
है निहाँ तेरी उदासी में दिले-वीराँ मिरा
मेरी बरबादी की है छोटी-सी इक तस्वीर तू
ख़्वाब मेरी जिंदगी थी जिसकी है ताबीर तू
हमचू-ने अज़ नेस्ताने-खुद-हिकायत मीकुनम।
बशनो ऐ गुल ! अज़ जुदाई हा शिकायत मीकुनम।

१. मुरझाया हुआ फूल २. झूलता हुआ पंगूरा ३. सुगन्ध-पात्र ४. बाँसुरी की भाँति अपने बाग की कहानी आप सुनाता हूँ। ऐ फूल तू सुन कि मैं जुदाई का शिकवा करता हूँ।

सैय्यद की लोहे तुरबत[1]

ऐ कि तेरा मुर्ग़-जाँ[2] तारे-नफ़स[3] में है असीर
ऐ कि तेरी रूह का तायर कफ़स में है असीर
इस चमन के नग़मा-पैराओं[4] की आज़ादी तो देख
शहर जो उजड़ा हुआ था उसकी आबादी तो देख
फ़िक्र रहती थी मुझे जिसकी वह महफ़िल है यही
सब्रो-इस्तक़लाल[5] की खेती का हासिल है यही

संगे-तुरबत है मिरा गर्वीदा-ए-तक़रीर देख
चश्मे-बातिन से ज़रा इस लोह की तहरीर देख।

मुद्दआ तेरा अगर दुनिया में है तालीमे-दीं
तर्के-दुनिय[7] क़ौम को अपनी न सिखलाना कहीं
वा[8] न करना फ़िर्क़ाबंदी के लिए अपनी जबाँ
छिप के है बैठा हुआ हंगामा-ए-मेहशर यहाँ
वस्ल के अस्बाब पैदा हों तिरी तहरीर से
देख ! कोई दिल न दुख जाए तिरी तस्वीर से

महफिले-नौ में पुरानी दास्तानों को न छेड़
रंग पर जो अब न आयें उन फ़सानों को न छेड़।

---

१. कब्र की तख्ती २. प्राण-पक्षी ३. साँस की डोरी ४. गायक ५. संतोष और धैर्य ६. बोल पर मुग्ध ७. सन्यास ८, खोलना।

तू अगर कोई मुदब्बिर[1] है तो सुन मेरी सदा
है दिलेरी दस्ते-अरबाबे-सियासत[2] का असा[3]
अज़-मतलब से झिझक जाना नहीं ज़ेबा तुझे
नेक है नीयत अगर तेरी तो क्या परवा तुझे

बंदा-ए-मोमिन[4] का दिल बीमो रजा से पाक है
क़ुव्वते-फ़र्मां-रवा[5] के सामने बेबाक है;

हो अगर हाथों में तेरे खामा-ए-मोजिज़-रक़म[7]
शीशा-ए-दिल हो अगर तेरा मिसाले-जामे-जम
पाक रख अपनी ज़बाँ तलमीज़े-रेहमानी[8] है तू
हो न जाए देखना तेरी सदा बे-आबरू

सोने वालों को जगादे शेर के एजाज़ से
ख़रमने-बातिल जलादे शोला-ए-आवाज़ से।

१. विचारक २. राजनीतिज्ञों का हाथ ३. लाठी ४. ईमानदार आदमी ५. भय कपट ६. शासक की शक्ति ७ जादू करने वाली लेखनी ८. खुदा का शिष्य ९, झूठ का खलिहान।

माहे-नौ[1]

टूट कर ख़ुर्शीद[2] की कशती हुई ग़र्क़ाबि-नील[3]
एक टुकड़ा तैरता फिरता है रूए-आबे-नील
तश्ते-गर्दूं[4] में टपकता है शफ़क़ का ख़ूने-नाब[5]
निश्तरे-क़ुदरत ने क्या खोली है फ़स्दे-आफ़ताब[6]
चर्ख़ ने बाली चुराली है अरूसे-शाम[8] की
नील के पानी में या मछली है सीमे-ख़ाम[7] की।

क़ाफ़िला तेरा रवाँ बेमन्नते-बाँगे-दरा
गोशे-इंसाँ सुन नहीं सकता तिरी आवाज़े-पा
घटने-बढ़ने का समाँ आँखों को दिखलाता है तू
है वतन तेरा किधर किस देश को जाता है तू ?
साथ ऐ सय्यारा-ए-साबित-नुमा[8] ले चल मुझे
ख़ारे-हसरत की ख़ालिश रखती है अब बेकल मुझे
नूर का तालिब हूँ घबराता हूँ इस बस्ती में मैं
तिफ्लके-सीमाब-पा[9] हूँ मकतबे हस्ती में मैं।

---

१. दूज का चाँद २. नील नदी में डूब गई ३. नील के पानी पर ४. आकाश की रकाबी ५. लाल खून ६. सूरज का आपरेशन ७. कच्ची चाँदी अर्थात् पारा ८. ग्रह जैसा नक्षत्र ९. व्यग्र बालक।

इंसान और बज़्मे-कुदरत

सुबह खुर्शीदे-दरख़्शाँ को जो देखा मैंने
बज़्मे-मामूरा-ए-हस्ती[1] से यह पूछा मैंने।
पर्तवे-मेहर[2] के दम से है उजाला तेरा,
सीमे-सैय्याल[3] है पानी तिरे दरियाओं का।
मेहर ने नूर का ज़ेवर तुझे पहनाया है,
तेरी महफिल को इसी शमअ ने चमकाया है।
गुलो-गुलज़ार तिरे खुल्द की तस्वीरें हैं,
यह सभी सूरा-ए-वल-शम्स[5] की तफ़सीरें हैं।
सुर्ख़ पोशाक है फूलों की, दरख़्तों की हरी,
तेरी मेहफ़िल में कोई लाल कोई सब्ज़ परी।
है तिरे खे़मा-ए-गर्दू[6] की तिलाई[7] झालर,
बदलियाँ लाल-सी आती हैं उफ़क़ पर जो नज़र।
क्या भली लगती है आँखों को शफ़क़ की लाली,
मये-गुलरंग[8], खुमे-शाम[9] में तूने डाली।
रुतबा तेरा है बड़ा, शान बड़ी है तेरी,
पर्दा-ए-नूर में मस्तूर है हर शै तेरी।

---

१. दुनिया २. सूरज का प्रतिबिम्ब ३. पिघली हुई चाँदी ४. स्वर्ग ५. कुरान की एक आयत जिसमें सूरज का विवरण है ६. आसमान का खेमा ७. सुनहरी ८. शाम का प्याला।

सुबह इक गीत सरापा है तिरी सितवत[१] का,
ज़र्रे-ख़ुर्शीद निशाँ तक भी नहीं ज़ुलमत[२] का।
मैं भी आबाद हूँ इस नूर की बस्ती में मगर,
जल गया फिर मिरी तक़दीर का अख़्तर[३] क्योंकर ?
नूर से दूर हूँ ज़ुलमत में गिरफ्तार हूँ मैं,
क्यों सियह-रोज-सियह-बख़्त, सियह-कार हूँ मैं।
मैं यह कहता था कि आवाज़ कहाँ से आई,
बामे-अफ़लाक सोया सेहने-जमीं से आई।
है तिरे नूर से वाबस्ता मिरी बूदो-नबूद,
बाग़बाँ है तिरी हस्ती पए-गुलज़ारे-बजूद[४]।
अंजुमन हुस्न की तू है तिरी तस्वीर हूँ मैं,
इश्क़ का तू है सहीफ़ा[५], तिरी तफ़सीर[६] हूँ मैं।
मेरे बिगड़े हुए कामों को बनाया तूने,
बार जो मुझसे न उट्ठा वह उठाया तूने।
नूरे-खुर्शीद की मुहताज है हस्ती मेरी,
और बेमन्नते-खुर्शीद चमक है तेरी।
हो न खुर्शीद तो वीराँ हो गुलिस्ताँ मेरा,
मंज़िले-ऐश की जा, नाम हो ज़िंदाँ[६] मेरा।

---

१. शान, दबदबा २. अँधेरा ३. दुनिया के बाग के लिए ४. पुस्तक ५. व्याख्या ६. कैदखाना।

आह ! ऐ राज़े-निहाँ के न समझने वाले !
हलक़ा-ए-दामे-तमन्ना[१] में उलझने वाले ।
हाय! गफ़लत! कि तिरी आँख है पाबंदे मजाज़,
नाज़[२] ज़ँबा[३] था तुझे तू है मगर गर्मे-नयाज़[४] ।
तू अगर अपनी हक़ीकत से ख़बरदार रहे,
न सियह-रोज़ रहे फ़िर न सियह कार रहे ।

१. अभिलाषाओं का जाल २. गर्व ३. विनम्रता

पयामे-सुबह

(लौंग फैलो से ली गई)

उजाला जब हुआ रुख़सत जबीने-शब की अफ़शाँ का[१],
नसीमे-ज़िंदगी पैग़ाम लाई सुबहे-खंदाँ का।
जगाया बुलबुले-रंगी-नवा को आशियाने में,
किनारे खेत के शाना हिलाया उसने देहकाँ का।
तिलस्मे-ज़ुल्मते-शब[२], सूर-ए-वन्नूर[३] से टूटा,
अंधेरे में उड़ाया ताजे-ज़र शम-ए-शबिस्तां[४] का।
पढ़ा ख़्वाबीद-गाने-दैर[५] पर अफ़सून-बेदारी[६],
ब्रह्मन को दिया पैग़ाम खुर्शीदे-दरख़्शाँ[७] का।
हुई बामे-हरम पर आके यों गोया मुअज्ज़न से
नहीं खटका तिरे दिल में नमूद-मेहरे-ताबां[८] का।
पुकारी इस तरह दीवारे-गुलशन पर खड़े होकर,
चटक ओ गुंचा-ए-गुल ! तू मुअज्ज़न है गुलिस्ताँ का।

१. गुलाल २. रात की कालिमा का जादू ३. वन्नूर कुरान की एक आयत जिसमें प्रभात का विवरण है ४. विश्राम गृह की शमअ ५. मन्दिर में सोये हुए ६. जगाने का मन्त्र ७. सूर्योदय।

दिया यह हुक्म सहरा में, चलो ऐ काफ़िले वालो !
चमकने को है जुगनू बन के हर ज़र्रा बयाबाँ का।
सुए-गोरे-गरीबाँ[१०] जब गई ज़िंदों की बस्ती से,
तो यों बोली नज़ारा देखकर शेहरे-ख़मोशाँ[११] का।

अभी आराम से लेटे रहो मैं फ़िर भी आऊँगी,
सुला दूँगी जहाँ को ख्वाब से तुमको जगाऊँगी। ‡

✧ ✧

१०-११. कब्रिस्तान की ओर
‡ संकेत क़यामत के दिन की ओर है जब मुर्दे जागेंगे।

इश्क ग्रौर मौत

(टैनीसन से ली गई)

सुहानी नमूदे-जहाँ की घडी थी
तबस्सुम-फ़िशाँ[1] ज़िंदगी की कली थी।
कहीं मेहर को ताजे ज़र मिल रहा था
ग्रता चाँद को चाँदनी हो रही थी।
सियह पैरहन[2] शाम को दे रहे थे
सितारों को तालीमे-ताबिन्दगी[3] थी।
कहीं शाख़े-हस्ती को लगते थे पत्ते
कहीं ज़िंदगी की कली फूटती थी।
फ़रिश्ते सिखाते थे शबनम को रोना
हँसी गुल को पहले-पहल ग्रा रही थी।
ग्रता दर्द होता था शायर के दिल को
खुदी तिशना-कामे-मये[4] बेखुदी थी।
उठी ग्रव्वल-ग्रव्वल घटा काली-काली
कोई हूर चोटी को खोले खड़ी थी।
ज़मीं का था दावा कि में ग्रास्माँ हूँ
मकाँ कह रहा था कि मैं ला-मकाँ हूँ।

१. मुस्कराती हुई २. काला लिबास ३. दमक ४. ग्रात्म-विमुग्धता की प्यासी।

ग़रज़ इस कदर था नज़ारा यह प्यारा
कि नज्ज़ारगी हो सरापा नजारा ।
मलक[1] आजमाते थे पर्वाज अपनी
जबीनों से नूरे-अज़ल आशकारा ।
फरिश्ता था इक, इश्क़ था नाम जिसका
कि थी रहबरी उसकी सब का सहारा ।
पए-सैर[2] फ़िरदौस[3] को जा रहा था
क़ज़ा से मिला राह में वह क़ज़ारा ।
यह पूछा तिरा नाम क्या, काम क्या है ?
नहीं आँख को दीद[4] तेरी गवारा ।
हुआ सुन के गोया क़जा का फ़रिश्ता
अजल[5] हूँ मिरा काम है आशकारा ।
मिरी आँख में जादू-ए-नेस्ती[6] है
पयामे-फ़ना है उसी का इशारा ।
मगर एक हस्ती है दुनिया में ऐसी
वह आतश है, मैं सामने उसके पारा ।
शरर[7] बन के रहती है इन्साँ के दिल में
वह है नूरे-मुतलक़[8] की आँखों का तारा ।
टपकती है आँखों से बन-बन के आँसू
वह आँसू कि हो जिनकी तलखी गवारा ।

१. फरिश्ते २. सैर के लिए ३. स्वर्ग ४. अकस्मात ५. मृत्यु ६. नश्वरता का जादू । ७. चिनगारी, शोला ८. खुदा ९. अमरत्व ।

सुनी इश्क़ ने गुफ्तगू जब कज़ा की
हसी उसके लब पर हुई आशकारा।
गिरी इस तबस्सुम की बिजली अजल पर
अंधेरे का हो नूर में क्या गुज़ारा
बफ़ा को जो देखा फ़ना हो गई वह
कज़ा थी, शिकारे-कज़ा हो गई वह।

ज़ोहद[1] और रिंदी[2]

इक मौलवी साहब की सुनाता हूँ कहानी
तेज़ी नहीं मंजूर तबीयत की दिखानी ।
शोहरा था बहुत आपकी सूफ़ी-मनिशी[3] का
करते थे अदब उनका अआली-व-अदानी[4] ।
कहते थे कि पिनहाँ है तसव्वुफ़[5] में शरीयत[6]
जिस तरह कि अल्फ़ाज में मुज़मर[7] हो मआनी[8] ।
लबरेज़ मये-ज़ोहद[9] से थी दिल की सुराही
थी तह में कहीं दुर्दे-खयाले-हमादानी[10] ।
करते थे बयाँ आप करामात का अपनी
मंजूर थी तादाद मुरीदों की बढ़ानी ।
मुद्दत से रहा करते थे हमसाय में मेरे
थी रिंद से ज़ाहिद की मुलाक़ात पुरानी ।
हज़रत ने मिरे एक शनासा[11] से यह पूछा
इक़बाल ! कि है कुमरी-ए-शमशादे[12] मआनी ।
पाबन्दी-ए-अहकामे-शरीयत में है कैसा
गो शेर में है रश्के-कलामे हमादानी ।

१. पारसाई २. चरित्र हीनता, शराबीपन ३. पारसाई, भक्ति ४. छोटे बड़े ५. सूफीवाद ६. इस्लाम का धर्म शास्त्र ६. निहित १०. अर्थ ११. पारसाई की शराब से भरी हुई १२. सर्वज्ञता की भ्रान्ति ११. मित्र १२. अर्थों के पेड़ का बुलबुल अर्थात् कवि १३. धर्मशास्त्र के आदेशों का पालन १४. हमदान के प्रसिद्ध कवि कलीम से बढ़कर ।

सुनता हूँ कि काफ़िर नहीं हिन्दू को समझता।
है ऐसा अक़ीदा, असरे-फ़ल्सफ़ा[१]-दानी।

हैं इसकी तबीयत में तशय्यो[२] भी ज़रासा
तफ़ज़ीले-अली हमने सुनी उसकी जबानी।

समझा है कि है राग इबादात[३] में दाख़िल
मक़सूद है मज़हब की मगर ख़ाक उड़ानी।

कुछ आर[४] उसे हुस्न-फ़रोशों से नहीं है
आदत यह हमारे शोअरा[५] की है पुरानी।

गाना है जो शब को तो सहर को है तिलावत[६]
इस रम्ज़[७] के अब तक न खुले हम पे मआनी।

लेकिन यह सुना अपने मुरीदों से हैं मैंने
बेदाग़ है मानंदे-सहर उसकी जवानी।

मजमूआ-ए-अज़दाद[८] है इक़बाल नहीं है
दिल दफ्तरे-हिकमत[९] है तबीयत ख़फक़ानी[१०]।

रिंदी से भी आगाह, शरीयत से भी वाक़िफ़
पूछो जो तसव्वुफ़ की तो मंसूर का सानी।

इस शख्स की हम पर तो हक़ीक़त नहीं खुलती,
होगा यह किसी और ही इसलाम का बानी।

१. दर्शन-ज्ञान का प्रभाव २. शियापन, शिया मुसलमानों का एक सम्प्रदाय जो हज़रत मुहम्मद और अली को मानता है लेकिन उनकी भिन्न मंडली और खिलाफाओं को नहीं मानता। ३. अली की प्रशंसा ४. पूजा-पाठ ५. परहेज़ ६. कुरान का पाठ ७. रहस्य ८. असंगति-पुंज ९. ज्ञान का दफ्तर १०. सौदाई।

अलक़िस्सा बहुत तूल दिया वअज़ को अपने,
तादेर रही आपकी यह नग़ज़-बयानी[१]।
इस शहर में जो बात हो उड़ जाती है सब में,
मैंने भी सुनी अपने अहिब्बा[२] की जबानी।
इक दिन जो सरे-राह मिले हज़रते-ज़ाहिद,
फिर छिड़ गई बातों में वही बात पुरानी।
फ़रमाया शिकायत वह मुहब्बत के सबब थी,
था फ़र्ज़ मिरा राह शरीयत की दिखानी।
मैंने यह कहा कोई गिला मुझको नहीं है,
यह आपका हक़ था जरहे-कुर्बे-मकानी[३]।
ख़म है सरे-तसलीम मिरा आपके आगे,
पीरी है तवाज़ो के सबब मेरी जवानी।
गर आपको मालूम नहीं मेरी हक़ीकत।
पैदा नहीं कुछ इससे क़सूरे-हमादानी[४]।
मैं खुद भी नहीं अपनी हक़ीक़त का शुनासा[५],
गेहरा है मिरे बेहरे-खयालात[६] का पानी।
मुझको तमन्ना है कि इकबाल को देखूँ,
की उसकी जुदाई में बहुत अश्क-फ़िशानी[७]।

इकबाल भी इकबाल से आगाह नहीं है,
कुछ इसमें तमस्खुर[८] नहीं वल्लाह नहीं है।

◈ ◈

---

१. भाषण २. मित्रों ३. पड़ोस के कारण ४. सर्वज्ञता की त्रुटि ५. परिचित ६. विचार-सागर ७. रोया ८. मजाक ठिठोल।

शायर

क़ौम गोया जिस्म है, अफ़राद[१] हैं आज़ाये-क़ौम[२]
मंज़िले-सनअत[३] के रह-पैमा[४] हैं दस्तो-पाये[५]-क़ौम
मेहफ़िले-नज़्मे-हकूमत, चेहरा-ए-ज़ेबाए-क़ौम
शायरे-रंगी-नवा है दीदा-ए-बीना-ए-क़ौम
मुब्तला-ए-दर्द कोई उज़्व हो रोती है आँख,
क़िस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आँख।

◈ ◈

१. फर्द का बहुवचन अर्थ व्यक्ति २. राष्ट्र के अंग ३. उद्योग ४. राही अर्थात् कारीगर ५. राष्ट्र के हाथ-पाँव ६. सरकारी प्रशासन ७. राष्ट्र का सुन्दर मुख ८. राष्ट्र की आँख ९. अंग।

दिल

किस्स-ए-दारो-रसन-बाज़ी-ए-तिफ़लाना-ए-दिल[१] ।
इल्तजा-ए-अरनी, सुर्ख़ी-ए-अफसाना-ए-दिल[२] ।
यारब ! इस साग़रे-लबरेज़ की मय क्या होगी
जादा-ए-मुल्के-बक़ा[३] है, ख़ते-पैमाना-ए-दिल ।
अब्रे-रहमत था कि थी इश्क़ की बिजली, यारब !
जल गई मजरा-ए-हस्ती[४] तो उगा दाना-ए-दिल ।
हुस्न का गंजे-गराँ-माया[५] तुझे मिल जाता
तूने फ़रहाद ! न खोदा कभी वीराना-ए-दिल ।
अर्श का है कभी काबे का है धोखा उस पर
किसकी मंजिल है इलाही मिरा काशाना-ए-दिल ।
उसको अपना है जनूँ और मुझे सौदा अपना
दिल किसी और का दीवाना, मैं दीवाना-ए-दिल ।

१. फाँसी-संकेत है मंसूर की घटना की ओर । कवि का कहना यह है कि मंसूर की फाँसी का किस्सा दिल के लिए बच्चों का एक खेल है २. अरनी-मूसा का वह शब्द जिसमें तूर पर खुदा का जलवा देखने की इच्छा व्यक्त हुई। कवि का कहना है कि मूसा का यह शब्द हृदय की गाथा का शीर्षक है । ३. दिल के प्याले की रेखा परलोक का मार्ग है ४. जीवन खेती ५. अमूल्य पूंजी ।

तू समझता नहीं ऐ ज़ाहिदे-नादाँ इसको
रश्के-सद-सजदा[1] है इक लग़ज़िशे-मस्ताना-ए-दिल[2]।
ख़ाक के ढेर को अक्सीर बना देती है
वह असर रखती है खाकिस्तरे-परवाना-ए-दिल[3]।
इश्क़ के दाम में फंस कर यह रिहा होता है।
बर्क़ गिरती है तो यह नख़्ल[4] हरा होता है।

१. सौ सजदों से बढ़कर २. मस्त दिल की लड़खड़ाहट ३. दिल के परवाने की राख ४. पौधा।

मौजे-दरिया

मुज़्तरिब रखता है मेरा दिले-बेताब मुझे
ऐने-हस्ती[१] है तड़प, सूरते-सीमाब[२] मुझे
मौज है नाम मिरा बहर है पायाब मुझे
हो न ज़ंजीर कभी हलक़ा-ए-गिरदाब[३] मुझे

आब में मिस्ले-हवा जाता है तौसन[४] मेरा
ख़ारे-माही[५] से न अटका कभी दामन मेरा।

मैं उछलती हूँ कभी जज़्बे-महे-कामिल[६] से
जोश में सर को पटकती हूँ कभी साहिल से
मैं वह रहरो कि मुहब्बत है मुझे मंजिल से
क्यों तड़पती हूँ यह पूछे कोई मेरे दिल से

जेहमते-तंगी-ए-दरिया[७] से गुरेजाँ हूँ मैं
वुस्अते-बहर की फ़ुर्क़त में परेशाँ हूँ मैं।

१. जीवन तत्त्व २. पारे की भाँति ३. भंवर, विवर्त ४. घोड़ा ५. मछली का काँटा ६. पूर्णिमा के चाँद का आकर्षण ७. नदी की संकीर्णता का कष्ट ८. भागने वाली ९. सागर की व्यापकता।

रुख़्सत ऐ बज़्मे-जहाँ !

(ऐमर्सन से ली गई)

रुख़्सत ऐ बज़्मे जहाँ सूए-वतन जाता हूँ मैं
आह ! इस आबाद वीराने में घबराता हूँ मैं ।
बस कि मैं अफ्सुर्दा दिल हूँ दरख़ुरे-महफ़िल[1] नहीं
तू मिरे काबिल नहीं है मैं तिरे काबिल नहीं ।
क़ैद है दरबारे-सुलतानो-शाबिस्ताने वज़ीर
तोड़ कर निकलेगा ज़ंजीरे-तिलाई का असीर ।
गो बड़ी लज्जत तिरी हंगामा-आराई में है
अजनबीयत सी मगर तेरी शनासाई में है ।
मुद्दतों तेरे खुदाराओं से हम-सोहबत रहा
मुद्दतों बेताब, मौजे-बहर की सूरत रहा ।
मुद्दतों बैठा तिरे हंगामा-ए-इशरत में मैं ।
रोशनी की जुस्तजू करता रहा जुलमत में मैं ।
मुद्दतों ढूँढ़ा किया नज़्ज़ारा-ए-गुल ख़ार में,
आह वह यूसुफ़[6] न हाथ आया तिरे बाजार में ।

---

१. सभा के योग्य २. बादशाह का दरबार और वजीर का महल ३. सोने की जंजीर ४. आत्म प्रदर्शक ५. संगति ६. हजरत यूसुफ जो इस्लामी देवमाला के अनुसार संसार का सुन्दरतम व्यक्ति था, पिता हज़रत याकूब थे । भाइयों ने ईर्षावश कुएँ में डाल दिया और मिस्र के बाजार में बिका ।

चश्मे-हैराँ ढूँढ़ती अब और नज़्ज़ारे को है,
आरज़ू साहिल की मुझ तूफ़ान के मारे को है।

छोड़ कर मानंदे-बू तेरा चमन जाता हूँ मैं,
रुख़्सत ऐ-बज़्मे जहाँ सूए-वतन जाता हूँ मैं।

घर बनाया है सकूने-दामने-कोहसार में,
आह ! यह लज़्ज़त कहाँ मौसीकी-ए-गुफ्तार[1] में।

हमनशीने-नर्गिसे-शेहला[2], रफ़ीके गुल हूँ मैं,
है चमन मेरा वतन, हमसाया-ए-बुलबुल हूँ मैं।

शाम को आवाज़ चश्मों की सुलाती है मुझे,
सुबह फ़र्शे-सब्ज़ से कोयल जगाती है मुझे।

बज़्मे-हस्ती में है सब को महफ़िल आराई-पसंद[3]।
है दिले-शायर को लेकिन कुंजे-तनहाई[4] पसंद।

है जुनूँ मुझको कि घबराता हूँ आबादी में मैं
ढूँढ़ता फिरता हूँ किसको कोह की वादी में मैं।

शौक़ किसका सब्ज़ा-ज़ारों में फिराता है मुझे
और चश्मों के किनारों पर सुलाता है मुझे।

ताना ज़न है तू कि शैदा कुंजे-उजलत का हूँ मैं
देख ! ऐ गाफ़िल पयामी बज़्मे-कुदरत का हूँ मैं।

हमवतन शमशाद का, कुम्री का मैं हमराज़ हूँ
इस चमन की खामुशी में गोश-बर-आवाज़[5] हूँ।

कुछ जो सुनता हूँ तो औरों को सुनाने के लिए।
देखता हूँ कुछ तो औरों को दिखाने के लिए।

---

१. बोलने का संगीत २. सुन्दर नर्गिस का साथी ३. महफिल सजाना
४. एकान्तवास ५. आवाज पर कान लगाये हुए।

आशिक़ो-उज़लत है दिल, नाज़ाँ हूँ अपने घर में मैं
खंदा-ज़न हूँ, मसनदे-दारा-व-इस्कंदर[1] पे मैं।

लेटना ज़ेरे-शजर रखता है जादू का असर
शाम के तारे पे जब पड़ती हो रह-रह के नज़र।

इल्म के हैरत कदे में है कहाँ उसकी नमूद,
गुल की पत्ती से नज़र आता है राज़े हस्तो-बूद[2]।

१. दारा और सिकन्दर की गद्दी २. दुनिया, संसार।

तिफ्ले-शीर-ख्वार[1]

मैंने चाकू तुझ से छीना है तो चिल्लाता है तू,
मेहरबाँ हूँ मैं, मुझे नामेहरबाँ समझा है तू।
फिर पड़ा रोगगा ऐ नौवारिदे-अकलीमे-ग़म,[2]
चुभ न जाय देखना! बारीक है नोके-क़लम।
आह! क्यों दुख देने वाली शय से तुझको प्यार है
खेल! इस काग़ज़ के टुकड़े से, यह बे-आजार[3] है।
गेंद है तेरी कहाँ? चीनी की बिल्ली है किधर?
वह ज़रा सा जानवर टूटा हुआ है जिसका सर।
तेरा आयना था आज़ादे-गुबारे-आरज़ू[4],
आँख खुलते ही चमक उट्ठा शरारे-आरज़ू।
हाथ की जुम्बिश, में तर्ज़े-दीद[5] में पौशीदा है,
तेरी सूरत आरज़ू भी, तेरी नौजाईदा[6] है।
ज़िंदगानी है तिरी आज़ादे-क़ैदे-इम्तियाज़[7],
तेरी आँखों पर हवैदा[8] है मगर कुदरत का राज़।
जब किसी शय पर बिगड़ कर मुझ से चिल्लाता है तू
क्या तमाशा है रद्दी कागज़ से मन जाता है तू।

---

१. दूध पीता बच्चा २. दुखी दुनिया में नवागंतुक ३. हानिरहित ४. अभिलाषा की धूल से मुक्त ५. देखने का ढंग ६. नवजात ७. भेदभाव से मुक्त ८. प्रकट

आह ! इस आदत में हम-आहंग[1] हूँ मैं भी तिरा
तू तलव्वुन-आशना[2], मैं भी तलव्वुन-आशना।

आरज़ी लज्ज़त का शैदाई हूँ चिल्लाता हूँ मैं।
जल्द आ जाता है गुस्सा, जल्द मन जाता हूँ मैं।

मेरी आँखों को लुभा लेता है हुस्ने-ज़ाहिरी
कम नहीं कुछ तेरी नादानी से नादानी मिरी।

तेरी सूरत, गाह गिरयाँ,[3], गाह खंदाँ मैं भी हूँ
देखने को नौजवाँ हूँ, तिफ़ले-नादाँ मैं भी हूँ।

१. समान २. अस्थिर स्वभाव ३. रोना ४. हँसना।

तस्वीरे-दर्द

नहीं मन्नत-कशे-ताबे-शुनीदन[1] दास्ताँ मेरी
खमोशी, गुफ़्तगू है, बेजुबानी है जुबाँ मेरी ।

यह दस्तूरे-जुबाँ-बंदी है कैसा तेरी महफ़िल में
यहाँ तो बात करने को तरसती है जुबाँ मेरी ।

उठाय कुछ वरक़ लाले ने, कुछ नर्गिस ने, कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्ताँ मेरी ।

उड़ाई कुमरियों ने, तूतियों ने अन्दलीबों ने
चमन वालों ने मिल कर लूट ली तर्जे-फ़ुगाँ मेरी ।

टपक ऐ शमअ ! आँसू बन के परवाने की आँखों से
सरापा दर्द हूँ हसरत भरी है दास्ताँ मेरी ।

इलाही फिर मज़ा क्या हैं यहाँ दुनिया में रहने का
हयाते जावदाँ[2] मेरी न मर्गे-नागहाँ[3] मेरी ।

मिरा रोना नहीं रोना है यह सारे गुलिस्ताँ का
वह गुल हूँ मैं, ख़ज़ाँ हर गुल की है गोया खज़ा मेरी ।

दरीं हसरतसरा, उम्रेस्त अफसूने-जरसदारम
ज़फ़ै जे-दिल तपीदनहा, खरोशे-बेनफ़स दारम ।[4]

१. सुनवाई की मुहताज २. अमर जीवन ३. अकस्मात मृत्यु ४. इस दुनिया में मेरी उम्र जरस की आवाज है दिल की जलन के कारण मूक कलरव हूँ ।

रियाजे-दहर में ना-आशना-ए-बज्मे-इशरत हूँ[1]
खुशी रोती है जिसको मैं वह महरूमे-मुसर्रत[2] हूँ।

मिरी बिगड़ी हुई तक़दीर को रोती हैं गोयाई
मैं हर्फे-जेरे-लब[3], शर्मिन्दा-ए-गोशे-समाअत[4] हूँ।

परेशाँ हूँ में मुश्ते-खाक, लेकिन कुछ नहीं खुलता
सिकन्दर हूँ कि आईना हूँ या गर्दे-कदूरत[5] हूँ।

यह सब कुछ है मगर हस्ती मिरी मक़सद है कुदरत का
सरापा नूर हो जिसकी हक़ीकत, मैं वह जुल्मत हूँ।

ख़ज़ीना हूँ, छिपाया मुझको मुश्ते-खाके-सेहरा[6] ने
किसी को क्या खबर है मैं कहाँ हूँ किस की दौलत हूँ?

नज़र मेरी नहीं ममनूने-सैरे-अरसा-ए-हस्ती
मैं वह छोटी सी दुनिया हूँ कि आप अपनी विलायत हूँ।

न महबा हूँ, न साक़ी हूँ, न मस्ती हूँ न पैमाना
मैं इस मैखाना-ए-हस्ती में हर शय की हकीकत हूँ।

मुझे राजे दो आलम[6], दिल का आईना दिखाता है
वही कहता हूँ जो कुछ सामने आँखों के आता है।

---

१. संसार के बाग में सुख से वंचित हूँ २. उल्लास से वंचित ३. होठों पर छाया हुआ शब्द ४. सुनवाई से लज्जित अर्थात् जिसे सुना नहीं गया ५. द्वेष की धूल ६. संसार की सैर का कृतज्ञ।

अता ऐसा बयाँ मुझको हुआ रंगीं बयानों में
कि बामे-अर्श[1] के तायर हैं मेरे हम जुबानों में।

असर यह भी है इक मेरे जनूने-फ़ितना-सामा[2] का
मेरा आईना-ए-दिल है क़ज़ा के राज़दानों में।

रुलाता है तिरा नज़्ज़ारा-ऐ हिंदोस्तां मुझको
कि इब्रत खे़ज़ है तेरा फ़साना सब फसानों में।

दिया रोना मुझे ऐसा कि सब कुछ दे दिया गोया
लिखा कलके-अज़ल[3] ने मुझको तेरे नौहाख्वानों में।

निशाने-बर्गे-गुल तक भी न छोड़ इस बाग़ में गुलचीं
तिरी क़िस्मत से रज्म आराइयाँ है बागबानों में।

छिपाकर आस्तीं में बिजलियाँ रक्खी हैं गर्दूं ने
अनादिल बाग़ के गाफ़िल न बैठें आशयानों में।

सुन ऐ गाफ़िल! सदा मेरी, यह ऐसी चीज़ है जिसको
बज़ीफ़ा जान कर पढ़ते हैं तायर बोस्तानों में।

वतन की फ़िक्र कर नादाँ मुसीबत आने वाली है
तिरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में

ज़रा देख इसको जो कुछ हो रहा है होने वाला है
धरा क्या है भला अहदे-कुहन की दास्तानों में।

यह खामोशी कहाँ तक? लज्ज़ते-फ़रियाद पैदा कर
जमीं पर तू हो, और तेरी सदा हो आस्मानों में।

---

१. लोक-परलोक का रहस्य २. आकाश की छत ३. फितना उठाने वाला उन्माद ४. विधि की लेखनी ५. शोक करने वाले ६. झगड़े।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँ वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में।

यही आईने-कुदरत[1] है, यही उस्लूबे-फ़ितरत[2] है
जो है राहे-अमल में गामज़न मेहबूबे-फ़ितरत है।

हवैदा आज अपने ज़ख्मे-पिनहाँ करके छोड़ूँगा
लहू रो-रो के महफ़िल को गुलिस्ताँ करके छोड़ूँगा।

जलाना है मुझे हर शम-ए-दिल को सोजे पिनहाँ से,
तिरी तारीक रातों में चिराग़ाँ करके छोड़ूगा।

मगर गुँचों की सूरत हों दिले-दर्द आशना[3] पैदा,
चमन में मुश्ते-खाक अपनी परेशाँ करके छोड़ूँगा।

पिरोना एक ही तस्बीह में इन बिखरे दानों को,
जो है मुशिकल तो इस मुश्किल को आसाँ करके छोड़ूँगा।

मुझे ऐ हमनशीं रहने दे शग्ले-सीना[4]-कावी[5] में,
कि मैं दागे-मुहब्बत को नुमायाँ करके छोड़ूँगा।

दिखा दूँगा जहाँ को जो मिरी आँखों ने देखा है,
तुझे भी सूरते-आईना हैराँ करके छोड़ूँगा।

जो है पर्दों में पिनहाँ, चश्मे-बीना देख लेती है,
ज़माने की तबीयत का तकाजा देख लेती है।

किया रिफ़अत की लज्ज़त से न खूद को आशना तूने,
गुज़ारी उम्र पस्ती में मिसाले नक़्शे-पा तूने।

रहां दिल बस्त-ए-महफिल मगर अपनी निगाहों को,
किया बैरूने-महफ़िल से न हैरत-आशना तूने।

१. प्रकृति का नियम २. प्रकृति की शैली ३. पीड़ा से परिचित मन ४. छाती पीटने में व्यस्त ५. महफ़िल से युक्त ६. महफ़िल के अतिरिक्त।

फ़िदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर,
मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने।

तास्सुब छोड़ नादाँ ! दहर के आयना-खाने में,
यह तस्वीरें है तेरी जिनको समझा है बुरा तूने।

सरापा नाला-ए-बेदादे-सोजे-ज़िंदगी होजा,
सपंद-आसा गिरह में बाँध रखी है सदा तूने।

सफा-ए-दिल को क्या आरायशे-रंगे-तल्लुक से,
कफे-आयना पर बाँधी है ओ गाफ़िल हिना तूने।

जमीं क्या आसमाँ भी तेरी कज-बीनी पे रोता है,
ग़जब है सत्रे-कुरआँ को चलीपा कर दिया तूने।

जुबाँ से गर किया तौहीद का दावा तो क्या हासिल,
बनाया है बुते-पिंदार को अपना खुदा तूने।

कुएँ में तूने यूसुफ़ को जो देखा भी तो क्या देखा,
अरे गाफ़िल जो मुतलक़ था मुक़ीयद कर दिया तूने।

हवस बाला-ए-मिम्बर है तुझे रंगी-बयानी की,
नसीहत भी तिरी सूरत है इक अफ़साना ख्वानी की।

दिखा वह हुस्ने-आलम सोज़ अपनी चश्मे पुरनम को,
जो तड़पाता है परवाने को रुलवाता है शबनम को।

१. मन की पवित्रता २. सांसारिक अनुराग ३. आईने की हथेली ४. मेंहदी ५. गलत नीति ६. कुरान की आयत को पहेली बता दिया ७. एकेश्वरवाद ८. अभिमान की प्रतिमा ९. कैद १०. मंच पर।

निरा नज़्ज़ारा ही ऐ बुलहवस[१] ! मक़सद नहीं उसका,
बनाया है किसी ने कुछ समझ कर चश्मे-आदम को।

अगर देखा भी उसने सारे आलम को तो क्या देखा,
नज़र आई न कुछ अपनी हक़ीक़त जाम से जमको।

शजर है फ़िरक़ा-आराई[२], तास्सुब है समर[३] उसका,
यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को।

न उट्ठा जज़्बा-ए-ख़ुर्शीद[४] से इक बर्गे-गुल[५] तक भी,
यह रिफ़अत की तमन्ना है कि ले उड़ती है शबनम को।

फ़िरा करते नहीं मजरूहे-उल्फ़त[६] फ़िक्रे-दरमाँ[७] में,
ये ज़ख़्मी आप कर लेते हैं पैदा अपनी मरहम को।

मुहब्बत के शरर से दिल-सरापा नूर होता है,
ज़रा से बीज से पैदा रियाजे-तूर[८] होता है।

दवा हर दुख की है मजरूहे-तेग़े आरज़ू रहना,
इलाजे-ज़ख्म है आज़ादे-अहसाने-रफ़ू रहना।

शराबे-बेखुदी से ता-फ़लक परवाज़ है मेरी,
शकस्ते-रंग से सीखा है मैंने बनके बू रहना।

थमे क्या दीदा-ए-गिरयाँ वतन की नौहा-ख्वानी में,
इबादत चश्मे-शायर की है हरदम बावज़ू रहना

बनायें क्या समझ कर शाखे-गुला पर आशियाँ अपना,
चमन में आह क्या रहना जो हो बेआबरू रहना।

१. प्रलोभी २. साम्प्रदायिकता ३. फल ४. सूरज का आकर्षण ५. फूल की पत्ती ६. प्रेम के घायल ७. उपचार की चिंता ८. तूर का बाग।

जो तू समझे तो आजादी है पौशीदा मुहब्बत में,
गुलामी है असीरे-इम्तियाजे-मा-व-तू[1] रहना,

यह इस्तग़ना[2] है, पानी में नगूँ[3] रखता है साग़र को,
तुझे भी चाहिये मिस्ले-हबाबे-आबजू[4] रहना ॥

न रह अपनों से बेगाना इसी में खैर है तेरी,
अगर मंजूर है दुनिया में, ओ बेगाना खू ! रहना।

शराबे-रूह-परवर है, मुहब्बत नौ-ए-इन्साँ की,
सिखाया उसने मुझको मस्ते-बेजामो-सबू[5] रहना।

मुहब्बत ही से पाई है शफा बीमार कौमों ने,
किया है अपने बख्ते-खुफ़ता[6] को बेदार कौमों ने।

बयाबाने-मुहब्बत, दश्ते-गुर्बत भी, वतन भी है,
यह वीराना कफ़स भी आशियाना भी चमन भी है।

मुहब्बत ही वह मंजिल है कि मंजिल भी है सहरा भी,
जरस भी, कारवाँ भी, राहबर भी, राहजन भी है।

मरज कहते हैं सब इसको, यह है लेकिन मरज ऐसा,
छिपा जिसमें इलाजे-गर्दिशे-चर्खे-कुहन भी है।

जलाना दिल का है गोया सरापा नूर हो जाना,
यह परवाना जो सोज़ाँ हो तो शम-ए-अंजुमन भी है।

१. मैं और तू का भेद २. विरक्त ३. झुका हुआ ४. नदी के बुलबुले के सदृश ५. बिना पिये मस्त ६. सुप्त भाग्य।

वही इक हुस्न है लेकिन नजर आता है हर शय में,
यह शीरी भी है गोया, बेसतूँ[1] भी, कोहकन[2] भी है।

उजाड़ा है तमीजे-मिल्लतो-आईं ने कौमों को,
मिरे एहले-वतन के दिल में कुछ फ़िक्रे-वतन भी है।

सकूत-आमोज[3], तूले[4] दास्ताने-दर्द है वर्ना,
जबाँ भी है हमारे मूँह में और ताबे-सुखन भी है

नमी गर्दीद कोतह, रिश्ता-ए-मानी रिहा करदम
हिकायत बूद बेपायाँ बख़ामोशी अदा करदम[5]।

❖ ❖

१—२. बेसतू और कोहकन (फ़रहाद) दो प्रसिद्ध प्रेमी, ३. शान्ति देने वाली ४. दर्द की लम्बी कहानी ५. ग्रंथ के अर्थों की डोरी बहुत खोली, पर कम नहीं हुई। इतनी लम्बी कहानी थी कि मैंने उसे मूक रहकर व्यक्त किया।

नाला-ए-फ़िराक़

(आर्नल्ड की याद में)

जा बसा मग़रिब में आख़िर ऐ मकाँ तेरा मकीं
आह मशरिक़ की पसंद आई न उसको सरज़मीं
आ गया आज इस सदाक़त का गिरे दिल को यक़ीं
ज़ुल्मते-शब से ज़या-ए-रोज़े-फ़ुरक़त कम नहीं

ताज़ आगोशे-विदाअश दाग़े-हैरत चीदा अस्त,
हमवू शम-ए-कुशता, दर चश्मे-निगह ख्वाबीदा अस्त ।

कुश्त-ए-उज़लत[1] हूँ आबादी से घबराता हूँ मैं
शहर से सौदा को शिद्दत में निकल जाता हूँ मैं
यादे-अय्यामे-सलफ़[2] से दिल को तड़पाता हूँ मैं
बहरे-तस्कीं[3] तेरी जानिब दौड़ता आता हूँ मैं

आँख गो मानूस है तेरे दरो-दीवार से,
अजनबीयत है मगर पैदा मिरी रफ़तार से ।

ज़र्रा मेरे दिल का खुर्शीद-आशना होने को था
आयना टूटा हुआ, आलम-नुमा होने को था
नख़्ल मेरी आरज़ूओं का हरा होने को था
आह क्या जाने कोई मैं क्या से क्या होने को था

---

१. एकान्त का मारा २. बीते दिनों का याद ३. सान्त्वना के लिए ४. परिचित ।

अब्रे-रहमत दामन अज़ गुलज़ारे मन बरचीद-व रफ्त,
अंदके बर ग़ुंचा-हाय-आरज़ू बारीद-ब-रफ्त ।[१]

तू कहाँ है ऐ कलीमे-ज़लवए-सीना-ए-इल्म[२]
थी तिरी मौजे-नफ़स, बादे-निशात अफ्ज़ा-ए-इल्म
अब कहाँ वह शोफ़े-रह पैमाईये-सेहरा-ए-इल्म[३]
तेरे दम से था हमारे सर में भी सौदा-ए-इल्म

शोरे-लैला को ? कि बाज़ आरायशे-सौदा कुनद,
ख़ाके-मजनूँ रा गुबारे-खातिरे-सेहरा कुनद ।[४]

खोल देगा दश्ते-वहशत, उक्दा-ए-तक़दीर को
तोड़ कर पहुँचूँगा मैं पंजाब की ज़ंजीर को
देखता है दीदा-ए-हैराँ तिरी तस्वीर को
क्या तसल्ली हो मगर गर्वीदा-ए-तक़रीर को

ताबे-गोयाई नहीं रखता दहन[५] तस्वीर का,
ख़ामुशी कहते हैं जिसको, है सुख़न तस्वीर का ।

---

१. दया का बादल मेरे बाग से उठा और चला गया । अभिलाषाओं की कुछ कलियों पर बरसा और गुजर गया । २. ज्ञान के तूर का मूसा । ३. ज्ञान के जंगल को छान मारने का शौक ४. लैला की आवाज़ कहाँ है ? कि पागल पन फिर उभर आय और मजनू की खाक जंगल के स्वभाव की धूल बन जाय । ५. मुँह ।

चाँद

मेरे वीराने से कोसों दूर है तेरा वतन
है मगर दरिया-ए-दिल तेरी कशिश से मौजज़न

क़स्द[१] किस महफ़िल का है, आता है किस महफ़िल से तू?
ज़र्दरू[२] शायद हुआ, रंजे-रहे-मंज़िल से तू?

आफरीनश[३] में सरापा नूर तू, जुलमत हूँ मैं,
इस सियह-रोज़ी पे लेकिन तेरा हमक़िस्मत हूँ मैं

आह ! मैं जलता हूँ सोजे-इश्तियाके-दीद से,
तू सरापा सोज़ दाग़े-मन्नते-खुर्शीद[४] से।

एक हलक़े पर अगर क़ायम तिरी रफ़तार है
मेरी गर्दिश भी मिसाले गर्दिशे-परकार है।

ज़िंदगी की रह में सरगर्दां है तू, हैरां हूँ मैं,
तू फ़रोज़ाँ महफ़िले-हस्ती में है, सोज़ाँ हूँ मैं।

मैं रहे-मंज़िल में हूँ, तू भी रहे-मंज़िल में है,
तेरी महफ़िल में जो ख़ामोशी है, मेरे दिल में है।

तू तलब-ख़ू[६] है तो मेरा भी यही दस्तूर है,
चाँदनी है नूर तेरा, इश्क मेरा नूर है।

अंजुमन है एक मेरी भी जहाँ रहता हूँ मैं
बज़्म में अपनी अगर थकता है, तू, तनहाँ हूँ मैं।

---

१. इरादा २. पीला मुख ३. स्वभाव ४. सूरज के एहसान का दाग
५. चमकदार ६. जिज्ञासू।

महर का पर्तों तिरे हक़ में है पैग़ामे-अजल,
महव कर देता है मुझको जलवा-ए-हुस्ने अज़ल।

फ़िर भी ऐ माहे-मुबीं, मैं और हूँ तू और है,
दर्द जिस पहलू में उठता हो वह पहलू और है।

गरचे मैं ज़ुल्मत सरापा हूँ, सरापा नूर तू,
सैंकड़ों मंज़िल है ज़ौक़े-आगही[1] से दूर तू।

जो मिरी हस्ती का मक़सद है, मुझे मालूम है,
यह चमक वह है जबीं जिससे तिरी मेहरूम है।

१. जानने की उत्सुकता।

बिलाल[1]

चमक उठा जो सितारा तिरे मुक़द्दर का
हबश से तुझको उठाकर हिजाज़ में लाया
हुई इसी से तिरे ग़मकदे की आबादी
तिरी ग़ुलामी के सदक़े हज़ार आज़ादी
वह आस्ताँ न छुटा तुझ से एक दम के लिए
किसी के शौक़ में तूने मज़े सितम के लिए
जफ़ा जो इश्क़ में होती है वह जफ़ा ही नहीं
सितम न हो तो मुहब्बत में कुछ मज़ा ही नहीं ।
नज़र थी सूरते-सलमाँ[2], अदा-शनास तिरी
शराबे-दीद से बढ़ती थी और प्यास तिरी
तुझे नज़ारे का मिस्ले-कलीम सौदा था
अवैस[3] ताक़ते-दीदार को तरसता था
मदीना तेरी निगाहों का नूर था गोया
तिरे लिए तो यह सहरा ही नूर था गोया
तिरी नज़र को रही दीद में भी हसरते दीद
ख़ुनक[4] दिले कि तपीदों-दमे नया साईद—
गिरी वह बर्फ़ तिरी जाने-नाशकेबा[5] पर
कि खंदाज़न[6] तिरी ज़ुल्मत थी दस्ते-मूसा पर

---

१. वह व्यक्ति जिसने शुरू में इस्लाम धर्म ग्रहण किया और हजरत मुहम्मद का बहुत साथ दिया। अत्यन्त सुरीले स्वर में अजान देता था । २-३. महा पुरुषों के नाम ४. दिल जलने पर साँस नहीं सूझता ५. अशान्त आत्मा ६. विद्रूप भाव से मुस्कराना ।

तपिश ज़शोला गिरफ़तंद-व-बर दिले-तो ज़दंद
चे बके-जलवा बख़ाशाके हासिले-तो जदंद[1]

अदा-ए-दीद[2] सरापा नयाज थी तेरी
किसी को देखते रहना नमाज़ थी तेरी
अज़ाँ अज़ल से तिरे इश्क़ का तराना बनी
नमाज़ उसके नजारे का इक बहाना बनी

ख़ुशा वह वक़्त कि सैरब मुकाम था उसका
ख़ुशा वह दौर कि दीदार आम था उसका।

१. शोले से गर्मी ली और तेरे दिल पर गोली मार दी। जलने की बिजली ने तेरे अस्तित्व को जला दिया २. क्या खूब

सरगुज़श्ते आदम

सुने कोई मिरी गुरबत की दास्ताँ मुझ से
भुलाया क़िस्सा-ए-पैमाने-अव्वलीं[१] मैंने ।
लगी न मेरी तबीयत रियाज़े जन्नत में
पिया शऊर का जब जामे-आतशीं मैंने ।
रही हक़ीक़ते-आलम की जुस्तजू मुझको
दिखाया औजे-ख़याले-फ़लक-नशीं[२] मैंने ।
मिला मिज़ाज तग़य्युरपसंद[३] कुछ ऐसा
किया क़रार न ज़ेरे-फ़लक कहीं मैंने ।
निकाला काबे से पत्थर की मूरतों को कभी
क़भी बुतों को बनाया हरम-नशीं मैंने ।
कभी मैं ज़ौक़े-तकल्लुम में तूर पर पहुँचा
छिपाया नूरे-अज़ल ज़ेरे-आस्तीं मैंने ।
कभी सलेब पे अपनों ने मुझको लटकाया
किया फ़लक को सफ़र छोड़ कर ज़मीं मैंने ।
कभी मैं ग़ारे-हिरा[५] में छुपा रहा बरसों
दिया जहाँ को कभी जामे-आख़िरी[६] मैंने
सुनाया हिन्द में आकर सरोदे-रब्बानी[७]
पसंद की कभी यूनाँ की सरज़मीं मैंने ।

---

१. पैमाने-अव्वलीं—संकेत है हदीस के शब्द 'अलस्त' की ओर अर्थात् आदम ने पहले दिन खुदा से प्रतिज्ञा की थी कि वह दुनिया में जाकर खुदा को नहीं भूलेगा और ईमानदार रहेगा । यह प्रतिज्ञा उसने तोड़ दी २. आकाश तक पहुँचने वाले ख्याल की बुलन्दी ३. अस्थिर ४. आस्तीन में ५. वह खोह जिसमें हजरत मुहम्मद ने पनाह ली थी ६. अर्थात् हजरत मुहम्मद ने अन्तिम सन्देश दिया ७. ईश्वरीय गान

दयारे-हिन्द ने जिस दम मिरी सदा न सुनी
बसाया खिता-ए-जापानो-मुल्के-चीं मैंने।
बनाया ज़र्रों की तरकीब से कभी आलम
खिलाफ़े-मानी-ए-तालीमे-अहले-दीं[1] मैंने।
लहू से लाल किया सैकड़ों ज़मीनों को
जहाँ में छेड़ के पैकारे-अक़्लो-दीं मैंनें।
समझ में आई हक़ीक़त न जब सितारों की
इसी ख़याल में रातें गुज़ार दीं मैंने।
डरा सकीं न कलीसा की मुझको तलवारें
सिखाया मसअला-ए-गर्दिशे-जमीं मैंने।
कशिश का राज़ हवैदा किया जमाने पर
लगा के आयना-ए-अक़्ले-दूरबीं मैंने।
किया असीर शुआओं को, बर्क़े-मुज़तर[2] को
बनादी गैरते-जन्नत[3] यह सरज़मीं मैंने।
मगर ख़बर न मिली आह! राज़े-हस्ती की
किया ख़िरद से जहाँ को तहे-नगीं[4] मैंने।
हुई जो चश्मे-मज़ाहिर-परस्त[5] वा आख़िर
तो पाया खाना-ए-दिल में उसे मकीं मैंने।

◈ ◈

१. धर्मशास्त्रियों की शिक्षा के विपरीत २. व्याकुल बिजली ३. स्वर्ग से बढ़कर ४. कब्जे में ५. जब बाहरी रूप देखने वाली आँख खुली।

तराना-ए-हिन्दी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं उसकी यह गुलिस्ताँ हमारा।
ग़ुर्बत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा।
पर्बत वह सब से ऊँचा हमसाया आसमाँ का
वह संतरी हमारा वह पासबाँ हमारा।
गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिसके दम से रश्के-जिनाँ हमारा।
ऐ आबे-रोदे-गंगा वह दिन है तुझ को
उतरा तिरे किनारे जब कारवाँ हमारा।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।
यूनानो-मिस्रो-रोमाँ, सब मिट गये जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नामो-निशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमाँ हमारा।
इक़बाल, कोई महरम अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहाँ हमारा।

जुगनू

जुगनू की रोशनी है काशाना-ए चमन में
या शमञ्र जल रही है फूलों की ग्र ंजुमन में ।
ग्राया है ग्रास्माँ से उड़कर कोई सितारा
या जान पड़ गई है महताब की किरन में ।
या शब की सलतनत में दिन का सफ़ीर ग्राया
ग़ुर्बत में ग्राके चमका गुमनाम था वतन में ।
तुक्मा[1] कोई गिरा है महताब की क़बा[2] का
ज़र्रा है या नुमायाँ सूरज के पैरहन में ।
हुस्ने क़दीम की यह पौशीदा इक झलक थी
ले ग्राई जिसको कुदरत ख़लकत से ग्रंजुमन में।
छोटे से चांद में है ज़ुलमत, भी रोशनी भी
निकला कभी गहन से ग्राया कभी गहन में ।

परवाना इक पतंगा, जुगनू भी इक पतंगा।
वह रोशनी का तालिब, यह रोशनी सरापा ।

हर चीज को जहाँ में कुदरत ने दिलबरी दी
परवाने को तपिश दी, जुगनू को रोशनी दी ।
रंगीं-नवा[3] बनाया मुर्ग़ानि-बे ज़ुबाँ को
गुल को ज़ुबान देकर तालीमे-ख़ामुशी दी ।

---

१. बटन २. चौग़ा ३. मधुर स्वर वाला

नज़्ज़ारा-ए-शफ़क की ख़ूबी ज़वाल में थी
चमका के इस परी को थोड़ी-सा जिंदगी दी।
रंगीं किया शफ़क को, बाँकी दुल्हन की सूरत
पहना के लाल जोड़ा, शबनम की आरसी दी।
साया दिया शजर को, परवाज दी हवा को
पानी को दी रवानी, मौजों को बेकली दी।
यह इम्तियाज लेकिन इक बात है हमारी
जुगनू का दिन वही है जो रात है हमारी।
हुस्ने-अज़ल की पैदा हर चीज में झलक है
इंसां में वह सुखन है, गुंचे में वह चटक है।
अंदाजे-गुफ्तगू ने धोखे दिये हैं, वर्ना
नग़मा है बू-ए-बुलबुल, बू फूल की चहक है।
कसरत[1] में हो गया है वहदत[2] का राज़ मख़फ़ी[3]
जुगनू में जो चमक है, वह फ़ूल में महक है।
यह इख़्तलाफ़ फ़िर क्यों हंगामों का महल[4] हो
हर शय में जबकि पिनहाँ ख़ामोशी-ए-अज़ल हो।

◈ ◈

१. बहुलता २. एकता ३. निहित ४. मौका, अवसर

सुबह का सितारा

लुत्फ़े-हमसायगी-ए-शम्सो-क़मर[1] को छोड़ूँ
और इस ख़िदमते-पैगामे-सहर को छोड़ूँ ।
मेरे हक़ में तो वही तारों की बस्ती अच्छी
इस बुलंदी से ज़मीं वालों की पस्ती अच्छी ।
आस्माँ क्या अदम-आबाद[2], वतन है मेरा
सुबह का दामने-सद-चाक कफ़न है मेरा ।
मेरी क़िस्मत में है हर रोज का मरना जीना
साक़ी-ए-मौत के हाथों से सबूही पीना ।
न यह ख़िदमत, न यह इज़्ज़त, न यह रिफअत अच्छी
इस घड़ी भर के चमकने से तो ज़ुलमत अच्छी ।
मेरी क़ुदरत[3] में जो होता तो अख़तर बनता
क़ारे-दरिया[4] में चमक़ता हुआ गौहर बनता ।
वाँ भी मौजों की कशाकश से जो दिल घबराता ।
छोड़कर बहर कहीं ज़ेबे-गुलू[5] हो जाता
है चमकने में मज़ा हुस्न का ज़ेवर बन कर
ज़ीनते-ताजे-सरे-बानी-ए-क़ैसर[6] बनकर ।

१. चाँद सूरज के पड़ोसी होनेका आनन्द २. परलोक ३. वश ४. नदी की गहराई ५. गले की शोभा ६, बादशाह की बीवी के ताज की शोभा ।

एक पत्थर के जो टुकड़े का नसीबा जागा
ख़ातिमे-दस्ते-सुलेमां[७] का नगीं बन के रहा ।
ऐसी चीज़ों का मगर दहर में है काम शिकस्त
है गुहर-हाय-गराँ-माया[८] का अंजाम शिकस्त ।
जिंदगी वह है कि जो हो न शनासा-ए-अजल[९]
क्या वह जीना है कि हो जिसमें तकाजा-ए-अजल ।

है यह अंजाम अगर ज़ीनते-आलम[१०] होकर
क्यों न गिर जाऊँ किसी फूल पे शबनम होकर ।

किसी पेशानी के अफ़शाँ के सितारों में रहूँ
किसी मजलूम की आहों के शरारों में रहूँ ।
अश्क बनकर सरे-मिज़गाँ[११] से अटक जाऊँ मैं
क्यों न उस बीवी की आँखों से टपक जाऊँ मैं,
जिसका शौहर हो रवाँ, होके ज़िरह[१२] में मस्तूर
सूए-मैदाने-वग़ा, हुब्बे-वतन[१३] से मजबूर ।
यासो-उम्मीद का नज़्ज़ारा जो दिखलाती है
जिसकी खामोशी से तक़रीर भी शर्माती हो ।

---

८. हजरत सुलेमान की अंगूठी ९. क़ीमती मोती १०. संसार की शोभा ११. पलकों पर १२. कवच पहने १३. देश-भक्ति

जिसको शौहर की रज़ा ताबे-श के बाई[14] दे
और निगाहों को हया ताक़ते-गोयाई दे।
ज़र्द, रुख़सत की घड़ीं, आरिजे-गुलगूँ[15] हो जाय
कशिशे-हुस्न, ग़मे-हिज्र से अफ़ज़ूँ[16] हो जाय।
लाख वह ज़ब्त करे पर मैं टपक ही जाऊँ
साग़रे-दीदा-ए-पुरनम[17] से छलक ही जाऊँ।

ख़ाक में मिलके हयाते-अबदी[18] पा जाऊँ
इश्क़ का सोज़ ज़माने को दिखाता जाऊँ।

---

१४. संतोष का सामर्थ्य १५. सुर्ख गाल १६. अधिक १७. आँखों का भरा हुआ प्याला १८. अमर जीवन

हिन्दोस्तानी बच्चों का कौमी गीत

चिश्ती ने जिस जमीं पर पैग़ामे-हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों से दश्ते-अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो-हुनर दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़ ने ज़र का असर दिया था
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा बतन वही है।
टूटे थे जो सितारे फ़ारिस के आस्माँ से
फ़िर ताब[1] देके जिसने चमकाये कहकशाँ[2] से
बहदत की लै सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से
मीरे-अरब[3] को आई ठंडी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।
बंदे कलीम जिसके, पर्बत जहाँ के सीना
नूहे-नबी[4] का आके ठहरा जहाँ सफ़ीना[5]
रिफ़अत है जिस जमीं की बामे-फ़लक का जीना
जन्नत की ज़िंदगी है जिसकी फ़िज़ा में जीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

१. चमक २. आकाश-गंगा ३. हजरत मुहम्मद ४. हजरत नूह ५. नाव, किश्ती।

नया शिवाला

सच कह दूँ ऐ ब्रह्मन गर तू बुरा न माने
तेरे सनमकदों के बुत हो गये पुराने
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा
जंगो-जदल सिखाया वाइज़ को भी खुदा ने
तंग आके मैंने आखिर दैरो-हरम को छोड़ा
वाइज़ का वाज़ छोड़ा, छोड़े तिरे फ़साने

पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है
ख़ाके वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है।

आ ग़ैरियत के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फ़िर मिला दें नक़्शे-दुई मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देस में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामाने-आस्माँ से उसका कलस मिला दें
हर सुबह उठके गायें मंतर वह मीठे-मीठे
सारे पुजारियों को मय पीत की पिला दें

शक्ती भी शान्ती भी भगतों के गीत में है
धरती के बासियों की मुक्ति प्रीत में है!

दाग़[१]

अज़मते-ग़ालिब है इक मुद्दत से पैबंदे-ज़मीं
मेहदी-ए-मजरूह[२] है शहरे-खामोशाँ का मकीं।
तोड़ डाली मौत ने गुर्बत में मीना-ए-अमीर[३]
चश्मे-महफ़िल में है अब तक कैफ़े-सहबाए-अमीर।
आज लेकिन हमनवा! सारा चमन मातम में है
शम-ए-रोशन बुझ गई, बज़्मे-सुखन मातम में है।
बुलबुले-दिल्ली ने बाँधा उस चमन में आशयां
हमनवा हैं सब अनादिल, बाग़े-हस्ती के जहाँ।

चल बसा दाग़, आह मैय्यत उसकी जेबे-दोश[४] है
आखिरी शायर जहाँनाबाद[५] का खामोश है।

अब कहाँ वह बाँकपन, वह शोखी-ए-तर्ज़े-बयाँ
आग थी काफ़ूरे-पीरी में जवानी की निहाँ।
थी ज़ुबाने-दाग़ पर जो आरज़ू हर दिल में है
लैला-ए-मानी[७] वहाँ बेपर्दा, याँ महमिल में है।
अब सबा से कौन पूछेगा सकूते-गुल[८] का राज़
कौन समझेगा चमन में नाला-ए-बुलबुल का राज़।
थी हक़ीकत से न ग़फ़लत फ़िक्र की परवाज़ में
आँख तायर की नशेमन पर रही परवाज़ में।

१. उर्दू का मशहूर शायर २. मीर मेहदी 'मजरूह' ३. अमीर मीनाई ४. कंधों की शोभा ५. दिल्ली का पुराना नाम ६. शैली की निर्भीकता ७. अर्थों की लैला ८. फूल की मूकता।

और दिखलायेंगे मज़मूँ की हमें बारीकियाँ
अपने फ़िक्रे-नुक्ता-आरा[१] की फ़लक-पैमाइयाँ[२]।
तल्ख़ी-ए-दौराँ[३] के नक़्शे खेंच कर रुलवायेंगे
या तख़य्युल की नई दुनिया हमें दिखलायेंगे।
इस चमन में होंगे पैदा बुलबुले-शीराज[४] भी
सैंकड़ों साहिर[५] भी होंगे, साहिबे-एजाज़[६] भी।
उट्ठेंगे आज़र[७] हज़ारों शेर के बुतखाने से
मय पिलायेंगे नए साक़ी नए पैमाने से।
लिक्खी जायेंगी किताबे-दिल की तफ्सीरें बहुत
होंगीं ऐ ख्वाबे-जवानी तेरी ताबीरें बहुत।

हूबहू खींचेगा लेकिन इश्क़ की तस्वीर कौन ?
उठ गया नावक-फ़गन[८], मारेगा दिल पर तीर कौन ?

अश्क के दाने ज़मीने-शेर में बोता हूँ मैं
तू भी रो ऐ ख़ाके-दिल्ली दाग़ को रोता हूँ मैं।
ऐ जहाँबाद ! ऐ सरमाया-ए-बज़्मे-सुख़न[९]
हो गया फिर आज पामाले-ख़ज़ाँ तेरा चमन।
वह गुले-रंगीं तिरा रुख़सत मिसाले-बू हुआ
आह ! ख़ाली दाग़ से, काशाना-ए उर्दू हुआ।
थी न शायद कुछ कशिश ऐसी वतन की ख़ाक में
वह महे-कामिल हुआ पिंहाँ दकन की ख़ाक में।

१. सूक्ष्म चिंतन २. आकाश मापना ३. जमाने का गम ४. संकेत है हाफिज शीराजी की ओर जो फारसी का प्रसिद्ध कवि था ५. जादू करने वाले ६. चमत्कार दिखाने वाले ७. यूनान का प्रसिद्ध मूर्तिकार ८. तीर चलाने वाले ९. साहित्य-चर्चा का केन्द्र।

आरज़ू को खून रुलवाती है बेदादे-अजल
मारता है तीर तारीकी में सय्यादे-अजल।
खुल नहीं सकती शिकायत के लिए लेकिन ज़ुबाँ
है ख़ज़ाँ का रंग भी वजहे-कयामे-गुलिस्ताँ।

एक ही कानूने-आलमगीर के हैं सब असर
बूए-गुल का बाग़ से गुलचीं का दुनिया से सफ़र।

अब्र[1]

उठी फिर आज वह पूरब से काली-काली घटा,
सियाह-पोश हुआ फिर पहाड़ सरबन का ।
निहाँ हुआ जो रुखे-महर, ज़ोरे-दामने-अब्र,
हवा-ए-सर्द भी आई सवारे-तौसने[2]-अब्र ।
गरज का शोर नहीं है, खमोश है यह घटा,
अजीब मयकदा-ए-बे-खरोश है यह घटा ।
चमन में हुक्मे-निशाते-मुदाम लाई है,
क़बा-ए-गुल[3] में गुहर टाँकने को आई है ।
जो फूल, मेहर की गर्मी से सो चले थे, उठे,
जमीं की गोद में जो पड़ के सो रहे थे उठे ।
हवा के ज़ोर से उभरा, बढ़ा, उड़ा बादल,
उठी वह और घटा, लो बरस पड़ा बादल ।
अजीब खेमा है कोहसार के निहालों का ।
यहीं क़याम हो वादी में फ़िरने वालों का ।।

१. बादल २. स्थाई सुख का सन्देश ३. फूल का लिबास ।

एक परिंदा और जुगनू

सरे-शाम एक मुर्ग़-नग़मा-पैरा,
किसी टहनी पै बैठा गा रहा था।
चमकती चीज़ इक देखी ज़मीं पर,
उड़ा तायर उसे जुगनू समझ कर।
कहा जुगनू ने ओ, मुर्ग़-नवा-रेज़,[२]
न कर बेकस[३] पे, मिन्क़ारे-हवस[४] तेज़।
तुझे जिसने चहक, गुल को महक दी,
उसी अल्लाह ने मुझको चमक दी।
लिबासे-नूर में मस्तूर हूँ मैं,
पतंगों के जहाँ का नूर हूँ मैं।
चहक तेरी बहिश्ते-गोश[५] अगर है,
चमक मेरी भी फ़िरदौसे-नज़र[६] है।
परों को मेरे कुदरत ने ज्यादी,
तुझे उसने सदा-ए-दिलरुबा[७] दी।
तिरी मिन्कार को गाना सिखाया,
मुझे गुलज़ार की मशअल बनाया।

१. २. चहचहाने वाला पक्षी ३. विवश ४. स्वार्थ की चोंच ५. मधुर, सुहाना ६. आँख को सुहाने वाला ७. मधुर स्वर।

चमक बख़्शी मुझे, आवाज़ तुझको,
दिया है सोज़ मुझको, साज़ तुझको।
मुख़ालिफ़ साज़ का होता नहीं सोज़,
जहाँ में साज़ का है हमनशीं सोज़।
क़यामे - बज़्मे - हस्ती है इन्हीं से,
जहूरे-औजो-पस्ती[1] है इन्हीं से।
हम-आहंगी से है महफ़िल जहाँ की,
इसी से है बहार इस बोस्ताँ की।

१. ऊंच-नीच।

बच्चा और शमअ

कसी हैरानी है यह ऐ तिफ़लके-परवाना-ख़ू[1],
शमअ के शोले को घड़ियों देखता रहता है तू।
यह मिरी आगोश में बैठे हुए जुम्बिश है क्या ?
रोशनी से क्या बगलगीरी है तेरा मुद्दआ ?

इस नज़ारे से तिरा नन्हा सा दिल हैरान है,
यह किसी देखी हुई शै की मगर पहचान है।

शमअ इक शोला है लेकिन तू सरापा नूर है,
आह ! इस महफ़िल में यह उरयाँ है तू मस्तूर है।
दस्ते-कुदरत ने इसे क्या जाने क्यों उरयाँ किया,
तुझको खाके-तीरा के फ़ानूस में पिनहाँ किया।

नूर तेरा छिप गया ज़ेरे-नक़ाबे-आगही,[3]
है गुबारे - दीदा - ए - बीना[4], हिजाबे-आगही।

ज़िन्दगानी जिसको कहते हैं फ़रामोशी है यह,
ख़्वाब है, ग़फ़लत है, सरमस्ती है, बेहोशी है यह
महफ़िले-कुदरत है इक दरिया-ए-बे-पायाने-हुस्न,
आँख अगर देखे तो हर क़तरे में है तूफ़ाने हुस्न।

---

१. परवाने के स्वभाव वाला बच्चा २. काली मिट्टी ३. ज्ञान के पर्दे तले ४. रहस्यभेदी आँख का गुबार ४. ज्ञान का आवरण ५. सौन्दर्य का असीम सागर।

हुस्न कोहिस्ताँ की हैबतनाक[1] खामोशी में है,
महर की ज़ौगुस्तरी[2], शब की सियह-पोशी में है।
आस्माने-सुबह की आयना-पोशी में है यह
शाम की जुलमत, शफ़क़ की गुलफ़रोशी में है यह।
अज़मते-दैरीना के मिटते हुए आसार में,
तिफ़लके-ना-आशना[3] की कोशिशे-गुफ़तार में।
साकिनाने-सहने-गुलशन की हम-आवाज़ी में है
नन्हे-नन्हे तायरों की आशियाँ-साज़ी में है।
चश्मा-ए-कोहसार में दरिया की आज़ादी में हुस्न
शेहर में, सहरा में, आबादी में, वीराने में हुस्न।
रूह को लेकिन किसी गुमगश्ता शै की है हवस।
वर्ना इस सहरा में क्यों नालाँ है यह मिस्ले-जरस।
हुस्न के इस आम जलवे में भी यह बेताब है।
ज़िन्दगी इसकी मिसाले-माही-ए-बे-आब[4] है।

◈ ◈

१. भयंकर २. प्रकाश डालना ३. नादान बालक ४. बिना पानी की मछली की भाँति।

किनारे-रावी

सकूते-शाम में महवे-सरोद है रावी,
न पूछ मुझ से जो है कैफ़ियत मिरे दिल की।
पयाम सिजदे का यह जीरो-बम हुआ मुझ को
जहाँ-तमाम सवादे-हरम[1] हुआ मुझ को

सरे-किनारा-ए आबे रवाँ[2] खड़ा हूँ मैं
खबर नहीं मुझे लेकिन कहाँ खड़ा हूँ मैं।

शराबे-सुर्ख से रंगीं हुआ है दामने-शाम
लिये है पीरे-फ़लक दस्ते-राशा-दार[3] में जाम
अदम को काफ़िला-ए-रोज़ तेज़ गाम[4] चला
शफ़क नहीं है यह सूरज के फ़ूल हैं गोया
खड़े हैं दूर वह अजमत-फ़ज़ा-ए-तनहाई
मिनारे-ख्वाब-गहे-शहसवारे-चुग़ताई[5]
फ़साना-ए-सितमे-इंक़लाब है यह महल
कोई ज़माने-सलफ़ की किताब है यह महल
मुक़ाम क्या है सरोदे-ख़मोश है गोया
शजर ? यह अंजुमने-वेख़रोश है गोया

---

१. काबे का नगर २. बहते पानी के किनारे ३. कपकपाता हाथ ४. तेज़ी से बीतने वाले दिनों का काफ़िला ५. चित्रकार चुगताई के स्वप्नों के मिनार।

रवाँ है सीनाए-दरिया पे इक सफ़ीना-ए-तेज़
हुआ है मौज से मल्लाह जिसका गर्मे-सतेज़[1]
सुबक-रवी[2] में है मिस्ले-निगाह यह किश्ती
निकल के हल्का-ए-हद्दे-नज़र से दूर गई
जहाज़े-ज़िंदगी-ए-आदमी रवाँ है यों ही
अबद[3] के बहर में पैदा यों ही, निहाँ है यों ही।
शकस्त से यह कभी आशना नहीं होता,
नज़र से छुपता है लेकिन फ़ना नहीं होता।

१. संघर्षशील २. तेज़ चलना ३. असीम, अनन्त।

इलतजा-ए-मुसाफिर

(हज़रत महबूब इलाही की दरगाह में)

फरिश्ते पढ़ते हैं जिसको वह नाम है तेरा
बड़ी जनाब तिरी, फ़ैज़ आम है तेरा
सितारे इश्क़ के तेरी काशिश से हैं क़ायम
निज़ामे-महर की सूरत, निज़ाम है तेरा
तिरी लहद[1] की ज़्यारत[2] है, ज़िंदगी दिल की
मसीहो-खिज्र से ऊँचा मुक़ाम है तेरा
निहाँ है तेरी मुहब्बत में रंगे-महबूबी
बड़ी है शान बड़ा एहतराम है तेरा

अगर सियाह दिलम, दाग़े-लाला ज़ारे-तो अम
वगर कुशादा जबीनम, गुले-बहारे तो अम[3]

चमन को छोड़ के निकला हूँ मिस्ले-नकहते-गुल[4]
हुआ है सब्र का मंजूर इम्तिहाँ मुझ को
चली है लेके वतन के निगार-खाने[5] से
शरावे-इल्म की लज़्ज़त, कशाँ-कशाँ[6] मुझको

१. कब्र, समाधि २. दर्शन ३. अगर मेरा दिल सियाह है तो भी तेरे ही बाग के लाले (फूल विशेष) का दाग हूँ। अगर बेदाग माथे वाला हूँ तो भी तेरे की चमन बहार का फूल हूँ। अर्थात् जैसा हूँ तेरा हूँ। ४. फूल की सुगंध के सबब ५. चित्र-गृह ६. खींचती हुई।

नज़र है अब्र-करम पर, दरख़्ते-सहरा हूँ
किया ख़ुदा ने न मोहताजे-बागबाँ मुझको
फ़लक नशीं, सिफ़ते-महर[१] हूँ ज़माने में
तिरी दुआ से अता हो वह नर्दबाँ मुझको
मुक़ाम हम-सफ़रों से हो इस कदर आगे
कि समझे मंज़िले-मक़सूद कारवाँ मुझको
मिरी ज़ुबाने क़लम से किसी का दिल न दुखे
किसी से शिकवा न हो ज़ेरे-आस्माँ मुझको
दिलों को चाक करे मिस्ले-शाना[2] जिसका असर
तिरी जनाब से ऐसी मिले फ़ुग़ाँ मुझको
बनाया था जिसे चुन-चुन के ख़ारो-ख़स मैंने
चमन में फ़िर नज़र आए वह आशियाँ मुझको
फ़िर आ रखूँ, क़दमे-मादरो-पिदर[3] पे जबीं[४]
किया जिन्होंने मुहब्बत का राज़दाँ मुझको
वह शम-ए-बारगहे-ख़ानदाने-मुर्तज़वी[५]
रहेगा मिस्ले-हरम जिसका आस्ताँ मुझको
नफ़स से जिसके खिली मेरी आरज़ू की कली
बनाया जिसकी मुरव्वत ने नुक्तादाँ मुझको
दुआ यह कर कि ख़ुदावंदे-आस्माँ-व-ज़मीं
करे फ़िर उसकी ज़यारत से शादमाँ मुझको
वह मेरी यूसुफ़े-सानी, वह शमे-महफ़िले-इश्क़
हुई है जिसकी अख़ुव्वत[६], करारे-जाँ मुझको

१. सूरज की भांति २. कंधे की तरह ३. माता पिता के चरण ४. माथा
५. अली के परिवार के दरबार की समक्ष ६. भ्रातृ भाव।

जला के जिस की मुहब्बत ने दफ़तरे-मनो-तो[1]
हवा-ए-ऐश में पाला, किया जवाँ मुझको
रियाज़े-दहर में मानंदे-गुल रहे खंदाँ
कि है अज़ीज़तर अज़जाँ[2], वह जाने-जाँ मुझको
शगूफ़ा होके कली दिल की फ़ूल हो जाय
यह इल्तजा-ए-मुसाफ़िर क़बूल हो जाय

१. भेदभाव का दफ्तर २. जान से अधिक प्यार ।

गजलयात

गुलज़ारे-हस्तो-बूद[1] न बेगानावार[2] देख
है देखने की चीज इसे बार-बार देख।
आया है तू जहाँ में मिसाले-शरार देख
दम दे न पाये हस्ती-ए-नापायदार[3] देख।
माना कि तेरी दीद[4] के काबिल नहीं हूँ मैं
तू मेरा शौक़ देख, मिरा इंतज़ार देख।
खोली है ज़ोक़े-दीद ने आंखें तिरी अगर
हर रहगुज़र में नक़्शे-कफ़े-पाए-यार[5] देख।

न आते हमें इसमें तकरार क्या थी,
मगर वादा करते हुए आर क्या थी।
तुम्हारे प्यामी ने सब राज़ खोला,
ख़ता इसमें बंदे की सरकार क्या थी।
भरी बज़्म में अपने आशिक़ को ताड़ा,
तिरी आँख मस्ती में हुशियार क्या थी।
ताम्मुल तो था उनको आने में क़ासिद,
मगर यह बता तर्ज़े-इन्कार क्या थी?

---

१. दुनिया २. उपेक्षा के ढंग से ३. अस्थाई अस्तित्व ४. देखना ५. प्रेमी के पांव के तलवों के चिन्ह।

खिंचे खुदबखुद जानिबे-तूर मूसा,
कशिश तेरी ए शौक़-दीदार क्या थी।
कहीं ज़िक्र रहता है इक़बाल तेरा,
फ़सूँ[1] था कोई तेरी गुफ़तार क्या थी।

✧ ✧

अजब वाइज़ की दींदारी है यारब !
अदावत है उसे सारे जहाँ से।
कोई अब तक न यह समझा कि इंसाँ,
कहाँ जाता है, आता है कहाँ से।
वहीं से रात को जुलमत मिली है,
चमक तारे ने पाई है जहाँ से।
हम अपनी दर्दमंदी का फ़साना,
सुना करते हैं अपने राज़दाँ से।
बड़ी बारीक हैं वाइज़ की चालें,
लरज जाता है आवाज़े अज़ाँ से।

✧ ✧

लाऊँ वह तिनके कहीं से आशियाने के लिए,
बिजलियाँ बेताब हों जिनको जलाने के लिए।
वाय नाकामी ! फ़लक में ताक कर तोड़ा उसे,
मैंने जिस डाली को ताड़ा आशियाने के लिए।
आँख मिल जाती है हफ्तादो-मिल्लत[2] से तिरी,
एक पैमाना तिरा सारे ज़माने के लिए।

---

१. जादू २. मुसलमानों के बहत्तर सम्प्रदाय है, उन्हीं की ओर संकेत है।

दिल में कोई इस तरह की आरज़ू पैदा करूँ,
लौट जाय आस्माँ मेरे मिटाने के लिए।
जमा कर ख़रमन[1] तो पहले दाना-दाना चुन के तू,
आ ही निकलेगी कोई बिजली जलाने के लिए।
पास था नाकामी-ए-सैयाद का ऐ हमसफ़ीर,
वर्ना मैं और उड़ के आता एक दाने के लिए।
इस चमन में मुर्ग़-दिल गाय न आज़ादी का गीत,
आह ! यह गुलशन नहीं ऐसे तराने के लिए।

१. खलिहान

क्या कहूँ अपने चमन से मैं जुदा क्यों कर हुआ ?
और असीरे हलक़ा-ए-दामे-हवा[1] क्यों कर हुआ ?

जाय-हैरत[2] है बुरा सारे ज़माने का हूँ मैं
मुझको यह ख़लअत शराफ़त का अता क्योंकर हुआ ?

कुछ दिखाने-देखने का था तक़ाजा तूर पर
क्या ख़बर है तुझको ऐ दिल फैसला क्योंकर हुआ ?

है तलब बेमुद्दआ होने की भी इक मुद्दआ
मुर्ग़े-दिल दामे-तमन्ना[3] से रिहा क्योंकर हुआ ?

देखने वाले यहाँ भी देख लेते हैं तुझे
फिर यह वादा हश्र[4] का सब्र-आजमा क्योंकर हुआ ?

हुस्ने-कामिल[6] ही न हो इस बेहिजाबी[7] का सबब
वह जो था पर्दों में पिनहाँ खुदनुमा[8] क्योंकर हुआ।

मौत का नुस्ख़ा अभी बाकी है ऐ दर्दे-फ़िराक़ !
चारागर दीवाना है, मैं लादवा क्योंकर हुआ ?

---

१. लोभ के जाल का कैदी २. आश्चर्य की स्थिति ३. अभिलाषा का जाल ४. प्रलय, कयामत ५. संतोष-परीक्षक ६. पूर्ण सौन्दर्य ७. खुदा की ओर संकेत है ८. स्व-प्रदर्शन ।

तूने देखा है कभी ऐ दीदा-ए-इब्रत[1] कि गुल
होके पैदा ख़ाक से रंगी-कबा क्योंकर हुआ ?[2]
पुरसिशे-आमाल[3] से मकसद था रुसवाई मिरी
वर्ना जाहिर था सभी कुछ क्या हुआ क्योंकर हुआ।
मेरे मिटने का तमाशा देखने की चीज़ थी
क्या बताऊँ उनका मेरा सामना क्योंकर हुआ ?

१. सीख लेने वाली आँख २. रंगीन लिबास वाला ३. कृत्यों की जाँच-पडताल।

अनोखी वज़अ है सारे ज़माने से निराले हैं
यह आशिक़ कौन सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं।
इलाजे-दर्द में भी दर्द की लज़्ज़त पे मरता हूँ
जो थे छालों में काँटे नोके-सोज़न[1] से निकाले हैं।
फला-फूला रहे यारब चमन मेरी उमीदों का
जिगर का खून दे दे-कर यह बूटे मैंने पाले हैं।
रुलाती है मुझे रातों को खामोशी सितारों की
निराला इश्क है मेरा, निराले मेरे नाले हैं।
न पूछो मुझसे लज़्ज़त ख़ानुमाँ-बरबाद[2] रहने की
नशेमन सैंकड़ों मैंने बनाकर फूँक डाले हैं।
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीके-राहे-मंज़िल[3] से
ठहर जा ऐ शरर हम भी तो आखिर मिटने वाले हैं।
उमीदे-हूर ने सब कुछ सिखा रक्खा है वाइज़ को
यह हज़रत देखने में सीधे-साधे भोले-भाले हैं
मिरे अशआर ऐ इकबाल क्यों प्यारे न हों मुझको
मिरे टूटे हुए दिल के यह दर्द-अंगेज़ नाले हैं।

---

१. सूई की नोक २. बे-घर ३. मज़िल का साथी।

जाहिर की आँख से न तमाशा करे कोई
हो देखना तो दीदा-ए-दिल वा[2] करे कोई।

मंसूर को हुआ, लबे-गोया पयामे-मौत
अब क्या किसी के इश्क का दावा करे कोई।

हो दीद का जो शौक तो आँखों को बन्द कर
है देखना यही कि न देखा करे कोई।

मैं इन्तहा-ए-इश्क़ हूँ, तू इन्तहा-ए-हुस्न
देखे मुझे कि तुझको तमाशा करे कोई।

उज्र-आफ़ीने-जुर्मे-मुहब्बत[4] है हुस्ने-दोस्त
महशर में उज्रे-ताज़ा[5] न पैदा करे कोई।

छिपती नहीं है यह निगहे-शौक़, हमनशीं!
फिर और किस तरह उन्हें देखा करे कोई।

अड़ बैठे क्या समझ के भला तूर पर कलीम
ताकत हो दीद की तो तक़ाजा करे कोई।

नज्ज़ार को यह जुम्बिशे-मिज़गा[6] भी बार है
नर्गिस की आँख से तुझे देखा करे कोई।

खुल जायें, क्या मजे हैं तमन्ना-ए-शौक़ में
दो-चार दिन जो मेरी तमन्ना करे कोई।

---

१. हृदय व चक्षु २. खोलना ३. बोलना, होंट खोलना ४. मुहब्बत के जुर्म का उज्र पैदा करने वाला ५. नया उज्र ६. पलक की कम्पन।

कहूँ क्या आरजू-ए-बेदिली मुझको कहाँ तक है
मिरे बाज़ार की रौनक़ ही सौदा-ए-जुबाँ तक है।
वह मैकश[१] हूँ, फरागे-मै से खुद गुलज़ार बन जाऊँ
हवा-ए-गुल[२] फ़िराके-साक़ी-ए-नामेहरबाँ तक है।
चमन-अफ़रोज़[३] है सैयाद मेरी खुशनवाई[४] तक
रही बिजली की बेताबी सो मेरे आशियाँ तक है।
वह मुश्ते-ख़ाक हूँ फैजे-परेशानी[५] से सेहरा हूँ
न पूछो मेरी वुस्अत[६] की, ज़मीं से आस्माँ तक हूँ।
जरस हूँ, ताला-ए-ख्वाबीदा[७] है मेरे रगो-पै में
यह खामोशी मिरी वक्ते-रहीले-कारवाँ[८] तक है।
सकूने-दिल से सामाने-कशूदे-कार[९] पैदा कर
कि उक़दा[१०] खातिरे-गर्दाब[११] को आबे-रवाँ[१२] तक है।
चमनज़ारे-मुहब्बत में ख़मोशी मौत है बुलबुल
यहाँ की ज़िन्दगी पाबन्दी-ए-रस्मे-फुगाँ[१३] तक है।
जवानी है तो जौके-दीद भी-लुत्फे-तमन्ना भी
हमारे घर की आबादी, कयामे-मेहमाँ तक है।
जमाने भर में रुसवा हूँ मगर ऐ वाए नादानी
समझता हूँ कि मेरा इश्क मेरे राजदाँ तक है।

---

१. शराबी २. फूलों की हवस ३. उद्यान को सजाना ४. मधुर स्वर ५. व्यग्रता की कृपा से ६. व्यापकता ७. सुप्त परियाद ८. कारवाँ के चलने का समय ९. काम को सुलझाने के साधन १०. समस्या ११. विवर्त का स्वभाव १२ बहता हुआ पानी १३. फरियाद की रीति को निभाना।

जिन्हें मैं ढूँढ़ता था आस्मानों में जमीनों में
वह निकले मेरे जुलमत-खाना-ए-दिल[१] के मकीनों में।
हक़ीक़त अपनी आँखों पर नुमायाँ जब हुई अपनी
मकाँ निकला हमारे खाना-ए-दिल के मकानों में।
अगर कुछ आशना होता मजाके-जुब्बा-साई[२] से
तो संगे-आसताने-कावा[३] जा मिलता जबीनों में।
कभी अपना भी नज्जारा किया है तूने ऐ मजनू
कि लैला की तरह तू खुद भी है महमिल-नशीनों[४] में।
महीने वस्ल की घड़ियों की सूरत उड़ते जाते हैं
मगर घड़ियाँ जुदाई की गुजरती है महीनों में।
मुझे रोकेगा तू ऐ नाखुदा क्या गर्क होने से
कि जिनको डूबना है डूब जाते हैं सफ़ीनों में।
छिपाया हुस्न को अपने कलीमुल्लाह से जिसने
वही नाजआफ्रीं[५] है जलवा पैरा,[६] नाज़नीनों[७] में।
जला सकती है शमए-कुश्ता[८] को मौजे-नफ़स[९] उसकी
इलाही ! क्या छिपा होता है, अहले-दिल के सीनों में।

---

१. दिल का अन्धेरा घर २. माथा झुकाने की सुरुचि ३. काबे के पूजा स्थान का पत्थर ४. पर्दे में बैठने वाले ५. नखरेबाज़ ६. जलवा दिखाने वाला ७. सुन्दर व्यक्ति ८. बुझी हुई शमअ ९. साँस की हवा।

तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की
नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के खज़ीनों में।
न पूछ इन खरक़ापोशों[1] की, अरादत[2] हो तो देख उनको
यदे-बैज़ा[3] लिये बैठे है अपनी आस्तीनों में।
तरसती है निगाहे-नारसा[4] जिसके नजारे को
वह रौनक अंजुमन की है इन्हीं खलवत[5] गज़ीनों में।
किसी ऐसे शरर से फूँक अपने ख़रमने दिल को
कि खुर्शीदे-कयामत भी हो तेरे ख़ोशा-चीनों में
मुहब्बत के लिए दिल ढूँढ कोई टूटने वाला
यह वह मय है जिसे रखते हैं नाजुक आबगीनों[6] में।
सरापा हुस्न बन जाता है जिसके हुस्न का आशिक
भला ऐ दिल हसीं ऐसा भी है कोई हसीनों में।
फ़ड़क उट्ठा कोई तेरी अदा-ए-माअरफ़ना[7] पर
तिरा रुतबा रहा बढ़ चढ़ के सब नाज आफ़ीनों में।
नुमायाँ होके दिखलादे कभी उनको कमाल अपना
बहुत मुद्दत से चर्चे हैं तिरे बारीक बीनों में।
खमोश ऐ दिल ! भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा
अदब पहला क़रीना है मुहब्बत के क़रीनो में।
बुरा समझूँ उन्हें मुझ से तो ऐसा हो नहीं सकता
कि मैं खुद भी तो हूँ इकबाल अपने नुक्ताचीनों में।

१. गुदड़ी पहनने वाले अर्थात् फक़ीर २. श्रद्धा ३. मूसा का हाथ जिसके खोलने से अन्धकार में प्रकाश हो जाता था ४. सामर्थ्यहीन दृष्टि ५. एकान्तवासी ६. शीशे के प्याले ७. यह एक हदीस के आरम्भिक शब्द हैं अर्थ है हमने नहीं पहचाना।

तिर इश्क़ की इंतहा चाहता हूँ
मिरी सादगी देख क्या चाहता हूँ ॥
सितम हो कि हो वादा-ए-बेहिजाबी
कोई बात सब्र-आज़मा चाहता हूँ ॥
यह जन्नत मुबारक रहे ज़ाहिदों को।
कि मैं आपका सामना चाहता हूँ ।
ज़रा सा तो दिल हूँ मगर शोख इतना
वही लंतरानी[1] सुना चाहता हूँ ।
कोई दम का मेहमाँ हूँ ऐ अहले-महफ़िल
चिराग़े सहर हूँ बुझा चाहता हूँ ॥
भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी
बड़ा बेअदब हूँ सज़ा चाहता हूँ ॥

१. खुदा की वह आवाज़ जिसे सुनकर मूसा तूर पर बेहोश हो गये थे
शेखी मारना

कुशादा दस्ते-करम जब वह बेनयाज़ करे
नयाज़मंद न क्यों आजज़ी पे नाज करे।
बिठा के अर्श पे रक्खा है तूने ऐ वाइज़
खुदा वह क्या है जो बंदों से एहतराज[1] करे।
मिरी निगाह में वह रिंद ही नहीं साक़ी!
जो होशियारी-व-मस्ती में इम्तियाज करे।
मुदाम[2] गोश-बदिल[3] रह यह साज़ है ऐसा
जो हो शकस्ता तो पैदा नवा-ए-राज़[4] करे।
कोई यह पूछे कि वाइज़ का क्या बिगड़ता है
जो बेअमल पे भी रहमत वह बेनयाज़ करे।
सुखन में सोज़ इलाही कहाँ से आता है
यह चीज़ वह है कि पत्थर को भी गुदाज़ करे।
तमीज़े-लाला-व-गुल से है नाल-ए-बुलबुल
जहाँ में वा न कोई चश्मे-इम्तियाज़[5] करे।
ग़रूरे-जुहद ने सिखला दिया हैं वाइज़ को
कि बंदगाने-खुदा पर ज़ुबाँ दराज़ करे।
हवा हो ऐसी कि हिन्दुस्ताँ से ऐ इक़बाल!
उड़ाके मुझको ग़ुबारे-रहे-हिजाज़ करे।

१. बचना २. हमेशा, सदा ३. आत्मा की बात पर ध्यान देना ४. भेद की ध्वनि ५. अन्तर समझने वाली दृष्टि।

सख्तियाँ करता हूँ दिल पर ग़ैर से गाफ़िल हूँ मैं
हाय क्या अच्छी कही ज़ालिम हूँ मैं जाहिल हूँ मैं।
मैं जमीं तक था कि तेरी जलवा पैराई न थी
जो नमूदे-हक़[१] से मिट जाता है वह बातिल[२] हूँ मैं।
इल्म के दरिया से निकले, ग़ोताज़न, गौहरबदस्त[३]
वाए! मेहरूमी खज़फ़ चीने-लबे-साहिल[४] हूँ मैं।
है मिरी जिल्लत ही कुछ मेरी शराफ़त की दलील
जिसकी गफ़लत को मलक[५] रोते हैं वह ग़ाफिल हूँ मैं।
बज़्मे-हस्ती! अपनी आशायश पे तू नाज़ां न हो
तू तो इक तस्वीर है महफ़िल की और महफ़िल हूँ मैं
ढूँढता फ़िरता हूँ ऐ इक़बाल अपने आप को
आप ही गोया मुसाफ़िर आप ही मंज़िल हूँ मैं।

---

१. सत्य का प्रकट होना २. झूठ ३. हाथ में मोती लिये ४. तट पर सीपियाँ चुनने वाला ५. फ़रिश्ते।

मजनूँ ने शहर छोड़ा तो सहरा भी छोड़ दे
नज़्ज़ारे की हवस हो तो लैला भी छोड़ दे।
वाइज़ ! कमाले-तर्क[१] से मिलती है याँ मुराद
दुनिया जो छोड़ दी है तो उक़बा[२] भी छोड़ दे।
तक़लीद[३] की रविश से तो बेहतर है ख़ुदकुशी
रस्ता भी ढूँढ, ख़िज्र का सौदा भी छोड़ दे।
मानंदे-ख़ामा[४] तेरा जुबाँ पर है हर्फ़े-ग़ैर
बेगाना शै पे नाज़िशेबेजा[५] भी छोड़ दे।
लुत्फ़े कलाम क्या जो न हो दिल में दर्दे-इश्क़
बिसमिल[६] नहीं है तू तो तड़पना भी छोड़ दे।
शबनम की तरह फूलों पे रो और चमन से चल।
इस बाग़ में कयाम का सौदा भी छोड़ दे।
है आशक़ी में रस्म अलग सबसे बैठना
बुतख़ाना भी, हरम भी, कलीसा भी छोड़ दे।
सौदागरी नहीं यह इबादत खुदा की है
ऐ बेख़बर जज़ा[७] की तमन्ना भी छोड़ दे।
अच्छा है दिल के साथ रहे पास्बाने-अक़्ल
लेकिन कभी-कभी इसे तन्हा भी छोड़ दे।

१. त्याग की पराकाष्टा २. परलोक ३. अनुकरण, अनुगामी बनना ४. कलम की भाँति ५. अनुचित घमंड ६. घायल ७. बदला, पुरस्कार।

जीना वह क्या जो हो नफ़से-ग़ैर[1] पर मदार[2]
शोहरत की ज़िन्दगी का भरोसा भी छोड़ दे।
शोख़ी सी है सवाले-मुकर्रर[3] में ऐ कलीम
शर्ते-रज़ा यह है कि तकाज़ा भी छोड़ दे।
वाइज़ सबूत लाये जो मय के जवाज़[4] में
इक़बाल को यह ज़िद है कि पीना भी छोड़ दे।

१. अन्य व्यक्ति २. निर्भर ३. प्रश्न का दुहराना ४. औचित्य।

भाग २

(१९०५ से १९०८ तक)

मुहब्बत

अरूसे-शब[1] की ज़ुल्फ़ें थीं अभी नाआशना ख़म से
सितारे आस्माँ के बेख़बर थे लज़्ज़ते-रम[2] से
क़मर अपने लिबासे-नौ में बेगाना सा लगता था
न था वाक़िफ़ कभी गर्दिश के आईने-मुसल्लम[3] से।
अभी इमकाँ[4] के ज़ुलमतख़ाने से उभरी ही थी दुनिया
मज़ाके-ज़िंदगी पोशीदा था पहना-ए-आलम में।
कमाले-नज़्मे-हस्ती[5] की अभी थी इब्तदा गोया
हवैदा थी नगीने की तमन्ना चश्मे-ख़ातम[6] में।
सुना है आलमे-बाला में कोई कीमियागर था
सफ़ा थी जिसकी ख़ाके-पा में बढ़कर साग़रे-जम से।
लिखा था अर्श के पाय में इक अक्सीर का नुस्ख़ा
छिपाते थे फ़रिश्ते जिसको चश्मे-रूहे-आदम से।
निगाहें ताक में रहती थीं लेकिन कीमियागर की
वह उस नुस्ख़े को बढ़कर जानता था इस्मे-आज़म[7] से।
बढ़ा तस्बीहख़्वानी[8] के बहाने अर्श की जानिब
तमन्ना-ए-दिली आख़िर बर आई सई-ए-पैहम[9] से।

१. रात की दुलहिन २. घूमने का उल्लास ३. पूर्ण नियम ४. संभावना ५. सृष्टि की पूर्णता ६. अंगूठी की आँख ७. भगवान का नाम (एक वज़ीफ़ जो हर मुश्किल का हल समझा जाता है) ८. माला फेरना ९. सतत-प्रयास

फिराया फ़िक्रे-अजज़ा[१०] ने उसे मैदाने-इमकाँ[११] में
छिपेगी क्या कोई शै बारगाहे-हक़[१२] के महर से ।
चमक तारे से माँगी, चाँद से दाग़े-जिगर माँगा
उड़ाई तीरगी थोड़ी सी सब की जुल्फ़े-बरहम से ।
तड़प बिजली से पाई हूर से पाकीजगी पाई
हरारत ली नफ़सहाए-मसीहे-इब्ने-मरीयम[१३] से ।
ज़रा सी फ़िर रबूबीयत[१४] से शाने-बेनयाज़ी ली
मलक से आजज़ी[१५], उफ्तादगी[१६] तक़्दीरे-शबनम से ।
फ़िर इन अजज़ा को घोला चश्मा-ए-हैवाँ[१७] के पानी में
मुरक्कब ने मुहब्बत नाम पाया अर्शे-आज़म[१८] से ।
मुहव्वस[२०] ने यह पानी हस्ती-नौख़ेज़ पर छिड़का
गिरह खोली हुनर ने उसके गोया कारे-आलम से ।
हुई जुम्बिश अयाँ, ज़र्रों ने लुत्फ़े-ख़्वाब को छोड़ा
गले मिलने लगे उठ-उठ के अपने-अपने हमदम से ।
ख़रामे नाज पाया आफ्ताबों में सितारों ने
चटक गुंचों ने पाई, दाग़ पाय लालाजारों ने ।

---

१०. तत्वों की चिंता ११. सृष्टि १२. भगवान का दरबार १३. मरियम के बेटे मसीह (ईसा) के आँसू की गरमी । कहते हैं कि ईसा की साँस के स्पर्श से रोगी अच्छे हो जाते थे । १४. खुदाई की शान ; रब की विशेषता है पालना इसलिए रबूबियत का अर्थ हुआ पालन का गुण १५. विनम्रता १६. गिरना १७. अमृत का स्रोत, जिसे सिकन्दर ने खोजा था १८. मिश्रण १९. भगवान का सिंहासन २०. अदा से चलना ।

हक़ीक़ते-हुस्न

ख़ुदा ने हुस्न से इक रोज यह सवाल किया
जहाँ में तूने मुझे क्यों न लाज़वाल किया ।
मिला जवाब कि तस्वीर-खाना है दुनिया
शबे-दराज़े-अदम[1] का फ़साना है दुनिया ।
हुई है रंगे-तग़य्युर[2] से जब नमूद इसकी
वही हसीं है हक़ीक़त ज़वाल है जिसकी ।
कहीं क़रीब था, यह गुफ्तगू क़मर ने सुनी
फ़लक पे आम हुई अख़्तरे-सहर ने सुनी ।
सहर ने तारे से सुनकर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बतादी ज़मीं के महरम को ।
भर आये फ़ूल के आँसू पयामे-शबनम से
क़ली का नन्हा सा दिल खून हो गया ग़म से ।

चमन से रोता हुआ मौसमे-बहार गया ।
शबाब सैर को आया था सोगवार गया ।

१. परलोक की लम्बी रात २. परिवर्तन

प्याम

इश्क़ ने कर दिया तुझे ज़ौके-तपिश से आशना
बज़्म को मिस्ले-शमए-बज्म, हासिले-सोजो-साज़ दो
शाने-करम पे है मदार, इश्क़[1] गिरह-कुशाय का
दैरो-हणा की कैद क्या, जिसको वह बेन्याज दे
सुरते-शमअ नूर की मिलती नहीं क़बा उसे
जिसको खुदा न देहर में, गिरया-ए-जाँ-गुदाज़ दे
तारे में वह, क़मर में वह जलवागहे-सहर में वह
चश्मे-नज़ारा में न तू सुर्मा-ए-इम्तियाज़ दे
इश्क़ बुलद बाल है रस्मो-रहे-न्याज़ से
हुस्न है मस्ते-नाज़ अगर तू भी जवाबे-नाज़ दे
पीरे-मुग़ाँ[2] फ़रंग की मय का नशात है असर
इसमें वह कफ़[3]-ग़म नहीं मुझको तू ख़ाना-साज़ दे
तुझको ख़बर नहीं है क्या ? बज़्मे-कुहन[4] बदल गई
अब न खुदा के वास्ते इनको मय-ए-मजाज़ दे

❖ ❖

१. गाँठ खोलने वाला इश्क २. शराब विक्रेता अथवा साक़ी ३. विलासता ४. पुरानी महफ़िल ।

स्वामी रामतीर्थ

हम बग़ल दरिया से है ऐ क़तरा-ए-बेताब तू
पहले गौहर था, बना अब गौहरे-नायाब[१] तू
आह ! खोला किस अदा से तूने राज़-रंगो-बू
मैं अभी तक हूँ असीरे-इम्तियाज़[२]-रंगो-बू
मिट के ग़ोग़ा[३] ज़िंदगी का शोरिशे-महशर बना
यह शरारा बुझ के आतश-ख़ाना-ए-आज़र[४] बना
नफ्से-हस्ती[५] इक करिश्मा है दिल-आगाह[६] का
"ला" के दरिया में निहाँ मौती है "इलल्लाह"[७] का
चश्मे-नाबीना से मख़्फ़ी मानी-ए-अंजाम है
थम गई जिस दम तड़प, सीमाब सीमे-ख़ाम है
तोड़ देता है बुते-हस्ती को इब्राहीमे-इश्क़
होश का दारू है गोया, मस्ती-ए-तसनीमे-इश्क

१. अलभ्य मोती २. दुनिया के भेद-भाव में गस्त ३. शोर, कलख ४. आज़र का अग्नि गृह (पूजा स्थान) ५. जीवन-तत्व ६. सर्वज्ञ हृदय ६. नहीं, कलमे के शुरू का शब्द नकार ७. सिवाए खुदा के अर्थात खुदा ८. छिपा हुआ ९. अंत का अर्थ १०. कच्ची चाँदी ११. इश्क का इब्राहीम, इब्राहीम वह पैगम्बर हैं जिसने अद्वैतवाद का सबसे पहले संदेश दिया और काबा की बुनियाद १२. तसनीम जन्नत की एक मीठी नहर का नाम है ।

तुलबा[1]-ए-अलीगढ़ कालिज के नाम

औरों का है प्याम और मेरा प्याम और है,
इश्क़ के दर्दमंद का तर्ज़े-कलाम[2] और है।
तायरे-ज़ेरे-दाम[3] के नाले तो सुन चुके हो तुम,
यह भी सुनो कि नाला-ए-तायरे-बाम और है।
आई थी कोह से सदा राज़े-हयात है सकूँ,
कहता था मोरे-नातवाँ[5] लुत्फ़े-खराम[6] और है।
जज़्बे-हरम[7] से है फ़रोग़ अंजुमने-हिजाज[8] का,
उसका मुक़ाम और है उसका निज़ाम और है।
मौत है ऐशे-जावदाँ[9], ज़ौके तलब[10] अगर न हो,
गर्दिशे-आदमी है और गर्दिशे-जाम और है।
शमए-सहर यह कह गई, सोज़ है ज़िंदगी का साज़,
ग़मकदा-ए-नमूद[11] में शर्ते-दवाम[12] और है।
बादा[13] है नीमरस[14] अभी, शौक है नारसा[15] अभी,
रहने दो खुम[16] के सर पे तुम ख़िश्ते कलीसिया अभी।

---

१. विद्यार्थी २. शैली ३. जाल में फँसा पंछी ४. आजाद पंछी की फरियाद ५. कमजोर चेंटी ६. चलने का आनन्द ७. काबा का आकर्षण ८. अरब का एक पवित्र स्थान ९. स्थाई उल्लास १०. जिज्ञासा ११. संसार १२. अमरत्व की शर्त १३. शराब १४. अधखिन्नी १५. न पहुँच सकने वाला १६. शराब की बोतल १७. डाट।

अख़्तरे-सुबह

सितारा सुबह का रोता था और यह कहता था
मिली निगाह मगर फ़ुर्सते-नज़र न मिली
हुई है ज़िंदा दमे-आफ़ताब से हर शय
अमाँ मुझी को तहे-दामने सहर[1] न मिली
बिसात क्या है भला सुबह के सितारे की
नफ़स हबाब[2] का ताबिंदगी[3] शरारे की।
कहा यह मैंने कि ऐ ज़ेवरे-जबीने-सहर[4]
ग़मे-फ़ना[5] है तुझे, गुम्बदे-फलक[6] से उतर
टपक बुलंदी-ए-गर्दूं से हमरहे-श्बनम
मिरे रियाज़े-सुख़न[7] की फ़िज़ा है जाँ-परवर[8]
मैं बाग़बाँ हूँ मुहब्बत बहार है इसकी।
बिना मिसाले-अबद[9] पायदार है इसकी।

१. प्रभात के आँचल तले २. बुलबुला ३. चमक ४. प्रभात के माथे का आभूषण अर्थात् सितारा ५. मरने का ग़म ६. आस्मान ७. काव्य-उद्यान ८. जीवन-दायक ९. नित्य की भाँति

हुस्नो-इश्क़

जिस तरह डूबती है किश्ती-ए-सीमीने-क़मर[१]
नूरे-ख़ुर्शीद के तूफ़ान में हंगामे-सहर[२]
जैसे हो जाता है गुम नूर का लेकर आँचल
चाँदनी रात में महताब का हमरंग कमल
जलवा-ए-तूर में जैसे यदे-बैजा-ए-कलीम
मौजा-ए-नकहते-गुलज़ार[३] में गुंचे की शमीम[४]
है तिरे सैले-मुहब्बत में योंही दिल मेरा।
तू जो महफ़िल है, तो हंगामा-ए-महफ़िल हूँ मैं
हुस्न की बर्क़ है तू, इश्क का हासिल हूँ मैं
तू सहर है तो मिरे अश्क हैं शबनम तेरी
शामे-ग़ुर्बत हूँ अगर मैं, तो शफ़क़ तू मेरी
मेरे दिल में तिरी ज़ुल्फ़ों की परेशानी है
तेरी तस्वीर से पैदा मेरी हैरानी है
हुस्न कामिल है तिरा, इश्क है कामिल मेरा।

१. चाँदी जैसे चाँद की नाव २. प्रभात काल ३. बाग़ की सुगंध की लहर ४. सुगंध

है मिरे बाग़ो-सुख़न के लिए तू बादे-बहार
मेरे बेताब तख़य्युल को दिया तूने क़रार[५]
जब से आबाद तिरा इश्क़ हुआ सीने में
नए जौहर हुए पैदा मिरे आईने में
हुस्न से इश्क़ की फ़ितरत को हैं तहरीके-कमाल[६]
तुझ से सरसब्ज़ हुए मेरी उम्मीदों के निहाल[७]
काफ़िला हो गया आसूदा-ए-मंज़िल[८] मेरा।

---

५. स्थिरता ६. पूर्णता को प्राप्त करने की प्रेरणा ७. पौधा ८. मंजिल पर पहुँचने में सफल।

"..........की गोद में बिल्ली देखकर"

तुझ को दुज़दीदा-निगाही[1] यह सिखा दी किस ने ?
रम्ज़[2] आगाज़े-मुहब्बत की बतादी किसने ?
हर अदा से तिरी पैदा है मुहब्बत कैसी ?
नीली आँखों से टपकती है ज़क़ावत[3] कैसी ?
देखती है कभी उनको कभी शर्माती है ।
कभी उठती है, कभी लौट के सो जाती है
आँख तेरी सिफ़ते-आईन-ए-हैरान[4] है क्या ?
नूरे-आगाही से रौशन तिरी पहचान है क्या ?
मारती है इन्हीं पौहचों से अजब नाज है यह ?
चिढ़ है या ग़ुस्सा है ? या प्यार का अंदाज है यह ?
शोख़ तू होगी तो गोदी से उतारेंगे तुझे ।
गिर गया फूल जो सीने का तो मारेंगे तुझे ।
क्या तजस्सुस[5] है तुझे ? किस की तमन्नाई है ?
आह ! क्या तू भी इसी चीज़ की सौदाई है ?

---

१. चोरी-चोरी देखना २. भेद ३. प्रतिमा ४. शीशे की भाँति हैरान
५. कौतूहल ६. इच्छुक

ख़ास इंसान से कुछ हुस्न का अहसास नहीं,
सूरते-दिल है यह हर चीज़ के बातिन[1] में मकीं।
शीश-ए-दहर[2] मानंदे-मये-नाव[3] है इश्क़।
रूहे-खुर्शीद है, खूने-रगे-महताब है इश्क़।
दिले-हरज़र्रा में पौशीदा कसक है इसकी,
नूर यह वह है कि हर शय में झलक है इसकी।
कहीं सामाने मुसर्रत, कहीं साज़े-ग़म है,
कहीं गौहर है, कहीं अश्क, कहीं शबनम है।

◆ ◆

१. अभ्यंतर २. संसार रूपी दर्पण ३. शुद्ध शराब की भाँति।

कली

जब दिखाती है सहर आरिज़े-रंगीं अपना
खोल देती है कली सीना-ए-ज़र्रीं अपना
जलवा-आशाम है यह सुबह के मैख़ाने में
ज़िंदगी इसकी है ख़ुर्शीद के पैमाने में
सामने मेहर का दिल चीर के रख देती है
किस क़दर सीना-शिगाफ़ी के मजे लेती है।
मेरे ख़ुर्शीद कभी तू भी उठा अपनी नक़ाब
बहरे-नज़्ज़ारा तड़पती है निगाहे-बेताब
तेरे जलवे का नशेमन हो मिरे सीने में
अक्स आबाद हो तेरा मिरे आईने में
ज़िंदगी हो तिरा नज़्ज़ारा मिरे दिल के लिए
रोशनी हो तिरी, गहवारा मिरे दिल के लिए
ज़र्रा-ज़र्रा हो मिरा फिर तरब-अंदाज़े-हयात[2]
हो अयाँ जोहरे-अंदेशा[3] में फिर सोज़े-हयात
अपने ख़ुर्शीद का नज़्ज़ारा करूँ दूर से मैं
सिफ़ते-ग़ुंचा हम-आग़ोश रहूँ नूर से मैं
जाने-मुज़तर की हक़ीकत को नुमायाँ कर दूँ
दिल के पौशीदा ख्यालों को भी उरियाँ कर दूँ।

१. जलवा पीना २. जिंदगी का लुत्फ उठाने वाला ३. चिंतन तत्त्व।

चांद और तारे

डरते-डरते दमे-सहर से, तारे कहने लगे क़मर से
नज़्ज़ारे रहे वही फ़लक पर, थक भी गये चमक-चमककर
काम अपना है सुबहो-शाम चलना, चलना-चलना मुदाम चलना
बेताब है इस जहाँ की हर शै, कहते हैं जिसे सकूँ नहीं है
रहते हैं सितम-कशे-सफ़र सब, तारे, इंसाँ, शजर, हजर सब
होगा कभी ख़त्म यह सफ़र क्या ?
मंज़िल कभी आयगी नज़र क्या ?
कहने लगा चाँद हमनशीनो ! ऐ मर्ज़ा-ए-शब[2] के ख़ोशा-चीनो !
जुम्बिश से है ज़िंदगी जहाँ की, यही रस्म क़दीम है यहाँ की
दौड़ा था अशहबे-जमाना[4], खा-खा के तलब का ताज़ियाना[5]
इस रह में मुक़ाम बेमहल है, पौशीदा क़रार में अजल है
चलने वाले निकल गये हैं, जो ठेहरे ज़रा-कुचल गये हैं
अंजाम है इस ख़राम का हुस्न,
आग़ाज़ है इश्क़ इंतहा हुस्न ।

१. पत्थर २. रात की खेती ३. बालियाँ चुनने वाले ४. वक्त का घोड़ा ५. कोड़ा ६. बेमौका ।

विसाल[1]

जुस्तजू जिस गुल की तड़पाती थी ऐ बुलबुल मुझे
खूबी-ए-क़िसमत से आखिर मिल गया वह गुल मुझे।
खुद तड़पता था, चमन वालों को तड़पाता था मैं।
तुझ को जब रंगी-नवा पाता था शर्माता था मैं।
मेरे पहलू में दिले-मुज़तर न था सीमाब[1] था
इरतकावे-जुर्मे-उलफ़त[2] के लिए बेताब था।
नामुरादी महफ़िले-गुल में मिरी मशहूर थी
सुबह मेरी आयना-दारे-शबे-देजूर[3] थी।
अज नफस दर सीना-ए-खूँगश्ता निश्तर दाश्तम
जेरे ख़ामोशी निहाँ गोगा-ए-महशर दाश्तम[4]।
अब तअस्सुर के जहाँ में वह परेशानी नहीं
अहले-गुलशन पर गराँ मेरी ग़ज़लख्वानी नहीं।
इश्क़ की गर्मी से शोले बन गये छाले मिरे
खेलते हैं बिजलियों के साथ अब नाले मिरे।

१. मिलन २. प्रेम का अपराध करना ३. अमावस की रात को आईना दिखाने वाली अर्थात् उससे बढ़कर ४. अपने घायल सीने में सांस को निश्तर बना रखा है। मूकता में प्रलय का कलरव छिपाये हुए हूँ।

ग़ाज़ा-ए-उलफ़त से यह खाक़े-सयह् आईना है
और आईने में अक्से-हमदमे-दैरीना है
क़ैद में आया तो हासिल मुझको आज़ादी हुई
दिल के लुट जाने से मेरे घर की आबादी हुई
ज़ौ से इस खुर्शीद की अख्तर मिरा ताबिंदा है
चाँदनी जिसके ग़ुबारे-राह से शर्मिंदा है।

यक नज़र करदी-व-आदाबे-फ़ना आमोखती
ऐ खुनक़ रोज़े ! कि ख़ाशाके मरा वासोखती

---

१. पुराने मित्र का प्रतिबिम्ब २. तूने मुझे एक नजर में मर मिटने के सब तरीके सिखा दिये। ऐ सुहाने दिन तूने मेरे जीवन का कूड़ा-कर्कट जला डाला।

सलीमा[1]

जिसकी नमूद देखी चश्मे-सितारा-बीं ने
खुर्शीद में, क़मर में, तारों की अंजुमन में
सूफ़ी ने जिसको दिल के जुलमत कदे में पाया
शायर ने ज़िसको देखा कुदरत के बाँकपन में
जिसकी चमक है पैदा, जिसकी महक हवैदा
शबनम के मोतियों में फूलों के पैरहन में
सहरा को है बसाया जिसने सकूत बनकर
हंगामा जिसके दम से काशाना-ए-चमन में
हर शय में है नुमायाँ यों तो जमाल उसका
आँखों है सलीमा ! तेरी कमाल उसका

१. वह धाया जिसने हज़रत मुहम्मद का पालन-पोषण किया ।

आशिके-हरजाई

है अजब मज्मूआ-ए[1]-अज़दाद ऐ इक़बाल तू
रौनक़े-हंगामा-ए-महफ़िल भी है तन्हा भी है
तेरे हंगामों से ऐ दीवाना-ए-रंगी नवा
जीनते-गुलशन भी है, आशायशे-सहरा भी है
हमनशीं तारों का है तू रिफ़अते-परवाज से
ऐ ज़मीं-फ़र्सा[2], कदम तेरा फ़लक-पैमा भी है
ऐन शग़ले-मय में पैशानी है तेरी सज्दा रेज़
कुछ तिरे मशरब में रंगे-मशरबे-मीना भी है
मिस्ले-बू-ए-गुल, लिबासे-रंग-से उरियाँ है तू
है तो हिम्मत आफ़रीं, लेकिन तुझे सौदा भी है
जानिबे-मंज़िल रवाँ बेनक़्शे-पा मानंदे-मौज
और फ़िर उफ़तादा[3] मिस्ले-साहिले-दरिया भी है

१. असंगति-पुंज २. भूमि पर चलने वाला ३. आकाश मापने वाला
४. पाँव के चिन्ह छोड़े बिना ५. अचल ।

हुस्ने-निस्वानी है बिजली तेरी फ़ितरत के लिए
फ़िर अजब यह है कि तेरा इश्क़ बे-पर्वा भी है
तेरी हस्ती का है आईने-तफ़न्नुन पर मदार
तू कभी इक आस्ताने पर जबीं-फ़र्सा भी है
है हसीनों में वफा-नाआशना तेरा खिताब
ऐ तलव्वुन कैश ! तू मशहूर भी रुस्वा भी है
लेके आया है जहाँ में आदते-सीमाब तू
तेरी बेताबी के सदके है अजब बेताब तू

इश्क़ की आशुफ्तगी ने कर दिया सहरा जिसे
मुश्ते-ख़ाक ऐसी निहाँ जेरे-कबा रखता हूँ मैं
दिल नहीं शायर का, है कैफ़यतों की रस्तख़ेज
क्या ख़बर तुझको दरूने-सीना क्या रखता हूँ मैं
आरजू हर कैफ़ियत में इक नए जलवे की है
मुज्तरिब हूँ, दिल सकूँ-नाआशना रखता हूँ मैं।
गो हसीने-ताजा[1] है हर लहजा मक़सूदे-नज़र[2]
हुस्न से मजबूत पैमाने वफ़ा रखता हूँ मैं।
बेनयाजो से है पैदा मेरो फ़ितरत का नयाज़
सोज़ो-साजे-जुस्तजू मिस्ले-सबा रखता हूँ मैं।
मूजिबे-तिस्कीं[3], तमाशा-ए-शरारे[4] जस्ता-ए
हो नहीं सकता कि दिल बर्क़-आशना रखता हूँ मैं।
हर तकाज़ा इश्क की फ़ितरत का हो जिससे खमोश
आह वह कामिल तजल्ली, मुद्दआ रखता हूँ मैं।
जुस्तजू कुल की लिये फिरती है अजज़ा में मुझे
हुस्न बेपायाँ है, दर्दे-लादवा रखता हूँ मैं।

१. स्त्री सुलभ सौंदर्य २. दीवानगी उन्माद ३. सवर्ष। ४. नया माशूक ५. दृष्टि का उद्देश्य ६. सान्त्वना का कारण ७. उड़ती हुई चिनगारी का तमाशा ।

जि़दगी उलफ़त की दर्द अन्जामियों[1] से है मिरी
इश्क़ को आज़ादे-दस्तूरे-वफ़ा रखता हूँ मैं।
सच अगर पूछे तो इफ़लासे-तखय्युल[2] है वफ़ा
दिल में हर दम इक नया महशर बपा रखता हूँ मैं।
फ़ैजे-साक़ी[3] शबनमआसा,[4] ज़र्फ़े-दिल[5], दरिया-तलब
तश्न-ए-दायम[6] हूँ, आतश[7] जेरे-पा रखता हूँ मैं।
मुझको पैदा करके अपना नुक्ताचीं पैदा किया
नक्श हूँ अपने मुसव्विर से गिला रखता हूँ मैं।
महफ़िले-हस्ती में जब ऐसा तुनक-जलवा[8] था हुस्न
फिर तखय्युल किस लिए लाइन्तहा रखता हूँ मैं।
दर बयाबाने-तलब पैवस्ता मा कोशेम-मा
मौजे-बेहरेमो-शिकस्ते-खेश बर-दोशेम-मा।[9]

---

१. पीड़ाजनक परिणाम २. कल्पना की दरिद्रता ३. साकी का दान ४. ओस की भाँति ५. दिल का पात्र ६. नदी का इच्छुक ७. सदा का प्यासा ८. पाँव नीचे आग अर्थात् व्यग्र ९. क्षणभर का १०. खोज के जंगल में मैंने सदा प्रयास कियां है। मैं समुद्र की एक मौज हूँ, जिसके सिरपर खुद अपा टूटने का बोझ है।

कोशिशे-नातमाम[1]

फुक़र्ते-आफ्ताब[2] में खाती है पेचो-ताब[3] सुब्ह
चश्मे-शफ़क़ है खू-फिशाँ अख़तरे-शाम के लिए।
रहती है कैसे-रोज़ को लैला-ए-शाम की हवस
अखतरे-सुबह मुज्तरिब, ताबे-दवाम के लिए।
कहता था कुत्बे आस्मां[4] काफ़िला-ए-नजूम[5] से
हमरहो ! मैं तरस गया लुत्फे-खराम के लिए।
सोतों को नद्दियों का शौक़,बहर का नद्दियों को इश्क
मौजा-ए-बहर को तपिश माहे-तमाम[6] के लिए।
हुस्ने अज़ल कि पर्दा-ए-लाला-व-गुल में है निहाँ
कहते हैं बेकरार है जलवा-ए-आम के लिए।
राजे-हयात पूछ ले खिज्रे-ख़जिस्तागाम[7] से
ज़िन्दा हर एक चीज है कोशिशे नातमाम से।

---

१. अधूरा प्रयास २. खून बहाने वाला ३. टूट गया है ४. आकाश का बुर्ज ५. सितारों का काफिला ६. पूर्ण चाँद ७. तेज चलने वाला खिज्र।

नवा-ए-ग़म[1]

ज़िन्दगानी है मिरी मिस्ले-रबाबे-खामोश[2]
जिसकी हर रंग के नग़मों से है लब्रेज़ आग़ोश
बरबते-कौनो-मकाँ[3] जिसकी खमोशी निसार
जिसके हर तार में हैं सैंकड़ों नग़मों के मज़ार
मेहशरिस्ताने-नवा[4] का है अमीं[5] जिसका सकूत
और मन्नतकशे-हंगामा[6] नही जिसका सकूत
आह ! उम्मीद मुहब्बत की बर आई न कभी
चोट मिज़्राब[7] की इस साज ने खाई न कभी ।
मगर आती है नसीमे-चमने-तूर[8] कभी
सम्ते-गर्दूं[9] से हवा-ए-नफ़से-हूर[10] कभी
छेड़ आहिस्ता से देती है मिरा तारे-हयात
जिस से होती है रिहा-रूहे-गिरफ्तारे-हयात
नग़मा-ए-यास[11] की धीमी सी सदा उठती है
अश्क के क़ाफ़िले को बाँगे-दरा उठती है
जिस तरह रिफ़अते-शबनम है मज़ाक़े-रम[12] से ।
मेरी फितरत की बुलन्दी है नवा-ए-ग़म से ।

◈ ◈

---

१. विषाद की ध्वनि २. मूक सितार ३. दुनिया की सारंगी ४. कलरव गृह ५. रखने वाला ६. हंगामे का कृतज्ञ ७. वह यंत्र जिसे उँगली में पहनकर सितार बजाते हैं ८. तूर के उद्यान का समीर ९. आकाश की ओर १०. हूर के साँस की हवा ११. निराशा का गीत १२. घूमने का शौक ।

इशरते-इम्रोज़[1]

न मुझ से कह कि अजल है पयामे-ऐशो-सरूर[2]
न खींच नक्शा-ए-कैफ़ियते-शराबे-तहूर[3]
फ़िराक़े-हूर में हो ग़म से हमकनार[4] न तू
परी को शीश-ए-अलफ़ाज़ में उतार न तू।
मुझे फ़रेफ्ता-ए-साक़ी-ए-जमील[5] न कर
बयाने-हूर न कर जिक्रे-सलसबील[6] न कर।
मुक़ामे-अम्न है जन्नत, मुझे कलाम नहीं
शबाब के लिए मौजूं तिरा पयाम नहीं।
शबाब ! आह ! कहाँ तक उमीदवार रहे
वह ऐश, ऐश नहीं, जिसका इन्तज़ार रहे।
वह हुस्न क्या कि जो मोहताजे-चश्मे-बीना[7] हो
नमूद के लिए मन्नत पज़ीरे-फ़र्दा[8] हो ।

१. आज का ऐश २. हर्ष और उल्लास ३. जन्नत की शराब ४. विषाद ग्रस्त ५. सुन्दर साक़ी का प्रेमी ६. स्वर्ग का प्लाऊ जिसमें स्वर्गवासियों को शरबत पिलाया जायगा ७. देखने वाली आँख का मोहताज ८. आने वाली कल का कृतज्ञ ।

इन्सान

कुदरत का अजीब यह सितम है।
इन्सान को राज़जू[1] बनाया
राज उसी की निगाह से छिपाया
बेताब है जोक़-आगही[2] का
खुलता नहीं भेद ज़िदगी का।

हैरते आग़ाज़ो-इन्तहा[3] है
आईने के घर में और क्या है ?

है गर्म-ख़राम[4] मौजे-दरिया
दरिया सू-ए-बहर[5] जादा-पैमा[6]
बादल को हवा उड़ा रही है
शानो पे उठाये ला रही है
तारे, मस्ते-शराबे-तक़दीर
जिन्दाने-फलक में पाबज़ंजीर।

---

१. रहस्य खोजने वाला २. ज्ञान ३. आदि और अन्त ४. चलने में व्यस्त ५. समुद्र की ओर ६. चलने वाला, राही, यात्री ७. आस्मान का कैदखाना।

खुर्शीद बह आबिदे-सहर-खेज़[1]
लाने वाला पयामे-"बरखेज़"[2]
मग़रिब[3] की पहाड़ियों में छिपकर
पीता है मये-शफ़क़ का साग़र
लज्ज़तगीरे-वजूद[4] हर शय
सरमस्ते-मये-नमूद[5] हर शय

कोई नहीं ग़मगुसारे-इन्सां[6]
क्या तल्ख़ है रोजगारे-इन्सां ।

१. प्रातःकाल उठने वाला भक्त २. उठ ३. पश्चिम ४. दुनिया का स्वाद उठाने वाली ५. प्रकट होने की शराब से मस्त ६. सम्वेदनाशील ।

जलवा-ए-हुस्न

जलबा-ए-हुस्न कि है जिससे तमन्ना बेताब
पालता है जिसे आग़ोशे-तरखय्युल में शबाब।
अबदी[१] बनता है यह आलमे-फ़ानी[२] जिससे
एक अफ़साना-ए-रंगीं है जवानी जिससे।
जो सिखाता है हमें सरबगरेबाँ[३] होना
मंज़रे-आलमे-हाज़िर[४] से गुरेज़ाँ[५] होना।
दूर हो जाती है इद्राक[६] की ख़ामी जिससे
अक़्ल करती है तास्सुर[७] की ग़ुलामी जिससे।
आह! मौजूद भी वह हुस्न कहीं है कि नहीं?
ख़ातिमे-दहर[८] में यारब वह नगीं[९] है कि नहीं?

१. नित्य से, अजर २. दुनिया ३. हैरान ४. प्रस्तुत दृश्य ५. बचना ६. समझ ७. कल्पना ८. संसार की अगूठी ९. मोती, नगीना।

एक शाम

(दरिया-ए-नेकर हायडिलबर्ग के किनारे पर)

ख़ामोश है चाँदनी क़मर की
शाखें हैं खमोश हर शजर की।
वादी के नवाफरोश[1] खामोश
कोहसार के सब्ज़पोश ख़ामोश।
फ़ितरत बेहोश हो गई है
आगोश में शब के सो गई है।
कुछ ऐसा सकूत का फ़सूँ[2] है
नेकर का ख़राम भी सकूँ है।
तारों का ख़मोश कारवाँ है
यह क़ाफ़िला बे-दरा रवाँ है।
ख़मोश है कोहो-दश्तो-दरिया
कुदरत है मुराक़बे[3] में गोया।
ऐ दिल तू भी ख़मोश हो जा
आगोश में ग़म को लेके सोजा।

१. चहचहाने वाले, २. जादू ३. समाधि।

तनहाई

तनहाई-ए-शब में है हज़ीं[1] क्या ?
अंजुम नहीं तेरे हमनशीं क्या ?
यह रिफ़अते-आस्माने-ख़ामोश
ख़्वाबीदा[2] ज़मीं, जहाने खामोश ।
यह चाँद, यह दश्तो-दर यह कोहसार
फ़ितरत है तमाम नस्तरनज़ार[3] ।
मोती खुशरंग प्यारे-प्यारे
यानी तिरे आँसुओं के तारे ।
किस शाम की तुझे हवस है ऐ दिल !
कुदरत तिरी हमनफ़स है ऐ दिल !

१. दुखी २. सुप्त ३. बाग, उद्यान ।

प्याम-इश्क़

सुन ऐ तलबगारे-दर्दे-पहलू ! मैं नाज़ हूँ तू नयाज़ होजा,
मैं ग़ज़नवी सोमनाथे-दिल का हूँ, तू सरापा अयाज़ होजा।
नहीं है वाबस्ता ज़ेरे गर्दूं कमाल शाने-सिकन्दरी से,
तमाम सामाँ है तेरे सीने में तू भी आयना-साज़[१] होजा।
ग़रज़ है पैकारे-जिंदगी[२] से कमाल पाय-हिलाल[३] तेरा,
जहाँ का फ़र्ज़े-क़दीम है तू अदा मिसाले-नमाज़ हो जा।
न हो क़नाअत-शुआरे[४] गुलचीं, इसी से क़ायम है शान तेरी,
वफ़ूरे गुल[५] है अगर चमन में, तू और दामन-दराज़[६] होजा।
गये वह अय्याम, अब ज़माना नहीं है सहरा-नवर्दियों का
जहाँ में मानंदे-शमऐ-सोज़ाँ, म्याने-महफ़िल गुदाज़ होजा।
वजूद अफ़राद का मजाज़ी है हस्ति-ए-क़ौम है हक़ीक़ी
फ़िदा हो मिल्लत में, यानी आतश-ज़ने-तलिस्मे-मजाज़[७] होजा।
यह हिन्द के फ़िरक़ा-साज़ इक़बाल आज़री कर रहे हैं गोया
बचा के दामन बुतों से अपना ग़ुब्बारे हिजाज़ होजा।

---

१. आईना बनाने वाला अर्थात् सिकन्दर २. जीवन-संघर्ष ३. दूज का चाँद ४. थोड़े पर सन्तोष करने वाला ५. फूलों की अधिकता ६. ६. आँचल फैलाना ७. दिखावे के जादू को जलाने वाला।

फ़िराक

तलाशे-गोशा-ए-उल्फ़त में फिर रहा हूँ मैं,
यहाँ पहाड़ के दामन में आ छिपा हूँ मैं।
शकिस्ता गीत में चश्मों की दिलबरी है कमाल
दुआ-ए-तिफ़लके-गुफ्तार[1] आज़मा की मिसाल।
है तख्ते-लाले-शफ़क़ पर जलूसे अखतरे-शाम
बहिस्ते-दीदा-ए-बीना है हुस्ने-मंज़रे शाम।
सकूते शामे जुदाई हुआ बहाना मुझे
किसी की याद ने सिखला दिया तराना मुझे।
यह कैफ़ियत है मिरी जाने-नाशकेबा[2] की
मिरी मिसाल है तिफ्ले-सग़ीरे-तनहा की।
अंधेरी रात में करता है वह सरोद आग़ाज़
सदा को अपनी समझता है ग़ैर की आवाज़।
यों ही मैं दिल को पयामे-शकेब देता हूँ
शबे फ़िराक़ को गोया फ़रेब देता हूँ।

✧ ✧

१. बोलना सीख रहे बालक की प्रार्थना २. व्यग्र आत्मा ३. छोटा अकेला बच्चा।

अब्दुल क़ादर के नाम

उठ कि जुलमत हुई पैदा उफ़क़े-ख़ावर[1] पर
बज़्म में शोला-नवाई[2] से उजाला कर दें।

एक फरियाद है मानंदे-सपंद अपनी बिसात
इसी हंगामे से महफ़िल तहो-बाला करदें।

अहले-महफ़िल को दिखादें असरे-सैक़ले-इश्क[3]
संगे-इमरोज[4] को आईना-ए-फ़र्दा[5] करदें।

जलवा-ए-यूसुफे-गुमगश्ता[6] दिखाकर उनको
तपिश-आमादा तरअज़ खूने-जुलैख़ा[7] करदें।

इस चमन को सबक़ आईने-नमू[8] का देकर
कतरा-ए-शबनमे-बेमाया[9] को दरिया करदें।

रख़्ते-जाँ[10] बुतकदा-ए-चीं[11] से उठा लै अपना
सब को महवे-रुखे-सअदा-ब-सलीमा[11] करदें।

१. पूर्व २. चिनगारी जैसी आवाज ३. इश्क के सैकल (जंग उतारने वाली वस्तु) का प्रभाव ४. आज का पत्थर ५. कल का आईना ६. जुलैखा के खून को खौला दें ७. उत्पत्ति का नियम ८. ओस की तुच्छ बूंद ९. प्राणों की सामग्री १०. चीन का बुतकदा ११. सादा और सलीमा के मुख की ओर प्रवत्त ।

देख ! यसरब[1] में हुआ नाक़ा-ए-लैला बेकार
क़ैस को आरजू-ए-नौ से शनासा करदें
बादा[2], देरीना हो और गर्म है ऐसा, कि गुदाज,
जिगरे-शीशा-व-पैमाना-व-मीना करदें।
गर्म रखता था हमें सर्दी-ए-मग़रिब में जो दाग़
चीरकर सीना उसे वक़्फ़े-तमाशा करदें।
शमअ की तरह जियें बज़्मगहे-आलम में
खुद जलें दीदा-ए-अग़यार को बीना करदें।
हरचे दरदिल गुज़रद, वक़्फ़े ज़ुबाँ दारद शमअ
सोखतन नेस्त ख्याले कि निहाँ दारद शमअ।[3]

१. अरब का एक तीर्थस्थान २. शराब ३. शमअ के दिल पर जो कुछ गुजरती है, उसे वह जबान पर नहीं लाती। उसे जलने के सिवा और कोई ख्याल नहीं जिसे छिपाती हो।

सक्लिया

(सिसली द्वीप)

रो ले अब दिल खोल के ऐ दीदा-ए-खूँनाबा बार[1]
वह नज़र आता है तहज़ीबे-हिजाज़ी का मज़ार।
था यहाँ हंगामा उन सहरा-नशीनों[2] का कभी
बहर बाज़ी-गाह[3] था जिनके सफ़ीनों का कभी।
ज़लज़ले जिनसे शहनशाहों के दरबारों में थे
बिजलियों के आशियाने जिनकी तलवारों में थे।
इक जहाने-ताज़ा का पैग़ाम था जिनका ज़हूर
खा गई अस्रे-कुहन को जिनकी तेग़े-नासबूर[4]।
मुर्दा आलम ज़िंदा जिनकी शोरिशे-कुम से हुआ
आदमी आज़ाद ज़ंजीरे-तवहुम से हुआ।
गलोगलों से जिसकी लज्ज़तगीर अब तक गोश है
क्या वह तक्बीर[5] अब हमेशा के लिए खामोश है।

---

१. लहू रोने वाली आँख २. अरब के बासी ३. खेल का मैदान ४. निष्ठुर तलवार ५. अजान।

आह ऐ सिसली ! समुन्दर की है तुझसे आबरू
रेहनुमा की तरह इस पानी के सेहरा में है तू ।
ज़ेब तेरे ख़ाल[1] से रुख़्सारे-दरिया को रहे
तेरी शमओं से तसल्ली बहर-पैमा को रहे ।
हो सुबुक चश्मे-मुसाफ़िर पर तिरा मंज़र मुदाम
मौज रक्साँ तेरे साहिल की चटानों पर मुदाम ।
तू कभी उस क़ौम की तेहज़ीब का गेहवारा था
हुस्ने-आलमसोज़ जिसका आतशे-नज्ज़ारा था ।
नालाकश[2] शीराज का बुलबुल हुआ बग़दाद पर
दाग़ रोया खून के आँसू जहानाबाद पर ।
आस्माँ ने दौलते-गर्नाता[3] जब बरबाद की
इब्ने-बदरूँ[4] के दिले-नाशाद ने फ़रियाद की ।
ग़म नसीब इक़बाल को बख़्शा गया मातम तिरा
चुन लिया तक़दीर ने वह ग़म कि था महरम तिरा ।
है तिरे आसार में पौशीदा किसकी दास्ताँ ?
तेरे साहिल की खमोशी में है अन्दाज़-बयाँ ।

---

१. तिल २. आह भरने वाला ३. अरब का एक नगर ४. वह व्यक्ति जिसने गर्नाता का मातम किया ।

दर्द अपना मुझसे कह, मैं भी सरापा दर्द हूँ
जिसकी तू मंज़िल था, मैं उस कारवाँ की गर्द हूँ।
रंग-तस्वीरे-कुहन में भर के दिखलादे मुझे
किस्सा, अय्यामे-सलफ़ का कह के तड़पादे मुझे।
मैं तिरा तोहफ़ा सूए-हिन्दोस्ताँ ले जाऊँगा
खुद यहाँ रोता हूँ औरों को वहाँ रुलवाऊँगा।

१. अतीत की कहानी।

ग़ज़लयात

ज़िंदगी इंसाँ की इक दम के सिवा कुछ भी नहीं
दम हवा की मौज है रम के सिवा कुछ भी नहीं।
गुल, तवस्सुम[१] कह रहा था, ज़िंदगानी को मगर
शमअ बोली, गिरया-ए-ग़म[२] के सिवा कुछ भी नहीं।
राज़े-हस्ती-राज़ है जब तक कोई मेहरम न हो
खुल गया जिस दम तो मेहरम के सिवा कुछ भी नहीं।
ज़ायराने-काबा[३] से इक़बाल यह पूछे कोई
क्या हरम क़ा तोहफा ज़मज़म के सिवा कुछ भी नहीं।

१. मुस्कान २. विषाद का रुदन ३. हज को जाने वाले।

इलाही अक़्ले-खजिस्ता-पै[१] ज़रा सी दीवानगी सिखादे
उसे है सौदा-ए-बख़्या-कारी[२], मुझे सरे-पैरहन नहीं है।
मिला मुहब्बत का सोज़ मुझको, बोले सुबहे-अज़ल[४] फ़रिश्ते
मिसाले-शमए-मज़ार है तू, तिरी कोई अंजुमन नहीं है।
यहाँ कहाँ हमनफ़स मयस्सर यह देश ना-आशना है ऐ दिल !
वह चीज़ तू माँगता है मुझ से कि ज़ेरे चर्ख़े-कुहन[५] नहीं है।
निराला सारे जहाँ से इसको अरब के मेमार[६] ने बनाया
बिना[७] हमारे हिसारे-मिल्लत[८] की इत्तहादे-वतन नहीं है।
कहाँ का आना, कहाँ का जाना फ़रेब है इम्तियाज़े-उक़्बा[९]
नमूद हर शै में है हमारी, कहीं हमारा वतन नहीं है।
मुदीरे-मख़ज़न[१०] से कोई इक़बाल जाके मेरा पयाम कह दे
जो काम कुछ कर रहीं हैं कौमें उन्हें मज़ाक़े-सुख़न नहीं है।

---

१. द्रुतगामी, बुद्धि २. फटे को सीने का सौदा ३. मेरे पास कमीज का पल्लू भी नहीं ४. सृष्टि-रचना के समय ५. पुराने आस्मान के नीचे ६. अरब का निर्माता अर्थात हज़रत मुहम्मद ७. नींव, बुनियाद ८. मिल्लत का दुर्ग ९. परलोक का भेद १०. सर अब्दुल क़ादर जो मखज़न पत्रिका के सम्पादक थे।

ज़माना देखेगा जब मिरे दिल से महशर उठेगा गुफ्तगू का
मिरी खमोशी नहीं है गोया मज़ार है हर्फ़-ग्रारज़ू का ।

जो मौजे-दरिया लगी यह कहने सफ़र से क़ायम है शान मेरी
गुहर यह बोला सदफ़-नशीनी[1] है मुझको सामान ग्राबरू का

न हो तबीयत ही जिनकी काबिल, वह तरबियत से नहीं सँवरते
हुग्रा न सरसब्ज़ रह के पानी में ग्रक्स सर्वे-कनारे-जू[2] का.।

कोई दिल ऐसा नज़र न ग्राया न जिसमें ख्वाबीदा हो तमन्ना ।
इलाही ! तेरा जहान क्या है निगारखाना[3] है ग्रारज़ू का!

ग्रगर कोई शै नहीं है पिनहाँ तो क्यों सरापा तलाश हूँ मैं
निगह को नज़्ज़ारे की तमन्ना है दिल को सौदा है जुस्तजू का

चमन में गुलचीं से गुंचा कहता था इतना बेदर्द क्यों है इंसा ?
तिरी निगाहों में है तबस्सुम शकिस्ता होना मिरे सबू[4] का।

रियाज़े-हस्ती के ज़र्रे-ज़र्रे से है मुहब्बत का जलवा पैदा
हक़ीकते-गुल को तू जो समझे तो यह भी पैमाँ है रंगो-बू का

१. सीपी में बन्द होना २. नदी के किनारे उगा हुग्रा सरव का पेड़
३. चित्र-गृह ४. प्याला

तमाम मज़मूँ मिरे पुराने, कलाम मेरा ख़ता सरापा
हुनर कोई देखता है मुझ में तो ऐब है मेरे ऐबजू[१] का
सिपास[२] शर्ते-अदब है वर्ना करम है तेरा सितम से बढ़ कर
ज़रा सा इक दिल दिया है वह भी फरेब-ख़ुर्दा[३] है आरज़ू का
कमाले-वहदत[४] अयां[५] है ऐसा कि नोके-निश्तर से तू जो छेड़े।
यक़ीं है मुझको मिरे रगे-गुल से क़तरा इंसान के लहू का।
गया है तक़लीद[६] का ज़माना, मजाज़[७] रख़्ते-सफ़र[८] उठाय ?
हुई हक़ीक़त ही जब नुमायाँ तो किसको चारा है गुफ़्तगू का।
जो घर से इक़्बाल दूर हूँ मैं तो हों न महज़ूँ[८] अजीज मेरे।
मिसाले-गौहर वतन की फ़ुर्क़त कमाल है मेरी आबरू का।

◈ ◈

१. दोष खोजने वाला २. धन्यवाद ३. एकरूपता की पराकाष्ठा ४. प्रकट प्रत्यक्ष ५. अनुसरण ६. बाहरी रूप, दिखावा ७. यात्रा का सामान ८. उदास

चमक तेरी अयाँ, बिजली में, आतश में, शरारे में
झलक तेरी हवैदा, चाँद में, सूरज में, तारे में।
बुलंदी आस्मानों में, ज़मीनों में तिरी पस्ती
रवानी बहर में, उफ्तादगी[1] तेरी किनारों में।
शरीअत[2] क्यों गरेबाँगीर[3] हो जौक़े-तकल्लुम की
छिपा जाता हूँ अपने दिल का मतलब इस्तआरे[4] में।
जो है बेदार इंसां में वह गहरी नींद सोता है
शजर में, फूल में, हैवाँ में, पत्थर में, सितारे में।
मुझे फूँका है सोज़े-क़तरा-ए-अश्के-मुहब्बत[5] ने
ग़ज़ब की आग थी पानी के छोटे से शरारे में।
नहीं जिसे-सवाबे-आख़िरत[6] की आरज़ू मुझको
वह सौदागर हूँ मैं ने नफ़ा देखा है ख़सारे में।
सकूँना-आशना रहना इसे सामाने हस्ती है
तड़प किस दिल की यारब छिप के आ बैठी है पारे में।
सदा-ए-लंतरानी सुन के ऐ इक़बाल मैं चुप हूँ
तकाज़ों की कहाँ ताक़त है मुझ फ़ुर्क़त के मारे में।

◈ ◈

१. पड़ाव २. इस्लाम का धर्म-शास्त्र ३. बाधा ४. रूपक ५. मुहब्बत में टपकने वाले आँसू की जलन ६. परलोक की पुण्य-सामग्री।

यों तो ऐ बज़्मे-जहाँ दिलकश थे नज़्ज़ारे तिरे
इक ज़रा अफ्सुर्दगी तेरे तमाशाओं में थी।
पा गई आसूदगी[1] कूए-मुहब्बत[2] में वह ख़ाक
मुद्दतों आवारा जो हिकमत के सहराओं में थी।
किस क़दर ऐ मय! तुझे रस्मे-हिजाब[3] आई पसन्द
पर्दा-ए-अंगूर से निकली तो मीनाओं में थी।
हुस्न की तासीर पर ग़ालिब न आ सकता था इल्म
इतनी नादानी जहाँ के सारे दानाओं में थी।
मैंने ऐ इक़बाल योरुप में उसे ढूँढा अबस[4]
बात जो हिन्दोस्तां के माह-सीमाओं[5] में थी।

✧ ✧

१. तृप्ति २. मुहब्बत का कूचा ३. पर्दे की रीति ४. व्यर्थ ५. चाँद जैसे माथे वाली अर्थात् सुन्दरियाँ।

मिसाले-पर्तवे-मय[१] तौफ़े-जाम[२] करते हैं
यही नमाज़ अदा सुबहो-शाम करते हैं।
ख़सूसियत[३] नहीं कुछ इसमें ऐ कलीम तिरी
शजर, हजर[४] भी खुदा से कलाम करते हैं।
नया जहाँ कोई ए शमग्रा ढूँढिये कि यहाँ
सितम-कशे-तपिशे-नातमाम[४] करते हैं।
भली है हमनफ़सो ! इस चमन में खामोशी
कि खुशनवाओं[५] को पाबंदे-दाम[६] करते हैं।
ग़रज़ नशात है शग्ले-शराब से जिनकी
हलाल चीज़ को गोया हराम करते हैं।
भला निभेगी तिरी हम से क्योंकर ऐवाइज़
कि हम तो रस्मे-मुहब्बत को ग्राम करते हैं।
इलाही सहर[७] है पीराने-ख़रका-पोश[८] में क्या
कि इक नज़र से जवानों को राम करते है।
मैं उनकी महफ़िले-इशरत से काँप जाता हूँ
जो घर को फूँक के दुनियाँ में नाम करते हैं।

१. शराब के प्रतिबिम्ब की भाँति २. प्याले की परिक्रमा ३. विशेषता ४. अधूरी पीड़ा सहने वाला ५. मधुर स्वर वाले ६. जाल में फंसाना ७. जोदू ८. गुदड़ी पहनने वाले फ़कीर।

हरे रहो वतने-पाज़नी के मैदानो !
जहाज़ पर से तुम्हें हम सलाम करते हैं।
जो बेनमाज़ कभी पढ़ते हैं नमाज़ ऐ इक़बाल
बुलाके दैर से मुझको इमाम करते हैं।

(मार्च १९०७ ई०)

ज़माना आया है बेहिजाबी का आम दीदारे-यार होगा।
सकूत था पर्दादार जिसका वह राज़ अब आशकार होगा।
गुज़र गया अब वह दौर साक़ी कि छिपके पीते थे पीने वाले।
बनेगा सारा जहाँ मयख़ाना कि हर कोई बादाख़्वार होगा।
कभी जो आवारा-ए-जनूँ थे, वे बस्तियों में फिर आ बसेंगे
बरहनापाई[1] वही रहेगी, मगर नया ख़ारज़ार[2] होगा।
सुना दिया गोशे-मुंतज़िर[3] को हिजाज़ की ख़ामुशी ने आखिर
जो अहद[4] सहराइयों[5] से बाँधा गया था फिर उस्तवार[6] होगा।
निकल के सहरा से जिसने रोमा की सलतनत को उलट दिया था
सुना है यह कुदसियों[7] से मैंने वह शेर फ़िर होशियार होगा।
किया मिरा तज़करा जो साकी ने बादाख़्वारों की अंजुमन में
तो पीरे-मयख़ाना सुनके कहने लगा मुँहफ़ट है ख़्वार होगा।

१. नंगे पाँव २. काँटों का जंगल ३. प्रतीक्षक कान ४. प्रतिज्ञा ५. जंगल वासी अर्थात अरब के लोग ६. हठ ७. फ़रिश्ते

दयारे मग़रिब के रहने वालो ! ख़ुदा की बस्ती दुकाँ नहीं है !
खरा जिसे तुम समझ रहे हो वह अब ज़रे-कम-अयार[१] होगा।
तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजर से आप ही-ख़ुदकुशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक पे आशयाना बनेगा नापायदार होगा।
सफ़ीना-ए-बर्गे-गुल[२] बना लेगा काफ़िला मोरे-नातवाँ[३] का
हज़ार मौजों की हो कशाकश मगर यह दरिया के पार होगा।
चमन में लाला दिखाता फिरता है दाग़ अपना कली-कली को
यह जानता है कि इस दिखावे से दिलजलों में शुमार होगा।
जो एक था ऐ निगाह तूने हजार करके उसे दिखाया
यही अगर कैफ़ियत है तेरी तो फ़िर किसे एतबार होगा ?
कहा जो कुमरी से मैंने इक दिन यहाँ के आज़ाद पाबगिल[४] हैं
तो गुंचे कहने लगे हमारे चमन का यह राज़दार होगा।
ख़ुदा के आशिक़ तो हैं हज़ारों, बनों में फिरते हैं मारे-मारे
मै उसका बंदा बनूँगा जिसको ख़ुदा के बंदों से प्यार होगा।
यह रस्मे-बज़्मे-फ़ना है ऐ दिल ! गुनाह है जुम्बिशे-नज़र भी
रहेगी क्या आबरू हमारी जो तू यहाँ बेक़रार होगा।

१. खोटा सोना २. फूल की पत्ती की नाव ३. कमजोर चेंटी ४. बाँधे हुए।

मैं जुलमते-शब में लेके निकलूँगा अपने दरमाँदा[1] कारवाँ को
शरर-फ़िशाँ होगी आह मेरी नफ़स मिरा शोलाबार होगा।
नहीं है ग़ैर अज़नमूद[2] कुछ भी जो मुद्दआ तेरी ज़िंदगी का
तो इक नफ़स में जहाँ से मिटना तुझे भी मिस्ले-शरार होगा।
न पूछ इकबाल का ठिकाना अभी वही कैफियत है उसकी
कहीं सरे-रहगुज़ार बैठा, सितम-कशे-इन्तज़ार[3] होगा—।

१. थका हुआ २. प्रदर्शन के अतिरिक्त ३. प्रतीक्षा का कष्ट सहन करने वाला।

भाग ३

(१६०८ से............)

बलादे-स्लामियाँ[1]

सरज़मीं दिल्ली की मस्जूदे-दिले-ग़मदीदा है
ज़र्रे-ज़र्रे में लहू अस्लाफ़[3] का ख्वाबीदा है
पाक उस उजड़े गुलिस्ताँ की न हो क्योंकर ज़मी
खानक़ाहे-अज़मते-इस्लाम है यह सरज़मीं
सोते हैं इस ख़ाक में ख़ैरुल-उमम[4] के ताजदार
नज़्मे-आलम का रहा जिनकी हकूमत पर मदार

दिल को तड़पाती है अब तक गर्मी-ए-महफ़िल की याद
जल चुका हासिल मगर महफ़ूज़ है हासिल की याद।

है ज़ियारतगाहे-मुस्लिम जो जहानाबाद भी
इस करामत[5] का मग़र हक़दार है बग़दाद भी
यह चमन वह है कि था जिसके लिये सामाने-नाज़
लाला-ए-सहरा जिसे कहते हैं तहज़ीबे-हिजाज़
ख़ाक इस बस्ती की हो क्योंकर न हमदोशे-इरम[6]
जिसने देखे जानशीनाने-पयम्बर[7] के क़दम

जिसके ग़ुंचे के चमन सामाँ वह गुलशन है यही
काँपता था जिनसे रोमाँ उनका मदफ़न है यही।

---

१. वे नगर जहाँ इस्लाम फला-फूला २. विषाद युक्त हृदय का सिजदा स्थान ३. पूर्वज ४. उम्मत का उद्धार करने वाले ५. महत्ता ६. स्वर्ग ७. हज़रत मुहम्मद के उत्तराधिकारी

है ज़मीने कुरतबा भी दीदा-ए-मुस्लिम का नूर
जुलमते-मगरिब में जो रोशन थी मिस्ले-शमए तूर
बुझ के बज़्मे-मिल्लते-बैज़ा[1] परेशाँ कर गई
और दिया तहज़ीबे-हाज़िर का फ़रोज़ाँ[2] कर गई

क़ब्र इस तहज़ीब की यह सरज़मीने पाक है
जिससे ताके-गुलशने-योरुप[3] की रग नमनाक[4] है।

ख़ित्ता-ए-कुस्तुंतुनिया[5], यानी क़ैसर का दयार
मंहदी-ए-उम्मत की सतवत का निशाने-पायदार
सूरते-ख़ाके-हरम यह सरज़मीं भी पाक है
आस्ताने-मसनद-आरा-ए-शहे-लौलाक[6] है
नगहते-गुल की तरह पाकीज़ा है इसकी हवा
तुर्बते-अय्यूबे-अंसारी से आता है सदा

ऐ मुसलमाँ मिल्लते-इस्लाम का दिल है यह शहर
सैंकड़ों सदियों के कुश्तो-ख़ूँ का हासिल है यह शहर।

वह ज़मीं है तू मगर ऐ ख़्वाबगाहे-मुस्तुफ़ा[7]
दीद है काबे को तेरी हज्जे-अकबर से सिवा
खातिमे-हस्ती[8] में तू ताबाँ है मानंदे-नगीं
अपनी अज़मत की विलादतगाह[9] थी तेरी ज़मीं।

१. इस्लाम की महफिल २. रोशन ३. योरुप के चमन के अंगूर की बेल ४. हरी भरी ५. इस्तम्बोल प्रदेश ६. हजरत मुहम्मद को सजाने वाली ड्योढ़ी ७. हजरत मुहम्मद का मजार ८. जीवन अंगूठी ९. जन्म स्थान।

तुझ में राहत उस शहनशाहे-मुअज़्ज़म[१] को मिली
जिसके दामन में अमाँ[२], अक़वामे-आलम[३] को मिली।

नाम लेवा जिस के शहनशाह आलम के हुए
जानशीं क़ैसर के, वारिस मसनदे-जम[४] के हुए
है अगर कौमियते-इस्लाम पाबंदे-मुकाम
हिन्द ही बुनियाद है इसकी न फारिस है न शाम
आह ! यसरब ! देस है मुस्लिम का तू मावा[५] है तू
नुक़्ता-ए-जाज़िब[६], तअस्सुर[७] की शुआओं[८] का है तू

जब तलक बाकी है तू दुनिया में बाक़ी हम भी हैं
सुबह है, तो इस चमन में गौहरे-शबनम भी हैं।

१. सम्राट २. शरण ३. संसार के राष्ट्र ४. जमशेद का तख्त ५. पनाहगाह, शरण-स्थान ६. आकर्षण-बिंदु ७. असर, प्रभाव ८. किरणों।

सितारा

क़मर का ख़ौफ़, कि है खतरा-ए-सहर तुझको
मआले-हुस्न[१] की क्या मिल गई ख़बर तुझको
मता-ए-नूर[२] के लुट जाने का है डर तुझको
मिसाले माह उड़ाई कबा-ए-जर तुझको

ग़ज़ब है फिर तिरी नन्हीं सी जान डरती हैं
तमाम रात तिरी काँपते गुजरती है।

चमकने वाले मुसाफ़िर अजब यह बस्ती है
जो औज[३] एक का है दूसरे की पस्ती है
अजल है लाखों सितारों की इक विलादते-महर
फ़ना की नींद मये-ज़िंदगी की मस्ती है
विदा-ए-गुंचा[५] में है राज़े-आफ़रीनशे-गुल[६]
अदम[७], अदम है, कि आयना-दारे-हस्ती[८] है

सकूँ महाल है कुदरत के कारखाने में
सबात[९] एक तग़य्युर को है ज़माने में।

१. सौन्दर्य का परिणाम २. प्रकाश की पूंजी ३. बुलन्दी ४. सूर्योदय ५. कली की विदा ६. फूल की उत्पत्ति का रहस्य ७. परलोक ८. जीवन-दर्पण ९. स्थिरता।

दो सितारे

आये जो क़िरऑं[1] में दो सितारे
कहने लगा एक दूसरे से
यह वस्ल मुदाम हो तो क्या खूब
अंजाम-ख़रामे हो तो क्या खूब

थोड़ा सा जो मेहरबाँ फ़लक हो
हम दोनों की एक ही चमक हो।

लेकिन यह विसाल की तमन्ना
पैग़ामे-फ़िराक़ थीं सरापा
गर्दिश तारों का है मुक़द्दर
हर एक की राह है मुक़र्रर

है ख़्वाब सबाते-आशनाई[2]
आईन[3] जहाँ का है जुदाई।

१. गृह, बुर्ज २. स्थिर मित्रता ३. नियम।

गोरिस्ताने-शाही

आस्माँ बादल का पहने ख़र्क़ा-ए-देरीना[1] है
कुछ मुकद्दर[2] सा जबीने-माह का आईना है
चाँदनी फीकी है इस नज़्ज़ारा-ए-ख़ामोश में
सुबहे-सादिक़ सो रही है रात की आग़ोश में
किस क़दर अशजार[3] की हैरत-फ़ज़ा है खामुशी
बरबते-कुदरत की धीमी-सी नवा है ख़ामुशी
बातिने-हर-ज़र्रा-ए-आलम[4] सरापा दर्द है
और ख़मोशी लबे-हस्ती पे आहे-सर्द है।

आह! जोलाँगाहे-आलमगीर[5] यानी वह हिसार
दोश पर अपने उठाए सैकड़ों सदियों का भार
ज़िंदगी से था कभी मामूर अब सुनसान है
यह खमोशी इसके हंगामों का गोरिस्तान है
अपने सुक्काने-कुहन[6] की ख़ाक का दिल दादा है।
कोह के सर पर मिसाले-पास्बाँ इस्तादा[7] है।

अब्र के रोज़न से वह बाला-ए-बामे-आस्माँ[8]
नाज़िरे-आलम[9] है नज्मे-सब्ज-फामे-आस्माँ[10]

१. पुरानी गुदड़ी २ धुँधला ३. शजर का बहुवचन अर्थात वृक्ष ४. संसार के प्रत्येक कण का अभ्यंतर ५. क्रीड़ास्थल ६. पुराने बाशिंदे ७. नियुक्त ८. आकाश की छत के ऊपर ९. दुनिया को देखने वाला १०. आकाश हरे रंग का तारा

खाकबाज़ी वुसअ़ते-दुनिया का है मंज़र इसे
दास्ताँ नाकामी-ए-इंसाँ की है अज़बर इसे
है अज़ल से यह मुसाफ़िर सूए मंज़िल जा रहा
आस्माँ से इंक़लाबों का तमाशा देखता
गो सकूँ मुमकिन नहीं आलम में अख़तर के लिए
फ़ातहा-ख्वानी को यह ठहरा है दम भरके लिए

रंगो-आके-ज़िंदगी[1] ज़िंदगी से गुलबदामन[2] है ज़मीं।
सैकड़ों खूँगश्ता तहज़ीबों का मदफ़न है ज़मीं।

ख्वाबगह शाहों की यह मंज़िले-हसरतफ़ज़ा[3]
दीदा-ए-इबरत ख़िराजे-अश्के-गुलगूँ[5] कर अदा
है तो गोरिस्ताँ, मगर यह ख़ाके-गर्दूं-पाया[6] है
आह! इक बरगश्ता-किस्मत[7] कौम का सरमाय है
मक़बरों की शान, हैरत आफ़रीं है इस क़दर
जुम्बिशे-मिज़गाँ से है चश्मे-तमाशा को हज़र

कैफ़ियत ऐसी है नाकामी की इस तस्वीर में
जो उतर सकती नहीं आईना-ए-तहरीर में

१. जीवन का रंगरूप २. दामन फूलों से भरे ३. खून में मिली हुई, मिटी हुई ४. हसरत देने वाली, दुखदायक ५. खून मिले आँसुओं का कर ६. मिट्टी जिसका पद आकाश के बराबर है ७. फिरी हुई किस्मत

सोते खामोश आबादी के हंगामों से दूर
मुज़्तरिब रखती थी जिनकी आरज़ू-ए-नासबूर
क़ब्र की ज़ुलमत में है उन आफ़ताबों की चमक
जिनके दरवाज़ों में रहता था जबीं-गुस्तर फ़लक
क्या यही है उन शहनशाहों की अज़्मत का मआल
जिनकी तदबीरे-जहाँबानी[२] से डरता था जवाल
रोबे-फ़गफ़ूरी[३] हो दुनिया में कि शाने-क़ैसरी
टल नहीं सकती ग़नीमे-मौत[४] की यूरिश[५] कभी

बादशाहों की भी किश्ते-उम्र का हासिल है गोर
जादा-ए-अज़मत[७] की गोया आखिरी मंजिल है गौर।

शोरिशे-बज़्मे तरब क्या, ऊद की तक़रीर क्या?
दर्दमंदाने-जहाँ का नाला-ए-शबगीर[८] क्या?
अर्सा-ए-पैकार[९] में हंगामा-ए-शमशीर क्या?

अब कोई आवाज़ सोतों को जगा सकती नहीं
सीना-ए-वीराँ में जाने-रफ़्ता[९] आ सकती नहीं।

१. माथा टेकना २. शासन-नीति ३. बादशाही का रोब ४. बादशाह की शान ५. मृत्यु-शत्रु अर्थात यमदूत ६. आक्रमण ७. बड़ाई का मार्ग ८. युद्ध-क्षेत्र ९. गये हुए प्राण

रूह, मुश्ते-खाक में ज़हमत-कशे-बेदार[1] है
गरचे गर्दे-नय[2] हुआ जिस दम नफ़स फरियाद है
जिंदगी इंसा की है मानंदे-मुर्गे-खुशनवा
शाख़ पर बैठा कोई दम चहचहाया उड़ गया
आह ! क्या आय रियाज़े-दहर में हम क्या गय
ज़िंदगी की शाख़ से, फूटे, खिले, मुरझा गय

मौत हर शाहो-गदा के ख्वाब की ताबीर है।
इस सितमगर का सितम इंसाफ की तस्वीर है

सिलसिला हस्ती का है इक, बहरे-ना-पैदा-कनार
और दरियाँ-ए-बेपाया की मौजें है मजार—!
ऐ हवस ! खूँ रो कि है यह ज़िंदगी बे-एतबार
यह शरीर का तबस्सुम, यह ख़से-आतश-सवार[3]
चाँद जो सूरतगरे-हस्ती[4] की इक एजाज़[5] है
पहने-सीमाबी क़बा[6] महवे-ख़रामे-नाज़ है
चर्ख़े-बेअंजुम[7] की दहशतनाक़ वुस्अत में मगर
बेकसी इसकी जरा देखे कोई वक़्ते-सहर—

इक ज़रा सा अब्र का टुकड़ा है जो महताब था
आख़िरी आँसू टपक जाने में हो जिसको फ़ना।

१. जुल्म सहने वाली २. बाँसरी की गर्द ३. जलता हुआ फूस ४. भगवान ५. चमत्कार ६. चाँदी का लिबास ७. बिना तारों का आकाश

ज़िंदगी अक़वाम की भी यों ही बे-एतबार
रंगहाए-रफ्ता[1] की तस्वीर है उनकी बहार
इस ज़ियाँखाने[2] में कोई मिल्लते-गर्दूं-वक़ार[3]
रह नहीं सकती अबद तक बारे-दोशे-रोज़गार[4]
इस क़दर क़ौमों की बरबादी से है खूगर[5] जहाँ
देखता बेएतनाई[6] से है यह मंज़र जहाँ
एक सूरत पर नहीं रहता किसी शय को करार
ज़ौक़े-जिद्दत[7] से है तरकीबे-मिज़ाजे-रोज़गार[8]

है नगीने-दहर की ज़ीनत हमेशा नामे-नौ
मादरे-गेती[9] रही, आबसतने-अक़वामे-नौ[10]

है हज़ारों क़ाफिलौ से आशना यह रहगुज़र
चश्मे-कोहे-नूर[11] ने देखे हैं कितने ताजवर
मिस्रो-बाबुल मिट गय बाक़ी निशाँ तक भी नहीं
दफ्तरे-हस्ती में उनकी दास्ताँ तक भी नहीं

१. बीते जमाने का रंग २. क्षति गृह, संसार ३. आस्मान जैसी बुलन्दी वाला राष्ट्र ४. जमाने के कंधे का बोझ ५. अभ्यस्त ६ उदासीनता ७. नवीनता का उत्साह ८. संसार के स्वभाव-तत्व ९. धरती माता १०. नए-नए राष्ट्रों का जन्मदाता ११. कोहेनूर हीरे की आँख।

आ दबाया महरे-ईराँ को अजल की शाम ने
अजमते-यूनानो-रोमा लूट ली अय्याम ने
आह मुस्लिम भी ज़माने से यों ही रुखसत हुआ
आस्माँ से अब्रे-आज़ादी उठा, बरसा, गया।

है रगे-गुल सुबह के अश्कों से मोती की लड़ी
कोई सूरज की किरन शबनम में है उलझी हुई
सीना-ए-दरिया शुआओं के लिये गहवारा है
किस कदर प्यारा लबेजू मेहर का नज़्ज़ारा है
महवे-ज़ीनत है सनाबर जूएबार[२] आईना है
ग़ुंच-ए-गुल के लिए बादे-बहार आईना है
नाराज़न रहती है कोयल बाग़ के काशाने में
चश्मे-इंसाँ से निहाँ, पत्तों के उज़लत-ख़ाने[३] में
और बुलबुल, मुतिरबे-रंगी-नवा-ए-गुलिस्ता
जिसके दम से ज़िंदा है गोया हवा-ए-गुलसिता
इश्क़ के हंगामों की उड़ती हुई तस्वीर है
ख़ामा-ए-कुदरत[४] की कैसी शोख़ यह तहरीर है
बाग़ में ख़ामोश जलसे गुलिस्ताँ-जादों के हैं
वादी-ए-कोहसार में नारे शबाँज़ादों[५] के हैं
ज़िंदगी से यह पुराना ख़ाकदाँ मामूर है
मौत में भी ज़िंदगानी की तड़प मस्तूर है
पत्तियाँ फ़ूलों की गिरती हैं ख़जाँ में इस तरह
दस्ते-तिफ़ले-खुफ्ता से रंगीं खिलौने जिस तरह

१. नदी २. एकान्त गृह ३. बाग की मधुर स्वरी बुलबुल ४. प्रकृति की लेखनी ५. ग्वाले ६. सोये हुए बच्चे का हाथ।

इस नशात-आबाद[1] में जो ऐश बअंदाज़ा है
एक ग़म यानी ग़मे-मिल्लत हमेशा ताज़ा है।

दिल हमारे यादे-अहदे-रफ्ता से ख़ाली नहीं
अपने शाहों को यह उम्मत भूलने वाली नहीं
अश्कबारी के बहाने हैं यह उजड़े बामो-दर
गिरया-ए-पैहम से बीना है हमारी चश्मे-तर
दहर को देते हैं मोती दीदा-ए-गिरयाँ के हम
आख़िरी बादल हैं इक गुज़रे हुए तूफ़ाँ के हम
हैं अभी सदहा[2] गुहर इस अब्र की आगोश में
बर्क़ अभी बाक़ी है इसके सीना-ए-ख़ामोश में
वादी-ए-गुल ख़ाके-सहरा को बना सकता है यह
ख़्वाब से उम्मीदे-दहक़ाँ को जगा सकता है यह

हो चुका गो क़ौम की शाने-जलाली का ज़हूर।
है मगर बाक़ी अभी शाने-जमाली का ज़हूर।

१. उल्लास-गृह, दुनिया २. सैड़कों।

नमूदे-सुबह

हो रही है ज़ेरे-दामाने-उफ़क़[2] से आशकार
सुबह, यानी दुख़्तरे-दोशीज़ा-ए-लैलो-नहार[3] ।
पा चुका फ़ुर्सत वरूदे-फ़स्ले-अंजुम[4] से सपहर[5]
किश्ते-ख़ावर[6] में हुआ है आफ़ताब आईना-कार[7] ।
आस्माँ ने आमदे ख़ुर्शीद की पाकर ख़बर
महमिले-परवाज़े-शब[8] बाँधा सरे-दोशे-ग़ुबार[9] ।
शोला-ए-खुर्शीद गोया हासिल इस खेती का है
बोये थे दहक़ाने-गर्दूं[10] ने जो तारों के शरार ।
है रवाँ नज्मे-सहर[11] जैसे इबादतख़ाने से
सबसे पीछे जाये कोई आबिदे-शब ज़िंदादार[13] ।

---

१. सवेरा होना अर्थात् सूर्योदय २. क्षितिज के दामन तले से ३. रात-दिन की दुल्हन की बेटी ४. सितारों की खेती का उगना ५. आकाश ६. पूर्व की खेती ७. आईना दिखाने वाला ८. रात की उड़ान का महमिल (कुजावा) ९. गुबार के कन्धे पर १०. आकाश का किसान ११. सुबह का सितार १३. रात भर जागने वाला पुजारी

क्या समाँ है जिस तरह आहिस्ता-आहिस्ता कोई
खींचता हो म्यान की ज़ुलमत से तेग़े-आबदार ।
मतला-ए-खुर्शीद में मुज़मर है यों मज़मूने-सुबह
जैसे ख़लवतगाहे-मीना[1] में शराबे-खुशगवा ।
है तहे-दामाने-बादे-इख़्तलात अंगेजे-सुबह[2]
शोरिशे-नाक़ूस[3] आवाज़े-अज़ाँ से हम किनार ।
जागे कोयल की अज़ाँ से तायराने-नग़मा संज ।
हैं तरन्नुमरेज़ क़ानूने-सहर[4] का तार-तार

१. शराब की बोतल का एकान्त-गृह २. खुश करने वाली सुबह की हवा के दामन तले ३. शंख-नाद ४. सुबह का बाजा (सितार)

तज़मीन[1] बर शेर

हमेशा सूरते-बादे-सहर[2] आवारा रहता हूँ
मुहब्बत में है मंज़िल से भी खुशतर जादा पैमाई[3] ।
दिले-बेताब जा पहुँचा दयारे-पीरे-संजर में
मयस्सर है जहाँ दर्माने-दर्दे-नाशकेबाई[5]—।
अभी नाआशना-ए-लब[6] था हर्फ़े-आर्ज़ू मेरा
जबाँ होने को थी मन्नत पज़ीरे-तावे गोयाई[7]
यह मर्क़द[8] से सदा आई हरम के रहने वालों को
शिकायत तुझ से है ऐ-तारिके-आईने-आबाई[9] ।
तिरा ऐ क़ैस क्यों कर हो गया सोज़े[10] दरूं ठंडा?
कि लैला में तो है अब तक वही अंदाज़ लैलाई ।

१. किसी के शेर को आधार बनाकर कविता लिखना २. सुबह की हवा के सदृश ३. सफर करता ४. संजर पीर के देश में ५. असन्तोष की पीड़ा का इलाज ६. होंठ से अपरिचित ७. बोलने की कृतज्ञ ८. कब्र ९. पूर्वजों के सिद्धान्त को त्यागने वाला १०. भीतरी जलन

न "तुख़्मे लाइलाह"[१] तेरी ज़मीने-शोर से फूटा
ज़माने भर में रुसवा है तिरी फ़ितरत की नादानी।
मुझे मालूम है गाफ़िल कि तेरी ज़िंदगी क्या है
कनिश्ती साज़,[३] मामूरे-नवाहाये-कलीसाई[४]।
हुई है तरबियत[५] आग़ोशे बैतुल्लाह[६] में तेरी
दिले-शोरीदा[७] है लेकिन सनम ख़ाने का सौदाई

वफ़ा आमोख़ती अज़ मा बकारे-दीगराँ कर दी
रबूदी गौहरे अज़ मा निसारे दीगराँ कर दी[८]।

१. कलमा, जिसका अर्थ है नहीं है कोई पूजने योग्य सिवाय अल्लाह के २. बंजर धरती ३. कनिश्त (देवालय) बनाने वाले ४. कलीसा की आवाजों से भरा हुआ ५. प्रशिक्षण ६. काबे की गोद में ७. पागल मन ८. वफ़ात हम से सीखता है और करता दूसरों से है। मोती चुनता हमारे पास से है और दूसरों पर न्योछावर कर देता है।

फलसफा-ए-गम

गो सरापा कैफे-इशरत[1] है शराबे ज़िंदगी
अश्क भी रखता है दामन में सहाबे-ज़िंदगी
मौजे-गम पर रक़्स करता है हबाबे-ज़िंदगी
है "अलम"[3] का सूरा भी जुज़्वे-किताबे-ज़िंदगी
एक भी पत्ती अगर कम हो तो वह गुल ही नहीं
जो ख़ज़ाँ नादीदा हो बुलबुल, वह बुलबुल ही नहीं।
आरज़ू के खून से रंगी है दिल की दास्ताँ
नगमा-ए-इसानियत कामिल नहीं ग़ैर अज़ फुग़ाँ
दीदा-ए-बीना में दाग़े-ग़म चिराग़े-सीना है
रूह को सामाने-ज़ीनत आह का आईना है
हादसाते-ग़म से है इंसाँ की फ़ितरत को कमाल
ग़ाज़ा है आईना-ए-दिल के लिये गर्दे-मलाल
ग़म जवानी को जगा देता है लुत्फ़े-ख्वाब से
साज़ यह बेदार होता है इसी मिज़राब से।

१. उल्लास का नशा २. जिंदगी का बादल ३. अलम कुरान, का एक सिपारा (अध्याय) वैसे इस शब्द का अर्थ है विषाद

तायरे-दिल के लिये ग़म शहपरे-परवाज़[1] है
राज़ है इंसाँ का दिल, ग़म इंकशाफे-राज़ है
ग़म नहीं ग़म ! रूह का इक नगमा-ए-खामोश है
जो सरोदे-बरबते-हस्ती से हमआग़ोश है ।
शाम जिसकी आशना-ए-बाल-ए-यारब नहीं
जलवा पैरा जिसकी शब में अश्क के कौकब[3] नहीं
जिसका जामे-दिल शिकस्ते ग़म से है ना-आशना
जो सदा मस्ते-शराबे-ऐशो-इशरत ही रहा
हाथ जिस गुलचीं का है महफ़ूज़ नोके-खार से
इश्क जिसका बेख़बर है हिज्र के आज़ार से
कुलफ़ते-गम गरचे इसके रोज़ो-शब से दूर है
ज़िंदगी का राज़ उसकी आँख से मस्तूर है
ऐ कि बज़्मे-देहर[4] का इदराक[5] है हासिल तुझे
क्यों न आसाँ हो ज़मीं-अन्दोह की मंजिल तुझे ।

१. उड़ाने वाला पंख २. जिंदगी के बाजे का गाना ३. तारे ६. सृष्टि व्यवस्था ७. समझ

है अबद के नुस्खा-ए--दैरीना की तम्हीद इश्क़
अक़्ले-इंसानी है फ़ानी, ज़िंदा-ए-जावीद इश्क़
इश्क़ के खुर्शीद से शामे-अजल शर्मिंदा है
इश्क सोज़-ज़िंदगी है ता अबद पायंदा है
रुखसते मेहबूब का मक़सद फ़ना होता अगर
जोशे उलफ़त भी दिले-आशिक़ से कर जाता सफ़र
इश्क़ कुछ महबूब के मरने से मर जाता नहीं
रूह में ग़म बन के रहता है मगर जाता नहीं
है बक़ा-ए-इश्क़ से पैदा बक़ा मेहबूब की
ज़िंदगानी है अदम-ना-आशना[3] मेहबूब की।

आती है नद्दी जबीने-कोह से गाती हुई
आस्माँ के तायरों को नग़मा सिखलाती हुई
आयना रोशन है उसका सूरते-रुख़सारे हूर[२]
गिरके वादी की चटानों पर यह हो जाता है चूर
नहर जो थी, उसके गोहर प्यारे-प्यारे बन गय
यानी इस उफ़नाद से पानी के तारे बन गये।

---

१. स्थिर २. न मरने वाली ३. हूर के कपोल के सदृश ।

जू-ए-सीमाबे-रवाँ[१] फट कर परेशाँ हो गई
मुज्तरिब बूँदों की इक दुनिया नुमायाँ हो गई
हिज्र इन क़तरों को लेकिन वस्ल की तालीम है
दो क़दम पर फ़िर वही जू[२] मिस्ले-तारे-सीम[३] है
एक, अस्लीयत में है नेहरे-रवाने-ज़िंदगी
गिर के रिफ़अत से हजूमे-नौए-इंसाँ बन गई

पस्ती-ए-आलम में मिलने को जुदा होते हैं हम
आर्ज़ी फ़ुर्क़त को दामन जान कर रोते हैं हम।

मरने वाले मरते हैं, लेकिन फ़ना होते नहीं
यह हक़ीकत में कभी हम से जुदा होते नहीं
अक़्ल जिस दम दहर की आफ़ात[४] में महसूर हो
या जवानी की अंधेरी रात में मस्तूर हो
दामने दिल बन गया हो रज़्म-गाहे-ख़ैरो-शर[५]
राह की जुलमत से मुश्किल सूए-मंज़िल सफ़र
ख़िज्रे-हिम्मत हो गया हो आरज़ू से गोशागीर
फ़िक्र जब आजिज़ हो और खामोश आवाज़े-ज़मीर

१. पारे की बहती नदी अर्थात निर्मल जल की नदी २. नदी ३. चाँदी के तार की भाँति ४. मुसीबतें, आफत का बहुवचन ५. नेकी बदी का युद्ध क्षेत्र

वादी-ए-हस्ती में कोई हम सफ़र तक भी न हो
ज़ादा[1] दिखलाने को जुगनू का शरर तक भी न हो

मरने वालों की जबीं रोशन है इस जुलमात में
जिस तरह तारे चमकते हैं अंधेरी रात में।

१. मार्ग

फूल का तोफ़ा अता होने पर

वह मस्ते-नाज़ जो गुलशन में जा निकलती है
कली-कली की ज़ुबाँ से दुआ निकलती है।
इलाही ! फ़ूलों में वह इंतख़ाब मुझ को करे
कली-से रश्के-गुले-आफ़ताब[1] मुझ को करे" ।
तुझे वह शाख़ से तोड़ें, ज़हे नसीब तिरे
तड़पते रह गये गुलजार में रक़ीब[2] तिरे ।
उठा के सदमा-ए-फ़ुर्क़त विसाल तक पहुँचा
तिरी हयात का जौहर कमाल तक पहुँचा।
मिरा कमल कि तसद्दुक़[3] हैं जिसपे अहले-नज़र
मिरे शबाब के गुलशन को नाज़ है जिस पर।
कभी यह फ़ूल हम-आग़ोशे-मुद्दआ[4] न हुआ
किसी के दामने-रंगीं से आशना न हुआ।

शगुफ़्ता[5] कर न सकेगी कभी बहार उसे
फ़सुर्दा[6] रखता है गुलचीं का इंतजार उसे।

✧ ✧

१. सुरजमुखी को शर्माने वाला २. प्रतिद्वन्द्वी ३. कुर्बान। ४. सफल
५. विकसित ६. उदास

तराना-ए-मिल्ली

चीनो-अरब हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहां हमारा।
तोहीद की अमानत सीनों में है हमारे
आसां नहीं मिटाना नामो-निशाँ हमारा।
दुनिया के बुतकदों में पहला वह घर खुदा का
हम उसके पास्बां हैं वह पास्बां हमारा।
तेग़ों के साये में हम पल कर जवाँ हुए हैं
ख़ंजर हिलाल का है क़ौमी निशाँ हमारा।
मग़रिब की वादियों में गूँजी अज़ाँ हमारी
थमता न था किसी से सैले-रवाँ[1] हमारा।
बातिल[2] से दबने वाले ऐ आस्माँ नहीं हम
सौ बार कर चुका है तू इम्तहाँ हमारा।
ऐ गुलिस्ताने-उंदलिस! वह दिन है याद तुझ को
था तेरी डालियों में जब आशियाँ हमारा।
ऐ मौजे-दजला! तू भी पहचानती है हम को
अब तक है तेरा दरिया अफ्साना-ख़्वाँ हमारा।
ऐ अर्ज़-पाक तेरी हुरमत[3] पे कट मरे हम
है ख़ूँ तिरी रगों में अब तक रवां हमारा।
सालारे कारवाँ है मीरे हिजाज़ अपना
इस नाम से है बाक़ी आरामे-जाँ हमारा।
इक़बाल का तराना बागे-दरा है गोया
होता है जादा-पैमा[4] फ़िर कारवाँ हमारा।

१. बहता घास २. झूठ ३. सतीत्व ४. हजरत मुहम्मद ५. रवाँ

वतनियत[1]

(देश एक राजनैतिक मान्यता की दृष्टि से)

इस दौर में मय और है जाम और है जम और
साकी ने बनाई रविशे-लुत्फ़ो-करम और
मुस्लिम ने भी तामीर किया अपना हरम और
तहज़ीब के आज़र ने तरशवाये सनम और
इन ताज़ा ख़ुदाओं में बड़ा सबसे वतन है
जो पैरहन इसका है वह मज़हब का कफ़न है।
यह बुत कि तराशीदा-ए-तेहज़ीबे-नवी[2] है
ग़ारतगरे-काशान-ए-दीने-नबवी[3] है
बाज़ू तिरा तौहीद की ताक़त से क़वी है
इसलाम तिरा देस है तू मुस्तफ़वी[4] है
नज्ज़ारा-ए-देरीना ज़माने को दिखा दे
ऐ मुस्तफ़वी ख़ाक में इस बुत को मिला दे।
हो क़ैदे-मुक़ामी[5] तो नतीजा है तबाही
रह बहर में आज़ादे-वतन सूरते-माही

१. देश-भक्ति २. नई सभ्यता के तराशे हुए ३. नबी के धर्म को मिटाने वाले ४. हजरत मुहम्मद के अनुयायी ५. भौगोलिक बंधन ६. मछली की भाँति

है तर्के वतन[१] सुन्नते-महबूबे-इलाही[२]
दे तू भी नबव्वत का सदाक़त पे गवाही
गुफ़तारे-सियासत में वतन और ही कुछ है
इरशादे-नबव्वत[३] में वतन और ही कुछ है।

अक़वामे-जहाँ में है रकाबत तो इसी से
तस्ख़ीर[४] है मक़सूदे-तिजारत[५] तो इस
ख़ाली है सदाक़त से सियासत तो इसी से
कमज़ोर का घर होता है ग़ारत तो इसी से
अक़वाम[६] में मख़लूक़े-ख़ुदा बटती है इससे
क़ौमीयते-इस्लाम की जड़ कटती है इस से।

१. खुदा के प्यारे (मुहम्मद) का चलन २. नबी का फरमाया हुआ
३. विजय ४. व्यापार का उद्देश्य ५. कौम का बहुवचन

एक हाजी मदीने के रास्ते में

काफ़िला लूटा गया सहरा में और मंज़िल है दूर
इस ब्याबाँ यानी बहरे-खुश्क का साहिल है दूर।
हमसफ़र मेरे शिकारे-दशना-ए-रहज़न[1] हुए
बच गये जो, होके बेदिल सूए-बैतुल्लाह[2] फ़िरे।
उस बुख़ारी नौजवाँ ने किस ख़ुशी से जान दी
मौत के जहराब में पाई है उसने जिंदगी।
ख़ंजरे-रहज़न उसे गोया हिलाले-ईद था
"हाय यसरब" दिल में, लब पर "नारा-ए-तौहीद" था।
ख़ौफ़ कहता था कि यसरब की तरफ़ तनहा न चल
शौक़ कहता था कि तू मुस्लिम है बेबाकाना[3] चल।
बे ज़्यारत सूए-बैतुल्लाह फ़िर जाऊँगा क्या?
आशिक़ों को रोज़े-महशर मुँह न दिखलाऊँगा क्या?
ख़ौफ़े-जाँ रखता नहीं कुछ दश्त-पैमा-ए-हिज़ाज[4]।
हिजरते-मदफ़ून-यसरब में यही मख्फ़ी[5] है राज़।
गो सलामत महमिले-शाही की हमराही में हैं
इश्क़ की लज़्ज़त मगर खतरों की जाँ-काही में है।
आह! यह अक़्ले-जयाँ-अंदेश क्या चालाक है
और तास्सुर आदमी का किस कदर बेबाक है।

१. लुटेरे के खंज़र का शिकार २. काबे की ओर ३. निर्भीक ४. हिजाज़ का यात्री ५. निहित ६. ग़लत सोचने वाली बुद्धि

क़तआ

कल एक शोरीदा[1] ख्वाबगाहे-नबो[2] पे रो-रो के कह रहा था
कि मिस्रो-हिन्दोस्ताँ के मुस्लिम बिना-ए-मिल्लत मिटा रहे हैं।
यह ज़ायराने-ह्रीमे-मग़रिब[4], हज़ार रहबर बनें हमारे
हमें भला उनसे वास्ता क्या जो तुझ से नाआशना रहे हैं।
ग़ज़ब है यह मुर्शिदाने-खुदबीं[5] ख़ुदा तिरी क़ौम को बचाये
बिगाड़ कर तेरे मुस्लिमों को यह अपनी इज़्ज़त बना रहे हैं।
सुनेगा इक़बाल कौन इनको वह अंजुमन ही बदल गई है
नए जमाने में आप हम को पुरानी बातें सुना रहे हैं।

१. पागल २. मज़ार ३. मिल्लत का आधार ४. योरुप के मुसाफिर
५. अभिमानी उपदेशक

शिकवा

क्यों ज़्याँकार बनूँ[1], सूद-फ़रामोश[2] रहूँ
फ़िक्रे-फ़र्दा[3] न करूँ महवे-ग़मे-दोश[4] रहूँ
नाले बुलबुल के सुनूँ और हमातनगोश रहूँ
हमनवा मैं भी कोई गुल हूँ, कि ख़ामोश रहूँ

जुरअत-आमोज़[5] मिरी ताबे-सुख़न है मुझको
शिकवा अल्लाह से ख़ाकम-बदहन[6] है मुझको।

है बजा-शेवा-ए-तस्लीम[7] में मशहूर हैं हम
क़िस्सा-ए-दर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम
साजे-खामोश हैं फरियाद से मामूर हैं हम
नाला आता है अगर लब पे तो माजूर हैं हम

ऐ खुदा शिकवा-ए-अरबाबे-वफ़ा भी सुन ले
खूगरे-हम्द[8] से थोड़ा सा गिला भी सुन ले।

थी तो मौजूद अज़ल से ही तिरी ज़ाते-क़दीम
फूल था ज़ेबे-चमन पर न परेशाँ थी शमीम[9]
शर्त इंसाफ़ है! ऐ साहबे-अलताफ़े-अमीम
बूए-गुल फैलती किस तरह जो होती न नसीम

१. हानिकर २. लाभ भुलाने बाला ३. आने वाले कल की चिंता ४. बीते कल के विषाद में लीन ५. उत्साहजनक ६. मेरे मुँह में खाक ७. विनम्रता का चलन ८. प्रशंसा का आदी ९. सुगन्ध १० सामान्य रूप से मेहरवान।

हम को जमीयते-खातिर[१] यह परेशानी थी
वर्ना उम्मत तिरे महबूब की दीवानी थी ?

हम से पहले था अजब तेरे जहाँ का मंज़र
कहीं मस्जूद[२] थे पत्थर, कहीं माबूद[३] शजर
खूगरे-पैकरे-महसूस[४] थी इंसाँ की नज़र
मानता फ़िर कोई अनदेखे खुदा को क्योंकर

तुझ को मालूम है लेता था कोई नाम तिरा
कुव्वते-बाज़ू-ए-मुस्लिम ने किया काम तिरा।

बस रहे थे यहीं सलजूक़ भी तूरानी भी
अहले-चीं, चीन में ईरान में सासानी भी
इसी मामूरे में आबाद थे यूनानी भी
इसी दुनिया में यहूदी भी थे नसरानी भी

पर तिरे नाम पे तलवार उठाई किसने ?
बात जो बिगड़ी हुई थी, वह बनाई किसने ?

थे हमीं इक तिरे मारका-आराओं[५] में
खुश्कियों में कभी लड़ते, कभी दरियाओं में
दीं अज़ानें कभी योरुप के कलीसाओं में
कभी अफ्रीका के तपते हुए सहराओं में

१. राष्ट्रीय संगठन के कारण २. जिन्हें सजदा किया जाय ३. जिसकी इबादत (पूजा) की जाय ४. साकार का पुजारी ५. मुहिमबाज ।

शान आँखों में न जचती थी जहाँदारो[1] की
कलमा पढ़ते थे हम छाँव में तलवारों की।

हम जो जीते थे तो जंगों की मुसीबत के लिए
और मरते थे तिरे नाम की अज़मत के लिए
थी न कुछ तेग़ज़नी अपनी हकूमत के लिए
सरबकफ़[2] फ़िरते थे क्या दहर में दौलत के लिए

क़ौम अपनी जो ज़रो-माले-जहाँ पर मरती
बुतफ़रोशी के एवज़ बुतशिकनी क्यों करती ?

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
पाँव शेरों के भी मैदाँ से उखड़ जाते थे
तुझ से सरकश हुआ कोई तो बिगड़ जाते थे
तेग़ क्या चीज़ है हम तोप से लड़ जाते थे

नक़्श तोहीद का हर दिल पे बिठाया हमने
जेरे-ख़ंजर भी यह पैग़ाम सुनाया हम ने।

तू ही कह दे कि उखाड़ा दरे-ख़ैबर किसने ?
शहर क़ैसर का जो था उसको किया सर किसने ?
तो़ मख़लूक़ खुदावदों[3] के पैकर[4] किसने ?
काट कर रख दिये कुफ्फार के लश्कर किसने ?

१. बादशाह २. हथेली पर सिर रखे ३. बनाये हुए खुदा (मूर्तियाँ) ४. शरीर।

किस ने ठंडा किया आतशकदा-ए-ईराँ को !
किसने फिर ज़िंदा किया तजक़रा-ए-यज़दाँ[१] को ?

कौन सी कौम फ़क़त तेरी तलबगार हुई ?
और तेरे लिए ज़हमत-कशे-पैकार[२] हुई ?
किसकी शमशीरे-जहाँगीर[३], जहाँदार[४] हुई ?
किसकी तकबीर से दुनिया तिरी वेदार हुई ?

किसकी हैबत से सनम-सहमे हुए रहते थे ?
मूँह के बल गिरके 'हुवल्लाहग्रहद'[५] कहते थे ?

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते-नमाज़
क़िब्लारू[६] होके ज़मीं-बोस[७] हुई क़ौमे-हिजाज़
एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो-अयाज़
कोई बंदा रहा और न कोई बदानवाज़

बंदा-व-साहबो-मोहताजो-ग़नी एक हुए
तेरी सरकार में पौहँचे तो सभी एक हुए।

महफ़िले-कौनो-मकाँ[८] में सहरो-शाम फ़िरे
मय-ए-तौहीद को लेकर सिफ़ते-जाम फ़िरे
कोह में, दश्त में, लेकर तिरा पैग़ाम फ़िरे
और मालूम है तुझ को कभी नाकाम फ़िरे ?

१. खुदा का जिक्र २. युद्ध का कष्ट झेलने वाली ३. दुनिया जीतने वाली तलवार ४. शासक ५. कुरान की एक आयत अर्थात् बेशक खुदा एक है ६. काबे की ओर मुख करके ७. जमीन पर झुकना अर्थात नमाज पढ़ना ८. संसार

दश्त तो दश्त है दरिया भी न छोड़े हमने ?
बहरे-ज़ुलमात[1] में दौड़ा दिये घोड़े हमने।
सफ़ह-ए-दहर[2] से बातिल को मिटाया हमने
नौए-इंसाँ को ग़ुलामी से छुड़ाया हमने
तेरे काबे को जबीनों से बसाया हमने
तेरे क़ुरआन को सीनों से लगाया हमने
फ़िर भी हमसे यह गिला है कि वफ़ादार नहीं
हम वफ़ादार नहीं तू भी तो दिलदार नहीं।
उम्मतें और भी हैं उनमें गुनहगार भी हैं
इज्ज़[3] वाले भी हैं मस्ते-मये-पिंदार[4] भी हैं
उनमें काहिल भी है गाफ़िल भी है हुशियार भी है
सैकड़ों हैं कि तिरे नाम से बेज़ार भी हैं
रहमतें हैं तिरी अग़यार के काशानों पर।
बर्क़ गिरती है तो बेचारे मुसलमानों पर।
बुत सनमखानों में कहते हैं मुसलमान गये
है खुशी उनको कि काबे के निगहबान गये
मंज़िले-दहर से ऊँटों के हुदी-ख्वान गये
अपनी बग़लों में दबाये हुए क़ुरआन गये

---

१. अंधकार का सागर २. दुनिया से ३. विनम्रता ४. दम्भी

खंदाजन कुफ़ है एहसास तुझे है कि नहीं ?
अपनी तौहीद का कुछ पास तुझे है कि नहीं ?

यह शिकायत नहीं, हैं उनके खज़ाने मामूर
नहीं महफिल में जिन्हें बात भी करने का शऊर
क़हर तो यह कि काफ़िर को मिलें हूरो-क़सूर[1]
और बेचारे मुसलमाँ को फक़त वादा-ए-हूर

अब वह अलताफ़ नहीं हम पे इनायात नहीं।
बात यह क्या है कि पहली सी मदारात नहीं ?

क्यों मुसलमानों में है दौलते-दुनिया नायाब ?
तेरी क़ुदरत तो है वह जिसकी हद है न हिसाब
तो जो चाहे तो उठे सीना-ए-सहरा से हबाब
रहरवे-दश्त[2] हो सैली-ज़दा-ए-मौजे-सराब[3]

ताने-अग़यार है, रुसवाई है, नादारी है
क्या तिरे नाम पे मरने का एवज ख्वारी है ?

बनी अग़यार की अब चाहने वाली दुनिया
रह गई अपने लिए एक खयाली दुनिया
हम तो रुखसत हुए औरों ने संभाली दुनिया
फिर न कहना हुई तौहीद से खाली दुनिया

१. हूरें और महल २. जंगल का यात्री ३. मृग-तृष्णा की थपेड़ खाया हुआ। ४. शत्रुओं का व्यंग।

हम तो जीते हैं कि दुनिया में तिरा नाम रहे
कहीं मुमकिन है कि साक़ी न रहे जाम रहे ?

तेरी महफ़िल भी गई, चाहने वाले भी गये
शब की आहें भी गईं सुबह के नाले भी गये
दिल तुझे दे भी गये अपना सिला ले भी गये
आके बैठे भी न थे और निकाले भी गये

आये उश्शाक़[१], गये वादा-ए-फ़र्दा[२] लेकर
अब उन्हें ढूँढ़ चिराग़े-रुख़े-ज़ेबा लेकर ?

दर्द लैला भी वही, क़ैस का पहलू भी वही
नज्द[३] के दश्तो-जबल[४] में रमे-आहू[५] भी वही
इश्क़ का दिल भी वही, हुस्न का जादू भी वही
उम्मते-अहमदे-मुर्सिल[६] भी वही, तू भी वही

फ़िर यह आज़ुर्दगी-ए-ग़ैर सबब[७] क्या मानी ?
अपने शैदाओं पे यह चश्मे-ग़ज़ब क्या मानी ?

तुझ को छोड़ा कि रसूले-अरबी को छोड़ा ?
बुत-गरी पैशा किया ? बुत-शिकनी को छोड़ा ?
इश्क़ को, इश्क़ की आशुफ्तासरी को छोड़ा ?
रस्मे-सलमानो-अवैसे-क़रनी[८] को छोड़ा ?

---

१. आशिक का बहुवचन २. कल का वादा ३. जंगल जिसमें मजनूँ पैदा हुआ ४. जंगल, पहाड़ ५. हिरन की चौकड़ियाँ ६. हजरत मुहम्मद की उम्मत ७. अकारण रोष ८. अवेस और सलमान मुसलमानों के दो महा पुरुष।

आग तकबीर की सीनों में दबी रखते हैं
ज़िंदगी मिस्ले-बिलाले-हबशी रखते हैं।

इश्क़ की ख़ैर वह पहली सी अदा भी न सही
जादा-पैमाई-ए-तस्लीमो-रज़ा[१] भी न सही
मुज़्तरिब दिल सिफ़ते-किबला-नुमा[२] भी न सही
और पाबंदी-ए-आईने-वफ़ा भी न सही

कभी हम से कभी ग़ैरों से शनासाई है
बात कहने की नहीं तू भी तो हरजाई है।

सरे-फ़ाराँ[३] पे किया दीन को कामिल तूने
इक इशारे में हजारों के लिये दिल तूने
आतश-अंदोज़ किया इश्क़ का हासिल तूने
फूँक दी गर्मी-ए-रुख़सार से महफिल तूने

आज क्यों सीने हमारे शरर आबाद नहीं?
हम वही सोख़ता-सामाँ[४] हैं तुझे याद नहीं?

वादी-ए-नज्द में वह शोरे-सलासिल न रहा
क़ैस दीवाना-ए-नज़्ज़ारा-ए-महफिल न रहा
हौसले वह न रहे हम न रहे दिल न रहा
घर यह उजड़ा है कि तू रौनक़े महफिल न रहा

१. स्वीकृति और विनम्रता के मार्ग पर चलना २. वायु-मुर्ग की भाँति
३. फाराँ पहाड़ पर ४. जिसका सब कुछ जल चुका।

ऐ ख़ुशआँ रोज़ कि आई व बसद नाज़ आई।
बेहिजाबाना सूए-महफ़िले-माँ बाज़ आई[1]।

बादाकश ग़ैर हैं गुलशन में लबे-जू बैठे
सुनते हैं जाम बकफ़[2] नग़मा-ए-कू कू बैठे
दूर हंगामा-ए-गुलज़ार से यकसू बैठे
तेरे दीवाने भी हैं मुंतज़रे-"हू"[3] बैठे

अपने परवानों को फिर ज़ौक़े-खुद अफ़रोज़ी दे
बर्क़े-देरीना का फरमाने-जिगर सोज़ी दे।

क़ौमे-आवारा इनाँताब है फ़िर सूए-हिजाज़
ले उड़ा बुलबुले-बेपर को मज़ाक़े-परवाज़
मुज्तरिब बाग़ के हर गुंचे में है बूए-नयाज़
तू ज़रा छेड़ तो दे तश्ना-ए-मिज़राब है साज़

नग़मे बेताब हैं तारों से निकलने के लिए
तूर मुज़तर है इसी आग में जलने के लिए।

मुश्किलें उम्मते-मरहूम की आसाँ करदे
मोरे-बेमायाँ[5] को हमदोशे-सुलेमाँ[6] करदे
जिसे-नायाबे-मुहब्बत को फ़िर अर्जां कर दे
हिन्द के दैर नशीनों को मुसलमाँ करदे

---

१. क्या शुभ दिन होगा वह, जब तू आये और अदा के साथ आये, बेपर्दा होकर हमारी महफिल की ओर दोबारा आये। २. हाथ में जाम लिए ३. कोई न हो तेरे सिवा ४. लगाम खींचे हुए ५. तुच्छ चींटी ६. सुलेमान बादशाह के बराबर।

जूए-खूँ मी चकद अज़ हसरते-देरीना-ए-मा
मी तपद नाला ब निशतर-कदा-ए-सीना-ए-मा[१]।

बूए-गुल ले गई बेरूने-चमन, राज़े चमन
क्या क़यामत है कि ख़ुद फूल है ग़म्माजे-चमन[२]
अहदे-गुल ख़त्म हुआ, टूट गया साज़े चमन।
उड़ गये डालियों से ज़मज़मा-परदाज़े-चमन[३]

एक बुलबुल है कि है महवे-तरन्नुम अब तक
इसके सीने में है नग़मों का तलातुम अब तक।

कुमरियाँ शाख़े-सनोबर से गुरेज़ाँ भी हुई
पत्तियाँ फूल की झड़-झड़ के परेशाँ भी हुई
वह पुरानी रविशें बाग की वीराँ भी हुईं
डालियाँ पैरहने-बर्ग[४] से उरियाँ भी हुईं ?

क़ैदे-मौसम से तबियत रही आज़ाद इसकी
काश गुलशन में समझता कोई फ़रियाद इसकी।

लुत्फ मरने में है बाक़ी न मजा जीने में
कुछ मज़ा है तो यही ख़ूने-जिगर पीने में
कितने बेताब हैं जौहर मिरे आईने में
किस क़दर जलवे तड़पते हैं मिरे सीने में

इस गुलिस्ताँ में मगर देखने वाले ही नहीं
दाग जो सीने में रखते हों वह लाले ही नहीं।

---

१. खून की नदी हमारी चिर-कांक्षा से फूटती है और हमारे घायल सीने में फरियाद सुलग रही है २. चमन की चुगली खाने वाले ३. चमन के चह-चहाते पंछी ४. पत्तों का लिबास।

चाक इस बुलबुले तनहा का नवा से दिल हों
जागने वाले इसी बांगे-दरा से दिल हों
यानी फ़िर ज़िंदा नए-अहदे-वफ़ा से दिल हों
फ़िर इसी बादा-ए-देरीना[1] के प्यासे दिल हों
अजमी ख़ुम है तो क्या मय तो हिजाज़ी है मिरी
नग़मा हिन्दी है तो क्या लय तो हिजाजी है मिरी।

१. पुरानी शराब।

चाँद

ऐ चाँद हुस्न तेरा फ़ितरत की आबरू है
तौफ़े-हरीमे-ख़ाकी[1] तेरी क़दीम ख़ू है
यह दाग़-सा जो तेरे सीने में है नुमायाँ
आशिक़ है तू किसी का यह दाग़ आरज़ू है
मैं मुज्तरिब ज़मीं पर, बेताब तू फ़लक पर
तुझ को भी जुस्तुजू है, मुझको भी जुस्तुजू है
इंसाँ है शमअ़ जिसकी, महफ़िल वही है तेरी
मैं जिस तरफ़ रवाँ हूँ मंज़िल वही है तेरी।

तू ढूँढता है जिसको तारों की खामुशी में
पोशीदा है वह शायद ग़ोग़ा-ए-ज़िंदगी में
इस्तादा सर्व में है, सब्ज़े में सो रहा है
बुलबुल में नग़माज़न है ख़ामोश है कली में
आ मैं तुझे दिखाऊँ, रुख़सारे-रोशन उसका
नहरों के आयने में, शबनम की आरसी में
सहरा-व-दश्तो-दर में, कोहसार में वही है
इंसाँ के दिल में, तेरे रुख़सार में वही है।

१. धरती का परिक्रमा

रात और शायर

(१)

रात

क्यों मेरी चाँदनी में फ़िरता है तू परेशाँ ?
खामोश सूरते-गुल, मानन्दे बू परेशाँ ।
तारों के मोतियों का शायद है जौहरी तू
मछली है कोई मेरे दरिया-ए-नूर की तू ।
या तू मिरी जबीं का तारा गिरा हुआ है
रिफ़अत को छोड़कर जो पस्ती में जा बसा है।
खामोश हो गया है तारे-रुबाबे-हस्ती
है मेरे आयने में तस्वीरे- ख्वाबे हस्ती।
दरिया की तह में चश्मे-गिरदाब सो गई है
साहिल से लग के मौजे-बेताब सो गई है।
बस्ती ज़मीं की कैसी हंगामा-आफ़री[1] है
यों सो गई है जैसे आबाद ही नहीं है।
शायर का दिल है लेकिन ना-आशना सकूँ से
आज़ाद रह गया तू क्योंकर मिरे फ़सूँ से।

१. हलचल मचाने वाली

(२)

शायर

मैं तिरे चाँद की खेती में गुहर बोता हूँ
छिप के इंसानों से मानन्दे-सहर रोता हूँ।
दिन की शोरिश में निकलते हुए शर्माते हैं
उज़लते-शब[२] में मिरे अश्क टपक जाते हैं।
मुझ में फ़रियाद जो पिनहाँ हैं सुनाऊँ किसको
तपिशे-शौक का नज्ज़ारा दिखाऊँ किसको ?
बर्क़-ऐमन मिरे सीने में पड़ी रोती है
देखने वाली जो है आँख कहीं सोती है ?
सिफ़ते-शमग्रे-लहद मुर्दा है महफ़िल मेरी
आह ऐ रात ! बड़ी दूर है मंज़िल मेरी—।
अहदे-हाज़िर की हवा रास नहीं है इसको
अपने नुक्सान का एहसास नहीं है इसको।

जब्ते-पैग़ामे-मुहब्बत से जो घबराता
तेरे ताबिंदा सितारों को सुना जाता ;

१. रात का एकान्त ३. कब्र की शमअ की भाँति

बज़्मे-अंजुम[1]

सूरज ने जाते-जाते शामे-सियह्-क़बा[2] को
तश्ते-उफ़क़ से लेकर लाले के फूल मारे।
पहना दिया शफ़क़ ने सोने का सारा ज़ेवर
क़ुदरत ने अपने गहने चाँदी के सब उतारे।
महमिल में ख़ामुशी की लैला-ए-ज़ुलमत आई
चमके अरूसे-शब के मोती वह प्यारे-प्यारे।
वह दूर रहने वाले हंगामा-ए-जहाँ से
कहता है जिनको इंसाँ अपनी ज़ुबाँ में "तारे"

महवे-फ़लक-फ़रोज़ी[3] थी अंजुमन फ़लक की
अर्शे-बरीं से आई आवाज़ इक मलक की।

ऐ शब के पासबानो ! ऐ आस्माँ के तारो !
ताबिंदा क़ौम सारी गरदूँ-नशीं तुम्हारी।
छेड़ो सरोद ऐसा जाग उट्ठें सोने वाले
रहबर है क़ाफ़िलों की ताबे-जबीं तुम्हारी।
आईने क़िस्मतों के तुम को यह जानते हैं
शायद सुने सदाएँ अहले-ज़मीं तुम्हारी।

१. तारों की महफ़िल २. काले परिधान वाली शाम ३. आकाश को चमकाने में व्यस्त ४. माथे का उजाला

रुखसत हुई खमोशी तारो भरी फ़ज़ा से
बुसअत थी आस्माँ की मामूर इस नवा से।

हुस्ने-अज़ल है पैदा तारों की दिलबरी में
जिस तरह अक्से-गुल हो शबनम की आरसी में।
आईने-नौ[1] से डरना तर्ज़े-कुहन[2] पे अड़ना
मंजिल यही कठिन है क़ौमों की ज़िंदगी में।
यह कारवाने-हस्ती है तेज़गाम ऐसा
कौमें कुचल गई है जिसकी रवारवी में
आँखों से हैं हमारी ग़ायब हजारों अंजुम
दाख़िल हैं वे भी लेकिन अपनी बरादरी में।
इक उम्र में न समझे इसको ज़मीन वाले
जो बात पा गये हम, थोड़ी सी ज़िंदगी में।

है जज्बे-बाहमी[3] से क़ायम निज़ाम सारे
पौशीदा है यह नुक्ता तारों की ज़िंदगी में।

---

१. नई रीति २. पुरानी रीति ३. एकता।

सैरे-फ़लक

था तखय्युल, जो हमसफ़र मेरा आसमाँ पर हुआ गुज़ार मेरा।
उड़ता जाता था और न था कोई जानने वाला चर्ख पर मेरा।
तारे हैरत से देखते थे मुझे राजे-सरबस्ता[१] था सफ़र मेरा।
हलक़ा-ए-सुबहो-शाम से निकला
इस पुराने निज़ाम से निकला

क्या सुनाऊँ तुम्हें इरम क्या है ख़ातिमे-आरज़ू-ए-दीदा-व-गोश।
शाख़े-तूबा[२]पे नग़मा-रेज तयूर[३] बेहिजाबाना हूर जलवा-फ़रोश।
साकियाने-जमील,[४] जामबदस्त पीने वालों में शोरे-नोशानोश[५]
दूर जन्नत से आँख ने देखा एक तारीक ख़ाना, सदो-खमोश
तालअे-क़ैसो-[६]गेसू-ए-लैला इसकी तारीकियों से, दोशबदोश
खुनक ऐसा कि जिससे शर्माकर कुरा-ए-ज़म्हरीर हो रूपोश
मैंने पूछी जो कैफ़ियत इसकी हैरत-अंगेज़ था जवाबे-सरोश
यह मुक़ामे-खुनक[७] जहन्नुम है नार से नूर से तही आगोश[८]
शोले होते हैं मुस्तआर[१२] इसके जिनसे लरज़ां है मर्दे-इब्रतकोश[१३]
अहले-दुनिया यहाँ जो आते हैं
अपने अंगार साथ लाते हैं

---

१. गुप्त रहस्य २. तूबा, एक पेड़ जो स्वर्ग में है ३. तायर का बहुवचन अर्थ पंछी ४. सुंदर साकी ५. पीने-पिलाने का शोर ६. मजनूँ का भाग्य ७. लैला की अलकें ८. ध्रुव जहाँ बर्फ ही बर्फ है। ९. आग १०. प्रकाश ११. खाली १२. माँगे हुए, क्षण भंगुर १३. सीख पाने वाले व्यक्ति।

नसीहत

मैंने इकबाल से अज़राहे-नसीहत यह कहा
आमिले[१]-रोज़ा है तू और न पाबंदे-नमाज़
तू भी है शेवा-ए-अरबाबे-रिया में शामिल
दिल में लंदन की हवस, लब पे तिरे ज़िक्रे-हिजाज़
झूठ भी मस्लहत-आमेज़ तिरा होता है
तेरा अंदाज़े-तमल्लुक़[३] भी सरापा एजाज़
ख़त्म तक़रीर तिरी मदहते-सरकार[४] पे है
फ़िक्रे-रोशन है तिरा मूजिबे-आईने-नयाज़[५]
दरे-हुक्काम भी है तुझ को मुक़ामे-महमूद
पालिसी भी तिरी पैचीदातर अज़ जुलफ़े-अयाज़[६]
और लोगों की तरह तू भी छिपा सकता है
पर्दा-ए-ख़िदमते-दीं में हविसे-जाह[७] का राज़
नज़र आ जाता है मस्जिद में भी तू ईद के दिन
असरे-वायज़[८] से होती है तबीयत भी गुदाज़

१. रोजा रखने वाला २. कपटी लोगों के चलने में शामिल ३. चापलूसी का ढंग ४. सरकार का गुणगान ५. विनम्रता अर्थात् चापलूसी के विधान का आविष्कार करने वाला ६. अयाज (महमूद गजनवी का सुन्दर और प्रिय गुलाम, की अलकों से अधिक पैचीदा ७. धन का प्रलोभन ८. उपदेश का प्रभाव।

दस्त-परवरदा[९] तिरे मुल्क के अख़बार भी हैं
छेड़ना फ़र्ज़ है जिन पर तिरी तशहीर[१०] का साज़।
इस पे तुर्रा है कि तू शेर भी कह सकता है
तेरी मीना-ए-सुख़न में है शराबे-शीराज़
जितने औसाफ़ हैं लीडर के वह है तुझमें सभी
तुझको लाजिम है कि हो उठके शरीके-तगो-ताज़[११]
ग़मे-सैयाद नहीं और परो-बाल भी हैं
फिर सबब क्या है नहीं तुझको दिमाग़[१२]-परवाज़

आकबत मंज़िले-मा वादी-ए-ख़ामोशाँनलस्त
हालिया ग़लग़ला दर गुंबदे-अफलाक अंदाज[१३]

१. हाथ के पाले हुए २. प्रचार ओपैगंद्रा ३. संघर्षरत ४. उड़ने की काँछा ५. आखिर हम सब का अंत कबिस्तान की मूक वादी है। इस समय तो संसार में शोर बरपा कर दे।

राम

लबरेज़ है शराबे-हकीक़त से जामे हिन्द
सब फ़लसफी हैं खित्ता-ए-मग़रिब के रामे हिन्द
यह हिन्दियों के फ़िक्रे-फ़लक[१] रस का है असर
रिफ़अत में आस्माँ से भी ऊँचा है बामे-हिन्द
इस देस में हुए हैं हज़ारों मलक-सरिश्त[२]
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नामे-हिन्द
है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़
अहले-नज़र समझते है इसको इमामे-हिन्द
एजाज़ इस चिराग़े-हिदायत का है यही
रोशनतर-अज़-सहर[३] है ज़माने में नामे-हिन्द
तलवार का धनी था शुजाअत में फ़र्द[४] था
पाकीज़गी में जोशे-मुहब्बत में फ़र्द था

१. आकाश तक पहुँचने वाला चिंतन २. देवता-स्वभाव ३. सुबह से अधिक रोशन ४. अद्वितीय।

मोटर

कसी पते की बात योगेन्दर ने कल कही
मोटर है जुलफ़क़ार अली खाँ का क्या खमोश।
हंगामा-आफरीं[1] नहीं इसका ख़रामे-नाज़[2]
मानंदे-बर्क[3] तेज़ मिसाले-हवा खमोश।
मैंने कहा नहीं है यह मोटर पे मुनहसिर
है जादा-ए-हयात[4] में हर तेज़पा[5] खमोश।
है पा-शिकिस्ता[6], शेवा-ए-फ़रियाद से जरस
नगहत का कारवाँ है मिसाले-सबा खमोश।
मीना, मुदाम शोरिशे-कुलकुल[7] से पा-बगिल[8]
लेकिन मिज़ाजे-जामे-ख़राम-आशना[9] खमोश।
शायर के फ़िक्र को परे-परवाज़ खामुशी
सरमायादारे-गर्मी-ए-आवाज़ खामुशी।

१. शोर करने वाली २. वाल ३. बिजली की भाँति ४. जीवन-मार्ग ५. द्रुतगामी, तेज चलने वाला ६. टूटे पाँव वाला ७. कुलकुल वह आवाज जो शराब की बोतल उंडेलने पर निकलती है ८. पाबंद, बंधा हुआ ९. चलते हुए पैमाने का मिजाज।

इन्सान

मंज़र चमनिस्ताँ के ज़ेबा[1] हों कि नाज़ेबा
महरूमे-अमल नर्गिस मजबूरे-तमाशा[2] है।
रफ़तार की लज्ज़त का एहसास नहीं उसको
फ़ितरत ही सनोबर की महरूमे-तमन्ना है।
तस्लीम की ख़ूगर है जो चीज़ है दुनिया में
इंसान की हर कुव्वत, सरगर्म-तक़ाज़ा[3] है।
इस ज़र्रे को रहती है वुस्अत की हवस हरदम
यह ज़र्रा नहीं शायद सिमटा हुआ सहरा है।
चाहे तो बदल डाले हैयत[4] चमनिस्ताँ की
यह हस्ती-ए-दाना, है, बीना है, तवाना[5] है।

---

१. सुहाने २. देखने को मजबूर ३. जल्द मिजाज ४. आकार ५. सशक्त।

ख़िताब ब जवानाने इस्लाम

कभो ऐ नौजवाँ मुस्लिम तदब्बुर[१] भी किया तूने
वह क्या गरदूँ था, तू जिसका है इक टूटा हुआ तारा ?
तुझे इस कौम ने पाला है आग़ोशे-मुहब्बत में
कुचल डाला था जिस ने पाँव से ताजो-सरे-दारा।
तमद्दन-आफरीं[१], ख़ल्लाक़े-आईने-जहाँदारी[३]
वह सहरा-ए-अरब, यानी शुतरबानो[४] का गहवारा।
समाँ "अलफुक्रो-फ़ख्री"[५] का रहा शाने-अमारत[२] में
"बआबो-रंगो-ख़ालोख़त हाजत रूए-ज़ेबारा[७]।"
गदाई में भी वह अल्लाह वाले थे ग़यूर इतने
कि मुनइम[८] को गदा के डर से बख्शिश का न था यारा।
ग़रज़ मैं क्या कहूँ तुझसे कि वे सहरा-नशीं क्या थे ?
जहाँगीरो - जहाँ - दारो - जहाँबानो - जहाँ - आरा[९]
अगर चाहूँ तो नक्शा खीच कर अलफ़ाज़ में रख दूँ
मगर तेरे तख़य्युल से फ़ज़ूँतर[११] है वह नज़्ज़ारा
तुझे आबा से अपने कोई निस्बत हो नहीं सकती।
कि तू गुफ्तार वह किरदार तू साबत, वह सैयारा।

---

१. विचार २. सभ्यता का निर्माता ३. प्रशासन-नियम बनाने वाला ४. ऊँट चराने वाले ५. फकीरी में गर्व करना ६. अमीरी की शान ७. रूपवान चेहरे को रंग-रोगन की क्या आवश्यकता है ८. धनवान् ९. दुनिया पर शासन करने वाले ११. अधिकतर १२. स्थिर सितारा २३. घूमने वाला तारा।

गँवा दी हम ने जो अस्लाफ़[1] से मीरास[2] पाई थी
सुरैया से ज़मीं पर आस्माँ ने हम को दे मारा।
हकूमत का तो क्या रोना कि वह इक आर्ज़ी शै थी
नहीं दुनिया के आईने-मुसल्लम[3] से कोई चारा।
मगर वह इल्म के मोती किताबें अपने आबा की
जो देखें उनको योरुप में तो दिल होता है सीपारा[4]।
ग़नी राज़े-सियाहे-पीरे-कनआँ रा तमाशा कुन
कि नरे-दीदा-अश रोशन कुनद चश्मे-ज़ुलेखारा[5]

१. पूर्वज २. विरासत, सम्पत्ति ३. न बदलने वाला कानून ४. टुकड़े-टुकड़े ५. ऐ दाता ! कनआं (वह कुआं जिसमें यूसुफ को झोंका गया था) के सियाह दिन को देख कि उसकी चमक जुलैखा की आंख को रोशन करती है।

हिलाले ईद

ग़र्रा-ए-शव्वाल[१] ! ऐ नूरे-निगाहे-रोज़ादार
आ कि थे तेरे लिए मुस्लिम सरापा इन्तज़ार।
तेरी पेशानी पे तहरीरे-पयामे-ईद है
शाम तेरी क्या है सुबहे-ऐश की तम्हीद[२] है।
सरगुजश्ते-मिल्लते-बैज़ा[३] का तू आईना है
ऐ महे-नौ तुझ को हम से उलफ़ते-देरीना है।
जिस अलम के साये में तेग़ आज़मा होते थे हम
दुश्मनों के खून से रंगी क़बा होते थे हम।
तेरी क़िस्मत में हम आग़ोशी उसी रायत[४] की है
हुस्ने-रोज़-अफ़ज़ूँ से तेरे[५] आबरू मिल्लत की है।
आशना-परवर[६] है क़ौम अपनी, वफा आईं तिरा
है मुहब्बत-ख़ेज़ यह पैराहने-सीमीं तिरा।

औजे-गर्दूं से ज़रा दुनिया की बस्ती देखले
अपनी रिफअत से हमारे घर की पस्ती देखले।

---

१. ईद का चाँद (शव्वाल एक अरबी महीने का नाम है जो रमजान के बाद आता है) २. शुरूआत, आरम्भ ३. इस्लाम का इतिहास ४. रीति ५. दिन-दिन बढ़ने वाला रूप ७. दोस्त नवाज, मित्रता निबाहने वाली ७. चाँदी जैसा लिबास।

काफ़िले देख ! और उनकी बर्क़-रफ्तारी भी देख
रहरवे-दरमांदा[1] की मंज़िल से बेज़ारी भी देख।
देख कर तुझको उफ़क़ पर हम लुटाते थे गुहर
ऐ तही-सागर[2] ! हमारी आज नादारी भी देख।
फ़िरक़ा-आराई की ज़ंजीरों में है मुस्लिम असीर
अपनी आज़ादी भी देख उनकी गिरफ्तारी भी देख।
देख मस्जिद में शिकस्ते-रिश्ता-ए-तस्बीहे-शेख़[3]
बुतकदे में ब्रह्मण की पुख्तारी-जुन्नारी भी देख।
काफ़िरों की मुस्लिम-आईनी का भी नज़्ज़ारा कर
और अपने मुस्लिमों की मुस्लिम-आज़ारी भी देख।
बारिशे-संगे-हवादिस[5] का तमाशाई भी हो
उम्मते-मरहूम की आईना दीवारी भी देख।
जिस को हमने आशना-लुत्फ़े-तरन्नुम से किया
उस हरीफ़े-बेज़ुबां[6] की गर्म-गुफ्तारी[7] भी देख।
साज़े-इशरत की सदा मग़रिब के ऐवानों[8] में सुन
और ईरां में ज़रा मातम की तैयारी भी देख।

---

१. थका राही २. खाली जाम ३. शेख की तस्बीह (माला) का टूटना
४. मुसीबतों के पत्थरों की बारिश ५. मूक शत्रु ६. बहुत अच्छा बोलना
७. महल।

चाक करदी तुर्के-नादाँ नें ख़िलाफत क़ी क़बा
सादगी मुस्लिम की देख, औरों की ऐयारी[1] भी देख ।

सूरते आईना सब कुछ देख, और खामोश रह ।
शोरिशे-इमरोज[2] में महवे-सरोदे-दोश[3] रह ।

१. धूर्तता २. आज की हलचल ३. कल के गानों में तल्लीन

शमश्र और शायर

(फरवरी १६१२ ई०)

शायर

दोश मी गुफ्तम ब शमए-मंज़िले-वीराने-खेश
गेसू-ए-तो अज़ परे-परवाना दारद शानाए।[१]
दर जहाँ मिस्ले-चिराग़े-लाला-ए-सेहरास्तम
ने नसीबे महफ़िले, ने किस्मते-काशानए।[२]
मुद्दते-मानंदे-तो मन नफ़स भी सोख़तम
दर तवाफ़े-शोला अप बाले न ज़द परवानाए।[३]
मी तपद सद जलवा दर जाने-अमल फ़सूँदे-मन
बर नमी ख़ेज़द अज़ी महफ़िल दिले-दीवानाए।[४]
अज़ कुजाईं आतशे-आलम फ़रोज़ अंदोख़्ती
कृमके-बेमाया रा सोज़े-कलीम आमोख़्ती।[५]

---

१. कल रात मैंने अपने वीरान घर की शमश्र से यह कहा कि तेरी अलकों से परवाने के पंख कंघा करते हैं २. दुनिया में मैं जंगल के फूल की भाँति हूँ, न मेरे भाग्य में सभी कीरौनक है और न घर का आराम ३. एक अर्से तक तेरी तरह से मैं भी अपनी आत्मा को जलाता रहा हूँ। मेरे शोले की परिक्रमा में किसी परवाने ने पर नहीं मारा ४. मेरी पुरानी काँक्षाओं की आत्मा में हजारों जजवे सुलगने हैं। लेकिन इस महफिल से क़ोई दीवाना इन जलवों को देखने नहीं उठता ५ तूने कहाँ से दुनिया को चमकाने वाली यह आग पाई कि तुच्छ परवाने को तुझसे कलीम के हृदय की जलन मिलती है।

शमअ

मुझ को जो मौजे-नफ़स देती है पैग़ामे-अजल
लब इसी मौजे-नफ़स से है नवापैरा तिरा।
मैं तो जलती हूँ कि मुज़मर है मिरी फ़ितरत में सोज़
तो फरोज़ाँ है कि परवानों को हो सौदा तिरा।
गिरयासामाँ[1] मैं कि मेरे दिल में है तूफ़ाने-अश्क
शबनम अफ़शाँ[2] तू कि बज़्मे-गुल में हो चरचा तिरा।
गुल बदामन है मिरी शब के लहू से मेरी सुब्ह
है तिरे[5] इमरोज से नाआशना फ़र्दा तिरा।
यों तो रोशन है मगर सोज़े-दरूँ रखता नहीं
शोला है मिस्ले-चिराग़े-लाला-ए-सहरा तिरा।[3]
सोच तो दिल में लक़ब साक़ी का है जेबा तुझे?
अंजुमन प्यासी है और पैमाना बेसहवा तिरा।
और है तेरा शआर[4] आईने-मिल्लत और है।
ज़िश्त-रुई से तिरी आईना है रुस्वा तिरा।
क़ैस पैदा हों तिरी महफ़िल में यह मुमकिन नहीं
तंग है सेहरा तिरा, महमिल है बेलैला तिरा।

१. रोना २. ओस टपकाने वाला ३. जंगली फूल के चिराग की तरह
४. तरीका ५. भौंडा मुख।

ऐ दुरे-ताबिन्दा[1] ! ऐ परवरदा-ए-आगोशे-मोजे[2]
लज़्ज़ते-तूफ़ाँ से है नाआशाना दरिया तिरा।

अब नवा पैरा है क्या ? गुलशन हुआ बरहम तिरा
बेमहल[3] तेरा तरन्नुम, नग़मा बे-मौसम तिरा।

था जिन्हें ज़ौक़े तमाशा वह तो रुखसत हो गये
लेके अब तू वादा-ए-दीदारे-आम आया तो क्या ?
अंजुमन से वह पुराने शोला-आशाम[4] उठ गये
साक़िया ! महफ़िल में तू शोला बजाम आया तो क्या ?
आह जब गुलशन की जमीयत परेशाँ हो चुकी
फूल को बादे-बहारी का पयाम आया तो क्या।
आख़िरे-शब दीद के क़ाबिल थी बिस्मिल की तड़प
सुबह दम कोई अगर बाला-ए-बाम आया तो क्या ?
बुझ गया वह शोला जो मकसूदे-हर[5] परवाना था
अब कोई सौदाई-ए-सोजे-तमाम[6] आया तो क्या ?

फूल बेपरवा हैं, तू गर्मे-नवा हो या न हो
कारवाँ बेहिस है आवाज़े-दरा हो या न हो।

शमअे-महफ़िल हो के तू जब सोज़ से खाली रहा
तेरे परवाने भी इस लज़्ज़त से बेगाने रहे।
रिश्ता-ए-उलफ़त में जब इन को पिरो सकता था तू
फ़िर परेशाँ क्यों तिरी तस्बीह के दाने रहे।

१. चमकदार मोती २. तरंग की गोद का पाला हुआ ३. बेमौका
४. शराबी ५. हर परवाने का प्रिय ६. जल मरने का सौदाई।

शौके-बेपरवा गया, फ़िक्रे-फ़लक पैमा गया
तेरी महफ़िल में न दीवाने न फ़रजाने रहे।
वह जिगर-सोज़ी नहीं वह शोला-आशामी नहीं
फ़ायदा फिर क्या जो गिर्दे-शमग्र परवाने रहे।
खैर तू साक़ी सही लेकिन पिलायेगा किसे ?
अब न वह मयकश रहे बाक़ी न मयख़ाने रहे।
रो रही है आज इक टूटी हुई मीना उसे
कल तलक गर्दिश में जिस साक़ी के पैमाने रहे।
आज है ख़ामोश वह दश्ते-जनूँ-परवर जहाँ
रक्स में लैला रही, लैला के दीवाने रहे।

वाए नाकामी, मताए-कारवाँ[१] जाता रहा
कारवाँ के दिल से एहसासे-ज़याँ[२] जाता रहा।

जिनके हंगामों से थे आबाद वीराने कभी
शहर उनके मिट गये आबादियाँ बन हो गईं।
सितवते-तौहीद क़ायम जिन नमाज़ों से हुई
वे नमाज़ें हिन्द में नज्रे-ब्रह्मन हो गईं।
दहर में ऐशे-दवाम[३], आईं[३] की पाबन्दी से है
मौज को आज़ादियाँ खामाने-शेवन[४] हो गईं।
खुद तजल्ली को तमन्ना जिनके नज़्ज़ारे की थी।
वह निगाहें नाउमीदे-नूरे-एमन[५] हो गईं।

१. बुद्धिमान २. उन्माद पैदा करने वाला जगल ३. काफिले का सामान ४. क्षति की भावना ५. स्थाई सुख ६. सिद्धांत ७. फरियाद का कारण ८. तूर पहाड़ की वादी अर्थात् तूर के जलवे से निराश ९. चकाचौंध करने वाली १०. खलिहान के दामन में निहित

उड़ती फिरती थी हज़ारों बुलबुल गुलज़ार में
दिल में क्या आई कि पाबन्दे-नशेमन हो गईं।
वुसअते-गर्दू में थी उनकी तड़प नज़्ज़ारा-सोज़
बिजलियाँ आसूदा-ए-दामाने-ख़र्मन हो गईं
दीदा-ए-ख़ूँबार हो मन्तकशे-गुलज़ार क्यों ?
अश्के-पैहम से निगाहें गुल-बदामाँ[1] हो गईं।
शामे-ग़म लेकिन ख़बर देती है सुब्हे-ईद की
जुल्मते-शब में नज़र आई किरण उम्मीद की।
मुज़्दा ऐ पैमाना-बरदारे-ख़ुमिस्ताने-हिजाज़[2]
बाद मुद्दत के तिरे रिंदों को फ़िर आया है होश।
नक्दे-ख़ुददारी[3], बहा-ए-बादा-ए-अग़यार[4] थी
फ़िर दुकाँ तेरी है लबरेज़-सदा-ए-नावो-नोश[5]।
टूटने को है तलिस्मे-माहे-सीमायाने-हिन्द[6]
फ़िर सलीमा की नज़र देती है पैग़ामे-ख़रोश।
फ़िर यह ग़ोग़ा है कि ला साक़ी शराबे-ख़ाना-साज़
दिल के हंग़ामे मये-मग़रिब ने कर डाले खमोश।
नग़मा पैरा हो कि यह हंगामे-ख़ामोशी नहीं
है सहर का आस्माँ ख़ुर्शीद से मीना-बदोश।
दरग़मे-दीगर बसोज़ दीगराँ से हम बसोज़
गुफ्तमन रोशन हदीसे, गर तवानी दार गोश[1]।

१. दामन में फूल भरे २. हिजाज के मयखाने का साकी ३. स्वाभिमान की पूँजी ४. शत्रु की शराब का मोल कील ५. हिन्दुस्तान के हसीनों का जादू

कह गये हैं शायरी जुज़्वेस्त अज़-पैग़म्बरी[२]
हाँ सुनादे महफ़िले-मिल्लत को पैग़ामे-सरोश।

आँख को बेदार करदे वादा-ए-दीदार से
ज़िंदा करदे दिल को सोज़े-जौहरे-गुफ्तार से।

रहज़ने-हिम्मत हुआ ज़ौक़े-तन-आसानी तिरा
बहर था सहरा में तू, गुलशन में मिस्ले-जू हुआ।
अपनी अस्लियत पे क़ायम था तो जमइयत भी थी
छोड़कर गुल को परेशाँ कारवाने-बू हुआ।
ज़िंदगी क़तरे को सिखलाती है असरारे-हयात[१]
यह कभी गोहर, कभी शबनम कभी आँसू हुआ।
फ़िर कहाँ से इसको पैदा कर बड़ो दौलत है यह
ज़िंदगी कैसी जो दिल बेगाना-ए-पहलू हुआ।
आबरू बाक़ी तिरी मिल्लत की जमीयत से थी
जब यह जमइयत गई दुनिया में रुसवा तू हुआ।

फ़र्द[२] क़ायम रबते-मिल्लत[३] से है तनहा कुछ नहीं
मौज है दरिया में और बेरूने दरिया कुछ नहीं।

पर्दा-ए-दिल में मुहब्बत को अभी मस्तूर रख
यानी अपनी मय को रुसवा सूरते-मीना न कर।
ख़ेमाज़न हो वादी-ए-सीना में मानंदे कलीम
शोला-ए-तहकीक़[४] के ग़ारतगरे-काशाना[५] कर।

१. दूसरों के गम में जल और उन्हें भी जला। यह मैं तुझसे एक पते की बात कहता हूँ अगर सुन सके तो सुन २. शायरी पैगम्बरी ही का एक हिस्सा है। ३. आलस्य, अकर्मण्यता ४. जीवन के भेद ५. व्यक्ति ३. राष्ट्र का संगठन ६. जिज्ञासा की चिनगारी ७. घर फूँकने वाली ८. सुबह के निर्माण में ६. परवाने की राख।

शमअ को भी हो ज़रा मालूम अंजामे सितम
सफ़ँ-तामीरे-सहर[६] ख़ाकिस्तरे-परवना कर[७] ।
तू अगर ख़ुददार है मन्नत कशे-साक़ी न हो
ऐब दरिया में हबाब-आसा नगूँ[१] पैमाना कर ।
कैफ़ियत बाक़ी पुराने कोहो-सहरा में नहीं
है जनूँ तेरा नया, पैदा नया वीराना कर ।
ख़ाक में तुझको मुक़द्दर ने मिलाया है अगर
तो असा उफताद से पैदा मिसाले-दाना कर
हाँ उसी शाखे-कुहन पर फ़िर बना ले आशियाँ
अहले-गुलशन को शहीदे-नगमा-ए-मस्ताना कर ।
इस चमन में पैरवे-बुलबुल[२] हो या तलमीज़े-गुल[३]
या सरापा नाला बन जा, या नवा पैदा न कर ।
क्यों चमन में बेसदा मिस्ले-रमे-शबनम है तू
लब कुशा[४] होजा सरोदे-बरबते आलम[५] है तू ।
आशना अपनी हक़ीक़त से हो ऐ दहक़ाँ ज़रा
दाना तू, खेती भी तू, बाराँ भी तू, हासिल भी तू ।
आह किसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे
राह तू, रहरो भी तू, रहबर भी तू, मंजिल भी तूँ ।
काँपता है दिल तिरा अंदेशा-ए-तूफाँ से क्या ?
नाखुदा तू, वहर तू, किश्ती भी तू, साहिल भी तू ।

१. झुका हुआ २ बुलबुल का अनुयायी ३. फूल का शिष्य ४. होंठ खोलना, बोलना ५. संसार के बाजे का राग ।

देख आकर कूचा-ए-चाके-गरेबाँ में कभी
क़ैस तू, लैला भी तू,सहरा भी तू,महफ़िल भी तू।
वाए नादानी कि तू मोहताजे-साक़ी हो गया
मय भी तू,मीना भी तू,साक़ी भी तू,महफ़िल भी तू।
शोला बन कर फूँक दे, ख़ाशाके-ग़ैर अल्लाह को
ख़ौफ़े-बातिल कैसा कि है ग़ारतगरे-बातिल भी तू।
बेख़बर तू जौहरे-आईन-ए-अय्याम है
तू ज़माने में ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम है।

अपनी असलीयत से हो आगाह ऐ ग़ाफ़िल कि तू
क़तरा है लेकिन मिसाले-बहरे-बेपाया[१] भी है।
क्यों गिरफ़तारे-तलिस्मे-हेच मिकदारी है तू
देख तो पोशीदा तुझ मे शौकते-तूफ़ाँ भी है।
सीना है तेरा अभी उसके पयामे-नाज़ का
जो नज़ामे-दहर में पैदा भी है पिनहाँ भी है।
हफ्त क़िशवर[२] जिससे हो तस्ख़ीर[३] बेतेग़ो-तफ़ंग़
तू अगर समझे तो तेरे पास वह सामाँ भी है।
अब तलक शाहिद[५] है जिस पर कोहे-फ़ाराँ का सकूत
ऐतग़ाफ़ुल-पैशा, तुझको याद वह पैमाँ भी है?
तू ही नादाँ चंद कलियों पर क़नाअत कर गया
वर्ना गुलशन में इलाजे-तंगी-ए-दामाँ[६] भी है।

१. ख़ुदा के अतितिरिक्त २. जमाने के आईने का पानी ३. आत्महीनता में ग्रस्त ४. विश्व ५. विजय ६. बिना तलवार और बंदूक के ७. गवाह ८. कृपणता का इलाज ९. शराब की बोतल डालने की थैली।

दिल की कैफ़ियत है पैदा पर्दा-ए-तक़रीर में।
किस्वते-मीना[७] में मय मस्तूर भी उरियाँ भी हैं।
फूँक डाला मिरी आतश-नवाई ने मुझे
और मेरी ज़िंदगानी का यही सामाँ भी है।
राज़ इस आतश-नवाई का मेरे सीने में देख
जलवा-ए-तक़दीर मेरे दिल के आईने में देख।
आस्माँ होगा सहर के नूर से आईनापोश
और ज़ुलमत रात की सीमाब-पा[1] हो जायगी
इस क़दर होगी तरन्नुम-आफ़री बादे-बहार
नगहते-ख्वाबीदा[२], गुंचे की नवा हो जायगी।
आ मिलेंगे सीना चाकाने-चमन से सीना चाक
बज़्मे-गुल की हम-नफ़स बादे-सबा हो जायगी
शबनम अफ्शानी मिरी पैदा करेगी सोज़ो-साज़
इस चमन की हर कली दर्द-आशना हो जायगी।
देख लोगे सितवते-रफ़तारे-दरिया का मआल
मौजे-मुज़्तर ही उसे ज़ंजीरे-पा हो जायगी।
फिर दिलों को याद आजायगा पैग़ामे-सजूद[१]
फ़िर जबीं खाके-हरम से आशना हो जायगी।
नाला-ए-सैयाद से होंगे नवासामाँ[2] तयूर
खूने-गुलचीं से कली रंगी-क़बा हो जायगी।

---

१. भाग जाना २. सुप्त सुगन्ध। ३. सजदे का सन्देश ४. चहचहाते।

आँख जो कुछ देखती है लब पे आ सकता नहीं
मेहवे-हैरत हूँ कि दुनियाँ क्या से क्या हो जायगी।

शब गुरेज़ाँ होगी आख़िर जलवा-ए-खुर्शीद से
यह चमन मामूर होगा नग़मा-ए-तौहीद से।

मुस्लिम

(जून १९१२ ई०)

हर नफ़स इक़बाल तेरा आह में मस्तूर है
सीना-ए-सोज़ाँ तिरा फ़रियाद से मामूर है।
नग़मा-ए-उम्मीद तेरे बरबते दिल में नहीं
हम समझते हैं यह लैला तेरे महमिल में नहीं।
गोश आवाज़े-सरोदे-रफ्ता[1] का जोया तिरा
और दिल हंगामा-ए-हाज़िर से बेपरवा तिरा।
किस्स--ए-गुल हमनवायानें-चमन सुनते नहीं
अहले-महफ़िल तेरा पैग़ामे-कुहन सुनते नहीं।
ऐ दराय-कारवाने-खुफ्ता - पा[2] ख़ामोश है
है बहुत यास-आफ्रीं तेरी सदा ख़ामोश हो।

जि़न्दा फिर वह महफ़िले-दीरीना हो सकती नहीं
शमअ से रोशन शबे-दोशीना[3] हो सकती नहीं।

---

१. बीते हुए राग की आवाज २. ठहरे हुए कारवाँ के जरस ३. बीती रात।

हमनशीं ! मुस्लिम हूँ मैं तौहीद का हामिल हूँ मैं
इस सदाक़त पर अज़ल से शाहिदे-आदिल हूँ मैं।
नब्जे-मौजूदात[१] में पैदा हरारत इससे है
और मुस्लिम के तखैय्युल में जसारत[२] इससे है।
हक़ ने आलम इस सदाक़त के लिए पैदा किया
और मुझे उसकी हिफ़ाज़त के लिए पैदा किया।
दहर में ग़ारतगरे-बातिल परस्ती[३] मैं हुआ
हक़ तो यह है हाफ़िज़े-नामूसे-हस्ती[४] मैं हुआ।
मेरी हस्ती पैरहन उरियान-ए-आलम की है
मेरे मिट जाने से रुस्वाई बनी-आदम की है।
क़िस्मते-आलम का मुस्लिम कौकवे-ताबिन्दा[५] है
जिस की ताबानी से अफ्सूने-सहर[६] शर्मिन्दा है।
आशकारा है मिरी आँखों में असरारे-हयात
कह नहीं सकते मुझे नौमीदे-पैकार-हयात[१०]।

---

१. संसार की नाड़ी २. हिम्मत, साहस ३. झूठ की पूजा को नाश करने वाला ४. जीवन की प्रतिष्ठा का रक्षक ५. चमकदार सितारा ६. सुबह का जादू ७. जीवन-संघर्ष से निराश।

कब डरा सकता है ग़म का आर्ज़ी मंजर मुझे ?
है भरोसा अपनीं मिल्लत के मुक़द्दर पर मुझे ।
यास के अंसर[1] से है आज़ाद मेरा रोज़गार[2]
फ़तह-कामिल की खबर देता है जोशे-कारज़ार ।
हाँ यह सच है चश्म-बर-अहदे-कुहन[3] रहता हूँ मैं
अहले-महफिल से पुरानी दास्ताँ कहता हूँ मैं ।
यादे-अहदे-रफ्ता मेरी खाक को अक्सीर है
मेरा माज़ी मेरे इस्तक़बाल[4] की तफ़सीर है ।
सामने रखता हूँ उस दौरे-नशात-अफ्ज़ा[5] को मैं
देखता हूँ दोश के आईने में फ़र्दा को मैं ।

१. तत्व २. लड़ाई का जोश ३. अतीत की ओर देखना ४. भविष्य
५. सुख ऐश्वर्य का युग

हज़ूरे-रिसालते-मश्राब में[1]

गराँ जो मुझपे यह हंगामा-ए-ज़माना हुआ
जहाँ से बाँध के रख़्ते-सफ़र रवान हुआ।
क़यूदे-शामो-सहर[2] में बसर तो की लेकिन
निज़ामे-कोहना-ए-आलम से आशना न हुआ।

फ़रिश्ते बज़्मे-रिसालत[3] में ले गये मुझ को
हज़ूरे-आया-ए-रहमत में ले गये मुझ को।

कहा हज़ूर ने ऐ अंदलीबे-बाग़े-हिजाज़
कली-कली है तिरी गर्मी-ए-नवा से गुदाज़।
हमेशा सरख़ुशे-जामे-बला[5] है दिल तेरा
फ़तादगी[6] है तिरी ग़ैरते-सजूदे-नयाज़[7]।
उड़ा जो पस्ती-ए-दुनिया से तू सूए-गर्दूं
सिखाई तुझ को मलायक[8] ने रिफ़अते-पर्वाज़।

---

१. हजरत मुहम्मद के हजूर में २. सुबह-शाम की कैद ३. रसूल (हजरत मुहम्मद) की महफिल ४. कृपालु हजूर के सम्मुख ५. संघर्ष की शराब में मस्त ६. अचलता, पड़ाव ७. विनम्र सजदे से अधिक ८. मलक का बहुवचन अर्थात् फरिश्ते।

निकल के बाग़-जहाँ से बरंगे-बू आया
हमारे वास्ते क्या तोहफ़ा लेके तू आया ?

हज़ूर ! दहर में आसूदगी नहीं मिलती
तलाश जिसकी है वह ज़िंदगी नहीं मिलती ।
हज़ारों लाला-व-गुल हैं रयाज़े-हस्ती में
वफ़ा की जिस में हो बू वह कली नहीं मिलती ।
मगर में नज़र[1] को इक आबगीना लाया हूँ ।
जो चीज़ इसमें है जन्नत में भी नहीं मिलती ।

झलकती है तिरी उम्मत की आबरू इस में
तराबलसके शहीदों का है लहू इसमें ।

१. भेंट

शफ़ाखाना-ए-हिजाज़

इक पेशवा-ए-क़ौम[1] ने इकबाल से कहा
खुलने को जद्दा में है शफ़ाखाना-ए-हिजाज़ ।
होता है तेरी खाक़ का हर ज़र्रा बेक़रार
सुनता है तू किसी से जो अफ़साना-ए-हिजाज़ ।
दस्ते-जनूँ को अपने बढ़ा जेब की तरफ
मशहूर तू जहाँ में है दीवाना-ए-हिजाज़ ।

दारुशफ़ा[2] हवाली-ए-बतहा[3] में चाहिये
नब्ज़े-मरीज़ पंजा-ए-ईसा में चाहिए ।

मैंने कहा कि मौत के परदे में है हयात
पोशीदा जिस तरह हो हक़ीक़त मजाज़ में ।
तलखाबा-ए-अजल[4] में जो आशिक़ को मिल गया ।
पाया न ख़िज्र ने मय-ए-उम्रे-दराज़ में ।
औरों को दें हुज़ूर यह पैग़ामे-जिंदगी
मैं मौत ढूँढता हूँ ज़मीने-हिजाज़ में ।

आये हैं आप लेके शफ़ा[5] का पयाम क्या ?
रखते हैं अहले-दर्द मसीहा से काम क्या ?

१. कौम का लीडर २. हस्पताल ३. मदीने के निकट ४. मौत का कड़आ जल ५. स्वास्थ्य

जवाबे-शिकवा

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं ताक़ते-परवाज़ मगर रखती है
कुदसीउलअस्ल[1] है रिफ़अत पे नज़र रखती है
ख़ाक से उठती है गर्दू पे गुजर रखती है

इश्क़ था फ़ितनागरी-सरकशो-चालाक[2] मिरा।
आस्माँ चीर गया नाला-ए-बेबाक मिरा—।

पीरे-गर्दू[3] ने कहा सुन के कहीं है कोई।
बोले सैयारे सरे-अर्शे-बरीं[4] है कोई।
चाँद कहता था नहीं अहले-ज़मीं है कोई।
कहकशाँ कहती थी पोशीदा यहीं है कोई।

कुछ जो समझा मिरे शिकवे को तो रिज़वाँ[5] समझा।
मुझ को जन्नत से निकाला हुआ इंसाँ समझा।

थी फ़रिश्तों को भी हैरत कि यह आवाज़ है क्या?
अर्श वालों में भी खुलता नहीं यह राज़ है क्या?
तासरे-अर्श भी इंसाँ की तगो-ताज़[6] है क्या?
आ गई ख़ाक की चुटकी को भी परवाज़ है क्या?

---

१. फरिश्तों के कुल से २. उपद्रवी तथा विद्रोही ३. आकाश ४. आकाश के ऊपर ५. जन्नत के बाग का माली। ६. दौड़-धूप

गाफ़िल आदाब से सुक्काने-ज़मों[1] कैसे हैं !
शोखो-गुस्ताख़ यह पस्ती के मकीं कैसे हैं ?

इस क़दर शोख़ कि अल्लाह से भी बरहम[2] है।
था जो मस्जूदे-मलायक[3] यह वही आदम है ?
आलिमे-कैफ़[4] है, दाना-ए-रमूज़े-कम[5] है ।
हाँ मगर इज्ज[6] के असरार[7] से न मेहरम[8] है

नाज है ताक़ते-गुफ़तार पे इंसानों को।
बात करने का सलीक़ा नहीं नादानों को।

आई आवाज़ ग़म-अंगेज़ है अफसाना तिरा ।
अश्के-बेताब से लबरेज़ है पैमाना तिरा ।
आस्माँगीर हुआ नाला-ए-मस्ताना तिरा ।
किस तरह शोख़-ज़बाँ है दिले-दीवाना तिरा ।

शुक्र शिकवे को किया हुस्ने-अदा से तूने ।
हम सुख़न कर दिया बन्दे को खुदा से तूने ।

हम तो मायल-बकरम हैं[9] कोई साइल ही नहीं ।
राह दिखलायें किसे रहरवे-मंज़िल ही नहीं ।
तरबियत[10] आम तो है, जौहरे-क़ाबिल[11] ही नहीं ।
जिस से तामीर हो आदम की यह वह गिल[12] ही नही

कोई क़ाबिल हो तो हम शाने-कई देते हैं ।
ढूँढने वाले को दुनिया भी नई देते हैं ।

१. धरती के वासी २. क्रुद्ध ३. जिसे फरिश्तों ने सजदा किया ४. गुण को परखने वाला ५. मात्रा के रहस्य को समझने वाला ६. विनम्रता ७. रहस्य ८. परिचित ९. दयाशील १०. प्रशिक्षण ११. सामर्थ्यवान् १२. मिट्टी।

हाथ बेज़ोर हैं इलहाद से दिल ख़ूगर हैं।
उम्मती, बाइसे-रुसवाई-ए-पैग़म्बर हैं।
बुत-शिकन उठ गये बाकी जो रहे बुतगर हैं।
था ब्राहीम पिदर[2] और पिसर[3] आज़र[4] हैं।
बादा-आशाम[5] नए, बादा नया ख़ुम[6] भी नए
हरमे-काबा नया, बुत भी नए, तुम भी नए।
वह भी दिन थे कि यही माया-ए-रानाई[7] था।
नाज़िशे-मौसमे-गुल[8], लाला-ए-सहराई[9] था।
जो मुसलमान था अल्लाह का सौदाई था।
कभी महबूब तुम्हारा यही हरजाई था।
किसी यकजाई[11] से अब अहदे-ग़ुलामी कर लो
मिल्लते-अहमदे मुर्सिल को मुक़ामी कर लो।
किस क़दर तुम पे गराँ सुबह की बेदारी है
हम से कब प्यार है हाँ नींद तुम्हें प्यारी है
तबए-आज़ाद[12] पे क़ैदे-रमज़ाँ[13] भारी है
तुम्हीं कह दो यही आईने-वफ़ादारी है।
क़ौम मज़हब से मज़हब जो नहीं तुम भी नहीं।
जज्बे-बाहम[14] जो नहीं महफ़िले-अंजुम भी नहीं
जिन को आता नहीं दुनिया में कोई फ़न तुम हो।
नहीं जिस क़ौम को परवा-ए-नशेमन तुम हो।

---

१. एक पैगम्बर जिसने सबसे पहले एकेश्वरवाद का संदेश दिया २. बाद ३. बेटा ४. यूनान का प्रसिद्ध मूर्तिकार ५. शराबी ६. ज्वाला ७. सौंदर्य कोष ८. वसन्त जिस पर गर्व करे ९. जंगल का फूल १०. एक निष्ठ ११. मुहम्मद को मानने वालों का सम्प्रदाय १२. स्वच्छन्द प्रकृति १३. उपवास की पाबन्दी १४. संगठन।

गाफ़िल आदाब से सुक्काने-ज़मीं[1] कैसे हैं !
शोख़ो-गुस्ताख़ यह पस्ती के मकीं कैसे हैं ?

इस क़दर शोख़ कि अल्लाह से भी बरहम[2] है।
था जो मस्जूदे-मलायक[3] यह वही आदम है ?
आलिमे-कैफ़[4] है, दाना-ए-रमूज़े-कम[5] है ।
हाँ मगर इज्ज[6] के असरार[7] से न मेहरम[8] है

नाज है ताक़ते-गुफ़तार पे इंसानों को ।
बात करने का सलीक़ा नहीं नादानों को ।

आई आवाज़ ग़म-अंगेज़ है अफसाना तिरा ।
अश्के-बेताब से लबरेज़ है पैमाना तिरा ।
आस्माँगीर हुआ नाला-ए-मस्ताना तिरा ।
किस तरह शोख़-ज़बाँ है दिले-दीवाना तिरा ।

शुक्र शिकवे को किया हुस्ने-अदा से तूने ।
हम सुख़न कर दिया बन्दे को खुदा से तूने ।

हम तो मायल-बकरम हैं[9] कोई साइल ही नहीं ।
राह दिखलायें किसे रहरवे-मंज़िल ही नहीं ।
तरबियत[10] आम तो है, जौहरे-क़ाबिल[11] ही नहीं ।
जिस से तामीर हो आदम की यह वह गिल[12] ही नही

कोई क़ाबिल हो तो हम शाने-कई देते हैं ।
ढूँढने वाले को दुनिया भी नई देते हैं ।

१. धरती के वासी २. क्रुद्ध ३. जिसे फरिश्तों ने सजदा किया ४. गुण को परखने वाला ५. मात्रा के रहस्य को समझने वाला ६. विनम्रता ७. रहस्य ८. परिचित ९. दयाशील १०. प्रशिक्षण ११. सामर्थ्यवान् १२. मिट्टी।

हाथ बेज़ोर हैं इलहाद से दिल ख़ूगर हैं।
उम्मती, बाइसे-रुसवाई-ए-पैग़म्बर हैं।
बुत-शिकन उठ गये बाकी जो रहे बुतगर हैं।
था ब्राहीम[१] पिदर[२] और पिसर[३] आज़र[४] हैं।

बादा-आशाम[५] नए, बादा नया ख़ुम[६] भी नए
हरमे-काबा नया, बुत भी नए, तुम भी नए।

वह भी दिन थे कि यही माया-ए-रानाई[७] था।
नाज़िशे-मौसमे-गुल[८], लाला-ए-सहराई[९] था।
जो मुसलमान था अल्लाह का सौदाई था।
कभी महबूब तुम्हारा यही हरजाई था।

किसी यकजाई[१०] से अब अहदे-ग़ुलामी कर लो
मिल्लते-अहमदे मुर्सिल[११] को मुक़ामी कर लो।

किस क़दर तुम पे गराँ सुबह की बेदारी है
हम से कब प्यार है हाँ नींद तुम्हें प्यारी है
तबए-आज़ाद[12] पे क़ैदे-रमज़ाँ[1३] भारी है
तुम्हीं कह दो यही आईने-वफ़ादारी है।

क़ौम मज़हब से मज़हब जो नहीं तुम भी नहीं।
जज्बे-बाहम[14] जो नहीं महफ़िले-अंजुम भी नहीं
जिन को आता नहीं दुनिया में कोई फ़न तुम हो।
नहीं जिस क़ौम को परवा-ए-नशेमन तुम हो।

१. एक पैगम्बर जिसने सबसे पहले एकेश्वरवाद का संदेश दिया २. बाद ३. बेटा ४. यूनान का प्रसिद्ध मूर्तिकार ५. शराबी ६. ज्वाला ७. सौंदर्य कोष ८. वसन्त जिस पर गर्व करे ९. जंगल का फूल १०. एक निष्ठ ११. मुहम्मद को मानने वालों का सम्प्रदाय १२. स्वच्छन्द प्रकृति १३. उपवास की पाबन्दी १४. संगठन।

बिजलियाँ जिस में हों पौशीदा वह खिरमन तुम हो।
बेच खाते हैं जो अस्लाफ़[१] के मदफ़न तुम हो।

हो निको-नाम[२] जो कब्रों की तिजारत करके।
क्या न बेचोगे जो मिल जायें सनम पत्थर के।

सफ़ह-ए-दहर से बातिल को मिटाया किसने ?
नौ-ए-इंसाँ को गुलामी से छुड़ाया किसने ?
मेरे काबे को जबीनों से बसाया किसने ?
मेरे क़ुग्रान को सीनों से लगाया किस ने ?

थे तो आबा[३] वह तुम्हारे ही मगर तुम क्या हो ?
हाथ पर हाथ धरे मुंतज़रे-फ़र्दा हो ?

क्या कहा ? बहरे-मुसलमाँ है फ़क़त वादा-ए-हूर।
शिकवा बेजा भी करे कोई तो लाज़िम है शऊर।
अदल[४] है फ़ातिरे-हस्ती[५] का अज़ल से दस्तूर।
मुस्लिम-आई हुआ काफ़िर तो मिले, हूरो-क़सूर।

तुम में हूरों का कोई चाहने वाला ही नहीं।
जलवा-ए-तूर तो मौजूद है मूसा ही नहीं।

मुनफ़अत[६] एक है इस क़ौम की नुक़सान भी एक।
एक ही सब का नबी, दीन भी, ईमान भी एक।
हरमे-पाक भी, अल्लाह भी कुग्रान भी एक।
कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक।

---

१. पूर्वज २. नेक नाम ३. पूर्वज ४. इंसाफ ५. खुदा ६. लाभ।

फ़िरका बन्दी है कहीं और कहीं ज़ातें हैं।
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं।

कौन है तारिके-आईने-रसूले-मुख्तार[१] ?
मस्लहत वक्त की है किस के अमल का मेयार।
किसकी आँखों, में समाया है शआरे-अग़यार[२] ?
होगई किसकी नज़र तर्ज़-सफ़र[३] से बेज़ार ?

क़ल्ब[४] में सोज नहीं, रूह में एहसास नहीं।
कुछ भी पैग़ामे-मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं।

जाके होते हैं मसाजिद[५] में सफ़ारा तो ग़रीब।
ज़हमते-रोज़ा जो करते हैं गवारा तो ग़रीब।
नाम लेता है अगर कोई हमारा तो ग़रीब।
पर्दा रखता है अगर कोई तुम्हारा तो ग़रीब।

उभरा[६] नश्श-ए-दौलत में है ग़ाफ़िल हमसे।
ज़िंदा है मिल्लते-बैज़ा, ग़ुरबा के दम से।

वाइज़े-क़ौम[७] की वह पुख्ता ख्याली न रही।
बर्क़ तबई[८] न रही, शोला-मक़ाली[९] न रही।
रह गई रस्मे-अजाँ, रूहे-बिलाली[१०] न रही।
फलसफ़ा रह गया तलक़ीने-ग़िज़ाली[११] न रही।

मस्जिदें मर्सिया ख्वाँ[१२] है कि नमाज़ी न रहे।
यानी वह साहबे-औसाफ़े-हिजाज़[१३] न रहे।

१. मुहम्मद के सिद्धांत को त्यागने वाले २. दूसरे का तौर तरीका ३. पूर्वजों की रीति ४. दिल ५. मस्जिद का बहुवचन ६. नमाजियों की पंक्ति में सम्मिलित ७. धनी ८. जाति का उपदेशक ९. बिजली जैसी तेज तबीयत १०. आग उगलने वाला स्वर ११. गजाली फारसी का प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक जिसने इस्लाम-शास्त्र पर बहुत काम किया, तलकीन, उपदेश। १२. शोक ग्रस्त १३. हिजाज के गुण वाले।

शोर है होगये दुनिया से मुसलमाँ नाबूद,
हम यह कहते हैं कि थे भी कहीं मुस्लिम मौजूद,
वज़अ[1] में तुम हो नसारा[2] तो तमद्दुन[3] में हनूद,
यह मुसलमाँ है जिन्हें देख के शर्माएँ यहूद,
यों तो सैयद भी हो, मिर्ज़ा भी हो, अफ़गान भी हो,
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो।
दमे-तक़रीर थी मुस्लिम की सदाक़त बेबाक,
अदल उसका था क़वी, लौसे-मराआत[4] से पाक,
शजरे-फ़ितरते-मुस्लिम था हमा से नमनाक,
था शुजाअत[5] में वह हस्ती-ए-फ़ौकुल-इदराक[6],
खुद गुज़ारी नमे-कैफ़ियते-सहबायश बूद,
खाली अज ख़ेश शुदन सूरते मीनायश बूद।[7]
हर मुसलमाँ रगे-बातिल के लिए निशतर था,
उसके आईना-ए-हस्ती में अमल जौहर था,
जो भरोसा था उसे कुव्वते-बाज़ू पर था,
है तुम्हें मौत का डर उसको खुदा का डर था,
बाप का इल्म न बेटे को अगर अज़बर हो,
फ़िर पिसर, काबिले-मीरासे-पिदर[8] क्योंकर हो ?
हर कोई मस्ते-मय-ए-ज़ौक़[9] तन-आसानी है,
तुम मुसलमाँ हो ? यह अन्दाज़े-मुसलमानी है,

---

१. प्रत्यक्ष २. आतशपरस्त अर्थात् आग के पुजारी ३. संस्कृति ४. पक्षपात रहित ५. दरिद्रता ६. समझ की पहुँच से दूर ७. अध्यात्मवाद की शराब को खुद छोड़ दिया और ऐसा रिक्त हो गया जैसे सुराही पलट देने के बाद खाली हो जाती है ८. पिता की विरासत का उत्तराधिकारी ९. विलासिता की शराब में मस्त।

हैदरी-फ़ुक्र हैं ने दौलते-उसमानी[१] है
तुम को अस्लाफ़ से क्या निस्बते-रूहानी[२] है,
बह ज़माने में मुअज्ज़िज[३] थे मुसलमाँ होकर,
और तुम ख्वार हुए तारिकेकुरआँ होकर ।

तुम हो आपस में गज़बनाक वह आपस में रहीम,
तुम खताकारो-खताबीं[४], वह ख़तापोशो-करीम[५],
चाहते सब है कि हो औजे-सुरैया[६] पे मुक़ीम[७],
पहले वैसा कोई पैदा तो करे क़ल्बे-सलीम[८],
तख़्ते-फ़ग़फ़ूर भी उनका था सरीरे कै भी,
यों ही बातें हैं, कि तुम में वह हमीयत है भी ।

ख़ुदकुशी शेबा तुम्हारा वह गयूरो-खुददार[९],
तुम अख़ूवत[१०] से गुरेज़ां[10], वहअख़ूवत पे विसार ।
तुम हो गुफ़तार[11] सरापा, बह सरापा किरदार[३३] ।
अब तलक याद है कौमों को हिकायत उनकी,
नक्श है सफ़ह-ए-हस्ती पे सदाक़त उनकी ।

मिस्ले-अंजुम उफ़के-क़ौम पे रोशन भी हुए,
बुते-हिन्दी की मुहब्बत में ब्रहमन भी हुए,
शौक़-परवाज़ में महजूरे-नशेमन[१४] भी हुए,
बे अमल थे ही जवां दीन से बदज़न भी हुए ।

१. हैदर हजरतअली का उपनाम, अर्थात् अली जैसी निश्चिन्तता २. उसमान तीसरे खलीफा थे जिनके शासनकाल में अरब देश बहुत धनी हो गया था ३. अध्यात्मिक सम्बन्ध ४. प्रतिष्ठित ६, कुरान को त्यागने वाले ७. पापीं ८. पाप को ढकने वाले दयालु ६. सप्तऋषि की बुलन्दी १०. बादशाहत का तख्त ११. स्वाभिमान १२. स्वाभिमानी और आत्माभिमानी १३. भाईचारा १४. माँगने वाले १५. बातूनी १६. कर्मठ, कर्मशील १७. घोंसले से पृथक् ।

इनको तेहज़ीब ने हर बन्द से आज़ाद किया,
लाके काबे से सनम ख़ाने में आबाद किया।
अहदे-नौ बर्क़ है, आतश-जने हर ख़र्मन[1] है
ऐमन[2] इस से कोई सहरा न कोई गुलशन है,
इस नई आग का अक़वामे-कुहन[3] ईंधन है,
मिल्लते-ख़त्मे-रुसुल[4], शोला बह पैराहन[5] है,
आज भी हो जो ब्राहीम का ईमाँ पदा,
आग कर सकती है अंदाज़े-गुलिस्ताँ[6] पैदा।
देखकर रंगे-चमन हो न परेशाँ. याली,
कौकबे-गुंचा[7] से शाखे हैं चमकने वाली,
ख़सो-खाशक[8] से होता है गुलिस्ताँ ख़ाली,
गुलबर-अन्दाज़[9] है खूने-शुहदा[10] की लाली,
रंग गर्दूं का ज़रा देख तो उन्नावी है,
यह निकलते हुए सूरज की उफ़क़ ताबी है।
उम्मतें गुलशने-हस्ती में समर चीदा[11] भी हैं,
और मेहरूमे-समर भी हैं ख़ज़ाँदीदा भी हैं,
सैंकड़ों नख़्ल है, कालीदा[12] भी बालीदा[13] भी हैं,
सैंकड़ों वत्ने-चमन[14] में अभी पौशीदा भी है,
नख़्ले-इस्लाम नमूना है बरोमन्दी का,
फ़ल है यह सैंकड़ों सदियों की चमन-बन्दी का।

१. हर खलिहान को फूँकने वाला २. महफ़ूज, सुरक्षित, ३. प्राचीन राष्ट्र ४. हजरत मुहम्मद के अनुयायी ५. विपता-ग्रस्त ६. उद्यान का दृश्य, हजरत इब्राहीम को नमरूद बादशाह ने आग में फिंकवा दिया था तो वह ठण्डी होकर बाग बन गई थी ७. कलियों के सितारे ८. कूड़ा-कर्कट ९. फूल छिड़कने वाली १० शहीदों का खून ११. फल चुनना १२-१३. विकसित और पका हुआ १४. पेड़ लगाना।

पाक है गर्दे-वतन से सरे दामाँ तेरा,
तू वह यूसुफ़ है कि हर मिस्र है कन्आँ तेरा,
काफ़िला हो न सकेगा कभी वीराँ तेरा,
ग़ैर यक बाँगे-दरा[1] कुछ नहीं सामाँ तेरा,
नख्ले-शमअस्ती-व-दर शोला रवद रेशा-ए-तो,
आक़बत सोज़ बुवुद सामा-ए-अंदेशा-ए-तो ।[2]
तू न मिट जाएगा ईरान के मिट जाने से
न शा-ए-मय को ताल्लुक़ नहीं पैमाने से।
है अयाँ यूरिशे-तातार[3] के अफ़साने से
पास्बाँ मिलगये काबे को सनमख़ाने से
किश्ती-ए-हक का जमाने में सहारा तू है,
अर्से-नौ[4] रात है धुंधलासा सितारा तू है।
है जो हंगामा बपा यूरिशे-बलग़ारी[5] का,
ग़ाफ़िलों के लिए पैग़ाम है बेदारी का,
तू समझता है कि यह पैग़ाम है दिलाज़ारी[6] का,
इम्तिहाँ है तिरे ईसार का ख़ुददारी का,
क्यों हिरासाँ है सुहीले-फ़रसे-आदा से,[7]
नूरे-हक़ बुझ न सकेगा नफ़से-आदा[8] से।
चश्मे-अक़बाल से मख्फ़ी[9] है हक़ीक़त तेरी,
है अभी महफ़िले-हस्ती को जरूरत तेरी,
जिंदा रखती है ज़माने को हरारत तेरी,
कौकबे-क़िसमते-इम्काँ है[10] ख़िलाफ़त तेरी,

---

१. जरस की आवाज के अतिरिक्त २. तू शमअ की नस्ल से है और तेरा सूत्र शोले से सम्बन्धित है और एक जमाना था कि तू बिना आगा-पीछा देखे हर आग में कूद जाता था ३. तातारी आक्रमण ४. नया युग ५. बलगारी हमला ६. दिल दुखाना ७. शत्रुओं के घोड़ों की टाप ८. शत्रुओं की साँस ९. छिपा हुआ १०. सृष्टि के भाग्य का सितारा।

वक़्ते-फ़ुर्सत है कहाँ काम अभी बाक़ी है
नूरे-तौहीद का इतमाम[१] अभी बाक़ी है।

मिस्ले-बू क़ैद है ग़ुंचे में परेशाँ होजा
रख़्तबरदोश हवा-ए-चमनिस्ताँ[२] होजा
है तुनकमाया[३], तो ज़र्रे से ब्याबाँ होजा
नग़मा-ए-मौज से हंगामा-ए-तूफाँ होजा

क़ुव्वते-इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे-मुहम्मद से उजाला कर दे।

हो न फूल तो बुलबुल का तरन्नुम भी न हो
चमने-दहर में कलियों का तबस्सुम भी न हो
यह न साक़ी हो तो फ़िर मय भी न हो, खुम भी न हो
बज़्मे-तौहीद भी दुनिया में न हो, तुम भी न हो

ख़ेमा अफ़लाक का इस्तादा[४] इसी नाम से है
नब्ज़े-हस्ती तपिश-आमादा[५] इसी नाम से है।

दश्त में, दामने-कोहसार में, मैदान में है
बहर में, मौज की आग़ोश में, तूफ़ान में है
चीन के शहर, मराक़श के ब्याबान में है
और पोशीदा मुसलमान के ईमान में है

चश्मे-अक़वाम यह नज़्ज़ारा अबद तक देखे
रिफ़अते-शाने-"रफ़ना-लका-ज़िक्रक"[६] देखे।

१. पूर्णता २. बाग की हवा की भाँति सुगन्ध को कंधे पर उठाए हुए
३. तुच्छ ४. खड़ा ५. गर्म ६. कुरान की एक आयत।

मुरदुमे-चश्मे-जमीं[1], यानी वह काली दुनिया
वह तुम्हारे शोहदा पालने वाली दुनिया
गर्मी-ए-महर की परवरदा[2], हिलाली दुनिया
इश्क़ वाले जिसे कहते हैं बिलाली दुनिया
तपिश-अंदोज़[3] है इस नाम से पारे की तरह
ग़ोताज़न नूर में है आँख के तारे की तरह।

अक़्ल है तेरी सिपर, इश्क़ है शमशीर तिरी
मेरे दरवेश! ख़िलाफ़त है जहाँगीर तिरी
मासिवा[4] अल्लाह के आगे है तकबीर तिरी
तू मुसलमाँ हो तो तक़दीर है तदबीर तिरी
की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या, लौहो-क़लम तेरे हैं।

१. सूरज की गर्मी २. पाली हुई ३. तपसी हुई ४. अतिरिक्त।

साक़ी

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है।
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साकी।
जो बादाकश थे पुराने वह उठते जाते हैं।
कहीं से आबे-बक़ा-ए-दवाम[1] ले साक़ी।
कटी है रात तो हंगामा-गुस्तरी[2] में तिरी।
सहर करीब है अल्लाह का नाम ले साक़ी।

१. अमृत २. हंगामा बरपा करना।

तालीम और उसके नतायज[1]

(तज़मीन वर शेर मुल्ला अर्शी[2])

खुश तो हैं हम भी जवानो की तरक़्क़ी से मगर
लबे-खंदाँ[3] से निकल जाती है फ़रियाद भी साथ
हम समझते थे कि लायेगी फ़राग़त, तालीम
क्या ख़बर थी कि चला आयगा इलहाद[4] भी साथ
घर में परवेज के शीरीं तो हुई जलवा नुमा
लेके आई मगर तेशा-ए-फ़रहाद भी साथ

तुख़्मे-दीगर बकफ़ आरेम व बकारेम ज़नौ
काँचे कश्तेम ज़ाख़जलत नतवाँ कर्द दरौ।[5]

◈ ◈

१. नतीजे २. फारसी के प्रसिद्ध कवि मुल्ला अर्शी के एक शेर की समस्या पूर्ति ३. स्मित होंठ ४. नास्तिकता ५. जब दूसरों का बीज लेकर बोते हैं तो उससे लज्जा के अतिरिक्त और कुछ नहीं उग सकता।

कुर्ब-सुलतान[1]

तमाज़े-हाकिमो-महकूम[2] मिट नहीं सकती
मजाल क्या जो गदागर[3] हो शाह का हमदोश[4]।
जहाँ में ख़्वाजा-परस्ती[5] है बंदगी का कमाल
रज़ा-ए-ख़्वाजा तलबकुन कबा-ए-रंगी पोश[6]।
मगर ग़रज़ जो हसूले-रजाए-हाकिम[7] हो
ख़िताब मिलता है मंसब-परस्तो-क़ौम फ़रोश[8]।
पुराने तर्जे-अमल में हज़ार मुशकिल है
नए असूल से खाली है फिक्र का आग़ोश।
मज़ा तो यह है कि यों ज़ेरे-आस्माँ रहिये
हज़ार गूना सुख़न दर दहान-व-लब खामोश[9]।
यही असूल है सरमाया-ए-सकूने-हयात[10]
"गदा-ए-गोशा नशीनी तो हफ़िज़ा मख़रोश[11]।"

---

१ बादशाह के निकट २. शासक और शासित का भेद ३. भिखारी ४. बराबर ५. राजा की पूजा ६. बादशाह की कृपा दृष्टि प्राप्त कर और अच्छे बस्त्र पहन अर्थात् ऐश कर ७. शासक की कृपा-प्राप्ति का उद्देश्य ८. पद का भूखा और राष्ट्र बेचने वाला ९. मुँह में हजार बातें हैं पर होंठ चुप हैं १०. जीवन के सुख की पूँजी ११. ऐ हाफिज तो एकान्त बासी साधु है चीख पुकार मत कर।

मगर खरोश[१] पे मायल है तू तो बिस्मिल्लाह
"बगीर बादा-ए साफ़ा बबाँगे-चंग बनोश।"[२]
शरीके-बज़्मे-अमीरो-वज़ीरो-सुल्ताँ हो।
लड़ाके तोड़ दे संगे-हविस[३] से शीशा-ए-होश।
पयामे-मुर्शिदे-शीराज़[४] भी मगर सुन ले।
कि है यह सिर्रे-निहाखाना-ए-जमीर फ़रोश।
महल्ले-नूरे तजल्लीस्त राये-अनवर शाह।
चू कुर्बे-ओ तलबी दर सफ़ाए-नीयत कोश[५]।

◈ ◈

१. चीख-पुकार २. शुद्ध शराब का प्याला और खुले खजाने पी जा ३. लोभ का पत्थर ४. शीराज के सन्त अर्थात् हाफिज का उपदेश ५. अनवर शाह का मत प्रकाश-पुंज है कि यदि तू बादशाह का सामीप्य चाहता है तो नीयत साफ रखने की कोशिश कर।

शायर

जूए-सरोद आफ़रीं[1] आती है कोहसार से
पीकर शराबे-लालागूं[2] मयकदा-ए-बहार से
मस्ते-मये-ख़राम[3] का सुन तो जरा पयाम तू।
ज़िंदा वही है, काम कुछ जिसको नहीं क़रार[4] से
फिरती है वादियों में क्या दुख़तरे-खुशख़रामे-अब्र[5]
करती है इश्क़ बाजियाँ सब्जा-ए-मुर्गज़ार[6] से

जामे-शराब कोह के ख़ुमकदे[7] से उड़ाती है।
पस्तो-बुलन्द करके तय खेतों को जा पिलाती है।

शायरे-दिल-नवाज भी बात अगर कहे खरी।
होती है उसके फ़ैज़ से मज़ूर-ए-ज़िंदगी[8] हरी
शाने-ख़लील[9] होती है उसके कलाम से अयाँ
करती है उसकी क़ौम जब अपना शआर[10] आज़री
अहले-ज़मीं नुस्खा-ए-ज़िंदगी-ए-दवाम[11] है
ख़ूने-जिगर से तरबियत पाती है जो सुख़न वरी

गुलशने-देहर में अगर जूए-मये-सुख़न न हो
फूल न हो, कली न हो, सब्जा न हो, चमन नहो

◈ ◈

---

१. सगीत उत्पन्न करती हुई नदी २. सुर्ख शराब ३. गति की मधु में विभोर ४. स्थिरता ५. घूमने मँडराने वाले बादल की बेटी ६. चिड़ियों के रहने का हरा-भरा जँगल ७. मधुशाला ८. जीवन की खेती ९. खलील हजरत इब्राहीम का उपनाम १०. चलन ११. अमर जीवन का नुस्खा १२. काव्य नदी की शराब।

नवेदे-सुबह

(१९१२ ई०)

आती है मशरिक से जब हंगामा-दर-दामन सहर
मंजिले-हस्ती से कर जाती है ख़ामोशी सफ़र
महफ़िले-कुदरत का आख़िर टूट जाता है सकूत
देती है हर चीज अपनी ज़िंदगानी का सबूत
चहचहाते हैं परिंदे पाके पैग़ामे-हयात
बाँधते हैं फूल भी गुलशन में अहरामे-हयात[२]

मुस्लिमे-ख्वाबीदा उठ ! हंगामा-आरा तू भी हो
वह चमक उट्ठा उफ़क़ गर्म-तकाजा तू भी हो।

वुसअते-आलम में रह-पैमा हो मिस्ले-आफ़ताब
दामने-गर्दू से नापैदा हो यह दाग़-सहाब[४]
खींच कर ख़ंजर किरन का, फ़िर हो सरगर्म-सतेज़[५]
फ़िर सिखा तारीकी-ए-बातिल को आदाबे-गुरेज़
तू सरापा नूर है खुशतर[६] है उर्यानी तुझे
और उरियाँ होके लाज़िम है खुद अफ़शानी तुझे

हाँ नुमाँयाँ होके बर्फ़-दीदा-ए-ख़फ़्फ़ाश हो
ए-दिले-कौनो-मकाँ कै राज़-मुज़्तर फाश हो।

◇ ◇

---

१. सुबह का शुभ समाचार २. अहराम वे वस्त्र जो हज को जाते समय पहने जाते हैं ३. मार्ग नापने वाला, यात्री ४. बादल का धब्बा ५. भागने का शिष्टाचार ६. आत्मप्रदर्शन ७. गुप्त रहस्य।

दुआ

यारब दिले मुस्लिम को वह ज़िंदा तमन्ना दे
जो क़लब को गर्मादे, जो रूह को तड़पादे।
फ़िर वादी-ए-फ़ाराँ के हर ज़र्रे को चमकादे
फ़िर शौक़े-तमाशा दे, फ़िर ज़ौक़े-तक़ाज़ा दे।
महरूमे-तसाशा को फ़िर दीदा-ए-बीना दे
देखा है जो कुछ मैंने औरों को भी दिखलादे।
भटके हुए आहू को फ़िर सूए-हरम ले चल
इस शहर के ख़ूगर को फिर बुसअते-सहरा दे।
पैदा दिले-वीराँ में फ़िर शोरिशे-महशर कर
इस महफिले-ख़ाली को फ़िर शाहिदे-लैला[1] दे।
इस दौर की जुलमत में हर क़लबे-परेशाँ को।
वह दाग़े-मुहब्बत दे जो चाँद को शर्मा दे।
रिफ़अत में मक़ासिद को हमगोशे-सुरैया कर।
खुद्दारी-ए-साहिल दे आज़ादी-ए-दरिया दे।
बेलौस मुहब्बत हो, बेबाक सदाक़त हो
सीनों में उजाला कर दिल सूरते मीना दे।
एहसास इनायत कर आसारे-मुसीबत का
इमरोज़ की शोरिश में अंदेशा-ए-फ़र्दां[4] दे।

मैं बुलबुले-नाला हूँ इक उजड़ गुलिस्ताँ का
तासीर[5] का सायल हूँ, मौहताज को दाना दे।

---

१. लैला जैसी प्रेयसी २. साहिल का स्वाभिमान ३. निर्लेप, निस्पृही ४. आज ५. आने वाले कल की चिंता ५. प्रभाव।

ईद पर शेर लिखने की फ़रमायश के जवाब में

यह शाला मार में इक बर्गे-ज़र्द[१] कहता था
गया वह मौसमे-गुल जिसका राज़दार हूँ मैं।
न पायमाल करें मुझ को ज़ायराने-चमन[२]
उन्हीं की शाख़े-नशेमन की यादगार हूँ मैं।
ज़रा से पत्ते ने बेताब कर दिया दिल को
चमन में आके सरापा ग़मे-बहार हूँ मैं।
ख़ज़ाँ में मुझको रुलाती है यादे-फ़स्ले-बहार
ख़ुशी हो ईद की क्योंकर कि सोगवार हूँ मैं।
उजाड़ हो गये अहदे-कुहन के मयख़ाने
गुज़श्ता[३] बादा परस्तों की यादगार हूँ मैं।

प्यामे-ऐशो-मुसर्रत हमें सुनाता है
हिलाले ईद हमारी हँसी उड़ाता।

१. पीला पत्ता २. चमन में घूमने वाले ३. अतीत के शरानी।

फ़ातमा बिन्ते-अबदुल्लाह्

(अरब लड़की जो सिसली द्वीप की जंग में ग़ाज़ियों को पानी पिलाती हुई शहीद हुई। (१६१२)

फातमा तू आबरू-ए-हिम्मते-मरहूम है
ज़र्रा-ज़र्रा तेरी मुश्ते-ख़ाक का मासूम है।
यह सआदत हूरे-सेहराई[1] तिरी क़िस्मत में थी
ग़ाज़ियाने[2]-दीं की सक्क़ाई[3] तिरी क़िस्मत में थी।
यह जिहाद मल्लाह् के रस्ते में बेतेग़ो-सिपर
है जसारत[4] आफ़रीं शोक़े-शहादत किस क़दर।
यह कली भी इस गुलिस्ताने-ख़ज़ाँ-मंजर में थी
ऐसी चिनगारी भी या रब अपनी ख़ाकिस्तर[5] में थी।

अपने सेहरा में बहुत आहू अभी पोशीदा हैं
बिजलियाँ बरसे हुए बादल में भी ख्वाबीदा है।

फ़ातमा गो शबनम-अफ़शाँ[6] आँख तेरे ग़म में है
नगमा-ए[7]-इशरत भी अपने नाला-ए-मातम में है।

---

१. जंगल की अप्सरा २. धर्म के सैनिक ३. पानी पिलाना ४. साहस-वर्धक ५. राख।

रक़्स तेरी ख़ाक का कितना निशात-अंगेज़[८] है
ज़र्रा-ज़र्रा ज़िंदगी के सोज़ से लबरेज़ है।
है कोई हंगामा तेरी तुरबते-ख़ामोश[९] में
पल रही है एक क़ौमे-ताज़ा इस आग़ोश में।
बेख़बर हूँ गरचे उन को वुसअते[१०]-मक़सद से मैं
आफ़रीनश[११] देखता हूँ उनकी इस मरक़द[१२] से मैं
ताज़ा अंजुम[१३] का फ़ज़ाए आस्माँ में है ज़हूर
दीदा-ए-इंसाँ से नामहरम[१४] है जिनकी मौजे-नूर
जो अभी उभरे हैं ज़ुलमत-ख़ाना-ए-अय्याम से
जिनकी ज़ौ[१५] ना-आशना है क़ैदे-सुबहो शाम से

जिनकी ताबानी में अंदाज़े-कुहन भी, नौ भी है।
और तेरे कौकबे-तक़दीर का परतौ[१६] भी है।

⟡ ⟡

६. आँसू बहाने वाली ७. उल्लास का गीत ८. उल्लासप्रद ९. मूक-कब्र
१०. उद्देश्य की महानता ११. उत्पत्ति १२. समाप्ति १३. नए सितारे
अपरिचित १५. प्रकाश १६. परछाई।

शबनम और सितारे

इक रात यह कहने लगे शबनम से सितरे
हर सुबह नए तुझ को मयस्सर है नज़ारे।
क्या जानिये तू कितने जहाँ देख चुकी है?
जो बन के मिटे उनके निशाँ देख चुकी है।
ज़ोहरा ने सुनी है यह ख़बर एक मलक से
इंसानों की बस्ती है बहुत दूर फ़लक से।

कह हमसे भी उस किशवरे-दिलकश[1] का फसाना।
गाता है क़मर जिसकी मुहब्बत का फ़साना।

ऐ तारो ! न पूछो चमनिस्ताने-जहाँ की
गुलशन नहीं, इक बस्ती है वह आहो-फ़ुग़ाँ की।
आती है सबा[2] वाँ से पलट जाने की ख़ातिर
बेचारी कली खिलती है मुरझाने की खातिर।
क्या तुमसे कहूँ क्या चमन-अफ़रो[4] कली है
नन्हा-सा कोई शोला-ए-बेसोज़ कली है।
गुल नाला-ए-बुलबुल की सदा सुन नहीं सकता
दामन से मिरे मौतियों को चुन नहीं सकता।

---

१. आकर्षक देश २. समीर ३. बिना आँच का शोला।

हैं नुग़ं-नवारेज़ गिरफ़्तार, ग़ज़ब है
उगते हैं तहे-साया-ए-गुल ख़ार ग़ज़ब है।
रहती है सदा नर्गिसे-बीमार की तर आँख
दिल तालिबे[५]-नज़्ज़ारा है महरूमे-नज़र आँख।
दिल सोख़ता-ए-गर्मी[६]-ए-फ़रियाद हैं शमशाद
ज़िंदानी[७] है और नाम को आज़ाद है शमशाद।
तारे-शररे[८]-आह हैं इंसाँ की ज़ुबाँ में
मैं गिरया-ए-गर्दूं हूँ गुलिस्ताँ की ज़ुबाँ में।
नादानी हैं यह गिरदे-ज़मी तौफ़[१०] क़मर का
समझा है कि दरमाँ[११] है वहाँ, दाग़े-जिगर का।

बुनियाद है काशाना-ए-आलम की हवा पर
फरियाद की तस्वीर है क़िरतास-फ़िज़ा पर।

१. फूल तले २. दृश्य का इच्छुक ३. फरियाद की गर्मी से जला हुआ ४. कैदी ५. आह की चिनगारी का सूत्र ६. आकाश का रोना ७. परिक्रमा ८. उपचार ९. वायुमंडल का पृष्ठ।

महासरा-ए-अदरना[1]

योरुप में जिस घड़ी हक़ो-बातिल[2] की छिड़ गई
हक़ खंजर-आज़माई[3] पे मजबूर हो गया।
गर्दे-सलीब, गर्दे-क़मर हलक़ा[4]-ज़न-हुई
शकरी हिसारे-दरना[5] में महसूर हो गया।
मुस्लिम सिपाहियों के ज़ख़ीरे हुए तमाम
रुए-उमीद आँख से मस्तूर हो गया।
आख़िर अमीरे-असकरे[6]-तुर्की के हुक्म से
आईने-जंग[7] शहर का दस्तूर हो गया।
हर शै हुई ज़ख़ीरा-ए-लशकर में मुन्तक़िल[8]
शाही गदा-ए-दाना-ए-असफ़ूर[9] हो गया।
लेकिन फ़क़ीहे-शहर-[10]ने जिस दम सुनी यह बात
गमा के मिस्ले-सायक़ा-ए[11]-तूर हो गया।
"ज़िम्मी का माल लशकरे-मुस्लिम पे है हराम"
फ़तवा तमाम शहर में मशहूर हो गया।
छूती न थी यहूदी-नसारी का माल, फ़ौज
मुस्लिम ख़ुदा के हुक्म से मजबूर हो गया।

१. अदरनाका घेरा २. झूठ-सच ३. तलवार चलाना ४. घेरा डालने वाली ५. दरना का दुर्ग ६. तुर्क सेना कमांडर ७. युद्ध के नियम ८. परिगत ९. असफूर के दाने का भिखारी १०. शहर का काजी ११. तूर की बिजली जैसा

गुलाम कादर रुहीला

रुहीला किस क़दर ज़ालिम जफ़ाजू[1] कीना-परवर[2] था
निकालीं शाहे-तैमूरी की आँखें नोके-ख़ंजर से।
दिया अहले-हरम को रक्स का फ़र्मां सितमगर ने
यह अंदाज़े-सितम कुछ कम न था आसारे महशर से।
भला तामील इस फ़र्माने-ग़ैरत[3] कुश की मुम्किन थी
शहनशाहे-हरम की नाज़नीनाने[4]-समनबर से।
बनाया आह सामाने[5]-तरब बेदर्द ने उनको।
निहाँ था हुस्न जिनका चश्मे-महरो[6]-माहो-अख़तर से।
लरज़ते थे दिले-नाज़ुक, क़दम मजबूरे-जुम्बिश थे
रवाँ दरिया-ए-खूँ शहज़ादियों के दीदा-ए-तर से।
योंही कुछ देर तक महवे-नज़र आँखें रहीं उसकी
किया[6] घबराके फ़िर आज़ाद सर को बारे-मग़फ़र[7] से।
कमर से उठके तेग़े-जाँसिताँ, आतशफ़िशाँ खोली
सबक़ आमोज़े-[9] ताबानी हो अंजुम जिसके जोहर से।

---

१. अत्याचारी २. कपटी ३. स्वाभिमान को नष्ट करने वाला आदेश ४. फूल जैसी कोमल रमणियाँ ५. विलासता की सामग्री। ६. सूरज, चाँद और तारों की आँख ७. हथियारों का बोझ ८. प्राण घातक तलवार ९. रोशनी की सीख देने वाली।

रख खंजर वो आगे और फ़िर कुछ सोचकर लेटा
तक़ाज़ा कर रही थी नींद गोया चश्मे-अहमर[10] से।
बुझाए ख़्वाब[11] के पानी ने अख़गर[12] उसकी आँखों के
नज़र शर्मा गई ज़ालिम की दर्द-अंगेज़ मंज़र से।
उठा फ़िर, और तैमूरी हरम से यों लगा कहने
शिकायत चाहिये तुमको न कुछ अपने मुक़द्दर से।
मिरा मसनद पे सोजाना बनावट थी, तकल्लुफ़ था
कि ग़फ़लत दूर है शाने-सफ़[13]-आराने-लशकरसे।
यह मक़सद था मिरा इससे, कोई तैमूर की बेटी
मुझे गाफ़िल समझ कर मार डाले मेरे ख़ंजर से।

मगर यह राज़ आख़िर खुल गया सारे ज़माने पर
हमीयत नाम है जिसका गई तैमूर के घर से।

---

१. सुर्ख आँख २. नींद ३. अंगारे ४. संघर्षरत सेना की शान

एक मकालमा[1]

इक मुर्गे[1]-सरा[2] ने यह कहा मुर्गे[3]-हवा से
परदार अगर तू है तो क्या मैं नहीं परदार।
गर तू है हवागीर ता हूँ मैं भी हवागीर
आज़ाद अगर तू है नहीं मैं भी गरिफ़तार।
परवाज़ खसूसियते-हर साहबे-पर है
क्यों रहते हैं मुर्ग़ाने हवा मायले-पिन्दार।
मजरूह[4] हमीयत जो हुई मुर्गे-हवा की
यों कहने लगा सुनके यह गुफ़तारे[5]-दिलाज़ार।
कुछ शक नहीं परवाज़ में आज़ाद है तू भी
हद है तिरी परवाज़ की लेकिन सरे-दीवार।
वाक़िफ़ नहीं तू हिम्मते-मुर्ग़ाने-हवा से
तू ख़ाक-नशेमन, उन्हें गर्दूं से सरोकार।
तू मुर्ग़े-सराई खुरिश अज़ ख़ाक बजोई
मा दर सददे दाना ब अंजुम ज़दा मिनक़ार।

---

१. सम्भाषण २. पालतू चिड़िया ३. स्वछंद चिड़िया ४. घायल ५. दिल दुखाने वाले बोल

मैं और तू

मज़ाके-दीद से ना-आशना नज़र है, मिरी
तिरी निगाह है फ़ितरत की राज़दाँ फ़िर क्या ?
रहीने-शिकवा-ए-अय्याम[1] है ज़ुबाँ मेरी
तिरी मुराद पे है दौरे-आस्माँ फ़िर क्या ?
रखा मुझे चमन-आवारा मिस्ले-मौजे-नसीम
अता फ़लक में किया तुझको आशयाँ फ़िर क्या ?
फ़ज़ूँ[2] है सूद से सरमाया-ए-हयात तिरा
मिर नसीब में है काविशे-ज़ियाँ[3] फ़िर क्या ?
हवा में तैरते फ़िरते है तेरे तैयारे
मिरा जहाज़ है महरूमे-बादबाँ फ़िर क्या ?
क़वी शुदेम, चे शुद ? नातवाँ शुदेम चे शुद[4]
चुनीं शुदेम चेशुद ? या चुनाँ शुदेम चे शुद ?
बहेचगूना दरीं गुलिसताँ क़रारे नेस्त
तू गर बहार शुदी, मा ख़ज़ां शुदेम चे शुद ?[5]

१. धूर्तता भरा शिकवा करने में संलग्न २. अधिक ३. हानि की दुनिया
४. ताकतवर हुए तो क्या ? कमजोर हुए तो क्या ? ऐसे हुए तो क्या और वैसे हुए तो क्या ? ५. इस बाग में तनिक भी शान्ति नहीं है। तू अगर बसन्त हुआ और मैं पतझड़ हुआ तो क्या ?

तज़्मीन बर शेर अबुतालिब कलीम

खूब है तुझको शआरे-साहबे-मसरब[१] का पास
कह रही है ज़िंदगी तेरी कि तू मुस्लिम नहीं।
जिससे तेरे हल्क़ा-ए[२]-ख़ातिम में गर्दूं था असीर
ए सुलेमाँ तेरी ग़फ़लत ने गंवाया वह नगीं।
वह निशाने-सजदा जो रोशन था कौकब की तरह
हो गई है उससे ना आशना तेरी जबीं।
देख तो अपना अमल तुझको नज़र आता है क्या
वह सदाक़त जिसकी बेबाकी थी हैरत-आफ़रीं।
तेरे आबा की निगह बिजली थी जिनके वास्ते
है वही बातिल तिरे काशान-ए-दिल में मकीं।
ग़ाफ़िल ! अपने आशियाँ को आके फ़िर आबाद कर
नग़माज़न है तूरे-मानी[३] पर कलीमे-नुकत[४] संज।
सरकशी बाहरे कि कर दी रामे-औ बायद शुदन
शोलासाँ अज़ हरकुजा बरखास्ती आँजा शुदन[५]।

◈ ◈

१. हजरत मुहम्मद के चलन २. अंगूठी का घेरा ३. अर्थ का तूर ४. बारीकियों को समझने वाला। ५. तू कि सबका विद्रोही है कम-से-कम उसका तो भक्त बना शोले की तरह जहाँ से उत्पन्न होता है, वहाँ तो रहा।

शिबलो-व-हाली

मुस्लिम से एक रोज़ यह इक़बाल ने कहा
दीवाने-जुज़्वो[1]-कुल में है तेरा वजूद फ़र्द।
तेरे सरोदे-रफ़ता के नग़मे, अलूमे[2] नौ
तहज़ीब तेरे क़ाफ़लि-हाय-कुहन की गर्द।
पत्थर है उसके वास्ते मौजे-नसीम भी
नाज़ुक बहुत है आयना-ए-आबरू-ए-मर्द।
मर्दाने[3]-कार ढूँढ के असबाबे-हादसात[4]
करते हैं चारा-ए-सितमे चर्ख़-लाजवर्द।
पूछ उनसे जो चमन के है देरीना[5] राजदार
क्यों कर हुई ख़ज़ाँ तिरे गुलशन से हम-न बर्द[6]।
मुस्लिम मिरे कलाम से बेताब हो गया
ग़म्माज़[7] हो गई ग़मे-पिनहाँ की आहे-सर्द।
केहने लगे कि देख तो कैफ़ियते-ख़ज़ाँ
औराक़[8] हो गये शजरे-ज़िंदगी[9] के ज़र्द।
खामोश हो गये चमनिस्ताँ के राज़दार

---

१. अंश और कुल का संग्रह २. नई विधाएँ ३. कर्मठ पुरुष ४. घटनाओं के कारण ५. पुरान मित्र ६. संघर्षशील ७. चुगली खाने वाला ८. पन्ने ९. जीवन पेड़।

सरमाया-ए-गुदाज़[10] थी जिनकी नवा-ए-दर्द ।
शिबली को रो रहे थे अभी अहले-गुलसिताँ
हाली भी हो गया सूए-फ़िरदौस रह-नवर्द[11] ।
"अकनूँ सरा दिमाग़ कि पुरसद ज़ाबाग़बाँ
बुलबुल चे गुफ़्तो-गुलचे शुनीदो-सबाचे कर्द ?

१०. पिघला देने वाला गुण ११. यात्री १२. इस बात का अब किसे दिमाग है कि माली से यह पूछे कि बुलबुल ने क्या कहा, फूलने क्या सुना और हवा ने क्या किया ।

इरतका[1]

सतेज़ा-कार[2] रहा है अज़ल से ता-इमरोज
चिराग़े-मुस्तफ़वी[3] से शरारे-बूलहबी[4] ।
हयात, शोला-मिज़ाजो-ग़यूरो शोर-अंगेज़[5] ।
सरिश्त[6] उसकी है मुशिक-कशी[7],जफ़ा-तलबी[8]
सकूते-शाम से ता नग़मा-ए-सहर-गाही[9] ।
हज़ार मरहला हाय-फ़ुग़ाने-नीम-शबी[10] ।
कशाकशे-जमी-गमा,[11] तपो-तराशो-ख़राश[12]
ज़ख़ाके-तीरा दरूँ, ता बशोश-ए-हलबी[13] ।
मुक़ाम-बस्तो-शिकस्तो-फ़िशारो-सोज़ो-कशीद[14]
मयाने-क़तरा-ए-नेसाँ-व-आतशे-अनबी[15] ।

---

१. विकास २. संघर्षरत ३. इस्लाम का चिराग ४. इस्लाम विरोधी शोला ५. आग के स्वभाव वाला, स्वाभिमानी और क्रांतिकारी ६. स्वभाव ७. कठिनाइयों से भूजना ८. सुबह का गीत १०. आधी रात की आहों के हजार मरहले ११. सर्दी-गर्मी की मुसीबत १२. व्यग्रता और उष्णता १३. काली मिट्टी से चमकते हुए शीशे तक १४. बनने बिगड़ने, पिसने और जलने का स्थान १५. अंगूरी शराब की आग और मेंह की बूंद के दर्मियाँ

इसी कशाकशे-पैह्म[1] से ज़िंदा हैं अक़्वाम
यही है राज़-तबो-ताबे मिल्लते-अरबी[2] ।

मुग़ाँ कि दाना-ए-अंगूर आब मी साज़ंद
सितारा मी शिकनंद, आफ़ताब मी साज़ंद[3]

◈ ◈

---

१. सतत संघर्ष २. मुहम्मद के अनुयायी राष्ट्र के जीवन का रहस्य ३. शराब खींचने वाले जो अंगूर के दाने से शराब बनाते हैं गोया सितारे तोड़ कर सूरज बना देते हैं ।

सिद्दीक़[1]

इक दिन रसूले-पाक ने असहाब[2] से कहा
दें माल राहे हक़में जो हों तुम में पालदार।
इर्शाद सुन के फ़र्ते-तरब[3] से उमर उठे
उस रोज़ उनके पास थे दरहम[4] कई हज़ार।
दिल में यह कह रहे थे कि सिद्दीक़ से ज़रूर
बढ़ कर रखेगा आज क़दम मेरा राहवार[5]।
लाये ग़रज़ कि माल रसूले-अमों के पास
ईसार[6] की है दस्त-निगर[7] इब्तदा-ए-कार।
पूछा हज़ूर सर्वरे-आलम[9] ने ऐ उमर
मुस्लिम है अपने ख़ेशो-अक़ारिब[10] का हक़गुज़ार।
की अर्ज़ निस्फ़[12] माल है फ़रज़न्दो-ज़न का हक़
बाक़ी, जो है वह मिल्लते-बैज़ा पे है निसार।
उतने मे वह रफ़ीक़े-नबूवत[14] भी आ गया
जिससे बिना-ए-इश्क़ो-मुहब्बत[15] है उस्तवार।
ले आया अपने साथ वह मर्दे-वफ़ा-सरिश्त[16]
हर चीज़, जिससे चश्मे-जहाँ में हो एतबार।

---

१. हज़रत अबूबक्र का उपनाम २. मित्रमण्डली ३. अधिक प्रसन्नता ४. अरबी सिक्का ५. घोड़ा ६. बलिदान ७. मुहताज ८. कार्य का प्रारम्भ ९. हजरत मुहम्मद १०. सम्बन्धी ११. हक पूरा करने वाले १२. आधा १३. पत्नी और पुत्र १४. हज़रत अबूबक्र जो हज़रत मुहम्मद के बहुत बड़े भक्त थे १५. निष्ठावान पुरुष १६. जेवर, रुपया, पैसा, घर का सामान।

मिलके-यमीनो-दरहमो-दीनारो-रख्तो-जिंस[1]
अस्पे - क़मरसुमो - शुतरो - कातिरो - हमार[२]
बोले हज़ूर चाहिए फ़िक्रे-अयाल[३] भी
कहने लगा वह इश्क़ो-मुहब्बत का राज़दार
ऐ तुझसे दीदा-ए-महो-अंजुम[४] फ़रोगगीर[५]
ऐ तेरी ज़ात बाइसे-तकवीने - रोजगार[६]
परवाने को चिराग़ है, बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस।

१. घोड़े, ऊँट और भेड़-बकरी आदि २. परिवार की चिन्ता ३. चाँद-तारों की आँखें ४. रोशनी हासिल करने वाली ५. दुनिया को चमकाने का कारण।

तहज़ीबे-हाज़िर

तज़मीन बर शेर फ़ैज़ी

हरारत है बला की बादा-ए-तहज़ीबे-हाज़िर में[1]
भड़क उट्ठा भभूका बन के मुस्लिम का तने-ख़ाकी।
किया ज़र्रे को जुगनू, देके ताबे-मुस्तग्रार[2] उसने
कोई देखे तो शोख़ी ग्राफ़ताबे-जलवा-फ़र्मा की।
नए अंदाज़ पाये नौजवानों की तबीयत ने
यह रानाई, यह बेदारी, यह ग्राज़ादी, यह बेबाकी
तग़य्युर[3] ग्रा गया ऐसा, तदब्बुर में[4] तखैयुल में।
हँसी समझी गई गुलशन में गुंचों की जिगरचाकी।
किया गुम ताज़ा परवाज़ों[5] ने ग्रपना ग्राशयाँ लेकिन
मनाज़िर[6] दिलकुशा दिखला गई साहिर[7] की चालाकी
हयाते-ताज़ा[1] ग्रपने साथ लाई लज़्ज़ते क्या क्या ?
रक़ाबत, खुद फ़रोशी[3], नाशकेबाई[4], हवसरनकी[5]।
करोग़े शमए-नौ से बज़्मे-मुस्लिम जगमगा उठी।
मगर कहती है परवानों से मेरी कोहना-इन्द्रा[6]।

तू ए परवाना ! ईं गर्मी ज़शए-मेफ़िले-दारी।
चुमन दर ग्रातशे-खुद सोज़ ग्रगर सोज़े-दिले दारी[7]।

◈ ◈

१. नई सभ्यता की शराब २. ग्रस्थिर उजाला ३. परिवर्तन ४. नेपृत्व ५. नई उड़ान ६. मंजर का बहु बचन, दृश्य ७. जादूगर ८. प्रतिद्वंद्विता ९. ग्रात्मविक्रय १०. ग्रसन्तोष ११. लोभ १२. पुरानी समझ १३. ये परवाने तू ग्रपने भीतर यह गर्मी महफिल की शमभ से लेता है। मेरी तरह ग्रपनी ग्राग में जल ग्रगर तेरे दिल में जलन है।

वालदा मरहूमा की याद में

ज़र्रा-ज़र्रा दहर का ज़िदानी-ए-तक़दीर[1] है
परदा-ए-मजबूरी-व-बेचारगी[2] तदबीर है
आस्माँ मजबूर है शम्सो-क़मर मजबूर हैं
अंजुमे-सीमाबपा[3] रफ्तार पर मजबूर है
हैं शिकस्त-अंजाम[4] ग़ुंचे का सबू गुलज़ार में
सब्ज़ा-व-गुल भी है मजबूरे-नमू[5] गुलज़ार में
नग़मा-ए-बुलबुल हो या आवाजे-ख़ामोशे-ज़मीर
है इसी ज़ंजीरे-आलमगीर[6] में हर शय असीर।

आँख पर होता है जब यह सिर्रे-मजबूरी[7] अयाँ।
खुश्क हो जाता है दिल में अश्क का सैले-खाँ[8]।
क़ल्बे-इंसानी में रक़्से-ऐशो-ग़म[9] रहता नहीं।
नग़मा रह जाता है लुत्फ़े-ज़ीरो-बम[10] रहता नहीं।

---

१. भाग्य का बंदी २. विवशता का पर्दा ३. बेचैन सितारे ४. टूटना जिसका अन्त हो ५. उत्पत्ति के लिए विवश ६. संसार को बाँधने वाली जंजीर ७. मजबूरी का रहस्य ८. बहता हुआ धारा ९. उल्लास और विषाद का नृत्य १०. संगीत के स्वर का उतार चढ़ाव।

इल्मो-हिकमत रहज़न-सामने-अश्को-आह[1] है।
यानी इक अलमास का टुकड़ा दिले-आगाह है।
गरचे मेरे बाग़ में शबनम की शादाबी नहीं।
आँख मेरी माया-दारे-अश्के-उन्नाबी[2] नहीं।
जानता हूँ आह में आलामे-इंसानी[3] का राज।
है नवा-ए-शिकवा से खाली मिरी फिकरत का साज़।
मेरे लब पर किस्सा-ए-नैरंगी-ए-दौरां नहीं।
दिल मिरा हैरॉं नहीं, खंदाँ नहीं गिरयाँ नहीं।

पर तिरी तस्वीर कासिद गिराया-ए-पैहम की है।
आह यह तरदीद मेरी हिकमते-मोहकम[5] की है।

गिरया-ए-सरशार[6] से बुनियादे-जाँ पायंदा[7] है
दर्द के इरफा से अक़्ले-संग दिल शर्मिन्दा है
मौज-दूदे-आह[8] से आईना है रोशन मिरा
गजे-आबे-दर्द[9] से मामूर है दामन मिरा
हैरती[10] हूँ मैं तिरी तस्वीर के एजाज़[11] का
रुख़ बदल डाला है जिसने वक़्त की परवाज़ का
रफ्ता-व-हाज़िर को गोया पाबपा[12] उसने किया
अहदे-तिफ़ली से मुझे फ़िर आशना उसने किया
जब तिरे दामन में पलती थी वह जाने-नातवाँ
बात से अच्छी तरह मेहरम न थी जिसकी ज़ुबाँ

---

१. आँसू और आह की सामग्री का लुटेरा २. सुर्ख आँसुओं का कोष ३. इंसान की मुसीबतें ४. सतत रुदन ५. दृढ़ दर्शन ६. तेखुदी का रोना ७. स्थिर ८. आह के धुएँ का तरंग ६. दर्द के दरिया का खजाना १० आश्चय चकित ११. नमस्कार १२. पाँव से पाँव मिलाये हुए।

ग्रौर ग्रब चर्चे है जिसकी शोखी-ए-गुफ़तार के
बेबहा[1] मोती है जिसकी चश्मे-गोहरकार[2] के।
इलम की संजीदा गुफ़तारी[3], बुढ़ापे का शऊर
एज़ाज़[4] की शौकत[5], जवानी का ग़रूर।
ज़िदगी की ग्रौजगाहों[6] से उतर ग्राते हैं हम
सोहबते-मादर[7] में तिफ़ले-सादा[8] रह जाते हैंहम।
बेतकल्लुफ़ ख़ंदाजन है फ़िक्र से ग्राज़ाद हैं
फ़िर उसी खोये हुए फ़िरदौस में ग्राबाद हैं।
किसको होगा ग्रब वतन में ग्राह मेरा इंतज़ार ?
कौन मेरा ख़त न ग्राने से रहेगा बेक़रार—?
ख़ाके-मर्क़द पर तिरी लेकर यह फ़रियाद ग्राऊँगा
ग्रब दुग्राए-नीम शब में किसको मैं याद ग्राऊँगा
तरबियत से तेरी मैं ग्रंजुम का हमक़िस्मत हुग्रा
घर मिरे ग्रजदाद का सरमाया-ए-इज्जत हुग्रा
दफ़तरे-हस्ती में थी ज़रीं बरक़ तेरी हयात
थी सरापा दीनो-दुनिया का सबक तेरी हयात
उम्र भर तेरी मुहब्बत मेरी ख़िदमतगर रही
मैं तिरी खिदमत के क़ाबिलजब हुग्रा तू चल बसी
वह जवाँ, क़ामत[1] में है जो सूरते-सर्वे-बुलंद
तेरी ख़िदमत से हुग्रा जो मुझ से बढ़कर बेहराम[10]

---

१. पाँव से पाँव मिलाये हुए २. ग्रमूल्य ३. मोती बरसाने वाली ग्राँख ४. गम्भीर वाक्य ५. सांसारिक प्रतिष्ठा ६. शान ७. बुलन्दियाँ ८. यात्रा की संगति ९. निरीह बालक १०. कद ११. शुरू की भाँति बुलन्द १२. सफल।

कारोबारे-ज़िंदगानी में वह हम पहलू मिरा
वह मुहब्बत में तिरी तसवीर, वह बाज़ू मिरा।
तुझको मिस्ले-तिफ़लके-बेदस्तो-पा रोता है[1] वह
सब्र से ना-आशना सुबहो-मसा रोता है वह।
तुख़्म जिसका तू हमारी किश्ते-जाँ में बो गई
शिरकते-ग़म से वह उलफत और मोहकम हो गई।
आह! यह दुनिया यह मातम-खाना-ए-बरनाव-पीर[2]।
आदमी है किसतलिस्मे-दोशो-फ़र्दा[3] का असीर।
कितनी मुश्किल ज़िंदगी है, क़िस क़दर आसाँ है मौत
गुलशने-हस्ती में मानंदे-नसीम अर्ज़ा है मौत
ज़लज़ले हैं, बिजलियाँ हैं, क़हत हैं आलाम हैं
कैसी-कैसी दुख़्तराने-मादरे-अय्याम[3] हैं
कलबा-ए-अफ़लास में[4], दौलत के काशाने में मौत
दश्तो-दर में, शहर में, गुलशन में, वीराने में मौत!
मौत है हंगामा आरा कुलज़ुमे-खामोश में
डूब जाते हैं सफ़ीने मौत की आगोश में
ने मजाले-शिकवा है ने ताक़ते-गुफ़तार है
ज़िंदगानी क्या है इक तौके-गुलू अफ़शार[5] है।
क़ाफ़िले में ग़ैरे, फ़रियादे-जरस[6] कुछ भी नहीं
इक मता-ए-दीदा-ए-तरके[7] सिवा कुछ भी नहीं।

१. बेकस बालक की भांति २. जवान और बूढ़ों का शोक-गृह ३. आज और कल के जादू का बन्दी ४. युग की माँ बेटियां ५. गरीब की झोंपड़ी ६. गला घोंटने वाला फंदा ७. जरस की आवाज के अतिरिक्त ८. रोती हुई आंख के अतिरिक्त।

ख़त्म हो जायगा लेकिन इम्तिहाँ का दौर भी
है पसे-नौ-परदा-ए-गर्दूं[1] अभी दौर और भी।
सीना-चाक इस गुलसिताँ में लाला-व-गुल है तो क्या
नाला-व-फरियाद पर मजबूर बुलबुल है तो क्या ?
झाड़ियाँ जिन के कफ़स में कैद है आहे-खज़ाँ
सब्ज कर देगी उन्हें बादे-बहारे-जावदाँ[2]।
ख़ुफ्ता ख़ाके बे-सिपर में है शरार अपना तो क्या
आरज़ी महमिल है यह मुश्ते-ग़ुबार अपना तो क्या ?
ज़िंदगी की आग का अंजाम खाकिस्तर नहीं
टूटना जिसका मुक़द्दर हो यह वह गोहर नहीं।
ज़िंदगी महबूब ऐसी दीदा-ए-कुदरत में है
ज़ौक़े-हिफ्जे-ज़िंदगी[3] हरचीज की फ़ितरत में है।
मौत के हाथों से मिट सकता अगर नक्शे-हयात
आम यों उसको कर देता निज़ामे-कायरात।
है अगर अरजां तो यह समझो अजल कुछ भी नहीं
जिस तरह सोने से जीने में ख़लल कुछ भी नहीं।
आह गाफ़िल ! मौत का राजे-निहाँ कुछ और है
नक्श की नापायदारी से अयाँ कुछ और है।
जन्नते-वज्जारा है नक्शे-हवा बाला-ए-आब
मौजे-मुज़तर तोड़ कर तामीर करती है हबाब[8]।

१. आकाश के नौ पर्दों के पीछे २. स्थायी बसन्त की हवा ३. जीवन-रक्षा की लगन ४. पानी पर ५. बुलबुले का निर्माण ६. निर्माण का रूप।

मौज के दामद में फिर उसको छिपा देती है यह
कितनी बेदर्दी से नक्श अपना मिटा देती है यह।
फ़िर न कर सकती हबाब अपना अगर पैदा हवा
तोड़ने में इसके यों होती न बेपरवा हवा।
इस रविश का क्या असर है हैयते-तामीर[1] पर
यह तो हुज्जत[2] है हवा कीं कुवते-तामीर पर।
फ़ितरते-हस्ती शहीदे-आरजू रहती न हो
खूबतर पैकर की इसको जुस्तजू रहती न हो।
आह ! सीमाबे-परेशाँ, अंजुमे गर्दूं-फरोश[3]
शोख यह चिनगारियाँ, ममनूने-शब[4] है जिनका सोज़।
अक्ल जिससे सर बज़ानू है वह मुद्दत इनकी है
सरगुजश्ते-नौए-इन्सां[5] एक साअत[6] इनकी है।
फिर यह इन्साँ आँ सूए-अफ़लाक है जिसकी नजर
कुदसियों से भी मक़ासिद में है जो पाकीजातर।
जो मिसाले-शमए-रोशन महफ़िले-क़ुदरत में है
आस्माँ इक नुक़ता ज़िसकी बुसअते-फ़ितरत में है।
जिसकी नादानी सदाक़त के लिए बेताब है
जिसका नाखुन साजे-हस्ती के लिए मिजराब है।
शोला यह कमतर है गर्दूं के शरारों से भी क्या
कमबहा[7] है आफताब अपना सितारों से भी क्या ?

---

१. दलील, युक्ति २. आकाश को बेचने वाले तारे ३. रात की कृतज्ञ ४. मानव जाति की कहानी ५. घड़ी ६. कम कीमत।

तुख्मे-गुल की आँख जेरे-खाब भी बेख्वाब है
किस क़दर नशवो-नुमा[१४] के वास्ते बेताब है।
जिंदगी का शोला इस दाने में जो मस्तुर है
खुदनुमा[१५], खुदफ़ज़ाई[१६] के लिए मजबूर है।
सर्दी-ए-मरक़द से भी अफ़सुर्दा हो सकता नही
ख़ाक में दब कर भी अपना सोज खो सकता नही।
फूल बन कर अपनी तुरबत से निकल आता है यह
मौत से गोया कबा-ए-ज़िंदगी पाता है यह।
है लहद इस कुव्वते-आशुफता[४] की शीराज़ा-[५] बंद
डालती है गरदने-गँदूं में जो अपनी कमंद।
मौत तजदीदे-मज़ाक़े-ज़िंदगी[६] का नाम है
ख्वाब के पर्दे में बेदारी का इक पैग़ाम है।
ख़ूगरे-परवाज़[७] को परवाज़ में डर कुछ नहीं
मौत इस गुलशन में जुज़ संजीदने-पर कुछ नहीं।
कहते हैं-अहले-जहाँ दर्दे-अजल है लादवा
जख्मे-फ़ुर्कत वक़त के मरहम से पाता है शफ़ा।
दिल, मगर ग़म मरने वालों का जहाँ आबाद है
हलक़ा-ए-जंजीरे-सुब्हो-शाम से आज़ाद है।
वक़त के अफ़सूँ से थमता नाला-ए-मातम नहीं
वक़त जख्मे-तेग़े-फुर्कत का कोई मरहम नहीं।

---

१. विकास २. आत्म प्रदर्शन ३. विद्रोही शक्ति ४. संगठित ५. जीवन को फिर से शुरू करने की चाह ६. उड़ने का आदी ७. उड़ाने की समझ ८. आँसूओं का घर ९. धैर्य का सामर्थ्य

सर पे आ जाती है जब कोई मुसीबत नागहाँ
अश्क पैहम दीदा-ए-इंसाँ से होते हैं रवाँ।
रब्त हो जाता है दिल को नाला-व-फ़रियाद से
खूने-दिल बहता है आँखों के सरिश्काबाद[८] से।
आदमी ताबे-शके[९] बाई से गो महरूम है
उसकी फ़ितरत में यह इक एहसासे-नामालूम है।
जौहरे-इंसाँ अदम से आशना होता नहीं
आँख से ग़ायब तो होता है फ़ना होता नहीं।
रख्ते-हस्ती राख, ग़म की शोला-अफ़शानी से है
सर्द यह आग इस लतीफ़ एहसास के पानी से है।

आह ! यह ज़ब्ते-फ़ुगाँ ग़फ़लत की खामोशी नहीं
आगही[१०] है यह दिलासाई[११], फरामोशी नहीं।

पर्दा-ए-मशरिक से जिस दम जलवागर होती है सुब्ह
दाग़ शब का, दामने-आफ़ाक़ से धोती है सुब्ह।
लाला-ए-अफ़सुर्दा को आतश-क़बा करती है यह
बेज़ुबाँ तायर को सरमस्ते-नवा करती है यह।
सीना-ए-बुलबुल के ज़िंदाँ से सरोद-आज़ाद है
सैकड़ों नग़मों से बादे-सुबहदम आबाद है।
खुफ़्त गाने-लाला जारो-कोहसारो-रोदबार
होते हैं आख़िर अरूसे[१२]-ज़िंदगी से हमकनार।

---

१. जीवन-सामग्री २. ज्ञान ३. साँत्वना ४. नदी पहाड़ और बाग के सूचक ५. जीवन की दुलहन ६. जीवन के नियम

यह अगर आईने-हस्ती है कि हो हर शाम सुब्ह
मरक़दे इंसाँ की शब का क्यों न हो अंजाम सुब्ह ?

दामे-सीमीने-तख़य्युल[१] है मिरा आफ़ाक़-गीर[२]
कर लिया है जिससे तेरी याद को मैंने असीर।
याद से तेरी दिले-दर्द-आशना मामूर है
जैसे काबे में दुआओं से फज़ा मामूर है।
वह फ़रायज़ का तसलसुल नाम है जिसका हयात
जलवागहें उसकी हैं लाखों जहाने-बेसबात[३]।
मुख़्तलिफ़ हर मंज़िले-हस्ती की रस्मो-राह है
आख़रत भी ज़िंदगी की एक जोलाँगाह है।
है वहाँ बेहासिली किश्ते[४]-अजल के वास्ते
साज़गार[५] आबो-हवा, तुख़्मे-अमल[६] के वास्ते।
नूरे-फ़ितरत ज़ुलमते[६]-पैकर का ज़िंदानी नहीं
तंग एसा हलक़ा-ए-अफ़कारे[७]-इंसानी नहीं।
ज़िंदगानी थी तिरी महताब से ताबिंदातर
खूबतर था सुबह के तारे से भी तेरा सफ़र।
मिस्ले-एवाने-सहर,[८] मरक़द फ़रोज़ाँ[९] हो तिरा
नूर से मामूर यह ख़ाकी शबिस्ताँ हो तिरा।

आस्माँ तेरी लहद पर शोला-अफ़शानी करे
सब्ज़ा-ए-नो रुस्ता[१०] इस घर की निगहबानी करे।

---

१. कल्पना की चाँदी का जाल २. दुनिया पर छा जाने वाला ३. नश्वर संसार ४. मौत की खेती ५. कर्म का अंकुर ६. भौतिक अंधकार ७. मानव चिन्तन का फंदा ८. सुबह के प्रासाद की भान्ति ९. चमकदार १०. नवजात सब्ज़ा

शुश्रा-ए-श्राफताब

'सुबह जब मेरी निगाह सौदाई-ए-नज़्ज़ारा थी।
श्रास्माँ पर इक शुश्रा-ए-श्राफ़ताब श्रावारा थी
मैंने पूछा उस किरन से—"ऐ सरापा इज़तराब!
तेरी जाने-नाशेकेबा में है कैसा इज़तराब?
तू कोई छोटी-सी बिजली है कि जिसको श्रास्माँ
कर रहा है दामने-श्रक़वाम की खातिर जवाँ?
यह तड़प है या श्रज़ल से तेरी खू[२] है, क्या है यह?
रक्स है, श्रावारगी है, जुस्तुजू है, क्या है यह?"
"खुफ्ता हंगामे हैं मेरी हस्ती-ए-खामोश में
परवरिश पाई है मैंने सुबह की श्रागोश में।
मुजतरिब हरदम मिरी तक़दीर रखती है मुझे
जुस्तजू में लज्ज़ते तनवीर[३] रखती है मुझे।
बर्क़-श्रातश-खू हूँ मैं, फ़ितरत में गो नारी हूँ मैं
महरे-श्रालमताब[१] का पैग़ामे-बेदारी हूँ मैं।
सुर्मा बनकर चश्मे-इंसाँ में समा जाऊंगी मैं
रात ने जो कुछ छिपा रक्खा था दिखलाऊँगी मैं।
तेरे मस्तों में कोई जोश्रा-ए-हुशयारी[२] भी है?
सोने वालों में किसी को ज़ौक़-बेदारी भी है?

---

१. सूरज की किरन २. श्रादत, स्वभाव ३. प्रकाश का श्रानन्द।
१. संसार को चमकाने वाला सूरज २. चातुर्य ढूँढ़ने वाला।

उर्फ़ी[1]

महल ऐसा किया तामीर उर्फ़ी के तखय्युल ने
तसद्दक़ जिस पे हैरत-ख़ाना-ए-सीना-व-फाराबी[2] ।
फ़ज़ा-ए-इश्क़ पर तहरीर की उसने नवा ऐसी
मयस्सर जिससे है आँखों को अब तक अश्के-उन्नाबी ।
मिरे दिल ने यह इक दिन उसकी तुरबत से शिकायत की
नहीं हंगामा-ए-आलम में अब सामाने-बेताबी ।
फ़ुग़ाने-नीम-शब शायर की बारे[3]-गोश होती है
न हो जब चश्मे-महफ़िल, आशना-ए-लुत्फ़े-बेख़्वाबी[4] ।
किसी का शोला-ए-फ़रियाद हो ज़ुलमतरुबा[5] क्यों कर
गराँ है शबपरस्तों पर सहर की आस्माँ-ताबी[6] ।
सदा तुरबत से आई—"शिकवा-ए-अहले-जहाँ कम[7] गो
नवारा तल्ख़तर मी ज़न चू ज़ौक़े-नग़मा कम याबी[8]
"हुदी रा तेज़तर मी ख़्वाँ चू महमिल रा गराँ बीनी[9] ।'

१ फारसी का एक प्रसिद्ध कवि २. सीना और फाराबी दो बड़े दार्शनिक उनका विस्मय-गृह ३. कान का बोझ ४. जागने के आनंद से परिचित ५. अंधेरा भगाने वाला ६. आकाश की चमक ७. दुनिवा वालों का शिकवा कम करो ८. आवाज को और अधिक कटु बना अगर संगीत का आनन्द प्राप्त न हो। ९. काफिले का गीत और बुलंद कर अगर महमिल भारी जान पडे ।

एक ख़त के जवाब में

हविस भी हो तो नहीं मुझ में हिम्मते-तगो-ताज़
हसूले-जाह[1] है, वाबस्ता-ए-मजाके-तलाश[2] ।
हज़ार शुक्र तबीयत है रेज़ाकार मेरी
हज़ार शुक्र नहीं है दिमाग़ फ़ितना-तराश[3] ।
मिरे सुखन से दिलों की हैं खेतियाँ सरसब्ज
जहाँ में हूँ मैं मिसाले-सहाबे[4]-दरिया-पाश[5]
यह उक़दा-हाय-सियासत तुझे मुबारक हों
कि फ़ैजे-इश्क़ से नाख़ुन मिरा है सीना ख़राश ।
हवा-ए-बज्मे-सलातीं[6], दलीले-मुर्दा-दिली
किया है हाफ़िज़े-रंगी-नवा[7] ने राज़ यह फ़ाश ।
"गरत हवास्त कि बाख़िजर हमनशीं बाशी
निहाँ ज़चश्मे-सिकंदर चू आबे-हैवाँ बाश[8] ।"

◈ ◈

---

१. पद-प्राप्ति २. खोज की लगन से सम्बन्धित ३. क्रान्तिकारी ४. बादल की तरह ५. दरिया बिखेरने वाला ६. बादशाहों के दरबार की हवा ७. मधुर स्वर वाला फारसी कवि हाफिज ८. अगर तुझको खिजर के बराबर होने की हविस है तो अमृत की तरह से सिकन्दर की आंख से छिपा रह ।

नानक

क़ौम ने पैग़ामे-गौतम की जरा परवा न की
क़द्र पहचानी न अपने गौहरे-यकदाना की ।
आह ! बदकिस्मत रहे आवाजे-हक़ से बेख़बर
ग़ाफ़िल अपने फल की शेरीनी से होता है शजर ।
आशकार उसने किया जो जिन्दगी का राज था
हिंद को लेकिन ख्याली फ़लसफ़ा पर नाज था ।
शमए-हक से जो मुनव्वर[1] हो यह वह महफ़िल न थी
बारिशे-रहमत हुई लेकिन जमीं काबिल न थी ।
आह ! शूदर के लिए हिंन्दोस्ताँ ग़म ख़ाना है
दर्दे-इन्सानी से इस बस्ती का दिल बेगाना है ।
ब्रह्मण सरशार है अब तक मये-पिन्दार[2] में
शमए-गौतम जल रही है महफ़िले अग़यार में ।
बुतकदा फिर बाद मुद्दत के मगर रोशन हुआ
नूरे-इब्राहीम से आजर का घर रोशन हुआ ।
फिर उठीं आखिर सदा तौहीद की पंजाब से
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने जगाया ख्वाब से ।

१. रोशन २. अभिमान ।

कुफ्रो इस्लाम

एक दिन इकबाल ने पूछा कलीमे-तूर से
ऐ कि तेरे, नक्शे-पा से वादी-ए-सीना चमन !
आतशे-नमरूद अब तक है जहाँ में शोलारेज
हो गया आँखों में पिनहाँ क्यों तिरा सोजे-कुहन ।
था जवाबे-साहबे-सीना कि मुस्लिम है अगर
छोड़ कर ग़ायब को तू हाजिर का सौदाई न बन ।
जौक़े-हाजिर है तो फिर लाजिम है ईमाने-ख़लील
वरना ख़ाकिस्तर है तेरी जिन्दगी का पैरहन ।
है अगर दीवाना-ए-ग़ायब तो कुछ परवा न कर
मुन्तज़र रह वादी-ए-फ़ाराँ में होकर खेमाजन ।
शोला-ए-नमरूद है रोशन जमाने में तो क्या
"शमअ खुदरा मी गुदाजद दरमियाने अंजुमन
नूरे मा-चूँ आतशे-संग अज नजर पिनहां खुश अस्त ?"[1]

◈ ◈

१. शमश तो अपने आपको महफिल में पिघला देती हैं; लेकिन हमारा प्रकाश इस प्रकार गोपनीय है जैसे पत्थर में चिनगारी ।

बिलाल

लिक्खा है एक मग़रिबी-ए-हक़ शनास ने,
एहले-क़लम में जिसका बड़ा एहतराम था।
जौलाँ गहे-सिकन्दरो-रोमी था एशिया,
गर्दूं से भी बुलन्दतर इसका मुक़ाम था।
तारीख कह रही है कि रोमी के सामने,
दावा किया जो पोरसो-दारा ने ख़ाम था।
दुनिया के इस शहनशहे-अंजुम-सिपाह[१] को,
हैरत से देखता फ़लके-नीलफ़ाम था।
आज एशिया में उसको कोई जानता नहीं
तारीखदान भी उसे पहचानता नहीं।
लेकिन बिलाल, वह हबशीज़ादा-ए-हक़ीर
फ़ितरत भी जिसको नूरे-नबूवत से मुस्तनीर[२]
जिसका अमीं अज़ल से हुआ सीना-ए-बिलाल
महकूम इस सदा के हैं शेहनशहो-फ़क़ीर
होता है जिससे असवदो-अहमर[१] में इम्तियाज[३]
करती है जो गरीब को हम पहलू-ए-अमीर
है ताज़ा आज तक वह नवा-ए-जिगर गुदाज़
सदियों से सुन रहा है जिसे गोशे-चर्ख़-पीर।
इक़बाल किसके इश्क़ का यह फ़ैज़े-आम है
रोमी फ़ना हुआ, हबशी को दवाम है।

---

१. अनगिनत सितारों जैसे सेना का सम्राट २. उज्ज्वल ३. काला और लाल ४. मिश्रण

मुसलमान और तालीमे-जदीद

मुर्शिद की यह तालीम थी ऐ मुस्लिमे-शोरीदासर
लाज़िम है रहरो के लिए दुनिया में सामाने-सफ़र।
बदली ज़माने की हवा ऐसी तग़य्युर आ गया
थे जो गराँ कीमत कभी, अब है मताए-कमख़र।
वह शोला-ए-रोशन तिरा, ज़ुलमत गुरेजाँ जिससे थी
घट कर हुआ मिस्ले-शरर तारे से भी कम नूर तर।
शैदाई-ए-ग़ायब[1] न रह, दीवाना-ए-मौजूद हो,
ग़ालिब है अब अक़वाम पर माबूदे-हाज़िर का असर
मुमकिन नहीं इस बाग में कोशिश हो बारावर तिरी
फरसूदा[2] है धन्दा तिरा, ज़ीरक[3] है मुर्ग़-तेज़ पर।
इस दौर में तालीम है अमराज़े-मिल्लत की दवा
है खूने-फ़ासिद[4] के लिए तालीम मिस्ले-नेशतर।
रहबर के ईमाँ से हुआ तालीम का सौदा मुझे
वाजिब है सहरागर्द[1] पर तामीले-फ़रमाने-ख़िज़र[2]।
लेकिन निगाहे-नुकताबीं देखे ज़बूँहाली[3] मिरी,
रफ़तम कि खार अज़ पाकशम, महले-निहाँ शुद अज नजर
यक लहज़ा ग़ाफ़िल गशताअम व सदसालारा हम दूर शुद।[4]

◈ ◈

१. लुप्त का प्रेमी २. पुराना ३. विवेकशील ४. गंदा खून।

१. जंगल में घुमने वाला २. खिजर के आदेश का पालन करना ३. दुर्दशा ४. मैंने चाहा अपने पाँव का काँटा निकालूँ, लेकिन बिंदु नजर से ओझल हो गया। एक क्षण के लिए गाफिल (उदासीन) हुआ था कि पूरी सदी मुझ से दूर हो गई।

फूलों की शहजादी

कली से कह रही थी एक दिन शबनम गुलिस्ताँ में,
रही मैं एक मुद्दत गुंचा हाए-बाग़े-रिजवाँ[१] में,
तुम्हारे गुलिस्ताँ की कैफ़ियत सरशार है ऐसी,
निगह फ़िरदौस दर दामन[२] है मेरी चश्मे-हैराँ में,
सुना है कोई शहजादी है हाकिम इस गुलिस्ताँ की,
कि जिसके नक्शे-पा से फूल हों पैदा बयाबाँ में,
क़भी साथ अपने उसके आस्ताँ तक मुझको तू ले चल,
छिपाकर अपने दामन में बरंगे-मौजे-बू ले चल।
कली बोली सरीरआरा[३] हमारी है वह शहजादी,
दरखशाँ[४] जिसकी ठोकर से हों पत्थर भी नगीं बनकर,
मगर फ़ितरत तिरी रख़शन्दा[५] और बेगम की शान ऊँची,
नहीं मुमकिन कि तू पहुँचे हमारी हमनशीं बनकर,
पहुँच सकती है तू लेकिन हमारी शाहजादी तक,
किसी दुख-दर्द के मारे का अश्के-आतशी बनकर,
नजर उसकी प्यामे-ईद है अहले महरम को,
बना देती है गौहर ग़मजदों के अश्के पैहम को।

१. स्वर्ग के बाग के फूल २. दामन में जन्नत ३. सिंहासन की शोभा
४.-५. चमकता हुआ

सायब के शेर पर तज़मीन

कहाँ इकबाल तूने आ बनाया आशियाँ अपना,
नवा इस बाग में बुलबुल को है सामाने-रुसवाई !
शरारे-वादी-ए-ऐमन के तू बोता तो है लेकिन,
नहीं मुमकिन कि फूटे इस जमीं से तुख़्मे-सीनाई।
कली जोरे नफ़स[1] से भी वहाँ गुल हो नहीं सकती,
जहाँ हर शै हो महरूमे-तक़ाज़ा-ए-खुद अफ़ज़ाई[2]।
क़यामत है कि फ़ितरत सो गई अहले-गुलिस्ताँ की,
न है बेदार दिले पीरी, न हिम्मत ख़्वाह[3] बरनाई[4]।
दिले-आगाह जब ख़्वाबीदा हो जाते हैं सीनों में,
नवागर के लिए जहराब होती है शकर-खाई[5]।
नहीं जब्ते-नवा मुमकिन तो उड़ जा इस गुलिस्ताँ से,
कि इस महफ़िल से खुशतर है किसी सहरा की तनहाई।

"हमाँ बहतर कि लैला दर बयावाँ जलवागर बाशद,
नदारद तंगनाए-शहर ताबे-हुस्ने-सहराई[6]।

१. साँस की शक्ति २. अपने को बढ़ाने की कांक्षा से वंचित ३. उत्साही ४. जवानी ५. मिठास ६. यही बेहतर है कि लैला जंगल ही में जलवा दिखाये क्योंकि शहर की संकीर्णता जंगल के उस सौंदर्य की सक्षम नहीं।

मज़हब

(मिर्जा बेदिल के शेर पर तजमीन)

तालीमे-पीरे-फलस्फए मग़रिबी है यह,
नादाँ हैं जिनको हस्ती-ए ग़ायब की है तलाश।
पैकर अगर नजर से न हो आशना तो क्या
है शेख भी मिसाले ब्रह्मण सनम-तराश।
महसूस पर बिना है अलूमे-जदीद[1] की,
इस दौरे में है शीशा अक़ायद[2] का पाश-पाश
मजहब है जिसका नाम वह है इक जनूने खाम
है जिससे आदमी के तखय्युल को इतना अंतआश[3]।
कहता मगर है फलस्फ-ए-जिंदगी कुछ और
मुझ पर किया यह मुर्शिदे-कामिल न राज फाश।
"बा हर कमाल अदके आशुफ्तगी खुशास्त
हरचन्द अकले-कुल शुदई बेजनूँ मबाश[4]।"

१. आधुनिक विधाएँ २. मान्यताएँ, विश्वास ३. उलट-फुलट ४. हर कमाल के साथ थोड़ी सी दीवानगी भी होनी चाहिए तेरी बुद्धि कितनी ही सम्पूर्ण हो जाय, उन्माद को मत त्याग।

जंगे यरमूक का एक वाकश्र

सफ-वस्ता थे श्ररब के जवानाने-तेग़-बंद[1]
थी मुंतज़िर हिना की श्ररूसे-जमीने-शाम[2]।
इक नौजवान सूरते सीमाब मुज़तरिब
श्राकर हुश्रा श्रमीरे-श्रसाकर[3] से हम-कलाम।
ऐ बूश्रबैदा रुखसते-पैकार[4] दे मुझे
लबरेज़ हो गया मिरे सब्रो-सकूँ का जाम।
बेताब हो रहा हूँ फिराक़े-रसूल में
इक दम की जिंदगी भी मुहब्बत में है हराम।
जाता हूँ मैं रसूले रसालत-पनाह में
ले जाऊँगा खुशी से अगर हो कोई प्याम।
यह ज़ौक़ो-शौक देख के पुरनम हुई वह श्राँख
जिसकी निगाह थी सिफ्ते-तेगे-बनयाम।
बोला श्रमीरे-फौज कि बह नौजवाँ है तू
पेरों पे तेरे इश्क़ का वाजिब है एहतराम।
पूरी करे खुदा-ए मुहम्मद तिरी मुराद
कितना बुलंद तेरी मुहब्बत का है मुकाम।
पहुँचे जो बारगाहे रसूले श्रमीं में तू
करना यह श्रर्ज़ मेरी तरफ़ से पस-श्रज़-सलाम[5]।
हम पर करम किया है खुदा-ए गयूर ने
पूरे हुए जो वादे किये थे हज़ूर ने।

१. सशस्त्र २. शाम देश की धरती की दुल्हन ३. कमांडर ४. लड़ने की श्राज्ञा। ५. सलाम के बाद

मजहब

अपना मिल्लत पर क़यास[1] अक़्वामे-मगरिब से न कर
ख़ास है तरकीब[2] में कौमे-रसूले हाशमी।
उनकी जमीयत का है मुलको-नसब पर इनहिसार
कुव्वते मज़हब से मुस्तहकम[3] है जमीयत तिरी।
दामने-दीं हाथ से छूटा तो जमीयत कहाँ
और जमीयत हुइ रुखसत तो मिल्लत भी गई।

१. अनुमान २. बनावट, निर्माण ३. दृढ़

पैवस्ता रह शजर से उमीदे बहार रख

डाली गई जो फ़सले-खजाँ में शजर से टूट
मुमकिन नहीं हरी हो सहाबे-बहार[2] से।
है लाज़वाल अहदे-खज़ाँ उसके वास्ते
कुछ वास्ता नहीं है उसे बर्गो-बाद[3] से।
है तेरे गुलिस्ताँ में भी फसले खजाँ का दौर
ख़ाली है जेबे-गुल ज़रे-कामिल-अय्यार[4] से।
जो नगमा-ज़न थे ख़लवते-औराक़[5] में तयूर
रुखसत हुए तेरे शजरे सायदार से।
शाखे बुरीदा[6] से सबक-अंदोज़ा[7] हो कि तू
ना-आशना है कायदा-ए रोज़गार से।
मिल्लत के साथ राबता-ए उस्तवार[8] रख
पैवस्ता रह शजर से उमीदे बहार रख।

◈ ◈

१. सम्बन्धित २. बसंत का बादल ३. पत्ते और फल ४. कीमती खजाना पगार ५. पत्तियों का एकान्त गृह ६. कटी हुई टहनी ७. शिक्षाप्रद ८. दृढ़ सम्बन्ध।

शबे मेराज[1]

अख्तरे-शाम की आती है फलक से आवाज़
सजदा करती है सहर जिसको वह है आजकी रात।
रहे-यक-गाम[2] है हिम्मत के लिए अर्शे-बरीं
कह रही है मुसलमान से यह मेराज की रात।

१. इस्लामी देवमाला के अनुसार उस रात को शबे-मेराज कहते हैं, जब हज़रत मुहम्मद ने आकाश पर पहुँच कर खुदा के दर्शन किये और क्षण ...ाये। २. कदम भर का मार्ग।

फूल

तुझे क्यों फ़िक्र है ऐ गुल ! दिले सद चाके बुलबल की
तू अपने पैरहन के चाक तो पहले रफ़ू कर ले।
तमन्ना आबरू की हो अगर गुलजारे हस्ती में
तो काँटों में उलझ कर जिंदगी करने की खू कर ले।
सनोबर बाग़ में आज़ाद भी है, पाबगिल[1] भी है
इन्हीं पाबंदियों में हासिल आजादी को तू कर ले।
तुनक-बख्शी[2] को इस्तगना से पैग़ामे-खजालत[3] दे
न रह मिन्नत-कशे शबनम, नगूं जामो-सबू कर ले।
नहीं यह शाने-खुददारी चमन से तोड़कर तुझको
कोई दस्तार में रख ले, कोई जेबे-गलू[४] कर ले।
चमन में गुंचाए-गुल से यह कहकर उड़ गई शबनम
मजाके-जौरे-गुलचीं[५] हो तो पैदा रंगो-बू कर ले।
अगर मंजूर हो तुझ को खजाँ-न-आशना[६] रहना
जहाने-रंगो-बू से पहले कत्ए-आरजू[७] कर ले।
इसी में देख मुजमर है कमाले जिंदगी तेरा
जो तुझको जीनते-दामन कोई आईना-रू[८] कर ले।

◇ ◇

१. मिट्टी में पाँव, जकड़ा हुआ २. थोडा दान ३. लज्जा-संदेश ४. गले की शोभा ५. फूल तोड़ने वाले के अत्याचार की अभिरुचि ६. पतझड़ से अपरिचित ७. अभिलाषा से सम्बन्ध विछेद ८. रमणी।

शेक्स्पीयर

शफ़क़े-सुबह दरिया का ख़राम आईना,
नग़मा-ए-शाम को खामोशी-ए-शाम आईना
बर्ग-गुल आईन-ए-आरिज़े-ज़ेबा-ए-बहार[1]
शाहिदे-मय के लिए हुजला-ए-जाम-आईना[2] ।
हुस्न आईना-ए-हक़ और दिल आईना-ए-हुस्न
दिले-इंसा को तिरा हुस्ने-कलाम आईना ।
है तिरे फ़िक्रे-फलक-इससे कमाले हस्ती
क्या तिरी फितरते-रोशन थी मश्राले-हस्ती
तुझको जब दीदा-ए-दीदार-तलब[3] ने ढूँडा
ताबे-खुर्शीद[4] में खुर्शीद को पिनहाँ देखा,
चश्मे-आलम से तो हस्ती रही मस्तूर तिरी,
और आलम को तिरी आँख ने उरियाँ देखा,
हिफ्ज़े-असरार[5] का फितरत को है सौदा ऐसा,
राज़दाँ फिर न करेगी कोई पैदा ऐसा ।

१. फूल की पत्ती बहार के कपोलों का दर्पण है २. शराब की प्रेमिका के लिए प्याले का भवन दर्पण है ३. दर्शन अभिलाषी आँख ४. सूरज की चमक ५. रहस्यों का संरक्षण ।

मैं और तू

न सलीक़ा मुझ में कलीम का, न क़रीना तुझ में खलील का,
मैं हलाके-जादू-ए-सामरी[१], तू क़तीले-ए-शेवा-ए-आजरी[२] ।
मैं नवा-ए सोख़्तादर गुलू, तू परीदा-रंग रमीदा बू[३]
मैं हिकायते ग़मे आरज़ू, तू हदीसे मातमे दिलबरी ।
मिरा एश ग़म, मिरा शहद सम[४], मिरी बूद[५] हमनफसे-अदम[६]
तिरा दिल हरम, गिरवे-अजम[७], तिरा दीं खरीदा-ए-काफ़िरी ।
दमे ज़िंदगी, रमे-ज़िंदगी,[८], ग़मे-जिंदगी, समे-जिंदगी,
ग़मे-रम न कर, समे-ग़म न खा, कि यही है शाने-कलंदरी ।
तिरी खाक में है अगर शरर तू ख्याले-फ़ुक़्रो-गना न कर[९] ।
कि जहाँ में नाने-शयीर[१०] पर है मदारे-कुब्बते-हैदरी ।
कोई ऐसी तर्ज़े-तवाफ तू, मुझे ऐ चिराग़े-हरम बता
कि तिरे पतंग[११] को फिर आता हो वही सरिश्ते-समुदरी[१२] ।
गिला-ए जफा-ए-वफ़ा-नुमाँ[१३] कि हरम को अहले हरम से है,
किसी बुतकदे में बयाँ करूँ तो कहे सनम भी "हरि-हरि" ।
करम ऐ शहे अरबो-अजम, कि खड़े हैं मुंतज़रे, करम,
वह गदा कि तूने अता किया है जिन्हें दिमाग़ सिकंदरी ।

---

१. सामरी (ईरान का प्रसिद्ध जादूगर जो एकेश्वरवाद में विश्वास नहीं रखता था) के जादू का मारा हुआ २. आजर की रीति का मारा हुआ ३. मैं कण्ठ के भीतर फँसी हुई आवाज हूँ और तू उड़ा हुआ रंग और बिखरी हुई सुगन्ध है ४. विष ५. अस्तित्व ६. परलोक-बासी ७. आजम में गिरवी रखा हुआ ८ जीवन-गति ९. गरीबी अमीरी का ख्याल १०. जौ की रोटी ११. परवाना, १२. समुद्र का स्वभाव १३, ऐसे जुल्म की शिकायत जो उपकार दिखाई देता हो ।

असीरी

है असीरी एतवार-अफज़ा[२] जो हो फितरत बुलन्द
कतरा-ए-नीसाँ[३] है जिदाने-सदफ से अर्जुमंद[४] ।
मुश्के-अज़फर[५] चीज़ क्या है, इक लहू की बूँद है,
मुश्क बन जाती है होकर नाफा-ए-आहू[६] में बंद ।
हर किसी की तरबीयत करती नहीं कुदरत मगर
कम हैं वे तायर कि हैं दामो-कफ़स से बहरामंद[७] ।
"शहपरे-जागो-ज़गन दरबंदे कैदो-सैद नेस्त,
ईं सआदत किस्मते शहबाजो-शाही करदा अंद[८] ।"

---

१. कैद २. विश्वस्त ३. मेंह की बूँद ४. महान ५. महकती हुई कस्तूरी ६. हिरन की नाभी ७. सुभाग्यशाली ८. चील और कौवों के पंख जाल और कैद के अभ्यस्त नहीं होते, यह सौभाग्य तो शहबाज और सिकरे ही की किस्मत में लिखा है ।

दरयूजा-ए-खिलाफत

अगर मुल्क हाथों से जाता है जाय,
तू एह्कामे-हक़[२] से न कर बे-वफाई ।
नहीं तुझको तारीख़ से आगही[३] क्या ?
खिलाफ़त की करने लगा तू गदाई ।
ख़रीदें न हम जिसको अपने लहू से,
मुसलमाँ को है नंग वह बादशाही ।
मरा अज़ शिकस्तान चुना आरनायद,
कि अज दीगराँ ख्वस्तन मोमयाई[४] ।

१. खिलाफत का भिखारी २. ईश्वरीय आदेश ३. जानकारी ४. टूटना मेरे लिए लज्जा की बात नहीं, इसलिए कि यह दूसरों से (मोमयाई एक दवाई जो टूटी हुई हड्डियों को जोड़ देती है) माँगने से बेहतर है ।

हिमायूँ

[मिस्टर जस्टिस शाहदीन मरहूम]

ऐ हिमायूँ जिंदगी तेरी सरापा सोज़ थी,
तेरी चिनगारी चिराग़े-अंजुमन-अफरोज़[1] थी।
गरचे था तेरा तने-खाकी निज़ारो-दर्दमन्द[2],
थी सितारे की तरह रोशन तिरी तब्अे-बुलन्द।
किस क़द्र बेवाक दिल इस नातवाँ पैकर में था,
शोला-ए-गर्दूं-नशीं इक मुश्ते-खाकिस्तर[3] में था।
मौत की लेकिन दिले-दाना को कुछ परवा नहीं,
शबकी खामोशी में जुज-हंगामा-ए फरदा नहीं।

मौत को समझे हैं ग़ाफिल इख्तताामे-जिंदगी[4],
है यह शामे जिन्दगी, सुबहे-दवामे-जिन्दगी[5]।

---

१. महफिल को आलोकित करने वाला चिराग २. क्षीण और दुर्बल ३. मुट्ठी भर खाक अर्थात् शरीर ४. जीवन-अन्त ५. अमर जीवन की सुबह।

खिजरे-राह

शायर

साहिले दरिया पे मैं इक रात था महवे-नज़र
गोशा-ए-दिल में छिपाये इक जहाने-इज़्तराब ।
शब सकूत-अफज़ा[१], हवा-आसूदा[२], दरिया नर्म-सैर[३],
थी नज़र हैराँ कि यह दरिया है या तस्वीरे-आब ।
जैसे गहवारे में सो जाता है तिफ्ले शीर-ख्वार,
मौजे-मुज़तर थी कहीं गहराइयों में मस्ते-ख्वाब ।
रात के अफसूँ से तायर आशियानों में असीर,
अजुमे-कम-जौ गिरफ्तारे-तलिस्मे माहताब[४] ।
देखता क्या हूँ कि वह पैके-जहाँ-पैमा[५] खिजर,
जिसकी पीरी में है मानन्दे-सहर रंगे-शबाब ।
कह रहा है मुझसे ऐ जोया-ए असरारे-अज़ल[६],
चश्मे दिल वा हो तो है तक़दीरे-आलम बे-हिजाब ।
दिल में यह सुनकर बपा हंगामा-ए महशर हुआ,
मैं शहीदे-जुस्तजू था यों सुखन-गुस्तर[७] हुआ ।
ऐ तिरी चश्मे-जहाँ-बीं पर वह तूफाँ आशकार,
जिनके हंगामे अभी दरिया में सोते है खमोश ।
कश्ती-ए-मिसकीनो-जाने पाको-दीवारे-यतीम,
इल्ले-मूसा भी है तेरे सामने हैरत-फरोश ।
छोड़कर आबादियाँ रहता है तू सहरा-नवर्द,
जिन्दगी तेरी है बे-रोजो-शबो-फरदा-व-दोश[८] ।

१. निस्तब्ध २. हवा समृद्ध ३. नदी धीरे चलने वाली ४. थोड़े प्रकाश वाले तारे चाँद के जादू में गिरफ्तार ५. सृष्टि के रहस्य ६. सम्बोधित ८. रात दिन अत: अतीत और भविष्य से मुक्त ।

जिन्दगी का राज़ क्या है ? सल्तनत क्या चीज़ है ?
और यह सरमाया-व-मेहनत में है कैसा खरोश[1]।
हो रहा है एशिया का खर्क़ा-ए-दैरीना[2] चाक,
नौजवाँ अक़वामे-नौ, दौलत के हैं पैराया-पोश[3]।
गरचे असकंदर रहा महरूमे-आवे-जिन्दगी,
फितरते-असकंदरी अब तक है गर्मे-नायो-नोश।
बेचता है हाशिमा[4] नामूसे-दीने-मुस्तफा[5],
खाको-खूँ में मिल रहा है, तुर्कमाने-सख्त कोश[6]।

आग है, औलादे-इब्राहीम है, नमरूद है,
क्या किसी को फिर किसी का इम्तहाँ मकसूद है ?

१. संघर्ष २. पुरानी गुदड़ी ३. दूसरे के मार्ग का अनुसरण ४. हजरत मुहम्मद की सन्तान ५. मुस्तफा के धर्म की प्रतिष्ठा ६. मेहनती तुर्क।

जवाबे खिजर

सह्रा-नवर्दी

क्यों ताज्जुब है मिरी सह्रा नवर्दी पर तुझे
यह तगापू ए-दमादम[1] जिन्दगी की है दलील।
ऐ रहीने-खाना, तूने वह समाँ देखा नहीं,
गूँजती है जब फ़ज़ाए-दश्त में बांगे-रहील।
रेत के टीले पे वह आह का बेपरवा ख़राम,
वह ख़िज़र बेबर्गो-समाँ, वह सफ़र बे-सगो मील।
वह नमूदे-अखतरे-सीमाब-पा[2] हंगामे-सुबह,
या नुमायाँ बामे-गर्दूं से जबीने-जिबरईल[3]
वह सकूते-शामे-सहरा में ग़रूबे-आफताब,
जिससे रोशन तर हुई चश्मे-जहाँबीने-खलील।
और वह पानी के चश्मे पर मुकामे-कारवाँ,
अहले-ईमाँ जिस तरह जन्नत में गिरदे-सलसबील।
ताज़ा बीराने की सौदा-ए-मुहब्बव को तलाश,
और आबादी में तू जंजीरी-ए-किश्तो-नख़ील।
पुख्ता तर है गर्दिशे-पैहम से जामे-जिन्दगी,
है यही ऐ-बेखर राज़ो-दवामे-जिन्दगी।

---

१. सतत दौड़-धूप २. कम्पित सितारों का प्रदर्शन ३. उस फरिश्ते का नाम जो हजरत मुहम्मद के पास खुदा का संदेश लाता था।

जिन्दगी

बरतर अज़ अदेशा-ए-सूदो-ज़ियाँ है जिन्दगी
है कभी जाँ और कभी तस्लीमे-जाँ है जिन्दगी।
तू इसे पैमाना-ए-इमरोज़ो-फ़रदा से न नाप
जावदाँ, पैहम दवाँ,[1] हर दम जवाँ है जिन्दगी।
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर जिन्दों में है
सिर्रे-आदम[2] है ज़मीरे-कुन फ़काँ[3] है जिन्दगी।
जिंदगानी की हक़ीक़त कोहकन[4] के दिल से पूछ
जूए-शीरो-तेशा-व-संगे-गराँ[5] है जिन्दगी।
बंदगी में घुटके रह जाती है इक जू-ए-कम-आब[6]
और आज़ादी में बहरे-को बेकराँ[7] है जिन्दगी।
आशकारा है यह अपनी कुव्वते-तसख़ीर से
गरचे इक मिट्टी के पैकर में निहाँ है जिन्दगी।
कुलज़मे-हस्ती से तू उभरा है मानन्दे हबाब
इस जयाँ-खाने में तेरा इम्तहाँ है जिन्दगी।

ख़ाम है जब तक कि है मिट्टी का इक अम्बार तू
पुख़्ता हो जाय तो है शमशेरे-बे ज़िनहार तू।

हो सदाक़त के लिए जिस दिल में मरने की तड़प
पहले अपने पैकरे-खाकी में जाँ पैदा करे।
फूँक डाले यह ज़मीनो-आस्माने-मुस्तआर
और खाकिस्तर से आप अपना जहाँ पैदा करे।

१. लाभ-हानि की चिंता से ऊपर २. गतिवान ३. मानव जाति का रहस्य ४. खुदा का अंतरात्मा ५. फ़रहाद

जिंदगी की कुव्वते-पिनहाँ को कर दे[८] आशकार
ता यह चिनगारी फ़रोगे-जावदाँ[९] पैदा करे।
खाके मशरिक़ पर चमक जाय मिसाले-आफताब
ता बदख्शाँ फिर वही लाले-गराँ[१०] पैदा करे।
सूए-गर्दूं नाला-ए-शबगीर[११] का भेजे सफीर
रात के तारों में अपने राज़दाँ पैदा करे।
यह घड़ी महशर की है तू अरसा-ए-महशर में है
पेश कर गाफ़िल अमल कोई अगर दफ्तर में है।

सल्तनत

आ बताऊँ तुझको रम्ज़े-आया-ए-इन्नल-मलूक[१]
सल्तनत अक़वामे-गालिब की है इक जादूगरी।
ख्वाब से बेदार होता है ज़रा महकूम अगर
फिर सुला देती है उसको हुकमराँ की साहरी।
जादू-ए-महमूद की तासीर से चश्मे-अयाज़
देखती है हल्क़ा-ए-गर्दन में साज़े-दिलबरी।
खूने-इसराईल[२] आ जाता है आखिर जोश में
तोड़ देता है कोई मूसा तलिस्मे सामरी।

---

६. दूध की नहर, तेशे और भारी पत्थर। ७. थोड़े पानी की नदी ८. विशाल सागर ६. न मिटने वाली चमक। १०. अमूल्य मोती २. रात का रुदन १३. कुरान की ऐक आयत जिसमें बादशाहों सम्बन्धी वर्णन है। १४. इसाईल वह जाति जो हजरत मूसा की अनुयायी है।

सरवरी[3] ज़ेबा फ़क़त इस ज़ाते-बेहमता[4] को है
हुकमराँ इक वही, बाकी बुताने आज़री।
अज़ गुलामी फितरते-आजाद रा रुसवा मकुन[5]
ता तराशी-ख्वाजा-ए-अज ब्राह्मण काफि`तरी[6]।
है वही साज़े कुहन मगरिब का जमहूरी निज़ाम
जिसके पर्दों में नहीं गैर-अज़-नवा-ए-कैसरी[7]।
देवे-इस्त बदाद जमहूरी क़बा में पाये कोब[8]
तू समझता है यह आज़ादी की है नीलम परी।
मजलिसे-आईनो-इस्लाहो-रिआयतो-हकूक़[9]
तिब्बे-मगरिब में मज़े मेठे असर ख्वाब-आवरी।
गर्मी-ए-गुफतारे-आजा-मजालिस[10], अल अमा[11]
यह भी इक सरमायादारों की है ज़ंगे-जरगरी।
इस सराबे-रगों-बू को गुलसिताँ समझा है तू
आहरो नादाँ! कफ़ को आशियाँ समझा है तू।

सरमाया-व-मेहनत

बंदा-ए-मज़दूर को जाकर मेरा पैगाम दे,
खिज्र का पैगाम क्या, है यह प्यामे कायनात।
ऐ कि तुझ को खा गया सरमायादारे हीलागर,
शाखे-आहू[1] पर रही सदियों तलक तेरी बरात।
दस्ते-दौलत-आफरीं[2] को मुज़द[3] यों मिलती रही,
अहले-सरव[4] जैसे देते हों गरीबों को ज़कात।
साहरे-अलमूत ने तुझ को दिया बर्गे-हशीश[5]

---

१. बादशाही २. अद्वितीय ३. गुलामी से अपनी स्वाधीन प्रकृति को बदनाम मत कर। अगर तू ब्राह्मण को बादशाह बनाता है तो और आदा काफिर होता है। ४. बादशाही की आवाज के अतिरिक्त ५. पहने हुए ६. नींद लाने वाली ७. सभासादों की आवाज की गर्मी, ८. भगवान बचाये। ६. हिरन के सींग १०. धन पैदा करने वाले हाथ ११. मजदूरी १२. धनी १३. कड़वा पत्ता

ग्रौर तू ए-बे-खबर ! समझा इसे शाखे-नबात[६] ।
नस्ल, कौमियत, कलीसा, सल्तनत, तह्जीब, रंग
ख्वाजगीने[७] खूब चुन-चुन कर[८] बनाये मुस्करात[८] ।
कट मरा नादाँ ख्याली देवताग्रों के लिए,
सुक्र[९] की लज़्जत में तू लुटवा गया नक़्दे-हयात ।
मक्र की चालों से बाजी ले गया सरमायायदार,
इंतहा-ए सादगी से खा गया मज़दूर मात ।

उठ कि ग्रब बज़्मे-जहां का ग्रौर ही ग्रंदाज़ है,
मशरिको-मग़रिब में तेरे दौरे का ग्रागाज़ है ।

हिम्मते-ग्राली तो दरिया भी नहीं करती क़बूल,
गुंचा-साँ ग़ाफिल तिरे दामन में शबनम कब तलक
नग़मा-ए-बेदारी-ए-जमहूर है सामाने-ऐश
किस्सा-ए ख्वाब-ग्रावरे ग्रसकंदरों-जम कब तलक ।
ग्राफताबे-ताज़ा पैदा वत्ने-गेती[१] से हुग्रा,
ग्रास्माँ डूबे हुए तारों का मातम कब तलक ।
तोड़ डालीं फितरते-इसाँ ने जंजीरें तमाम,
दूरी-ए-जन्नत से रोती चश्मे-ग्रादम कब तलक ।
बागवाने-चारा-फरमा[२] से यह कहती है बहार
जख्मे-गुलके वास्ते तदबीरे-मरहम कब तलक !

किरमके-नादाँ[३] तवाफ शमग्र से ग्राज़ाद हो,
ग्रपनी फितरत के तजल्ली-जार में ग्राबाद हो ।

---

६. मीठी टहनी, नन्ना ७. बादशाहत ८. नशील चीजें ९. नशा

१. संसार की कोख २. इलाज करने वाला माली ३. ना समझ परवाना

दुनिया ए इस्लाम

क्या सुनाता है मुझे तुर्को-अजम की दास्ताँ ?
मुझ से कुछ पिनहाँ नहीं इस्लामियों का सोजो-साज।
ले गये तस्लीस[१] के फ़रज़ंद मीरासे-खलील,
खिश्ते-बुनियादे-कलीसा[२] बन गई खाके हिजाज़।
हो गई रुसवा ज़माने में कुलाहे-लाला-रंग[३],
जो सरापा नाज़ थे, हैं आज मजबूरे नयाज़।
ले रहा है मय-फरोशाने-फरंगस्ताँ से दाद,
वह मये-सरकश हरारत जिसकी है मीना-गुदाज़।
हिकमते-मगरिब से मिल्लत की यह कैफ़ीयत हुई,
टुकड़े-टुकड़े जिस तरह सोने को कर देता है गाज़।
हो गया मानंदे-आब अरज़ाँ मुसलमाँ का लहू,
मुज़तरिब है तू कि तेरा दिल नहीं दाना-ए-राज़।

गुफ्त रूमी हर बिना-ए कोहना का वादाँ कुनंद,
मी नदानी अव्वल्लाँ बुनियाद रा वीराँ कुनंद[४]।

मुल्क हाथों से गया मिल्लत की आँखें खुल गईं,
हक़ तुरा-चश्मे अता करदस्त गाफिल दर-निगर[५]।
मोमयाई की गदाई से तो बेहतर है शिकस्त,

---

१. ईसा के अनुयायी २. कलीसा की बुनियाद की ईंट ३. लाल रंग की टोपी अर्थात् तुर्की टोपी ४. रूमी ने कहा है कि हर वह पुरानी बुनियाद जिसे दोबारा उठाते हैं, तू नहीं जानता कि पहले उखाड़ फेंकते हैं।
५. ऐ गाफिल खुदा ने तुझे आँख दी है, इससे देख।

मोरे-बे-पर, हाजते पेशे सुलेमानी मबर[1] ।
रब्तो-जब्तो-मिल्लते-बैजा है मशरिक की नजात,
एशिया वाले हैं इस नुक्ते से अब तक बे-खबर ।
फिर सयासत छोड़कर दाखिल हिसारे दीं में हो,
मुल्को-दौलत है फ़क्त हिफजे हरम का इक समर ।
एक हों मुसलिम हरम की पासबानी के लिए,
नील के साहिल से लेकर ता-बखाके काशग़र ।
जो करेगा इम्तयाजे-रंगों-बूँ मिट जायगा,
तुर्के-खरगाही हो या आराबी ए-वाला-गोहर ।
नस्ल अगर मुस्लिम की मज़हब पर मुकद्दम[2] हो गई,
उड़ गया दुनिया से तू मानंदे-खाके रहगुज़र ।
ता खिलाफ्त कि बिना दुनिया में हो फिर उस्तवार,
ला कहीं से ढूँढ कर असलाफ़ का कल्बो-जिगर ।

ऐ कि न शनासी ख़फ़ी रा अज़ जली हुशियार-बाशु,
ऐ गिरफ्तारे-अबूबक्रो-अली हुशियार बाश[3] ।

इश्क़ को फरियाद लाज़म थी सो वह भी हो चुकी,
अब ज़रा दिल थाम कर फरियाद की तासीर देख ।
तूने देखा सितवते-रफ्तारे दरिया का अरूजक
मौजे मुज़तर किस तर बनती है अब जंजीर देख ।
आम हुरियत का जो देखा था ख्वाब इस्लाम ने,[4]

---

१. ऐ तुच्छ चेंटी अपनी जरूरत को सुलेमान बादशाह के पास मत लेजा । २. मुख्य ३. ऐ कि तू जली से खफी को अलग करके नहीं पहचान ऐ अबूबक्र और अली के अनुयायी हुशियार हो । ४. स्वाधीनता

ऐ मुसलमाँ आज तू उस ख्वाब की ताबीर देख ।
अपनी खा किस्तर समुद्र को है सामने वजूद,
मर के फिर होता है पैदा यह जहाने पीर देख ।
खोल कर आँखें मिरे आईना ए गुफ्तार में,
आने वाले दौर की इक धुँधली सी इक तस्वीर देख ।
आज़ामूदा फितना हैं इक और भी गर्दूँ के पास,
सामने तक़दीर के रुसवाई-ए तदबीर देख ।

मुस्लिम अस्नी सीना रा अज़ आरजू आवाददार,
हर जमाँ पेशे नज़र ला यख़लफुल मेयाद दारा[1] ।

१. तु मुसलमान है अपने सीने को आरजू से आबाद रख और हर समय कुरान के फरमान को अपने सामने रख ।

तुलू-ए-इस्लाम[1]

दलीले सुबहे-रोशन है सितारों की तुनक ख्वाबी,
उफ़क़ से आफ़ताब उभरा गया दौरे-गराँ ख्वाबी।
उरूके-मुर्दा-ए-मशरिक़[2] में खूने जिन्दगी दौड़,
समझ सकते नहीं इस राग़ को सीना-व-फ़ाराबी[3]।
मुसलमाँ को मुसलमाँ कर दिया तूफ़ाने मगरिब ने,
तलातुमहाए दरिया ही से है गोहर की सेराबी।
अतः मोमिन को फिर दरगाहे हक़ से होने वाला है,
शिकोहे तुर्कमानी, ज़हने-हिन्दी, नत्के-आराबी[4]।
असर कुछ ख्वाब का गुंचों में बाकी है तो ऐ बुलबुल
नवारा तलख तर मीज़न चू जौक़े-नग्मा कमयाबी।
तड़प सहने चमन में, आशयाँ में, शाखसारों में,
जुदा पारे से हो सकती नहीं तकदीरे-सीमाबी।
ज़मीरे लाला में रोशन चिराग़े आरज़ू कर दे।
चमन के ज़र्रे-ज़र्रे को शहीद जुस्तजू कर दे।
सरिश्के-चश्मे-मुस्लिम[5] में है नीसाँ का असर पैदा
खलीलुल्लाह के दरिया में होंगे फ़िर गुहर पैदा।

---

१. इस्लाम का उदय २. मृतक पूर्व की रगें ३. दो बड़े दार्शनिक ४. अरबी भाषा ५. मुसलमान की आँख का आँसू।

किताबे-मिल्लते-बैजा की फ़िर शीराज़ा बन्दी है,
यह शाख़े-हाशिमी करने को है फ़िर बर्गोबर पैदा।
रबूदे आँ तुर्के-शीराज़ी, दिले तबरेज़ो-काबुलरा[1],
सबा करती है बूए-गुल से अपना हम सफ़र पैदा।
अगर उस्मानियों पर कोहे-ग़म टूटा तो क्या ग़म है,
कि खूने सद हज़ार अंजुम से होती है सहर पैदा।
जहाँबानी[2] से है दुशवारतर कारे-जहाँबानी[3],
जिगर खूँ हो तो चश्मे-दिल में होती है नज़र पैदा।
हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है जहाँ में दीदावर पैदा।
नवापैरा हो ऐ बुलबुल कि हो तेरे तरन्नुम से,
कबूतर के तने-नाज़ुक में शाहीं का जिगर पैदा।

तिरे सीने में है पोशीदा राजे-जिन्दगी कह दे,
मुसलमाँ से हदीसे-सोज़ो-साज़े जिन्दगी कह दे।

खुदाए-लमयज़ल[4] का दस्ते-कुदरत तू जुबाँ तू है,
यकीं पैदा कर ऐ गाफ़िल कि मग़लूबे गुमाँ तू है।
परे है चर्खे-नीलीफ़ाम से मंजिल मुसलमाँ की,
सितारे जिसके गर्दे-राह हों वह कारवाँ तू है।
मका फ़ानी, मकीफ़ानी, अज़ल तेरा, अबद तेरा,
खुदा का आखिरी पैग़ाम है तू, जावदाँ तू है।

१. उस शीराज़ी तुर्क ने तबरेज और काबुल का दिल जीत लिया २. शासन ३. दुनिया को समझना ४. अमर-अजर ईश्वर।

हिना बन्दे-अरूसे लाला[1] है खूने-जिगर तेरा,
तिरी निस्बत ब्राहीमी है, मेमारे जहाँ तू है।
तिरी फ़ितरत अमीं है मुमकिनाते-जिंदगानी[2] की
जहाँ के जोहरे मुजमर का गोया इमतहाँ तू है।
जहाँ ने आबो-गिल से आलमे-जावैद की खातिर
नबूवत साथ जिसको ले गई वह अरमगाँ तू है।
यह नुक्ता सर गुजश्ते-मिल्लते-वैजा से है पैदा,
कि अकवामे-जमीने एशिया का पासबाँ तू है।

सबक़ फिर पढ़ सदाक़त का, अदालत का, शुजाअत का,
लिया जायगा तुझ से काम दुनिया की अमामत का।

यही मकसूदे फितरत है, यही रम्जे मुसलमानी,
अखव्वुत की जहाँगीरी मुहब्बत की फराबानी।
बुताने रंगो-बू को तोड़कर मिल्लत में गुम हो जा
न तूरानी रहे बाकीं न ईरानी, न अफगानी।
मयाने शाखसाराँ सुहबते मुर्गे चमन कब तक
तिरे बाज़ू में है परवाज़े-शाहीने कहिस्तानी[3]।
गुमाँ आबादे-हस्ती में यकीं मर्दे मुसलमाँ का,
बयाबाँ की शवे-तारीक में कदीले रहबानी।
मिटाया कैसरो-किसरा[4] के इस्तबदाद को जिसने
वह क्या था जोरे-हैदर, फुक्र-बूज़र, सिदके सलमानी

---

१. लाल फूल की दुल्हन के मेंहदी लगाने वाला २. जीवन की सम्भावनाए ३. पहाड़ी ४. दो बादशाहों के नाम।

हुए अहरारे-मिल्लत जादा-पैमा किस तहम्मुलसे,
तमाशाई शिग़ाफे-दर से है सदियों के जिंदानी।
सबाते जिंदगी ईमाने-मोहकम से है दुनिया में,
कि अलमानी से भी पाइन्दा तर निकला है तूरानी

जब इस अंगारा-ए-खाकी में होता है यकीं पैदा,
तो कर लेता है यह बालो-परे रूहुल अमीं[1] पैदा

गुलामी में न काम आती हैं शमशीरें, न तदबीरें,
जो हो जौके यकीं पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें।
कोई अन्दाजा कर सकता है इसके जोरे-बाजू का,
निगाहें-मर्दे-मोमन से बदल जाती हैं तकदीरें।
विलायत, बादशाही, इल्म, अशया की जहाँगीरी,
ये सब क्या है फकत इक नुक्ता-ए-ईमाँ की तस्वीरें
ब्राहीमी नज़र पैदा मगर मुश्किल से होती है,
हवस छिप-छिप के सीनों में बना लेती है तस्वीरें।
तमीज़-बंदा-व-आका फसादे आदमीयत है,
हज़र[२] ऐ चीरा दस्ताँ[३] सख्त हैं फितरत की ताजीरें[४],
हकीक़त एक है हर शै की खाकी हो कि नूरी हो।
लहू खुर्शीद का टपके अगर ज़र्रे का दिल चीरें।
यकीं मोहकम, अमल पैहम, मुहब्बत फातहे-आलम,
जिहादे जिंदगानी में ये हैं मर्दों की शमशीरें।

---

१. जबारील फरिश्ते का नाम २. बच ३. अत्याचारी ।

चे बायद मर्द रा तबअ-बुलंदे मशरबे-नाबे,
दिले गर्मे, निगाहे पा कबीने जाने-बेताबे[1]।

अकाबी शान से झपटे थे जो बे-बाला-पर निकले,
सितारे शाम के खून शाफ़क़ में डूबकर निकले।
हुए मदफूने दरिया, ज़ेरे-दरिया तैरने वाले,
तमाचे मौज के खाते थे जो बनकर गुहर निकले।
गुबारे रहगुज़ार हैं कीमया पर नाज था जिनको,
जबीनें खाक पर रखते थे जो अकसीरगर निकले।
हमारा नर्म-रौ कासिद प्यामे-जिंदगी लाया,
खबर देती थीं जिनको बिजलियाँ वह बेखर निकले
हरम रुसवा हुआ पीरे-हरम की कम निगाही से,
जवानाने-ततारी किस कद्र साहब-नज़र निकले।
जमीं से नूरयाने-आसमाँ-परवाज़[2] कहते थे,
यह खाकी जिंदातर, पाईंदातर, ताबिंदातर निकले।
जहाँ में अहले-ईमाँ सूरते-खुर्शीद जीते हैं,
इधर डूबे, उधर निकले उधर डूबे इधर निकले।

यकीं अफराद का सरमाया-ए-तामीरे-मिल्लत है,
यही कुव्वत है जो सुरतगरे तकदीरे मिल्लत है।

तू राज़-कुनफ़काँ है अपनी आँखों पर अयाँ हो जा,
खुदी का राज़दाँ हो जा, खुदा का तरजुमाँ हो जा!

---

१. बुलंद तबीयत वाले पुरुष को गर्म दिल पाक नजर और बेचैन रूह के अतिरिक्त और क्या दरकार है?

२. आकाश पर उड़ने वाले देवता

हवस ने कर दिया है टुकड़े-टुकड़े नौ-ए इंसाँ को,
अखव्वुत का बयाँ हो जा, मुहब्बत की जबां हो जा।
यह हिंदी, वह खुरासानी, यह अफगानी, वह तूरानी,
तू ऐ शर्मिंदा-ए-साहिल उछल कर बे-करां होजा।
गुबार-आलूदा-ए शामो रंगो-नस्ब हैं बालो पर तेरे,
तूं ऐ मुर्ग-हरम उड़ने से पहले परफशां हो जा।
खुदी में डूब जा गाफिल यह सिर्रे जिंदगानी है,
निकल कर हल्का-ए सहर से जावदाँ हो जा।
गुजर जा बन के सैले तुंदरौ कोहो-बयाँबाँ से,
गुलिस्तां राह में आये तो जू-ए नग़मा-ख्यां हो जा।
तिरे इल्मो मुहब्बत की नहीं है इंतहा कोई,
नहीं है तुझ से बढ़कर साजे फितरत में नवा-कोई।
अभी तक आदमी में सैदे-ज़बूने-शहरयारी है,
कयामत है कि इंसाँ, नौ-ए इंसा का शिकारी है।
नज़र को खैरा करती है चमक तहज़ीबे हाजिर की,
यह सन्नाई मगर झूटे नगों की रेज़ाकारी है।
वह हिकमत नाज़ था जिस पर खिरदमंदाने मगरिब को,
हवस के पंजा-ए-खूनी तेगे-कारज़री है।
तदव्बुर की फसूँकारी से मोहकम हो नहीं सकता,
जहाँ में जिस तमद्दुन की बिना सरमायदारी है।

१. बादशाहत की कैद में जकड़ा हुआ

अमल से जिंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी,
यह इंसाँ अपनी फितरत में न नूरी है न नारी है।
खरोश-आमोज़ बुलबुल हो गिरहें गुंचे की वा करदे,
कि तू इस गुलिसताँ के वास्ते बादे-बहारी है।
उठी फिर एशिया के दिल से चिनगारी मुहब्बत की,
जमीं जोलां-गहे-अतलस-कबायाने तातारी है।

बया पैदा खरीदारस्त जाने नातवाने-रा
पस अज़ मुद्दत गुजार उफ्ताद बरमा कारवाने[1]

१. आ कि तेरे दुर्बल प्राणों का गाहक पैदा हो गया है। एक मुद्दत बाद हमारा रुका हुआ काफिला चल पड़ा है।

गज़लयात

ऐ बादे-सबा ! कमली वाले से जा कहियो पैग़ाम मिरा,
कब्ज़े से उम्मत बेचारी के दीं भी गया दुनिया भी गई ।
यह मौजे-परीशाँ-खातिर को पैगाम लबे साहिल ने दिया,
है दूर वसाले-बहर[1] अभी, तू दरिया में घबरा भी गई ।
इज्जत है मुहब्बत की क़ायम ऐ कैस ! हिजाबे-महमिल से[2],
महमिल जो गया, इज्जत भी गई, गैरत भी गई, लैला भी गई ।
की तर्क तगो-दो[3] कतरे ने, तो आबरू-ए-गौहर भी मिली,
आवारगी-ए-फितरत भी गई, और कशमकशे दरिया भी गई ।
निकली तो लबे इक़बाल से है, क्या जानिये किस की है यह सदा,
पैग़ामे सकूँ पहुँचा भी गई, दिल महफ़िल का तड़पा भी गई ।

यह सरोदे-कुमरी व बुलबल फ़रेबे-गोश है
बातने-हंगामा-आबादे-चमन खामोश है ।
तेरे पैमानों का है यह ऐ मये-मगरिब असर,
खंदाज़न साक़ी है सारी अंजमुन बेहोश है ।
दहर के मयखाने में तेरा पता मिलता नहीं,
जुर्म था क्या आफरीनश[2] भी कि तू रूपोश है ?
आह ! दुनिया दिल समझती है जिसे वह दिल नहीं,
पहलु-ए इंशाँ में इक हंगामा-ए खामोश है ।
जिंदगी की रह में चल; लेकिन जरा बच-बच के चल,
यह समझ ले कोई मीना-खाना बारे-दोश[3] है ।
जिसके दम से दिल्ली व लाहौर हम पहलू हुए,
आह ! ऐ इक़बाल वह बुलबुल भी अब खोमोश है ।

---

१. सागर-मिलन २. महमिल का पर्दा ३. दौड़-धूप ४. सृष्टि
५. कंध का बोझ ।

नाला है बुलबुले-शोरीं तिरा ख़ाम अभी,
अपने सीने में इसे और ज़रा थाम अभी।
पुख्ता होती है अगर मसलहत-अंदेश[१] हो अक्ल,
इश्क हो मसलहत-अंदेश तो है ख़ाम अभी।
बे-खतर कूद पड़ा आतेश-नमरूद में इश्क,
अक्ल है महव-तमाशा-लबे-बाम अभी।
इश्क फरमूदा-ए-कासिद से सुबक गामे-अमल[२],
अक्ल समझी ही नहीं मानी-ए पैग़ाम अभी।
शेवा-ए-इश्क है आजादी व दहर-आशोबी[३],
तू है जुन्नारी-ए-बुत खाना-ग अय्याम अभी।
उज्रे-परहेज़ पे कहता है बिगड़ कर साकी,
है तिरे दिल में वही काविशे-अंजाम अभी।
सई-ए-पैहम[४] तराज़ू-ए-कमो-कैफे-हयात[५],
तेरी मीज़ाँ[६] है शुमारे-सहरो-शाम अभी।
अब्रे-नेसाँ यह तुनक-बख्शी-ए शबनम कब तक,
मिरे कोहसार के लाले हैं तही जाम अभी।
बादा गरदाने-अजम वह अरबी मेरी शराब,
मिरे साग़र से झिजकते हैं मये-आशाम अभी।
ख़बर इक़बाल की लाई है गुलिस्ताँ से नसीम,
नौ-गिरफ्तार फड़कता है तहे-दाम[७] अभी।

---

१. भला-बुरा सोचने वाली २. द्रुतगामी ३. तूफान उठाने वाला ४. सतत प्रयत्न ५. जीवन के गुण मात्रा का तराजू ६. तकड़ी ७. जल के नीचे।

पर्दा चेह्रे से उठा, अंजमन-आराई कर,
चश्मे-मेह्रो-मह्-व-अंजुम[1] को तमाशाई कर
तू जो बिजली है तो यह चश्मके-पिनहाँ[2] कबतक
बे-हिजाबाना मिरे दिल से शनासाई कर।
नफसे-गर्म की तासीर है एजाज़ो-ह्यात
तेरे सीने में अगर है तो मसीहाई कर।
कब तलक तूर पे दरयोजाग़री[3] मिस्ले-कलीम !
अपनी हस्ती से अयाँ शोला-ए-सीनाई कर।
हो तिरी खाक के हर जर्रे से तामीरे-हरम,
दिल को बेगाना-ए-अंदाजे-कलीसाई कर।
इस गुलिस्ताँ में नहीं हद से गुज़रना अच्छा
नाज़ भी कर तो बा अंदाजा-ए-रअनाई कर।
पहले खुददार तो मानन्दे सिकन्दर होल,
फिर जहां में हवसे-शौकते-दाराई कर।
मिल ही जायगी कभी मंजिले-लैला इक़बाल,
कोई दिन और अभी बादिया-पैमाई[4] कर।

---

१. चाँद, सूरज और तारों की आँख २. संकोचशील आँख ३. भीख माँगना ४. जंगल छानना।

फिर बादे-बहार आई इकबाल ग़ज़ल ख़ाँ हो,
गुंचा है अगर गुल हो, गुल है तो गुलिस्ताँ हो।
तू खाक की मुट्ठी है, अजाज़ा[1] की हरारत से,
बरहम हो, परेशाँ हो, बुसअत में बयाबाँ हो।
तू जिंसे-मुहब्बत है, क़ीमत है गराँ तेरी,
कम-माया[2] हैं सौदागर इस देस में अरजाँ[3] हो।
क्यों साज़ के पर्दे में मस्तूर है लै तेरी,
तू नग़मा-ए-रंगीं है, हरगोश पे उरियाँ हो।
ऐ रहरवे-फ़रजाना! रस्ते में अगर तेरे,
गुलशन है तो शबनम हो, सहरा है तो तूफाँ हो।
सामाँ की मुहब्बत में मुज़मर है तन-आसानी,
मक़सद है अगर मंजिल, ग़ारतेगरे-सामाँ हो।

---

१. पंचभूत २. थोड़े पूँजी वाले ३. सस्ता।

कभी ऐ हक़ीक़ते-मुंतजर ! नज़र आ लिबासे मजाज़ में,
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं मिरी जबीने-नयाज़ में।
तरब-आशना-ए-खरोश हो तू नवा-ए महरमे-गोश हो
वह सरोद क्या कि छिपा हुआ हो सकूते-पर्दा-ए-साज़ में।
तू बचा-बचा के न रख इसे तिरा आयना है वह आयना,
कि शिकस्ता हो तो अज़ीम तर है निगाहे आयना साज़ में।
दमे तौफ करमके-शमअ[1] ने यह कहा कि वह असरे कुहन,
न तिरी हिकायते-सोज में, न मिरी हदीसे गुदाज़ में।
न कहीं जहाँ में अमाँ मिली, जो अमाँ मिली तो कहाँ मिली,
मिरे जुर्म खाना खराब तिरे उफ्वे-बंदा नवाज़ में।
न वे इश्क़ में रहीं गर्मियाँ, न बे हुस्न में रहीं शोखियाँ,
न वह गजनवी में तड़प रही, न वह खुम है जुल्फे अयाज़ में।
जो मैं सिर-व सजादा हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तिरा दिल तो है सनम-आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में।
तहे-दाम भी गज़ल-आशना रहे तायराने चमन तो क्या
जो फुगाँ[2] दिलों में तड़प रही थी नवा-ए जेरे-लबी[3] रही।
तिरा जलवा कुछ भी तसल्ली-ए-दिले-नासबूर न कर सका
वही गिरया-ए-सहरी रहा, वही आहे-नीम-शबी रही।
न खुदा रहा न सनम रहे, न रकीबे दैरो-हरम रहे,
न रही कहीं असदु लही, न कहीं अबुहबी रही।
मिरा साज़ अगरचे सितम-रसीदा-ए-जख्मा-हाय अजम रहा
वह शहीदे-जौके-वफा हूँ मैं कि नवा मिरी अरबी रही।

१. परवाने ने परिक्रम करते समय। २. फरियाद ३. होठों तले, धीमी।

जरीफाना [1]

मशरिक़ में असूले-दीं बन जाते हैं
मग़रिब में मगर मशीन बन जाते हैं।
रहता नहीं एक भी हमारे पल्ले
वाँ एक के तीन-तीन बन जाते हैं।
लड़कियाँ पढ़ रही हैं अंग्रेजी
ढूँडली कौम ने फलाह[2] की राह।
रविशे मगरिबी है मद्दे-नज़र
वजए-मशरिक़[3] को जानते हैं गुनाह।
यह ड्रामा दिखायेगा क्या सीन
पर्दा उठने की मुंतज़र है निगाह।
शेख साहब भी तो पर्दे के कोई हामी नहीं
मुफत में कालेज के लड़के उनसे बदज़न हो गये।
वअ़ज में फरमा दिया कल आपने यह साफ-साफ़
"पर्दा आखिर किससे हो जब मर्द ही ज़न[4] हो गये।"

१. हास्य रस की २. सुधार, बेहतरी, ३. पूर्वी ढंग।

यह कोई दिन की बात है, ऐ मर्दे होशमंद
ग़ैरत न मुझ में होगी, न ज़न ओट चाहेगी।
आता है अब वह दौर[ए]-कि औलाद के एवज़
कौंसिल की मैम्बरी के लिए वोट चाहेगी।

तालीमे-मग़रिबी है बहुत जुरअत-आफरीं
पहला सबक़ है, बैठके कालेज में मार डींग।
बसते हैं हिंद में जो खरीदार ही फक़त
आग़ा भी लेके आते हैं अपने वतन से हींग।
मेरा यह हाल, बूट की टो चाटता हूँ मैं
उनका यह हुक्म देख मिरे फर्श पर न रींग।
कहने लगे कि ऊँट हैं भद्दा-सा जानवर
अच्छी है गाय, रखती हैं क्या नोकदार सींग।

कुछ ग़म नहीं जो हज़रते-वाअज़ हैं तंग दस्त
तहज़ीबे-नौ के सामने सिर अपना खम करें।
रदद-जिहाद में तो बहुत कुछ लिखा गया
तरदीदे हज में कोई रिसाला रक़म[1] करें।

१. लिखना

तहज़ीब के मरीज़ को गोली से फ़ायदा
दफ़ए-मरज़ के वास्ते बिल पेश कीजिये।
थे वे भी दिन के खिदमते-उस्ताद के एवज़
दिल चाहता था हद-ए-दिल[1] पेश कीजिये।
बदला जमाना ऐसा कि लड़का पस-अज़-सबक़[2]
कहता है मास्टर से कि "बिल पेश कीजिये।"

इतहा भी इसकी है आखिर खरीदें कब तलक
छतरियाँ, रूमाल, मफलर, पैरहन जापान से।
अपनी गफ़लत की यही हालत अगर कायम रही
आयेंगे गुस्साल[3] काबुल से, कफन जापान से।

हम मशरिक़ के मस्कीनों का दिल मग़रिब में जा अटका है
वाँ कंटर सब बल्लौरी हैं याँ एक पुराना मटका है।
इस दौर में सब मिट जायेंगे हाँ, बाक़ी वह रह जायगा
जो क़ायम अपनी राह पे है और पक्का अपनी हट का है।
ऐ शेखो ब्राह्मणः सुनते हो क्या अहले-बसीरत[4] कहते हैं
गर्दूं ने कितनी बुलंदी से इन कौमो को दे पटका है।
या बाहम प्यार के जलसे थे, दस्तूरे मुहब्बत क़ायम था
या बहस में उर्दू हिंदी है या कुर्बानी या झटका है।

---

१. दिल का उपहार २. पाठ के उपरान्त ३. मुर्दों को स्नान कराने वाले। ४. दृष्टि वाले।

"अस्ले शहूदो-शाहिदो-मशहूद एक है"
गालिब का कौल सच है तो फिर जिक्रे-गैर क्या।
क्यों ऐ जनाबे-शेख सुना आपने भी कुछ
कहते थे काबा वालों से कल अहले-दैर क्या ?
हम पूछते हैं मुस्लिमे-आशिक़ मिज़ाज से
उलफत बुतों से है तो ब्रह्मण से बैर क्या ?

हाथों से अपने दामने-दुनिया निकल गया
रुखसत हुआ दिलों से ख्याले-मुआद भी।
कानूने-वकफ़ के लिए लड़ते थे शेख जी
पूछो तो वकफ़ के लिए है जायदाद भी।

वह मिस बोली इरादा खुदकुशी का जब किया मैंने
महज्जब है तो ऐ आशिक, कदम बाहर ने घर हद से।
न जुरअत है, न खजर है तो क़स्दे खुदकुशी कैसे
यह माना दर्दे नाकामी गया तेरा गुज़र हद से।
कहा मैंने कि ऐ जाने-जहाँ कुछ नक़द दिलवा दो
किराये पर मंगा लूँगा कोई अफ़गान सरहद से।

नादाँ थे इस कदर कि न जानी अरब की कदर
हासिल हुआ यही न बचे मारपीट से।
मग़रिब में है जहाज़े-बयाबाँ शुतर का नाम
तुर्कों ने काम कुछ न लिया इस फ्लीट से।

हिन्दुस्ताँ में जुज्वे हकूमत हैं कौंसिल
आगाज़ है हमारे सयासी कमाल का।
हम तो फकीर थे ही, हमारा तो काम था
सीखें सलीक़ा अब उमरा भी 'सवाल' का।

मैम्बरी इम्पीरियल कौंसिल की कुछ मुश्किल नहीं
वोट तो मिल जायेंगे, पैसे भी दिलवायेंगे क्या ?
मीर्जा गालिब खुदा बख्श्वे बजा फरमा गये
"हमने यह माना कि दिल्ली में रहें, खायेंगे क्या ?"

दलीले मेहरे वफा इससे बढ़ के क्या होगी
न हो हुजूर से उलफ़त तो यह सितम न सहें।
मुसर है हल्का कमेटी में कुछ कहें हम भी
मगर रज़ा-ए कलक्टर को भाँप लें तो कहें।
सनद तो लीजिये लड़कों के काम आयेगी
वह मेहरबाँ है अब, फिर रहें, रहें, न रहें।
ज़मीन पर तो नहीं हिन्दुओं को जा मिलती
मगर जहाँ में हैं खाली समुद्रों की तहें।
मिसाले-किश्ती ए-बेबस मती-ए-फरमाँ हैं
कहो तो बस्ता-ए-साहिल रहें, कहो तो बहें।

फरमा रहे थे शेख तरीके-अमल पे वअज़
कफार हिन्द के हैं तिजारत में सख्त-कोश।
मशरक है, वे जो रखते हैं मुश्तरक से लेन-देन
लेकिन हमारी कौम है महरूमे-अक्लो-होश।

---

१. सच्ची बात सुनने वाला २. कान का बोझ, ना पसन्द ३. कैद का बहू वचन, पाबंदियाँ।

नापाक चीज़ होती है काफिर के हाथ की
सुन ले अगर है गोश मुसलमाँ का हक-नयोश[१]।
इक बादाकश भी अब की महफिल में था शरीक
जिसके लिए नसीहते वाअज़ थी बारे-गोश[२]।
कहने लगा सितम है कि ऐसे क्यूद[३] की
पाबंद हो तिजारते-सामाने-खुर्दो नोश।
मैंने कहा कि "आपको मुश्किल नहीं कोई
हिन्दुस्ताँ में हैं कलमा-गोभी मय-फरोश।"
देखिये चलती है मशरिक की तिजारत कब तक
शीशा दीं के एवज़ जामो-सबू लेता है।
है मदावा-एं-जनूँ नश्तरे-तालीमे-जदीद
मेरा सरजन रगे-मिल्लत से लहू लेता है।
गाय इक रोज़ हुई ऊँट से यों गर्म-सुख़न
नहीं इक चाल पे दुनिया में किसी शै को क़रार।
मैं तो बदनाम हुई तोड़के रस्सी अपनी
सुनती हूँ आपने भी तोड़के रख दी है मुहार।
हिन्द में आप तो अज रू-ए-सयासत[१] हैं अहम
रेल चलने से मगर दश्ते-अरब में बेकार।
कल तलक आपको था गाय की महफिल से हज़र[२]
थी लटकते हुए होंठो पे सदाय निनहार।

१. राजनीति की दृष्टि से २. परहेज, घृणा।

आज यह क्या है कि हम पर है अनायत इतनी
न रहा आयन-ए दिल में वह दैरीना गुबार।

जब यह तकरीर सुनी ऊंट ने शर्मा के कहा
है तिरे चाहने वालों में हमारा भी शुमार।

रश्के-सद- गमज़ा-ए-उश्तर है तिरी एक कलेल
हम तो हैं ऐसी कलेलों के पुराने बीमार।

तिरे हंगामों की तासीर यह फैली बन में
बे जुबानों में भी पैदा है मज़ाके गुफ्तार।

एक ही बन में है मुद्दत से बसेरा अपना
गरचे कुछ पास नहीं, खाते हैं चारा भी उधार।

गोसफदो शुतरो गा व पलंग व खरे-लंग
एक ही रंग में रंगी हों तो है अपना बकार।

बागबाँ हो सबक़-आमोज़ जो यक-रगी का
हम जुबाँ होके रहें क्यों न तयूरे-गुलजार।

दे वही जाम हमें भी कि मुनासिब है यही
तू भी सरशार हो, तेरे रुफक़ा भी सरशार।

रात मच्छर ने कह दिया मुझसे
माजरा अपनी नातमामी का।
मुझ को देते हैं एक बूँद लहू
सिला शब भर की तश्ना-कामी का।

और यह बिस्वादारे बे-ज़हमत
पी गया सब लहू असामी का।
यह आय-ए-नौ जेल से नाज़ल हुइ मुझ पर
गीता में हो कुरआन, कुरआन में गीता।
क्या खूब हुई आरती-ए-शेखो-ब्रह्मण
इस जंग में आखिर न यह हारा न वह जीता।
मंदिर से तो बेज़ार था पहले ही से 'बदरी'
मस्जिद से निकलता नहीं जिद्दी है 'मसीता'।
जान जाय हाथ से जाय न सत
है यह इक बात हर मज़हब का तता।
चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं
साहूकारी, बिस्वादारी, सल्तनत।
मेहनतो-सरमाया दुनिया में सफ-आरा हो गये
देखिये होता है किस-किस की तमन्नाओं का खून।
हिकमतो-तदबीर यह फितना-ए-आशोब-खेज[1]
प्ल नहीं सकता "वतद कन्नु मुरीदे तस्ता जलून।"
'खुल गये' याजूज और मासूज के लश्कर तमाम
चश्मे मुस्लिम देख ले तफसीरे-हर्फ यनसलून।

---

१. तूफान उठाने वाला कितना।